# नवीनतम पाठ्यक्रम
## बी. ए. - तृतीय वर्ष
## समकालीन भारत का इतिहास (1947-2004)

**इकाई-एक** **भारत का राजनीतिक एकीकरण एवं संविधान**

**भारत का राजनीतिक एकीकरण-** *हैदराबाद, जूनागढ़ और जम्मू और कश्मीर के विशेष संदर्भ में : एकीकरण में सरदार वल्लभभाई पटेल की भूमिका। शाश्वत राष्ट्र के रूप में भारत (इंडिया) की परिभाषा और भारतीय संविधान का निर्माण-संविधान सभा-ड्राफ्ट कमेटी रिपोर्ट-भारतीय संविधान की घोषणा, डॉ. बी.आर. अंबेडकर की भूमिका। 1950 का भारतीय संविधान- मुख्य विशेषताएं, संस्थायें और 2000 CE तक मुख्य संशोधन।*

**इकाई-दो** **राज्यों का पुनर्गठन एवं संसदीय लोकतंत्र**

*1956 में राज्यों का पुनर्गठन, भाषायी और क्षेत्रीय तनाव, अवरोध, राज्यों में राजनीतिः तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, असम, पश्चिमी बंगाल और जम्मू-कश्मीर, पंजाब का संकट। संसदीय लोकतंत्र का उद्‌भव और विकास। राजनीतिक दलों की भूमिका, भारतीय लोकतंत्र को खतरे।*

**इकाई-तीन** **गोवा मुक्ति आन्दोलन, भारत-चीन युद्ध एवं भारत-पाक युद्ध**

*गोवा मुक्ति आन्दोलन, गोवा में पुर्तगाली शासन की स्थापना, गोवा की स्वाधीनता हेतु प्रारंभिक संघर्ष, राम मनोहर लोहिया का सत्याग्रह, गोवा विमोचन सहायक समिति का सत्याग्रह, सैनिक कार्यवाही और गोवा की आजादी। भारत-चीन युद्ध 1962, भारत-पाक युद्ध 1965 एवं 1971।*

**इकाई-चार** **भारतीय अर्थव्यवस्था, महिलाओं की स्थिति एवं आपातकाल**

**भारतीय अर्थव्यवस्था-** *कृषि सुधारों का अध्ययन, भूदान आंदोलन और हरित क्रांति, नियोजित अर्थव्यवस्था का आरंभः पंचवर्षीय योजनाओं का मूल्यांकन।*
**औद्योगीकरण-** *नीतियाँ, प्रगति और समस्यायें।*
**महिलाओं की स्थिति-** *लैंगिक समानता, शैक्षणिक स्थिति, सामाजिक कुरीतियाँ एवं कानूनी अधिकार।*
*भारत में आपातकाल एवं उसकी आलोचना। सामाजिक विचारक- राम मनोहर लोहिया एवं जयप्रकाश नारायण।*

**इकाई-पाँच** **भारत की विदेश नीति एवं आतंकवाद का उद्‌भव**

*भारत की विदेश नीति और उसका मूल्यांकन (1947-2004)- गुटनिरपेक्षता, पंचशील, सार्क इत्यादि।*
*आतंकवाद का उद्‌भव, मुद्दे और चुनौतियाँ। कारगिल युद्ध 1999।*
*विज्ञान और प्रौद्योगिकी में प्रगति। सूचना प्रौद्योगिकी में क्रांति।*

# प्रश्न-सूची

## इकाई-एक

प्रश्न 1 स्वतन्त्र भारत के राजनीतिक एकीकरण का इतिहास क्या है ? हैदराबाद, जूनागढ़ और जम्मू-कश्मीर के विशेष सन्दर्भ में एकीकरण में सरदार वल्लभ भाई पटेल की भूमिका पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 2 भारतीय संविधान के निर्माण में भारतीय संविधान सभा की रचना, प्रकृति, संविधान सभा के मार्ग में कठिनाइयों और संविधान निर्माताओं के कार्यों का मूल्यांकन कीजिए।

प्रश्न 3 डॉ. भीमराव अम्बेडकर की भारत के संविधान की रचना में भूमिका बताइए।

प्रश्न 4 भारतीय संविधान की प्रस्तावना का वर्णन कर भारतीय संविधान की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 5 भारतीय संविधान में संशोधन की प्रक्रिया का उल्लेख करते हुए उसमें हुए संशोधनों का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

प्रश्न 6 शाश्वत राष्ट्र के रूप में भारत (इण्डिया) को परिभाषित कीजिए।

## इकाई-दो

प्रश्न 1 सन् 1956 में राज्यों के पुनर्गठन पर आलेख लिखिए।

प्रश्न 2 भाषायी और क्षेत्रीय तनाव क्या है ? सन् 1956 में राज्यों के पुनर्गठन के समय इसकी भूमिका पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 3 भारत में संसदीय लोकतन्त्र के उद्‌भव और विकास पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 4 भारत में कार्यरत विभिन्न राजनैतिक दलों की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 5 भारतीय लोकतन्त्र को कौनसे खतरे हैं ? वर्णन कीजिए।

## इकाई-तीन

प्रश्न 1 गोवा मुक्ति आन्दोलन को संक्षेप में बताते हुए गोवा में पुर्तगाली शासन की स्थापना, गोवा में स्वाधीनता हेतु प्रारम्भिक संघर्ष, राममनोहर लोहिया के सत्याग्रह तथा सैनिक कार्यवाही और गोवा की आजादी का वर्णन कीजिए।

प्रश्न 2 भारत पाक युद्ध 1965 पर संक्षिप्त पर सारगर्भित जानकारी दीजिए।

प्रश्न 3 1971 के भारत पाक युद्ध की संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित जानकारी दीजिए।

प्रश्न 4 भारत-चीन युद्ध 1962 के कारणों का वर्णन कीजिए। इस युद्ध में भारत की पराजय क्यों हुई ? युद्ध के परिणामों का वर्णन कीजिए।

## इकाई-चार

प्रश्न 1 देश की अर्थव्यवस्था से क्या आशय है ? भारतीय अर्थव्यवस्था के भारत के उत्पाद से सम्बन्ध को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 2 भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रमुख लक्षणों की व्याख्या कीजिए।

प्रश्न 3 स्वतन्त्रता के बाद से भारत में किए गए भूमि सुधार उपायों का वर्णन कीजिए। भारत में भूमि सुधार नीति के अन्तर्गत पंचवर्षीय योजनाकाल में किए गए उपायों पर प्रकाश डालिए।



प्रश्न 4 भूदान आन्दोलन क्या था ? इसके उद्‌भव और विकास की विवेचना कीजिए।

प्रश्न 5 भारत में हरित क्रान्ति आन्दोलन पर एक समीक्षात्मक टीप लिखिए।

प्रश्न 6 भारत में योजना आयोग द्वारा नियोजित अर्थव्यवस्था के आरम्भ और विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के मूल्यांकन पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 7 भारत सरकार की वर्तमान औद्योगिक नीति की प्रमुख विशेषताओं को बताइए तथा नीति की प्रगति और समस्याओं का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

प्रश्न 8 महिलाओं के साथ लैंगिक असमानता का वर्णन करते हुए उनकी स्थिति सुधारने हेतु सरकार द्वारा किये गये प्रयासों का वर्णन कीजिए।

प्रश्न 9 भारत में महिलाओं सम्बन्धी सामाजिक कुरीतियों एवं उन्हें प्रदत्त कानूनी (वैधानिक) अधिकारों का वर्णन कीजिए।

प्रश्न 10 भारत में आपातकाल एवं उसकी आलोचना सम्बन्धी विवेचना कर इसमें जयप्रकाश नारायण की भूमिका बताइए।

प्रश्न 11 राममनोहर लोहिया : व्यक्ति और कार्य पर आलेख लिखिए।

## इकाई-पाँच

प्रश्न 1 विदेश नीति से क्या आशय है ? विदेश नीति को प्रभावित करने वाले तत्त्वों का वर्णन कीजिए।

प्रश्न 2 भारत की विदेश नीति राष्ट्रीय हितों की उपज है-इस कथन की समीक्षा कीजिए।

प्रश्न 3 गुटनिरपेक्षता या असंलग्नता की नीति का क्या अर्थ है ? भारत द्वारा गुटनिरपेक्षता नीति अपनाये जाने के कारणों पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 4 पंचशील क्या है ? इसके पाँच सिद्धान्त कौनसे हैं ? चीन से हुए समझौते की व्याख्या कीजिए।

प्रश्न 5 भारत और दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (दक्षेस / सार्क) पर सारभूत टिप्पणी लिखिए।

प्रश्न 6 आतंकवाद का अर्थ बताते हुए भारत में आतंकवाद के उद्‌भव और विकास को बताइए। आतंकवाद के कारणों पर भी प्रकाश डालिए।

प्रश्न 7 भारत में आतंकवाद के मुद्दों और चुनौतियों का वर्णन कीजिए।

प्रश्न 8 कारगिल युद्ध 1999 के घटनाक्रम का विवरण देते हुए इसके कारणों एवं परिणाम का वर्णन कीजिए।

प्रश्न 9 आधुनिक भारत में राष्ट्रीय विकास में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति एवं उपलब्धियों पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 10 आधुनिक भारत में सूचना प्रौद्योगिकी (I.T.) के क्षेत्र में आई क्रान्ति पर आलेख लिखिए।

## इकाई-एक

**प्रश्न 1 स्वतन्त्र भारत के राजनीतिक एकीकरण का इतिहास क्या है ? हैदराबाद, जूनागढ़ और जम्मू-कश्मीर के विशेष सन्दर्भ में एकीकरण में सरदार वल्लभ भाई पटेल की भूमिका पर प्रकाश डालिए।**

**उत्तर-** वर्ष 1946-47 के दौरान राज्यों में विभिन्न जन-आन्दोलन उठ खड़े हुए, जिसमें लोगों ने अधिक राजनीतिक अधिकार तथा संविधान सभा में पर्याप्त प्रतिनिधित्व देने की माँग की। 1945 में उदयपुर में तथा 1947 में ग्वालियर में अखिल भारतीय राज्य जन सम्मेलनों का आयोजन किया गया, जिनकी अध्यक्षता जवाहरलाल नेहरू ने की। उन्होंने घोषणा की कि जो राज्य संविधन सभा में सम्मिलित होने से इन्कार करेंगे उनसे शत्रुतापूर्ण व्यवहार किया जायेगा। जुलाई 1947 में वल्लभभाई पटेल को 'नये राज्यों के विभाग' का दायित्व सौंपा गया। श्री पटेल के नेतृत्व में दो चरणों में विभिन्न राज्यों को भारत में सम्मिलित करने का कार्य किया गया। इसके लिये पटेल ने दूरदर्शितापूर्ण सामंजस्य, जनता के दबाव एवं धमकी तीनों युक्तियों का सहारा लिया।

**प्रथम चरण-** 15 अगस्त 1947 तक कश्मीर, हैदराबाद एवं जूनागढ़ को छोड़कर लगभग सभी राज्यों ने भारत में सम्मिलित होने के विलय-पत्रों पर हस्ताक्षर कर दिये थे। ये सभी राज्य अपनी रक्षा, विदेशी मामले और संचार व्यवस्था को भारत के अधीनस्थ मानकर सम्मिलित हो गये। देशी रियासतों के शासक विलय-पत्रों पर हस्ताक्षर करने के लिए आसानी से तैयार हो गये, क्योंकि-

1. *उनके सम्मुख इसके अतिरिक्त कोई अन्य विकल्प नहीं था।*
2. *इन तीन प्रमुख मामलों का दायित्व भारत की सरकार द्वारा ले लेने से वे लगभग निश्चिंत हो गये तथा*
3. *आंतरिक राजनैतिक संरचना में कोई परिवर्तन नहीं हो रहा था।*

15 अगस्त, 1947 तक 136 देशी रियासतें भारत में सम्मिलित हो चुकी थीं। कश्मीर ने 26 अक्टूबर 1947 को तथा हैदराबाद एवं जूनागढ़ ने 1948 में विलय-पत्रों पर हस्ताक्षर किये।

**द्वितीय चरण-** बहुत सी छोटी-छोटी रियासतें, जो आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्था में अलग-अलग नहीं रह सकती थीं, संलग्न प्रान्तों में विलय कर दी गयीं। जैसे-छत्तीसगढ़ और उड़ीसा की 39 रियासतें या तो मध्य प्रान्त या उड़ीसा में मिला दी गयीं तथा गुजरात की रियासतों को बम्बई प्रान्त में सम्मिलित कर दिया गया। इन स्थियासतों के विलय का एक अन्य रूप उन्हें ऐसी इकाइयों के रूप में गठित करना था, जिनका प्रशासन केन्द्र द्वारा चलाया जाये। इस श्रेणी में विन्ध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, त्रिपुरा, बिलासपुर, भोपाल और कच्छ की रियासतें थीं। एक अन्य प्रकार का विलय, राज्य संघों का गठन करना था। इस प्रकार काठियावाड़ की संयुक्त रियासतें, मध्य प्रान्त की रियासतें, मध्य भारत एवं विन्ध्य प्रदेश के संघ, पूर्वी पंजाब रियासती संघ और पटियाला, राजस्थान, कोचीन और ट्रावनकोर की संयुक्त रियासतें अस्तित्व में आयीं।

इस चरण को पूरा होने में लगभग एक वर्ष का समय लगा। देशी रियासतों को विलय के लिये राजी करने हेतु राजाओं को अनेक रियासतें दी गयीं। रजवाड़ों को विशेषाधिकार (प्रिवीपर्स) प्रदान किये गये तथा अनेक राजाओं को राज्यपाल एवं राजप्रमुख के पद दिये गये।



कम समय में देश का इस तीव्र गति से एकीकरण, सरदार वल्लभभाई पटेल की एक महान उपलब्धि थी।

**प्रश्न 2 भारतीय संविधान के निर्माण में भारतीय संविधान सभा की रचना, प्रकृति, संविधान सभा के मार्ग में कठिनाइयों और संविधान निर्माताओं के कार्यों का मूल्यांकन कीजिए।**

**उत्तर-**

### संविधान सभा की रचना

संविधान सभा की रचना अथवा गठन के विषय में निम्न तीन बातें उल्लेखनीय हैं-

1. **कुल सदस्य संख्या-** संविधान सभा सदस्य-संख्या की दृष्टि से एक बहुत बड़ी सभा थी। केबिनेट मिशन ने उसके सदस्यों की कोई अधिकतम संख्या निर्धारित नहीं की थी। केबिनेट मिशन का प्रस्ताव था कि हर दस लाख की आबादी के लिए एक प्रतिनिधि होना चाहिए। इस फार्मूले के अनुसार संविधान सभा में प्रांतों के अधिक-से-अधिक 296 सदस्य हो सकते थे और देशी राज्यों के 93। प्रांतों के 296 सदस्यों का सांप्रदायिक आधार पर इस तरह से बंटवारा किया गया-मुसलमानों के 79 प्रतिनिधि, सिखों के 4 प्रतिनिधि तथा 213 सामान्य सीटें (मुसलमान और सिखों को छोड़कर शेष सभी वर्गों को दिए गए स्थान)। पाकिस्तान के निर्माण और मुस्लिम लीग द्वारा संविधान सभा के बहिष्कार के कारण सदस्य-संख्या गिर गई। उसमें प्रांतों के केवल 235 और देशी रियासतों के 73 प्रतिनिधि रह गये। संविधान के अंतिम मूल मसौदे पर इन्हीं 308 सदस्यों ने हस्ताक्षर किए थे।

2. **चुनाव की विधि-** जहां तक प्रांतों का प्रश्न है, उनके प्रतिनिधियों का चुनाव जुलाई, 1946 में प्रांतीय विधानसभाओं के सदस्यों द्वारा हुआ। देशी राज्यों के आधे प्रतिनिधि राजाओं द्वारा मनोनीत किए गए और आधे जनता द्वारा चुने गये। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भारत के बालिग स्त्री-पुरुषों ने प्रत्यक्ष रूप से संविधान सभा के सदस्यों को नहीं चुना। संविधान सभा की प्रथम बैठक का सभापतित्व सच्चिदानंद सिन्हा ने किया। यह आदर उन्हें इसलिए प्रदान किया गया क्योंकि संविधान सभा के सबसे वयोवृद्ध सदस्य वे ही थे। बाद में संविधान सभा ने डॉक्टर राजेंद्रप्रसाद को अपना अध्यक्ष चुना। उन्होंने बड़ी योग्यता, मर्यादा और निष्पक्षता से इस पद की जिम्मेवारी का निर्वाह किया।

3. **संविधान सभा के सर्वाधिक प्रभावशाली सदस्य-** संविधान सभा के सर्वाधिक प्रभावशाली सदस्य थे-डॉ. राजेन्द्रप्रसाद, मौलाना आजाद, जवाहरलाल नेहरू, वल्लभभाई पटेल, डॉ. अंबेडकर, गोविंदवल्लभ पंत, एन.जी. आयंगर, कृष्णास्वामी अय्यर, के.एम. मुंशी, आचार्य कृपलानी तथा श्यामाप्रसाद मुखर्जी। जी. आस्टिन के शब्दों में, "नेहरू उच्च कोटि के विचारक थे। अय्यर एक असाधारण कोटि के वकील थे और एन.जी. आयंगर उच्च कोटि के प्रशासक, पटेल लौह-पुरुष और राजनीतिज्ञ थे।"

### संविधान सभा की प्रकृति

संविधान सभा की प्रकृति के संबंध में यहां हम निम्नलिखित बातों पर विचार करेंगे-

1. **संविधान सभा की प्रभुसत्ता का प्रश्न-** सबसे पहला प्रश्न यह है कि क्या हम संविधान सभा को प्रभुत्व-संपन्न निकाय मान सकते हैं? कुछ विद्वानों का कहना है कि सभा की स्थापना ब्रिटिश सरकार ने की थी, इसलिए कानूनी तौर पर ब्रिटिश सरकार को यह अधिकार हासिल था कि वह उसे जब चाहे भंग कर दे। दूसरे, केबिनेट मिशन ने केन्द्र को केवल निम्नलिखित विषयों के संबंध में अधिकार दिये थे-प्रतिरक्षा, वैदेशिक मामले, संचार सुविधाएं तथा इन विभागों को चलाने के लिए धन की वसूली। इसलिए संविधान सभा कानूनन ऐसा

संविधान नहीं बना सकती थी जिसमें केन्द्र को इन विषयों के अलावा कोई और शक्ति प्रदान की जाए। तीसरे, केबिनेट मिशन के सुझावों से यह स्पष्ट होता है कि संविधान को लागू करने के लिए ब्रिटिश सरकार की अनुमति आवश्यक थी।

इन दलीलों के आधार पर कुछ लेखकों ने संविधान सभा को प्रभुसत्ता संपन्न संस्था नहीं माना है। इस संबंध में हम केवल इतना कहेंगे कि कानून की इन बारीकियों में जाने का कोई विशेष लाभ नहीं है। संविधान सभा का आयोजन और ब्रिटिश साम्राज्य का भारत से विघटन भारत की जनता के लंबे और कठोर संघर्ष का परिणाम था। संविधान का निर्माण करने वाले निकाय से ऊपर और कोई सत्ता नहीं होती और यदि ऐसी कोई सत्ता है भी तो वह स्वयं "जनता" है। संविधान सभा अपनी कार्यवाही चलाने के लिए जो भी रीति चाहे इसका अनुसरण कर सकती थी। कोई भी बाहरी शक्ति उसकी कार्यवाही में बाधा डालने की शक्ति नहीं रखती थी। इसलिए संविधान सभा को हम प्रभुत्वसंपन्न निकाय कहेंगे।

2. **संविधान सभा का प्रतिनिधिक स्वरूप-** संविधान की प्रस्तावना कहती है, "हम भारत के लोगों" ने इस संविधान का निर्माण किया है। परंतु आलोचकों का कहना है कि संविधान सभा में जनता के प्रतिनिधि नहीं थे यानी उसके सदस्यों का चुनाव देश के सभी बालिग स्त्री-पुरुषों ने नहीं किया था। यह ठीक है कि संविधान सभा के सदस्य बालिग मताधिकार के आधार पर नहीं चुने गये थे, परंतु इसका यह अर्थ नहीं कि हम उसे प्रतिनिधिक संस्था न मानें। संविधान सभा में प्रायः सभी संप्रदायों के व्यक्ति थे। उसमें हिन्दू थे, मुसलमान थे, सिख थे, अनुसूचित जातियों के व्यक्ति थे और ईसाइयों, पारसियों तथा एंग्लो-इंडियन समुदाय के भी प्रतिनिधि थे। वामपंथियों को छोड़कर सभा में सभी वर्गों व आर्थिक हितों के प्रतिनिधि मौजूद थे। व्यापारी, उद्योगपति, जमींदार, बड़े किसान तथा मध्यवर्गीय सभी तरह के लोग उसके सदस्य थे। महिलाओं का प्रतिनिधित्व जो महिलाएं कर रही थीं, उनमें विजयलक्ष्मी पंडित, दुर्गाबाई, सरोजिनी नायडू और बेगम रसूल के नाम उल्लेखनीय हैं।

3. **कांग्रेस की प्रधानता-** संविधान सभा में कम्युनिस्ट पार्टी, समाजवादी पार्टी और हिन्दू महासभा का अधिकारिक या औपचारिक प्रतिनिधित्व नहीं था। परंतु दक्षिण की जस्टिस पार्टी, बंगाल की कृषक प्रजा पार्टी और पंजाब की यूनियनिस्ट पार्टी के प्रतिनिधि उसमें थे। अनुसूचित जाति संघ के संस्थापक डॉ. आंबेडकर तो संविधान का मसौदा बनाने वाली समिति के अध्यक्ष थे। फिर भी, इस सत्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि संविधान सभा में कांग्रेस पार्टी की ही प्रधानता थी। कांग्रेस के चोटी के सभी नेता संविधान सभा में थे, जैसे-राजेन्द्रप्रसाद, पं. जवाहरलाल नेहरू, वल्लभभाई पटेल, मौलाना आज़ाद और आचार्य कृपलानी। शुरू में संविधान सभा की 69 प्रतिशत सीटों पर कांग्रेस का कब्जा था।

4. **कानून के प्रकांड विद्वानों का बोलबाला-** संविधान सभा में कानून के बहुत बड़े-बड़े पंडित विद्यमान थे, जैसे कृष्णास्वामी अय्यर, के.एम. मुंशी, डॉ. आंबेडकर और ठाकुरदास भार्गव। बी.एन. राव संवैधानिक मामलों में सरकार के मुख्य सलाहकार की भूमिका निभा रहे थे। नेहरू, पटेल और राजेन्द्र प्रसाद भी पेशे से वकील थे। ये सभी व्यक्ति ब्रिटेन की संसदीय प्रणाली से बहुत ज्यादा प्रभावित थे। साथ ही, वे 'न्यायिक समीक्षा' के सिद्धांत में भी आस्था रखते थे। वे मौलिक अधिकारों के भी जबर्दस्त समर्थक थे। अनुच्छेद 19 में दिए गए मौलिक अधिकारों पर 'उचित प्रतिबंध' लगाए जा सकते हैं। 'उचित' शब्द का सुझाव ठाकुरदास भार्गव की ओर से आया था। इसमें कोई संदेह नहीं कि अकेले इस शब्द से 'प्रतिबंधों' के स्वरूप में महत्वपूर्ण



अंतर आ गया है। इससे अदालतों की शक्ति का विस्तार हुआ है, क्योंकि न्यायालय यह निर्णय दे सकते हैं कि सरकार द्वारा लगाया गया अमुक प्रतिबंध 'उचित' नहीं है।

5. **छोटे किसानों, दस्तकारों और श्रमिकों के प्रतिनिधियों का अभाव-** भारत की संविधान सभा में छोटे किसानों और श्रमिकों का प्रतिनिधित्व नहीं था। पर इसका यह अभिप्राय नहीं कि संविधान-निर्माता इन वर्गों की समस्याओं के प्रति उदासीन थे। जवाहरलाल नेहरू की समाजवाद में गहरी आस्था थी। संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्रप्रसाद ने बिहार के चंपारन जिले में किसान-सत्याग्रह का नेतृत्व किया था।

## संविधान सभा के मार्ग में कठिनाइयां

संविधान सभा को एक महान उद्देश्य की पूर्ति करनी थी। लेकिन उसके मार्ग में कई तरह की उलझनें, समस्याएं तरह कठिनाइयां थीं, जिनका समाधान आवश्यक था-

1. **अत्यंत उदार संविधान की आकांक्षा-** स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारत के हजारों लाखों नवयुवकों ने आंदोलन में भाग लिया था। ब्रिटिश शासन के दौरान उन्हें तरह-तरह की कठोर तथा बर्बर यातनाएं दी गई थीं। इनकी याद संविधान सभा के सदस्यों के मन पर से अभी तक धूमिल न हुई थीं। संविधान सभा में विशेष रूप से कुछ सदस्य चाहते थे कि नया संविधान इस तरह से बनाया जाए कि उसमें बर्बरता अथवा निरंकुशता की कतई गुंजाइश ही न रहे। दूसरी तरफ उसके परस्पर विरोधी विचार भी सदस्यों के मन में थे।

2. **स्वतंत्रता का सशक्त प्रहरी-** संविधान सभा के सदस्य इस तथ्य से भलीभांति परिचित थे कि स्वतंत्रता के बाद भारत के दायित्वों में वृद्धि हो जाएगी। स्वतंत्रता की रक्षा तथा शासन के स्थायित्व एवं देश की एकता हेतु यह जरूरी है कि देश में एक कठोर शासन व्यवस्था हो। यह विशेष रूप से इसलिए भी जरूरी था, क्योंकि भारत में, भाषा, रीति-रिवाज, तौर-तरीके तथा उपासना पद्धति के आधार पर पर्याप्त विभिन्नता थी।

3. **मुस्लिम लीग का असहयोग-** राष्ट्रीय आंदोलन के अंतिम वर्षों में मुस्लिम लीग के व्यवहार ने भारतीय नेताओं के मन में अत्यंत निराशा पैदा कर दी थी। मुस्लिम लीग के सदस्यों ने तो संविधान सभा की कार्यवाहियों में कभी भाग नहीं लिया। पाकिस्तान भी बन गया। फिर भी भारत में करोड़ों मुसलमान रहे तथा संविधान सभा के सदस्यों के मन में यह भावना थी कि मुसलमानों का विश्वास भी उन्हें प्राप्त रहे, लेकिन इसके साथ ही फिर से पृथकतावादी विचार न पनपने पाएं।

4. **देशी रियासतों की समस्या-** भारत कई वर्षों तक छोटी-छोटी रियासतों में विभक्त रहा है। कैबिनेट मिशन एवं माउंट बेटन योजना द्वारा देशी रियासतों को इस बात की स्वतंत्रता दे दी गई थी कि वे चाहें तो अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखें या भारत में शामिल हो जाएं। यह घोषणा भारतीय एकता हेतु खतरनाक सिद्ध हो रही थी। क्योंकि अधिकांश राजा लोग अपने राज्यों के स्वतंत्र अस्तित्व बनाये रखने के पक्ष में थे। उनमें से कइयों ने संविधान सभा के मार्ग में कई तरह की बाधाएं पैदा कर दीं। लेकिन अंत में लौहपुरुष सरदार पटेल के कौशल से देशी रियासतों ने भारतीय संघ में विलय स्वीकार कर लिया तथा इस समस्या का समाधान हो सका।

संविधान सभा के सामने यह सब कठिनाइयां मुंह बाए खड़ी थीं। सभा को न सिर्फ इनको पार करना था, वरन् एक ऐसे संविधान का निर्माण करना था जो भारत की परिस्थितियों के अनुरूप होते हुए भी आदर्श भी हो और स्थायी भी बन सके।

## संविधान निर्माताओं के कार्यों का मूल्यांकन

एक असंभव सी परिस्थिति में संविधान निर्माताओं ने संविधान का निर्माण किया था। कई कठिनाइयों का सामना करते हुए, संविधान सभा के सदस्यों ने एक बहुत उल्लेखनीय अभिलेख की रचना की थी। यह अभिलेख, संसार के अन्य संविधानों की तुलना में सबसे विस्तृत था।

संविधान के पग-पग पर, संसार के अन्य संविधानों की स्पष्ट छाप थी। वास्तव में श्री बी.एन. राव को संविधान सभा की तरफ से संसार के महत्वपूर्ण संविधानों का अध्ययन करने हेतु विशेष रूप से कई देशों में भेजा गया था। संविधान सभा के सदस्यों ने कभी इस तथ्य को छिपाया नहीं कि वे इस संविधान में, सभी संविधानों की अच्छी बातें ग्रहण करना चाहते थे। अतः भारत के संविधान में आयरलैंड से नीति-निदेशक तत्व, स्विट्जरलैंड से संघात्मकता, अमेरिका से न्यायपालिका की पृथकता तथा सर्वोच्चता एवं ब्रिटेन से संसदीय शासन के रूप अपनाए गए थे। लेकिन भारतीय संविधान पर सर्वाधिक छाप तो ब्रिटिश संविधान तथा विशेष रूप से ब्रिटिश संसद की संतान 1935 के अधिनियम की थी।

यह भी आरोप लगाया जाता है कि संविधान सभा के सदस्य, असल में जन प्रतिनिधि नहीं थे। उनका निर्वाचन तो प्रांतों की विधान सभाओं के सदस्यों ने किया था। वे एक प्रकार से मनोनीत सदस्य ही थे। लेकिन इस आरोप में विशेष दम नहीं है, क्योंकि जिन प्रांतों की विधानसभाओं के सदस्यों ने निर्वाचन किया था, वे तो जनता के प्रतिनिधि ही थे। भारत के राष्ट्रपति का निर्वाचन भारत की जनता प्रत्यक्ष रूप से नहीं करती, वरन् व्यवस्थापिकाओं के सदस्य ही उनका निर्वाचन करते हैं। क्या इससे यह कहना उचित होगा कि भारत में राष्ट्रपति जनता के प्रतिनिधि नहीं हैं ? यह कहा जाता है कि संविधान सभा के ज्यादातर सदस्य वकील तथा न्यायविद थे। इसलिए संविधान की भाषा तथा उसकी शैली सरल न होकर जटिल एवं कहीं-कहीं अस्पष्ट हो गई है।

क्या संविधान निर्माताओं ने एक सफल संविधान बनाया है ? इसका उत्तर अभी नहीं दिया जा सकता। यह ठीक है कि संविधान निर्माताओं ने कठोर, परिश्रम, विस्तृत अध्ययन तथा सतत साधना से, कई कठिनाइयों के उपरांत भी अपनी तरफ से एक श्रेष्ठ संविधान का निर्माण किया। लेकिन वह सफल है अथवा नहीं, इसका प्रमाण तो आने वाले संकटकालीन वर्ष ही देंगे। हां, संविधान के क्रियान्वयन का अब तक का इतिहास निश्चित रूप से यह सिद्ध करता है कि हमारा संविधान भारतीय विवेक तथा गरिमा के अनुरूप है एवं यह एक गतिशील संविधान है।

**प्रश्न 3 डॉ. भीमराव अम्बेडकर की भारत के संविधान की रचना में भूमिका बताइए।**

**उत्तर-** डॉ. अम्बेडकर भारतीय संविधान की प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे। वर्तमान भारतीय संविधान के निर्माण में डॉ. अम्बेडकर का महान योगदान रहा। डॉ. अम्बेडकर का राजनीतिक चिन्तन काफी कुछ यूरोप के उदारवादी चिंतन और परम्परा से प्रभावित था जिसने व्यक्ति के जीवन, सम्पत्ति और स्वतंत्रता के मूल्यों को सर्वोपरि रखा। इसी का प्रभाव था कि डॉ. अम्बेडकर व्यक्तिगत सम्पत्ति और संसदीय प्रणाली को व्यक्ति के विकास के लिए अनिवार्य मानते थे। डॉ. अम्बेडकर ने द्विसदनीय व्यवस्थापिका का समर्थन किया। उन्होंने राष्ट्रपति को सांविधानिक अध्यक्ष बनाने का समर्थन किया। मंत्रियों की योग्यता के सम्बन्ध में डॉ. अम्बेडकर का तर्क काफी कुछ व्यावहारिक था। एक विचार यह था कि कोई भी व्यक्ति यदि वह व्यवस्थापिका का सदस्य नहीं है तो मंत्री नहीं होना चाहिए, पर डॉ. अम्बेडकर का विचार था कि ऐसी अनिवार्यता



नहीं होनी चाहिए। यदि कोई योग्य व्यक्ति है और वह एक स्थान से चुनाव में पराजित हो जाता है तो भी उसे मंत्री बनाया जाना चाहिए तथा यह शर्त रखनी चाहिए कि 6 माह के अन्दर वह किसी अन्य स्थान से निर्वाचित होकर सदन का सदस्य बन जाये। डॉ. अम्बेडकर ने सांविधानिक उपबंधों के माध्यम से दलित और शोषित वर्ग को आत्म सम्मान और गौरवपूर्ण स्थिति प्रदान करने का प्रयत्न किया। सामाजिक व्यवस्था में आमूल परिवर्तन करने की दृष्टि से ही भारतीय संविधान की धारा 14 और 17 में सभी नागरिकों को न केवल समान अधिकार प्रदान किए गए, अपितु छुआछूत को समाप्त करते हुए उसके बढ़ावे को अपराध माना गया।

नागरिक स्वतंत्रता को हर परिस्थिति में बनाए रखने का विचार डॉ. अम्बेडकर का था। इसलिए सांविधानिक उपचार के अधिकारों के सम्बन्ध में उन्होंने कहा यदि कोई मुझसे यह पूछे कि संविधान का यह कौनसा अनुच्छेद है जिसके बिना संविधान शून्य प्रायः हो जायेगा तो उस अनुच्छेद को छोड़कर मैं और किसी अनुच्छेद की ओर संकेत नहीं कर सकता ? यह तो संविधान का हृदय तथा आत्मा है और मुझे इस बात की बहुत प्रसन्नता है कि सदन ने इसके महत्त्व को समझा है। भविष्य में कोई संसद इस अनुच्छेद में अंकित लेखों को छीन नहीं सकती क्योंकि सर्वोच्च न्यायालय की लेखादि निकालने की शक्ति, संसद की इच्छा से बनाई गई किसी विधि पर आश्रित नहीं, वरन् संविधान द्वारा प्रदान की गई है। सर्वोच्च न्यायालय का यह अधिकार केवल सांविधानिक संशोधन द्वारा ही छीना जा सकता है। संविधानिक संशोधन करने की विधि संविधान द्वारा निर्धारित है। मेरे विचार में यह व्यक्ति की सुरक्षा का सबसे महत्त्वशाली परिणाम है। भारतीय संविधान के निर्माण में डॉ. अम्बेडकर को अथक् भूमिका को ध्यान में रखते हुए तथा उनके व्यापक कानून सम्बन्धी ज्ञान को देखते हुए ही उन्हें आधुनिक मनु कहा जाता है।

**प्रश्न 4 भारतीय संविधान की प्रस्तावना का वर्णन कर भारतीय संविधान की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।**

**उत्तर -**

## प्रस्तावना

**महत्व** - भारतीय संविधान की प्रस्तावना में संविधान के मूल लक्ष्यों, उद्धेश्यों और सिद्धान्तों को व्यक्त किया गया है। प्रस्तावना का मूल अंश यह है - "हम भारत के लोग यह दृढ़ संकल्प करके कि भारत ऐक सार्वभौम लोकतान्त्रिक गणराज्य के रूप में निर्माण किया जाये, समस्त नागरिकों को प्रदत्त करते हैं- न्याय - सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक, स्वतन्त्रता - विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म व उपासना की, समानता - स्तर एवं अवसर की तथा उन सबमें बढ़ाते हुये, भ्रातृत्व की भावना तथा आश्वासित करते हुये व्यक्ति की प्रतिष्ठा और राष्ट्र की एकता हेतु, हमारी संविधान सभा में, आज नवम्बर 26, 1949 को संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित व आत्मार्पित करते हैं।"

प्रस्तावना से स्पष्ट होता है कि संविधान निर्माण के समय संविधान निर्माताओं के विचार और उद्धेश्य क्या थे ? इसकी सहायता से संविधान के अस्पष्ट उपबन्धों का वास्तविक सन्दर्भ अधिक अच्छी तरह समझा जा सकता है। न्यायाधीश गण भी इस हेतु संविधान की प्रस्तावना को महत्व देते हैं। श्री एके. गोपालन विरुद्ध मद्रास राज्य नामक वाद में जस्टिस महाजन ने स्वीकार किया था," अनुच्छेद 22 (5) की व्याख्या मैंने की है, उसका अनुमोदन संविधान की प्रस्तावना में निहित शब्दों से होता है। यह घोषणा हमारे संविधान को शानदार रूप और सम्मान प्रदान करती है।

## प्रस्तावना में निहित सिद्धांत

प्रस्तावना में निम्नलिखित सिद्धान्त प्रकट किये गये हैं -

(i) लोकतान्त्रिक शासन, (ii) वयस्क मताधिकार, (iii) वैयक्तिक स्वतंत्रता, (iv) धर्म निरपेक्ष राज्य, (v) राजनैतिक समानता, (vi) सांस्कृतिक स्वतन्त्रता, (vii) धार्मिक स्वतन्त्रता, (viii) सामाजिक, आर्थिक ओर राजनैतिक न्याय, (ix) राष्ट्रीय एकात्मकता, (x) संघात्मक राज्य, (xi) संसदीय कार्यपालिका, (xii) उत्तरदायी शासन और (xiii) लोक कल्याणकारी राज्य।

### प्रस्तावना की व्याख्या -

**(क) 'हम भारत के लोग' संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित तथा आत्मार्पित करते हैं'**- से निम्न बातें स्पष्ट होती हैं -

(a) *संविधान के द्वारा अन्तिम सम्प्रभुता जनता में ही निहित है।*
(b) *भारतीय जनता ने ही संविधान का अधिनियमन और अंगीकरण किया है।*
(c) *संविधान निर्माता जनता के प्रतिनिधि हैं। डॉ. अम्बेडकर का भी यह विचार था कि "मैं समझता हूँ, यह प्रस्तावना इस सदन (संविधान सभा - ले.) के प्रत्येक सदस्य की इच्छानुसार यह प्रकट कर देती है कि इस संविधान का आधार जनता है और इसमें निहित प्राधिकार एवं प्रभुसत्ता मूलतः जनता से प्राप्त हुई है।"*
(d) *भारतीय संविधान भारतीय जनता की इच्छा का परिणाम है। इसे भारत से बाहर की किसी सत्ता ने निर्मित नहीं किया वरन् भारतीय जनता ने बनाया है।*

**(ख) 'सम्पूर्ण सम्पन्न लोकतांत्रिक गणराज्य'**- शब्दावली का आशय है कि भारत की समस्त प्रभुता भारत में ही निहित है, वह स्वतन्त्र देश है और उसने लोकतांत्रिक शासन पद्धति अपनाई है कि जिसका प्रधान निर्वाचित होगा न कि वंशानुगत। अतः भारतीय संविधान की प्रस्तावना, स्वरूप तथा वस्तु स्थिति दोनों में जनता ही, जनता के लिये शासन स्थापित करती है।

**(ग) 'न्याय'** से तात्पर्य है कि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय। (a) सामाजिक न्याय से अभिप्राय है कि समाज में व्यक्ति को व्यक्ति के नाते महत्व दिया जाये। इस प्रकार, धर्म, जाति, वंश, लिंग आदि का भेदभाव राज्य के कार्यों में बाधा नहीं डालेगा। (b) आर्थिक क्षेत्र में राज्य किसी के साथ पक्षपात नहीं करेगा। व्यक्ति की आर्थिक स्थिति उसके अधिकारों को प्रभावित नहीं करेगी। (c) राजनैतिक क्षेत्र में भी सभी को समान स्तर दिया जायेगा। वयस्क मताधिकार और धर्म, नीति, वर्ण, लिंग आदि के आधार पर राजनीतिक क्षेत्र में किसी भी भेदभाव का निषेध राजनीतिक न्याय की प्राप्ति का साधन है।

**(घ) 'स्वतन्त्रता'** से तात्पर्य है कि विचार की, अभिव्यक्ति की, विश्वास की, धर्म एवं पूजा की स्वतन्त्रता। 'स्वतन्त्रता' के नकारात्मक और सकारात्मक दोनों पक्षों की ओर ध्यान दिया जायेगा। व्यक्ति के स्वतन्त्र व्यक्तित्व के विकास के लिये बाधाओं को नकारात्मक बनाया जायेगा और प्रतिबन्ध हटाये जायेंगे तथा उचित परिस्थितियों के निर्माणार्थ सकारात्मक प्रयास किये जायेंगे।

**(ङ) 'समानता'** से आशय है कि सभी नागरिकों को समान स्थिति और अवसर प्रदान किया जायेगा, ताकि प्रत्येक व्यक्ति अपनी सामर्थ्य, कार्य क्षमता और स्वतंत्र व्यक्तित्व का विकास कर सके। व्यक्तियों के साथ राज्य और कानून समानता का व्यवहार करेगा।



**(च) 'भ्रातृत्व'** से आशय है, सभी नागरिक परस्पर समान और एक राष्ट्र परिवार के सदस्य हैं। अनेक धर्मों, जातियों, भाषाओं तथा संस्कारों के देश भारत में 'भ्रातृत्व' पर बल देना एक समीचीन और सकारात्मक प्रयास है।

**निष्कर्ष** - प्रस्तावना से स्पष्ट है कि भारतीय जनता ने स्वयं अपने आपको संविधान अर्पित किया है। वस्तुतः "भारतीय संविधान की प्रस्तावना आज तक लिखित प्रकार के प्रलेखों में सबसे उत्तम है।" यह संविधान की कुंजी तथा संविधान का सबसे अधिक श्रेष्ठ अंग है।

## भारतीय संविधान की विशेषताएं

भारतीय संविधान द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद बने हुये यूरोप, एशिया और अफ्रीका के संविधान में अग्रणी संविधान है। इसकी कतिपय अपनी विशेषतायें हैं -

(1) **स्वतन्त्र देश का गणतन्त्री संविधान** - भारतीय संविधान की प्रथम विशेषता है कि इसका निर्माण अप्रत्यक्ष रूप से चुने जनता के प्रतिनिधियों की प्रभुसत्ता प्राप्त संविधान सभा द्वारा हुआ है।

(2) **प्रभुता सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य** - यह संविधान एक प्रभुत्व सम्पन्न जनता का संविधान है जिसने गणराज्य की स्थापना की है और यह गणराज्य स्वेच्छाचारी निरंकुश न होकर लोकतन्त्रात्मक है। प्रभुता सम्पन्न लोकतन्त्र का अभिप्राय है कि समस्त आन्तरिक एवं बाह्य शक्तियाँ, भारतीय जनता के हाथ में हैं, अर्थात् भारत का शासन भारतीयों के द्वारा और भारतीयों के लाभार्थ होता है एवं भारत की प्रभुता स्वयं जनता के हाथों में केन्द्रित है।

(3) **स्थिरता एवं लोचकता का अपूर्व मिश्रण** - भारतीय संविधान शारीरिक रूप से संघात्मक एवं आत्मीय रूप से एकात्मक है। संघात्मक संविधान की मूलभूत विशेषता 'स्थिरता' हमारे संविधान में भी पायी जाती है। भारतीय संविधान में संशोधन के लिये एक विशेष प्रक्रिया एवं विशेष बहुमत की व्यवस्था है परन्तु आपातकालीन घोषणा के उपरांत भारतीय संविधान संघात्मक के स्थान पर एकात्मक का रूप धारण कर लेता है।

(4) **सभी प्रकार के अच्छे विदेशी प्रभावों को ग्रहण करने वाला** - इस संविधान की विशेषता यह भी है कि इसने पूर्ववर्ती सभी प्रमुख विदेशी संविधानों की श्रेष्ठ व्यवस्था और रीति रिवाजों को अपनाने की कोशिश की है। एक ओर भारत में अमेरिका की तरह राष्ट्रपति का पद है तो दूसरी ओर अंग्रेजी ढंग की संसदीय व्यवस्था, आयरलैंड की तरह नीति निर्देशक तत्व, आस्ट्रेलिया और कनाडा की तरह कुछ संघीय विधान इत्यादि हैं।

(5) **सुदृढ़ केन्द्र वाला संघ** - यद्यपि भारतीय संविधान संघात्मक है तथापि इसमें शक्ति - विभाजन के क्षेत्र में केन्द्र को ही अधिक शक्तिशाली बनाया गया है। सभी महत्वपूर्ण विषय संघ - सूची में रखे गये हैं। राज्यों को शक्ति के स्थान पर दायित्व अधिक सौंपे गये हैं। **एम.आर. पोलन्डे** के शब्दों में, "वस्तुतः संघीय सरकार का क्षेत्र अत्यधिक विस्तृत बनाया गया है, लेकिन इसका यही अर्थ है कि भारत में संघात्मक शासन पद्धति है जिसमें केन्द्र की शक्ति अत्याधिक है और जो कि आपातकाल में विशेषकर और अधिक हो जाती है।"

(6) **मूलभूत अधिकारों का संस्थापक** - अन्य आधुनिक संविधानों के आधार पर भारतीय संविधान के निर्माताओं ने सभी नागरिकों को बिना किसी प्रकार का भेद-भाव किये मौलिक अधिकार दिये हैं। ये मूल अधिकार इस प्रकार हैं - (अ) समानता का अधिकार, (आ) स्वतन्त्रता का अधिकार, (इ) धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार, (ई) शिक्षा एवं सांस्कृतिक अधिकार, (उ) संवैधानिक उपचार का अधिकार और (ऊ) शोषण के विरूद्ध अधिकार। यह स्मरणीय है कि

मौलिक अधिकारों की रक्षा का भार देश के सर्वोच्च न्यायालय को सौंपा है ताकि कोई व्यक्ति या राज्य किसी भी नागरिक के इन अधिकारों को आघात न पहुँचा सके। सर्वप्रथम भारतीय संविधान में सात मौलिक अधिकारों का वर्णन था पर 1979 के 44 वें संविधान संशोधन से सम्पत्ति का अधिकार निकाल दिया गया है।

(7) **भारतीय संविधान किसी विशेष अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित नहीं है** - हमारे संविधान में किसी विशेष प्रकार की अर्थ-व्यवस्था की स्थापना के सम्बन्ध में कोई उल्लेख नहीं है। फिर भी संविधान के प्राक्कथन में वर्णित लक्ष्यों एवं आर्थिक नियोजन के अन्तर्गत अपनाये गये उद्देश्य से यह पूर्णतया स्पष्ट है कि भारतीय संविधान देश में आर्थिक प्रजातन्त्र की स्थापना करेगा तथा राज्य समाजवादी स्तरीय समाज की ओर प्रवृत्त होने का यथा-सम्भव प्रयत्न करेगा।

(8) **स्वतन्त्र न्यायपालिका तथा अन्य स्वतन्त्र अधिकरण** - भारतीय संविधान में एक सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना की गई है जो कि अपने अधिकार क्षेत्र में सर्वोपरि है। इसके अतिरिक्त निर्वाचन आयोग, लोक सेवा आयोग नियन्त्रक एवं महालेखा परीक्षक की व्यवस्था की गई है जो कि अपने अधिकार क्षेत्रों में पूरी तरह स्वतन्त्र हैं।

(9) **लौकिक या धर्मनिरपेक्ष संविधान** - धर्मों के केन्द्र स्थल भारत में संविधान एक लौकिक या धर्म - निरपेक्ष राज्य की स्थापना करता है। भारतवर्ष के सभी नागरिक अपनी इच्छानुसार अपने धार्मिक विश्वासों को धारण करने तथा उनके अनुसार आचरण करने के लिये स्वतन्त्र होंगे। भारत के नागरिकों के साथ धर्म, जाति और वर्ण इत्यादि के आधार पर किसी तरह का भेदभाव राज्य द्वारा नहीं किया जायेगा। इसके साथ ही संविधान ने अल्पसंख्यक जातियों के सांस्कृतिक, धार्मिक तथा शिक्षा सम्बन्धी अधिकारों को पूरी मान्यता दी है।

(10) **विस्तृत संविधान** - भारतीय संविधान अनेक देशों के संविधान की तुलना में विस्तृत है। भारत के संविधान में 395 अनुच्छेद हैं जिन्हें 22 भागों में संग्रहित किया गया है। संविधान के परिशिष्ट में आठ अनुसूचियाँ भी दी गई हैं। अन्य देशों के संशोधन के आकार को देखते हुये हमारे संविधान का आकार बहुत बड़ा है। 1987 में 58 वें संविधान के अनुसार संविधान में 407 अनुच्छेद हो गये हैं जिन्हें 24 भागों में विभाजित किया गया है तथा 10 अनुसूचियाँ बना दी गई हैं।

**प्रश्न 5 भारतीय संविधान में संशोधन की प्रक्रिया का उल्लेख करते हुए उसमें हुए संशोधनों का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।**

**उत्तर- संशोधन की आवश्यकता-** भारतीय संविधान का निर्माण बहुत सोच-विचार कर तथा विश्व की प्रमुख विशेषताओं को उसमें सम्मिलित करके किया गया था। एक लिखित तथा विस्तृत संविधान के निर्माण के पश्चात् भी भारतीय संविधान के निर्माता जानते थे कि समय के अनुसार पिछली बातें प्रतिक्रियावादी हो जाती हैं तथा नयी बातों और नयी परिस्थितियों को अपनाने की आवश्यकता होती है। संविधान कहीं वृद्ध न हो जाये, वह कहीं ऐसा न हो जाये कि भारतीय नागरिकों की आवश्यकता की पूर्ति भी न कर सके। यह सब कुछ सोचते हुए संविधान निर्माताओं ने समयानुसार भारतीय संविधान में परिवर्तन की व्यवस्था की थी। पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था, "यद्यपि जहाँ तक सम्भव होगा हम संविधान को ठोस तथा स्थायी रूप देने का प्रयत्न करेंगे परन्तु संविधान में स्थायित्व नहीं होता; इसे लचीला भी होना चाहिए। यदि आप स्थायी तथा कठोर बना देते हैं तो राष्ट्र के जीवित प्राणवत तथा शरीरधारी व्यक्ति की प्रगति पर रोक (प्रतिबन्ध) लगा देते हैं।"



**संशोधन की प्रक्रिया-** यद्यपि भारतीय संविधान के निर्माता संशोधन की आवश्यकता को अनुभव करते थे, परन्तु यह जानते थे कि संशोधन करने की शक्ति का लाभ शासक दल उठा सकता है। अतः संशोधन की प्रक्रिया इस प्रकार निश्चित करना चाहते थे कि प्रमुख संशोधन विशेष पद्धति से हो। ऐसा होने पर उनका विचार था कि अत्यन्त आवश्यकता अनुभव होने पर ही संशोधन किया जायेगा। **डॉ. अम्बेडकर ने कहा था,** "हम संविधान के अनुच्छेदों को 3 वर्गों में विभाजित करने का विचार रख सकते हैं।" पहले वर्ग में वह अनुच्छेद होंगे जो संसद द्वारा साधारण बहुमत से संशोधित किये जा सकेंगे। उदाहरण के लिए, वे उपबन्ध लीजिए जिनका सम्बन्ध विधान-परिषदों की स्थापना तथा उन्मूलन से है। दूसरे वर्ग में वह अनुच्छेद होंगे जिनमें संशोधन संसद के दो-तिहाई बहुमत से हो सकेगा। मौलिक अधिकार तथा राज्य में संशोधन निर्देशक तत्व इनमें आते हैं। तीसरे वर्ग के अनुच्छेदों का वर्णन करने के लिए संसद के दो-तिहाई मतों के साथ राज्यों की स्वीकृति भी आवश्यक होगी। इनमें संविधान के वे अनुच्छेद हैं, जिनका संशोधन यदि संसद द्वारा हो तो संविधान द्वारा निश्चित पद्धति पर बहुत प्रभाव पड़ेगा।

भारतीय संविधान में परिवहन के लिए इस प्रकार तीन प्रणालियों को अपनाया गया है, यथा-

(1) **साधारण विधि द्वारा संशोधन प्रक्रिया-** कुछ ऐसे विषय रखे गये हैं जिनमें परिवर्तन लाने के लिए संसद के मात्र बहुमत की स्वीकृति तथा राष्ट्रपति के हस्ताक्षर पर्याप्त होते हैं। नये राज्यों का निर्माण, राज्यों की सीमा में परिवर्तन, राज्य क्षेत्र को कम करना अथवा वृद्धि, राज्यों के नाम में परिवर्तन, राज्य परिषदों की स्थापना इत्यादि। इस प्रकार के संशोधन अत्यन्त सरल तथा आसानी से हो जाते हैं। इस प्रकार के संशोधन भारतीय संविधान में कई बार किये गये हैं। राज्य पुनर्गठन, नागालैण्ड राज्य का निर्माण, सीमा परिवर्तन आदि संशोधन इसी विधि के अन्तर्गत हुए हैं।

(2) **संसद के विशिष्ट बहुमत द्वारा संशोधन की प्रक्रिया-** इस प्रकार के संशोधन के लिए विधेयक को किसी भी सदन में रखा जा सकता है। यदि कुल सदस्य संख्या के बहुमत तथा उपस्थित और मतदान करने वालों के दो-तिहाई मतों से इसे समर्थन मिलता है तो दूसरे सदन में विधेयक भेज दिया जाता है। दूसरे सदन में भी इसी प्रक्रिया के पूर्ण होने पर तथा राष्ट्रपति की स्वीकृति प्राप्त होने पर यह संशोधन विधेयक कानून बन जाता है। यह प्रक्रिया मध्यम मार्ग की है।

(3) **राज्य विधान मण्डलों की स्वीकृति की प्रक्रिया-** इस प्रकार की प्रक्रिया कठिन तथा दुष्कर है। इस प्रकार का संशोधन उसी समय सम्भव होता है जबकि संसद में संशोधन लाने वालों का दो-तिहाई बहुमत और कम-से-कम आधे राज्यों में जहाँ विधान सभाएं हैं, पूर्ण समर्थन हो। विधेयक को दोनों सदनों में दो-तिहाई बहुमत से पास होने के बाद सम्पूर्ण राज्यों में से आधों की स्वीकृति आवश्यक है। इस प्रकार के संशोधन निम्न परिस्थितियों में परिवर्तन लाने के लिए आवश्यक होते हैं-

(i) *राष्ट्रपति का चुनाव (अनुच्छेद 54)*
(ii) *राष्ट्रपति के निर्वाचन का ढंग (अनुच्छेद 55)*
(iii) *संघ की कार्यपालिका शक्ति का विस्तार (अनुच्छेद 73)*
(iv) *राज्यों की कार्यपालिका शक्ति का विस्तार (अनुच्छेद 162)*
(v) *केन्द्र-शासित क्षेत्रों में उच्च न्यायालय (अनुच्छेद 241)*

(vi) *संघीय न्यायपालिका (भाग 6 का चौथा अध्याय)*
(vii) *राज्यों में उच्च न्यायालय (भाग 6 का पाँचवाँ अध्याय)*
(viii) *संघ तथा राज्यों में विधायी सम्बन्ध (भाग 11 का प्रथम अध्याय)*
(ix) *सातवीं अनुसूची में कोई सूची*
(x) *संसद में राज्यों का प्रतिनिधित्व*
(xi) *संविधान के संशोधन से सम्बन्धित उपबन्ध (धारा 338)*

## भारतीय संविधान में हुए संशोधन

भारतीय संविधान के लागू होने से लेकर अब तक इसमें जो संशोधन हुए हैं, वे इस प्रकार हैं-

1. **पहला संशोधन, 1951-** संविधान में प्रथम संशोधन सन् 1951 में किया गया। इसकी आवश्यकता इसलिए पड़ी, क्योंकि जमींदारी समाप्ति कानून जो सरकार के समाज सुधार कानूनों का आवश्यक भाग था, विवाद का विषय बन गया था। इस संशोधन का उद्देश्य ऐसे कानूनों को पूर्ण प्रभावी तौर पर न्यायालयों में चुनौती दिये जाने में सुरक्षित करना था।

इस संशोधन द्वारा संविधान में अनुच्छेद 31A और 31B सम्मिलित किये गये हैं। धारा 15 में भी परिवर्तन करके कमजोर वर्गों, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित कबीलों की उन्नति के लिए बनाये गये कानूनों को विभेदकारी होने के आधार पर न्यायालयों में चुनौती दिये जाने से सुरक्षित रखा गया है।

इस संशोधन द्वारा धारा 19(2) में भी परिवर्तन किया गया और सरकार को विचार व्यक्त करने की स्वतन्त्रता पर कानून द्वारा उचित प्रतिबन्ध लगाने का अधिकार दिया गया है, यदि ऐसा करना जनहित, विदेशों में मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाये रखने, नैतिकता और मर्यादा को सुरक्षित रखने, न्यायालय के अपमान को बचाने, मानहानि या उपद्रव भड़काने की गतिविधियों को रोकने के लिए आवश्यक हो परन्तु ऐसे प्रतिबन्धों की न्यायिक पुनर्निरीक्षण द्वारा वैधता परखी जा सकती है।

धारा 19(6) में भी परिवर्तन करके सरकार को राष्ट्रीयकरण करने या नौकरी, धन्धे आदि के लिये योग्यताएं निश्चित करने के दृष्टिकोण से नागरिकों के व्यापार, नौकरी और उद्योग चलाने की स्वतन्त्रता पर उचित प्रतिबन्ध लगाने का अधिकार प्रदान किया गया है।

2. **दूसरा संशोधन, 1952-** इस संशोधन द्वारा धारा 91(1, b) और धारा 170(2) में परिवर्तन करके लोकसभा और राज्य के प्रतिनिधित्व को एकसमान करने का प्रयत्न किया गया है।

धारा 81(1, b) के अनुसार सब राज्यों के निर्वाचन क्षेत्रों, समूहों आदि को इस प्रकार बाँटने की व्यवस्था की गई थी कि उनमें से चुने जाने वाले प्रतिनिधियों की संख्या इस ढंग से निश्चित की जाये कि 7,50,000 की जनसंख्या के लिए एक से कम सदस्य न लिया जाये और हर (7,50,000 की जनसंख्या के लिए कम से कम सदस्य न लिया जाये और) काट दिए गए हैं। इस संशोधन का उद्देश्य सन् 1951 की जनगणना के बाद बनाये जाने वाले 82 चुनाव क्षेत्रों के मार्ग में आने वाली असुविधाओं को दूर करना था।

3. **तीसरा संशोधन, 1955-** इस संशोधन द्वारा समवर्ती सूची के 33वें विषय में चार आवश्यक वस्तुएं-खाद्य पदार्थ, पशुओं का चारा, कच्चा सूत और कच्ची पटसन शामिल करके



इसे विस्तृत किया गया। इस विषय में आयात होने वाली वस्तुएं भी सम्मिलित की गईं, जैसी केन्द्र के नियन्त्रण में चलने वाली औद्योगिक संस्थाओं में बनाई जाती हैं।

4. **चौथा संशोधन, 1955-** प्रथम संशोधन हो जाने के बाद न्यायालयों ने धारा 14, 19 और 31 का उल्लंघन करने वाले कई कानूनों को अवैध घोषित करके सरकार के लिए समाज-सुधारक कानून बनाने और उन्हें लागू करने के मार्ग में कई कठिनाइयाँ पैदा कर दीं। इस प्रकार सरकार के लिए जनहित के लिए निजी सम्पत्ति छीनना कठिन हो गया। इसके अतिरिक्त धारा 31A को पूर्ण प्रभावी बनाना भी आवश्यक समझा गया। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए ही संविधान के चौथे संशोधन द्वारा-

(अ) *इस बात के निर्णय से न्यायालय का अधिकार छीन लिया गया कि कानून के अधीन मुआवजे की राशि उचित है या नहीं।*
(ब) *यह स्पष्ट कर दिया गया कि यदि सम्पत्ति से वंचित करने का उद्देश्य उसमें स्वामित्व या उस पर कब्जे के अधिकार को समाप्त करना न हो तो ऐसा करना राज्य द्वारा सम्पत्ति छीनना नहीं होगा।*
(स) *कानून की धारा 14, 19 या 31 के उल्लंघन के लिए न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती; यदि उनके द्वारा-*
  (a) *राज्य ने किसी सम्पत्ति का स्वामित्व अस्थायी समय के लिये जनहित या अच्छे सम्बन्ध के उद्देश्य से ले लिया हो।*
  (b) *दो या दो से अधिक नियमों का जनहित या अच्छे प्रबन्ध के लिए एकीकरण किया गया हो।*
  (c) *प्रबन्धकर्त्ताओं, सचिवों और खजांचियों और प्रबन्ध निदेशों, निगमों से निर्देशकों और प्रबन्धकों के अधिकारियों या हिस्सेदारों में वोट डालने के अधिकारों का समापन या संशोधन किया गया हो।*
  (d) *खनिज या खनिज तेल से सम्बन्धित समझौते, पट्टे या लाइसेंस के अन्तर्गत प्राप्त अधिकारों का समापन या संशोधन किया जाये या उसका समय से पूर्व समापन या मनसुखी की जाये।*

इस संशोधन द्वारा संविधान को 9वीं अनुसूची में सात और कानून सम्मिलित कर दिये गये और उन्हें धारा 31B के अन्तर्गत पूर्ण प्रभावी बना दिया गया। इसके अतिरिक्त धारा 305 में परिवर्तन करके संघीय संसद और राज्यों को विधानपालिकाओं के किसी भी व्यापार या धन्धे के बारे में राज्य का एकाधिकार स्थापित करने का कानून बनाने की शक्ति की मान्यता दी गई है।

5. **पाँचवाँ संशोधन, 1955-** इस संशोधन द्वारा राष्ट्रपति को यह अधिकार दिया गया है कि वह किसी प्रान्त की सीमा बदलने से सम्बन्धित कानून के बारे में उसे राज्य की विधानपालिका की राय जानने के लिए समय निर्धारित कर सकता है जिसे वह बढ़ा भी सकता है। इस निर्धारित समय के बीत जाने के बाद ही राष्ट्रपति इसे संसद में पेश होने की अनुमति देगा।

6. **छठा संशोधन, 1956-** इस संशोधन द्वारा संघीय सूची में धारा 92-A सम्मिलित करके अन्तरप्रान्तीय क्रय और विक्रय कर लगाने की शक्ति केन्द्रीय संसद को प्रदान की गई है परन्तु इसमें समाचार-पत्र सम्मिलित नहीं हैं।

इसके अतिरिक्त इस संशोधन के अन्तर्गत संसद अन्तर्राज्यीय व्यापार की वस्तुओं को विशेष महत्त्व की घोषित करके उन पर प्रान्तीय सरकार के क्रय और विक्रय कर लगाने की शक्ति पर प्रतिबन्ध भी लगा सकता है।

7. **सातवाँ संशोधन, 1956-** इस संशोधन का उद्देश्य राज्यों के पुनर्गठन की योजना को लागू करना था। इसके अतिरिक्त इसके द्वारा उच्च न्यायालयों के जजों, संघ और राज्य की कार्यपालिका की व्यापार आदि से सम्बन्धित शक्ति के बारे में प्रविष्टि की गई।

धारा में उचित परिवर्तन किये गये और प्रथम अनुसूची को पूर्णतया बदल दिया गया। 'क', 'ख', 'ग' और 'घ' भाग के राज्यों की श्रेणियाँ समाप्त कर दी गईं और कई क्षेत्रों को संघीय क्षेत्र घोषित किया गया। इसी संशोधन में पुनर्गठन के बाद राज्यों की सीमाओं का वर्णन भी किया गया।

संविधान की धारा 80 में औपचारिक और परिमाणिक परिवर्तन किये गये और चौथी अनुसूची को पूर्णतया बदलकर राज्यसभा की सीटों के बँटवारे का वर्णन किया गया।

धारा 81 और 82 में भी परिवर्तन करके लोकसभा में राज्यों और संघीय क्षेत्र से निर्वाचित होने वाले सदस्यों की अधिक-से-अधिक संख्या क्रमशः 500 और 20 निश्चित की गई।

धारा 153 में परिवर्तन करके दो या दो से अधिक राज्यों के लिए एक ही व्यक्ति को गवर्नर बनाये जाने की व्यवस्था भी की गई।

इस संशोधन द्वारा मध्य प्रदेश के लिए द्वि-सदनीय विधानपालिका की स्थापना की गई। धारा 170 में परिवर्तन करके राज्यों की विधानसभाओं की रचना आदि में ऐसे परिवर्तन किये गये कि वे केन्द्रीय संसद के अनुकूल हो जाये। इसी प्रकार राज्य की विधान परिषद् के सदस्यों को कम-से-कम संख्या विधानसभा के सदस्यों की संख्या का $\frac{1}{4}$ की बजाय $\frac{1}{3}$ निश्चित की गई।

धारा 220 में परिवर्तन करके उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त होने वाले न्यायाधीशों को किसी भी ऐसे उच्च न्यायालय की वकालत करने का अधिकार दिया गया जहाँ वह स्वयं न्यायाधीश न रहा हो। धारा 224 के अधीन राष्ट्रपति को अतिरिक्त और अस्थायी न्यायाधीश नियुक्त करने की शक्ति भी दी गई। इसके अतिरिक्त धारा 230 और 231 में भी परिवर्तन करके संसद को उच्च न्यायालय का संयोग क्षेत्र पर अधिकार-क्षेत्र बढ़ाने या समाप्त करने की शक्ति दी गई।

संविधान में नई धारा 258A जोड़ी गई और गवर्नर को यह अधिकार दिया गया कि वह राष्ट्रपति की पूर्व आज्ञा से केन्द्रीय सरकार या उसके अधिकारियों को राज्य के कार्य सौंप सकता है।

धारा 298 के स्थान पर भी नई धारा द्वारा संघीय सरकार और राज्यों की सरकारों के व्यापार करने, सम्पत्ति खरीदने और बेचने और समझौते करने के अधिकार की मान्यता दी गई।

इस संशोधन द्वारा संविधान में धारा 250A से 250B सम्मिलित करके राज्य पुनर्गठन के समय अल्पभाषियों के हितों को सुरक्षित रखने की व्यवस्था की गई।

धारा 371 के स्थान पर भी नई धारा शामिल करके राष्ट्रपति को आन्ध्र प्रदेश और पंजाब के लिए क्षेत्रीय समितियाँ स्थापित करने और उनसे सम्बन्धित राज्य विधानसभा के सदस्यों



की संख्या अधिकतम 500 तथा न्यूनतम 60 होगी। इन परिवर्तनों के अतिरिक्त इस संशोधन द्वारा और भी कई परिभाषिक परिवर्तन किये गये।

8. **आठवाँ संशोधन, 1960-** इस संशोधन द्वारा संविधान की धारा 334 में परिवर्तन करके अनुसूचित जातियों और कबीलों के लिए स्थान सुरक्षित रखने और एंग्लो इण्डियनों की लोकसभा और विधानसभाओं में मनोनीत किये जाने की अवधि दस साल अर्थात् 25 जनवरी, 1970 तक के लिए और बढ़ा दी गई।

9. **नौवाँ संशोधन, 1960-** इस संशोधन का सम्बन्ध भारत और पाकिस्तान के बीच असम, पंजाब, पश्चिमी बंगाल और त्रिपुरा के संघीय क्षेत्र के इलाकों में सीधा सम्बन्धी झगड़े हल करना था। इसी कारण बेरुवाड़ी प्रदेश का हस्तान्तरण सम्भव हुआ।

10. **दसवाँ संशोधन 1961-** इस संशोधन द्वारा दादरा और नागर हवेली को भारत के संघ में सम्मिलित करके उसे 11 अगस्त, 1961 से संघीय क्षेत्र का दर्जा दिया गया है।

11. **ग्यारहवाँ संशोधन, 1961-** इस संशोधन द्वारा धारा 71 में परिवर्तन करके यह व्यवस्था की गई कि राष्ट्रपति या उपराष्ट्रपति के निर्वाचन को इस कारण चुनौती नहीं दी जा सकती क्योंकि निर्वाचक मण्डल में किसी कारण कोई स्थान खाली पड़ा था।

12. **बारहवाँ संशोधन, 1961-** इस संशोधन द्वारा गोवा, दमन तथा दीव के इलाकों को जिनका प्रशासन राष्ट्रपति के अधीन था, संघीय क्षेत्र घोषित करके उन्हें प्रथम अनुसूची में सम्मिलित किया गया। इसके अतिरिक्त राष्ट्रपति को वहाँ की शान्ति और अच्छे प्रशासन के लिए नियम बनाने की शक्ति दी गई।

13. **तेरहवाँ संशोधन, 1962-** इस संशोधन के अन्तर्गत नागालैण्ड के नये राज्य के प्रशासन से सम्बन्धित संसद का कोई भी कानून यदि नागा लोगों के धर्म, सामाजिक प्रथाओं और परम्परागत विधियों के विरुद्ध हो तो वहाँ की विधानसभा की स्वीकृति के बिना लागू नहीं हो सकता।

14. **चौदहवाँ संशोधन, 1962-** (क) इस संशोधन द्वारा पाण्डिचेरी, करीकल, माही और यानाम के इलाकों को पाण्डिचेरी के नाम से भारत में संघीय क्षेत्र के रूप में शामिल किया गया।

(ख) लोकसभा में संघीय क्षेत्रों के सदस्यों की संख्या को 20 से बढ़ाकर 25 कर दिया गया।

(ग) इसकी अतिरिक्त संसद को हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, त्रिपुरा, गोवा, दमन और दीव तथा पाण्डिचेरी के संघीय क्षेत्रों के लिए विधानपालिकायें और मन्त्रिपरिषद् से सम्बन्धित व्यवस्था करने की शक्ति दी गयी।

15. **पन्द्रहवाँ संशोधन, 1963-** इस संशोधन का मुख्य सम्बन्ध न्यायालयों की व्यवस्था से है। इसके द्वारा संविधान की धारा 217 में परिवर्तन करके उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों के सेवानिवृत्त होने की आयु 60 वर्ष से बढ़ाकर 62 वर्ष कर दी गई। उनकी आयु से सम्बन्धित सन्देह या झगड़े का फैसला करने की शक्ति राष्ट्रपति कर दी गई।

धारा 128 में भी परिवर्तन करके मुख्य न्यायाधीश को राष्ट्रपति की पूर्व नियुक्ति से सेवानिवृत्ति होने वाले न्यायाधीशों को सर्वोच्च न्यायालय के अतिरिक्त न्यायाधीश नियुक्ति करने की शक्ति दी गई। राष्ट्रपति उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त हुए ऐसे न्यायाधीशों को भी, जिसमें सर्वोच्च न्यायालय का न्यायाधीश बनने की योग्यता हो, सर्वोच्च न्यायालय की बैठकों में भाग लेने के लिए बुला सकता है।

इस संशोधन द्वारा यह व्यवस्था भी की गई है कि एक उच्च न्यायालय से दूसरी उच्च न्यायालय में बदल जाने वाले न्यायाधीशों को पूरक भत्ते दिये जायें।

उस उच्च न्यायालय को लेख जारी करने का अधिकार प्रदान किया गया है जिसके अधीन क्षेत्र में कोई दुर्घटना हुई हो, भले ही उस घटना में सम्मलित व्यक्ति किसी दूसरे क्षेत्र का रहने वाला हो।

इसके अतिरिक्त इस संशोधन द्वारा संघ लोक सेवा आयोग का अस्थायी अध्यक्ष नियुक्त किये जाने की व्यवस्था की गई, परन्तु ऐसा करना यदि इसलिए आवश्यक हो कि स्थायी अध्यक्ष का स्थान किसी कारण खाली पड़ा है।

16. **सोलहवाँ संशोधन, 1963-** इस संशोधन द्वारा राज्य को भाषण देने और विचार प्रकट करने, इकट्ठे होने और समुदाय बनाने के अधिकार पर उचित प्रतिबन्ध लगाने की शक्ति प्रदान की गई है।

संघीय और प्रान्तीय विधानपालिकाओं, मन्त्रिमण्डलों, न्यायालयों के न्यायाधीशों, लेखाधिकारियों और सरकारी वकीलों के लिए उस शपथ की भाषा निश्चित की गई है जो वे अपने पद संभालते समय लेते हैं और उनके द्वारा भारत की प्रभुसत्ता और अखण्डता को बनाये रखने का संकल्प करते हैं।

17. **सत्रहवाँ संशोधन, 1964-** इस संशोधन द्वारा कई महत्वपूर्ण परिवर्तन किये गये हैं। संविधान की धारा 31A के अन्तर्गत राज्य द्वारा सम्पत्ति छीनने या उससे सम्बन्धित अधिकार छीनने या उन्हें समाप्त करने वाला कोई भी कानून इसलिए अवैध नहीं हो सकता कि वह धारा 15, 19 या 31 के अन्तर्गत प्रदान किये गये अधिकारियों का उल्लंघन करता है या उन्हें सीमित करता है। इस धारा के अन्तर्गत सुरक्षा केवल उन भूमि अधिकारों के बारे में ही प्राप्त थी जो 26 जनवरी, 1950 के दिन सम्पत्तियाँ थीं। शब्द "सम्पत्ति" की परिभाषा हर राज्य में भिन्न थी। राज्यों के पुनर्गठन के बाद उनकी भूमि एक-दूसरे को देते समय शब्द 'भूमि' की परिभाषा में अन्तर आना स्वाभाविक था। इसके अतिरिक्त कई भूमि सुधार में सम्बन्धित कानून ऐसी सूचियों से सम्बन्धित थे जो शब्द 'सम्पत्ति' के अर्थ में नहीं आते थे और इसलिए ऐसे कानून न्यायालयों ने अवैध घोषित कर दिये थे।

इस संशोधन के अन्तर्गत राज्य कोई ऐसी भूमि जबर्दस्ती नहीं ले सकता जिस पर उसका स्वामी स्वयं हल चलाता हो और जो भूमि निर्धारित सीमा के अनुकूल हो। ऐसी भूमि पर बना मकान आदि भी राज्य द्वारा नहीं छीना जा सकता है। ऐसी सम्पत्ति जबर्दस्ती लेने के लिए कानून द्वारा उसका मुआवजा निश्चित करना जरूरी है।

इसी संशोधन द्वारा संविधान की 9वीं अनुसूची में भी परिवर्तन करके उसमें भूमि सुधार सम्बन्धी 44 और कानून सम्मलित कर दिये गये हैं।

17वाँ संशोधन पूर्व प्रभावी तौर पर लागू किया गया।

18. **अट्ठारहवाँ संशोधन, 1966-** इस संशोधन द्वारा संविधान की धारा 31 को और स्पष्ट किया गया। इसके अतिरिक्त शब्द 'राज्य' में संघीय क्षेत्र भी शामिल कर दिये गये हैं। संसद को किसी राज्य या संघीय क्षेत्रों के इलाके मिलाकर नये संघीय क्षेत्र स्थापित करने की शक्ति प्रदान की गई है। उनकी सीमा बदलने व घटाने का अधिकार भी संसद को मिला।

19. **उन्नीसवाँ संशोधन, 1966-** सन् 1962 के आम चुनावों के बाद दिये जाने वाले चुनाव आयोग के सुझाव के अनुसार इस संशोधन द्वारा धारा 244 में परिवर्तन किया गया और



चुनाव सम्बन्धी झगड़ों का फैसला करने वाले न्यायालय समाप्त कर दिये गये जिन्हें इस धारा के अन्तर्गत चुनाव आयोग को स्थापित करने का अधिकार प्राप्त था। राज्य विधानमण्डलों व संसद के चुनावों से सम्बन्धित चुनाव याचिकायें चुनाव आयोग को न जाकर उच्च न्यायालय के पास जायेंगी।

20. **बीसवाँ संशोधन 1966-** उत्तर प्रदेश और कुछ दूसरे राज्यों में जिला न्यायाधीशों की नियुक्ति को सर्वोच्च न्यायालय ने इस आधार पर अवैध घोषित कर दिया था कि वह संविधान की धारा 233 के अनुकूल नहीं था। सर्वोच्च न्यायालय ने इन न्यायाधीशों को नियुक्त करने के अधिकार में उनकी बदली करने का अधिकार निहित माना था, क्योंकि वह अधिकार धारा 255 के अधीन उच्च न्यायालय को प्राप्त है।

बीसवें संशोधन द्वारा पूर्व तौर पर इन नियुक्तियों आदि से सम्बन्धित सब कानून वैध घोषित कर दिये गये हैं।

21. **इक्कीसवाँ संशोधन, 1967-** इस संशोधन द्वारा संविधान की 8वीं अनुसूची में परिवर्तन करके सिन्धी भाषा को भी राष्ट्रीय भाषा मान लिया गया है।

22. **बाइसवाँ संशोधन, 1969-** संशोधन द्वारा संसद को असम राज्य के जनजातीय कबीलों के लिए स्वायत्त राज्य बनाने और उसके लिए विधानपालिका या परिषद् स्थापित करने का अधिकार दिया गया है। संसद को कानून द्वारा ऐसे स्वायत्त राज्य की कार्यपालिका और कर लगाने की शक्ति निर्धारित करने का अधिकार भी दिया गया है।

23. **तेइसवाँ संशोधन, 1970-** इस संशोधन के अनुसार अनुसूचित जातियों और कबीलों के लिए स्थान सुरक्षित रखने और ऐंग्लो इण्डियनों को विधानसभाओं और लोकसभा में मनोनीत किये जाने की अवधि को आगामी 10 वर्ष के लिए 25 जनवरी, 1980 तक और बढ़ा दिया गया।

24. **चौबीसवाँ संशोधन, 1971-** यह संशोधन बिल अगस्त 1971 में संसद द्वारा पास किया गया और 10 प्रान्तों की मंजूरी प्राप्त करने के बाद इस पर 5 नवम्बर, 1971 को राष्ट्रपति के हस्ताक्षर हुए। इसके अनुसार-

(i) *संविधान की व्यवस्था के बावजूद संसद अपनी संवैधानिक शक्ति का प्रयोग करके संविधान के किसी भी भाग को संशोधित करने के लिए उसे बढ़ाकर परिवर्तित कर सकती है।*

(ii) *संसद के दोनों सदनों द्वारा पास किए गए संवैधानिक संशोधन बिल को राष्ट्रपति के लिए अनुमति देना आवश्यक है।*

(iii) *चौबीसवें संशोधन के अन्तर्गत पास किये गये कानून पर संविधान की धारा लागू नहीं होगी, जिसके अनुसार राज्य कोई कानून नहीं बना सकता जो मौलिक अधिकारों को छीने या कम करे। इसी संशोधन द्वारा यह निश्चित किया गया कि संसद मौलिक अधिकारों से सम्बन्धित धाराओं में भी संशोधन कर सकती है परन्तु मौलिक अधिकारों को समाप्त नहीं कर सकती।*

25. **पच्चीसवाँ संशोधन, 1971-** इस संशोधन के अनुसार अधिग्रहण कानून को इस आधार पर किसी न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती कि उसमें अधिग्रहण की गई सम्पत्ति के मुआवजे की राशि का झगड़ा है या उससे धारा 19(1-F) का उल्लंघन होता है।

इसके अतिरिक्त संशोधन द्वारा संविधान में धारा 39(C) बढ़ा दी गई है जिसके अनुसार यदि सरकार निर्देशक तत्त्वों की धारा 39(E & C) को लागू करने के लिए कोई कानून बनाये बगैर उससे संविधान की धारा 14 या धारा 19 से 31 तक किसी धारा का उल्लंघन हो तो ऐसे कानून को न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती।

26. **छब्बीसवाँ संशोधन, 1971-** इस संशोधन द्वारा भूतपूर्व भारतीय रियासतोंके नरेशों के राजकीय भत्ते तथा राजकीय अधिकार समाप्त कर दिये गये हैं।

27. **सत्ताइसवाँ संशोधन, 1971-** इस संशोधन द्वारा मिजोरम के संघीय क्षेत्र को संविधान की धारा 239A में शामिल करके उसके लिए विधानपालिका और मंत्रिपरिषद् स्थापित करने की व्यवस्था की गई है।

28. **अट्ठाइसवाँ संशोधन, 1972-** इस संशोधन द्वारा भारतीय असैनिक सेवाओं (I.C.S.) के अधिकारियों को विदेश यात्रा तथा मुद्रा आदि से सम्बन्धित दिये गये 25 वर्ष पुराने विशेषाधिकार समाप्त करने की व्यवस्था की गई है।

29. **उन्तीसवाँ संशोधन, 1972-** यह संशोधन बिल 26 मई, 1972 को लोकसभा में प्रस्तुत किया गया। इसका उद्देश्य केरल भूमि सुधार (संशोधन) अधिनियम, 1969 तथा 1971 (Kerala Land Reforms (Amendment) Act, 1969 and 1971) को संशोधन की 9वीं अनुसूची में सम्मिलित करके उन्हें संविधान की धारा 34-B के अन्तर्गत सुरक्षा प्रदान करता है। इसकी राष्ट्रपति ने स्वीकृति दे दी है।

30. **तीसवाँ संशोधन, 1972-** इस संशोधन द्वारा यह व्यवस्था की गई कि सर्वोच्च न्यायालय प्रत्येक उस दीवानी मुकदमे की अपील सुन सकती है जिसमें कानून की व्याख्या का प्रश्न निहित हो और जिसे उच्च न्यायालय सर्वोच्च न्यायालय में अपील करने के योग्य समझे। इससे पूर्व उच्च न्यायालय के फैसले के विरुद्ध केवल ऐसे दीवानी मुकदमे की अपील सर्वोच्च न्यायालय में की जा सकती थी जिसका सम्बन्ध कम-से-कम 20,000 रुपये या इससे अधिक राशि या इतने मूल्य की सम्पत्ति का होता था। यह संशोधित कानून आयोग की सिफारिश के आधार पर किया गया।

31. **इकत्तीसवाँ संशोधन, 1972-** इस संशोधन में लोकसभा में राज्यों के प्रतिनिधियों की संख्या 500 से बढ़ाकर 525 तथा संघीय क्षेत्रों के प्रतिनिधियों की संख्या 23 से घटाकर 20 कर दी गई। इस प्रकार लोकसभा के सदस्यों की संख्या 525 से बढ़ाकर 545 हो गई।

इसके अतिरिक्त इस संशोधन द्वारा अनुच्छेद 330 में यह परिवर्तन किया गया कि असम के कबीलाई इलाकों और नागालैण्ड के अनुसूचित कबीलों के साथ-साथ मेघालय, अरुणाचल प्रदेश तथा मिजोरम के अनुसूचित कबीलों के लिए भी लोकसभा में स्थान सुरक्षित नहीं रखे जायेंगे। इनके अतिरिक्त अन्य अनुसूचित कबीलों के लिए स्थान सुरक्षित रखने की व्यवस्था बनी रहेगी।

इसी प्रकार अनुच्छेद 232 में संशोधन करके यह व्यवस्था कर दी गई कि असम के कबीलाई इलाकों तथा नागालैण्ड के अनुसूचित कबीलों की भाँति मेघालय के अनुसूचित कबीलों के लिए भी राज्य विधानसभाओं में स्थान नहीं रखे जायेंगे।

32. **बत्तीसवाँ संशोधन, 1973-** इस संशोधन के द्वारा आन्ध्र प्रदेश के सन्तुलित विकास के लिए केन्द्रीय सरकार की योजना लागू की गई तथा इस उद्देश्य के लिए दो नये अनुच्छेद 371-D और 371-E संविधान में सम्मिलित किये गये। इन अनुच्छेदों का उद्देश्य आन्ध्र प्रदेश



के विभिन्न भागों में रहने वाले लोगों को विशेष सुविधाएं देना है। इस संशोधन के अन्तर्गत राष्ट्रपति के आदेश द्वारा आन्ध्र प्रदेश के स्थानीय लोगों के लिए सरकारी नौकरियों और शिक्षा संस्थाओं में शिक्षा प्राप्त करने के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान करना है। इसी प्रकार वह आन्ध्र प्रदेश में प्रशासकीय ट्रिब्यूनल स्थापित कर सकता है। संसद आन्ध्र प्रदेश के लिए कानून द्वारा एक विश्वविद्यालय स्थापित कर सकती है। मुल्की निगम को समाप्त किया गया।

इस प्रकार इस संशोधन द्वारा अलग तेलंगाना राज्य की स्थापना के लिए चलाये गये आन्दोलन को समाप्त कर दिया गया।

33. **तैंतीसवाँ संशोधन, 1974-** इस संशोधन का उद्देश्य विधानमण्डलों के सदस्यों से जबर्दस्ती त्यागपत्र दिलवाने को रोकना है (जैसे बिहार तथा गुजरात आन्दोलनों के दौरान किया गया)। इस संशोधन के अधीन स्पीकर या संभा का अध्यक्ष किसी सदस्य से जबर्दस्ती दिलाये गये त्यागपत्रों को स्वीकार करने से इन्कार कर सकता है, यदि जाँच करवाने पर उसे यह विश्वास हो जाये कि त्यागपत्र ऐच्छिक या वास्तविक नहीं हैं।

34. **चौतीसवाँ संशोधन, 1974-** इस संशोधन द्वारा संविधान की 9वीं अनुसूची में और कानून सम्मिलित किये गए। इस अनुसूची में पहले 66 कानून थे जिसकी संख्या इस संशोधन के बाद 88 हो गई। इन कानूनों को किसी उच्च या सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती।

35. **पैंतीसवाँ संशोधन, 1974-** इस संशोधन द्वारा सिक्किम को भारतीय संघ में एक सह-राज्य का दर्जा दिया गया तथा इसे लोकसभा व राज्यसभा में एक-एक प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दिया गया। राज्यसभा के सदस्य का चुनाव सिक्किम की विधानसभा द्वारा तथा लोकसभा के सदस्य का चुनाव प्रत्यक्ष रूप से सिक्किम के लोगों द्वारा किये जाने की व्यवस्था की गई।

परन्तु यह संशोधन तुरन्त ही 36वें संशोधन द्वारा रद्द हो गया।

36. **छत्तीसवाँ संशोधन, 1975-** यह संशोधन सिक्किम सभा के प्रस्ताव पर, जिसमें सिक्किम में करवाये गये जनमत को संसद द्वारा स्वीकृति दी गई, पास किया गया। यह संशोधन 26 अप्रैल, 1975 को संसद के दोनों सदनों द्वारा पास होने की तिथि से लागू हो गया।

36वें संशोधन द्वारा संविधान की पहली अनुसूची में सिक्किम राज्य और उसके क्षेत्र को 22वें राज्य के रूप में सम्मिलित किया गया। इसके अतिरिक्त संविधान में एक नया अनुच्छेद 371F दर्ज किया गया जिसमें सिक्किम के राज्य से सम्बन्धित आवश्यक व्यवस्थाएं की गईं। सिक्किम राज्य के लिए कम-से-कम तीन सदस्यों की विधानसभा बनाये जाने की व्यवस्था की गई जिसका कार्यकाल 26 अप्रैल, 1975 से आरम्भ होकर 4 वर्ष निश्चित किया गया (42वें संशोधन द्वारा यह कार्यकाल 4 वर्ष से बढ़ाकर 5 वर्ष किया गया है)। यह विधानसभा भारत के दूसरे राज्यों की विधानसभाओं की भाँति कार्य करेगी। 36वें संशोधन द्वारा सिक्किम के गवर्नर को वहाँ के विभिन्न वर्गों के लोगों के सामाजिक और आर्थिक विकास को विश्वसनीय बनाने के लिए तथा राज्य में शान्ति स्थापित करने के लिए विशेष शक्तियाँ दी गई हैं। इसके अतिरिक्त सिक्किम में स्थापित उच्च न्यायालय तथा प्रचलित कानूनों को वैसे ही रहने दिया गया। सिक्किम के कानूनों में भारतीय संविधान के उपबन्धों के अनुकूल बनाने के लिए राष्ट्रपति को दो वर्ष तक के लिए आदेश जारी करने का भी अधिकार दिया गया। अनुच्छेद 371-F में वर्णित व्यवस्थाओं को लागू करने के रास्ते में आने वाली कठिनाइयों को दूर करने के लिए भी राष्ट्रपति दो वर्ष

तक के लिए आदेश जारी कर सकता है। (राष्ट्रपति का यह अधिकार 25 अप्रैल, 1977 को समाप्त हो गया)।

37. **सैंतीसवाँ संशोधन, 1975-** इस संशोधन द्वारा अनुच्छेद 371-A के अधीन यह व्यवस्था की गई कि संसद, कानून द्वारा अरुणाचल प्रदेश के संघीय क्षेत्र के लिए विधानमण्डल या मन्त्रिपरिषद् अथवा दोनों की व्यवस्था कर सकती है।

38. **अड़तीसवाँ संशोधन, 1975-** इस संशोधन के अन्तर्गत यह व्यवस्था की गई है कि अनुच्छेद 123 के अधीन राष्ट्रपति यदि अपनी सन्तुष्टि हो जाने पर कोई अध्यादेश जारी कर दे तो उसे किसी न्यायालय में उसी सन्तुष्टि के आधार पर चुनौती नहीं दी जा सकती। इसी प्रकार अनुच्छेद 213 के अधीन किसी राज्य के राज्यपाल अथवा किसी संघीय क्षेत्र के प्रशासन द्वारा जारी किये गये अध्यादेशों को भी इसी आधार पर न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती कि उन्हें जारी करने की कोई आवश्यकता नहीं थी।

इसके अतिरिक्त इस संशोधन के अन्तर्गत राष्ट्रपति भिन्न-भिन्न आधारों पर विभिन्न संकटकालीन घोषणाएं जारी कर सकता है अर्थात् किसी एक आधार पर जारी की गई संकटकालीन घोषणा के दौरान किसी दूसरे आधार पर भी एक और संकटकालीन घोषणा जारी की जा सकती है। ऐसी घोषणा जारी करने के लिए राष्ट्रपति की निजी सन्तुष्टि ही काफी है और इसे किसी न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती।

39. **उन्तालीसवाँ संशोधन, 1975-** इस संशोधन के अन्तर्गत राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री तथा स्पीकर के चुनाव सम्बन्धी झगड़ों का निर्णय करने की उच्च न्यायालयों तथा सर्वोच्च न्यायालयों की शक्ति समाप्त कर दी गई है। इन झगड़ों का निर्णय करने के लिए संसद कानून द्वारा एक विशेष संस्था की स्थापना कर सकती है और इसकी शक्तियाँ और कार्य-क्षेत्र निश्चित कर सकती है। संसद द्वारा इस सम्बन्ध में पास किये कानून की चुनौती नहीं दी जा सकती है।

इसके अतिरिक्त इस संशोधन द्वारा संविधान की नौवीं अनुसूची में कई और कानून (जिसमें MISA भी सम्मिलित है) दर्ज कर लिये गये हैं और इस प्रकार आज भी न्यायालय में चुनौती दिये जाने से मुक्त कर दिया गया है।

40. **चालीसवाँ संशोधन, 1976-** इस संशोधन के अधीन संसद को समुद्री सीमा, महाद्वीप की तट भूमि तथा अन्य समुद्री क्षेत्र निश्चित करने के लिए कानून बनाने की शक्ति दी गई। इसके अतिरिक्त इस संशोधन द्वारा संविधान की नौवीं अनुसूची में 64 और कानून सम्मिलित कर लिये गये जिससे इस अनुसूची में कुल 148 कानून हो गये जिन्हें किसी भी न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती।

41. **इकतालीसवाँ संशोधन, 1976-** इस संशोधन द्वारा राज्य लोक सेवा आयोग के सदस्यों के सेवानिवृत्त होने की आयु 60 वर्ष से बढ़ाकर 62 वर्ष कर दी गई।

42. **बयालीसवाँ संशोधन, 1976-** संविधान का 42वाँ संशोधन, जिसे 18 दिसम्बर, 1976 को राष्ट्रपति ने आधे से अधिक विधानमण्डलों द्वारा स्वीकृत किये जाने के बाद अनुमति दी। हमारे संविधान में किये गये संशोधन में यह सबसे विस्तृत और उल्लेखनीय संशोधन है। इस संशोधन का प्रभाव संविधान के अन्तर्गत की गई लगभग हर व्यवस्था पर पड़ा है। इस संशोधन में 59 धाराएं हैं-

इस संशोधन में मुख्य रूप से निम्नलिखित बातों की व्यवस्था है-



(i) *राष्ट्रपति के लिए मन्त्रिपरिषद की सलाह मानना आवश्यक बनाने,*
(ii) *लोकसभा और विधानसभाओं का कार्यकाल 6 वर्ष करने,*
(iii) *संसद की सर्वोच्चता कायम करने,*
(iv) *उद्देश्यिका या प्रस्तावना में समाजवादी, पन्थ निरपेक्षता शब्द बढ़ाने,*
(v) *केन्द्र-राज्य सम्बन्धों में परिवर्तन करने,*
(vi) *भौतिक अधिकारों के ऊपर राज्य के नीति-निर्देशक सिद्धान्तों को प्रमुखता देने,*
(vii) *मौलिक कर्त्तव्यों की सूची को संविधान में शामिल करने,*
(viii) *न्यायपालिका की न्यायिक पुनर्निरीक्षण की शक्ति को निष्प्रभावी बनाने, और*
(ix) *राज्यों में सशस्त्र सेनाएं भेजने तथा देश के किसी एक भाग में आपात स्थिति लागू करने आदि। भूतपूर्व महान्यायवादी सी.के. दफ्तरी और एन.ए. पालकीवाला जैसे कानून शास्त्रियों ने इस संवैधानिक संशोधन कानून को प्रधानमन्त्री पद में पूरी राज्य सत्ता को निहित करना बताया था।*

43. **तैंतालीसवाँ संशोधन, 1978-** जनता सरकार ने अपनी चुनावी घोषणा के अनुसार एक 43वाँ संशोधन बिल पेश किया, परन्तु राज्यसभा के विरोध के कारण उसे वापस लेना पड़ा। इसलिए 44वाँ संशोधन बिल पेश किया गया जिसे 13 अप्रैल, 1978 को स्वीकृति मिल गई और जो संविधान का 43वाँ संशोधन बन गया। इस संशोधन में 10 धाराएं हैं और इसने निम्न व्यवस्थाएं की हैं-

(i) *42वें संशोधन द्वारा निर्मित 31D धारा को समाप्त कर दिया जिसके अनुसार संसद राष्ट्र-विरोधी गतिविधियों के लिए कानून बना सकती है।*
(ii) *सर्वोच्च न्यायालय के लिए संसद के कानूनों की वैधानिकता को देखने के लिए जो कम-से-कम 7 न्यायाधीशों की पीठ की व्यवस्था 42वें संशोधन द्वारा की गई थी, वह समाप्त कर दी गई है।*
(iii) *उच्च न्यायालयों के लिए कानूनों की वैधानिकता देखने के लिए जो 5 न्यायाधीशों की पीठ की व्यवस्था थी, वह समाप्त कर दी गई है।*

44. **चौवालीसवाँ संशोधन, 1979-** जनता दल की सरकार ने, जिसने कि मार्च 1977 के लोकसभा चुनाव में सत्ता प्राप्त की थी, अपने चुनाव घोषणा-पत्र में कांग्रेस सरकार द्वारा पारित 42वें संशोधन को समाप्त करने का जनता को आश्वासन दिया था। उसी के अनुसार पैंतालीसवाँ संशोधन बिल मई, 1978 में लोकसभा में पेश किया गया था, उसने इस संशोधन की कुछ धाराओं को अस्वीकृत करके शेष बिल पास कर दिया जो दोबारा लोकसभा द्वारा पास किया गया। तत्पश्चात् संविधान की व्यवस्था के अनुसार इस बिल को 12 राज्यों की विधानसभाएं ने स्वीकृति दे दी। 30 अप्रैल, 1979 को राष्ट्रपति की स्वीकृति प्राप्त करने के बाद यह पैंतालीसवाँ संशोधन बिल संविधान का 44वाँ संशोधन बन गया। इस संशोधन के अन्तर्गत सम्पत्ति के अधिकार को कानूनी अधिकार बना दिया गया है। किसी व्यक्ति को उसकी सम्पत्ति से कानून के अनुसार ही वंचित किया जा सकता है। राष्ट्रपति अनुच्छेद 352 के अन्तर्गत तभी संकटकाल की घोषणा कर सकता है यदि मन्त्रिमण्डल राष्ट्रपति को संकटकाल की घोषणा करने की लिखित सलाह दे। संकटकाल की घोषणा तभी की जा सकती है, यदि भारत को अथवा भारत के किसी भाग की सुरक्षा को युद्ध अथवा बाहरी आक्रमण अथवा सशस्त्र विद्रोह से खतरा हो। जीवन और स्वतन्त्रता के अधिकारों को सुरक्षित बनाने के लिए यह व्यवस्था की गई कि संकटकाल में

भी इन अधिकारों के सम्बन्ध में न्यायालय में अपील करने के अधिकार को स्थगित नहीं किया जा सकता। राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के चुनाव से सम्बन्धित सभी सन्देह और विवादों के बीच तथा निर्णय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा किये जायेंगे और सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय अन्तिम होगा। लोकसभा और राज्य विधानसभाओं की अवधि 6 वर्ष से घटाकर 5 वर्ष किये जाने की व्यवस्था है।

45. **पैंतालीसवाँ संशोधन, 1980-** इस संशोधन के द्वारा अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और एंग्लो इण्डियन के लिए 1990 तक लोकसभा, राज्यसभा तथा राज्य की विधानसभाओं में स्थान सुरक्षित किये गये हैं।

46. **छियालीसवाँ संशोधन, 1982-** 46वाँ संशोधन बिल लोकसभा ने 14 जुलाई, 1982 को और राज्यसभा ने 10 अगस्त, 1982 को पास किया। बिक्री कर वसूली में कुछ खामियों को दूर करने के उद्देश्य से 46वाँ संशोधन पास किया गया। इस संशोधन में सर्वोच्च न्यायालय के निर्णयों के कारण कुल कारोबार पर बिक्री कर की वसूली बाधाओं को दूर करने की व्यवस्था है।

47. **सैंतालीसवाँ संशोधन, 1984-** संविधान में 47वाँ संशोधन सन् 1984 में पास किया गया। इसके द्वारा असम, बिहार, हरियाणा, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बंगाल के 14 भूमि संशोधन कानूनों को संविधान की नौवीं अनुसूची में शामिल किया गया ताकि उनके सम्बन्ध में कोई मुकदमा न चलाया जा सके।

48. **अड़तालीसवाँ संशोधन, 1984-** यह संशोधन सन् 1984 में पंजाब की तत्कालीन राजनीतिक स्थिति के कारण किया गया। पंजाब में राष्ट्रपति शासन 6 अक्टूबर, 1983 को लागू किया गया था और उसकी एक वर्ष की अवधि 5 अक्टूबर, 1984 को समाप्त हो जानी थी। एक संशोधन द्वारा संविधान के अनुच्छेद 356 में संशोधन करके पंजाब में राष्ट्रपति शासन की अवधि एक वर्ष और बढ़ा दी गयी।

49. **उनचासवाँ संशोधन, 1984-** यह संशोधन सितम्बर, 1984 में पास किया गया। इस संशोधन के द्वारा त्रिपुरा राज्य के कुछ क्षेत्रों को छठी अनुसूची में शामिल कर दिया गया है जिनके अनुसार कुछ जनजातीय क्षेत्रों को स्वशासित जिलों तथा स्वशासित प्रदेशों का स्तर दिया गया है।

50. **पचासवाँ संशोधन, 1984-** इस संशोधन द्वारा कुछ पुलिस दलों, कार्यालयों अथवा संस्थाओं के गुप्तचर या प्रति-गुप्तचर कार्य में अथवा दूरसंचार के कार्य में लगे कार्यकर्त्ताओं को अनुच्छेद 33 के भाग III में शामिल कर दिया है।

51. **इक्यावनवाँ संशोधन, 1984-** इस संशोधन द्वारा संविधान की धारा 330 तथा 332 में संशोधन किया गया। धारा 330 में संशोधन करके मेघालय, नागालैण्ड, अरुणाचल प्रदेश तथा मिजोरम की अनुसूचित जातियों को लोकसभा में आरक्षण प्रदान किया गया। धारा 332 में संशोधन करके नागालैण्ड तथा मेघालय की विधानसभाओं में जनजातियों के लिए आरक्षण की व्यवस्था की गई।

52. **बावनवाँ संशोधन, 1985-** यह संशोधन दल-बदल की बुराई को समाप्त करने के लिए किया गया। इसके मुख्य प्रावधान निम्नलिखित हैं-



(क) *यदि संसद अथवा राज्य विधानमण्डल का कोई सदस्य स्वेच्छा से उस राजनैतिक दल से त्यागपत्र देता है जिसके टिकट और चुनाव चिन्ह पर वह निर्वाचित हुआ है तो उसकी सदन की सदस्यता समाप्त हो जायेगी।*

(ख) *यदि कोई निर्वाचित सदस्य अपने राजनीतिक दल को छोड़कर किसी अन्य राजनीतिक दल में शामिल हो जाता है, तो उसकी सदस्यता समाप्त हो जायेगी।*

(ग) *यदि कोई निर्वाचित सदस्य सदन में अपने दल के अधिकारों के निर्देशों की अवहेलना करता है अथवा उसकी अनुमति के बिना सदन में मतदान के समय अनुपस्थित रहता है तो उसकी सदस्यता समाप्त हो जायेगी।*

(घ) *यदि कोई निर्दलीय निर्वाचित सदस्य किसी राजनीतिक दल में शामिल होता है तो उसकी सदस्यता समाप्त समझी जाएगी।*

(ङ) *यदि कोई मनोनीत सदस्य शपथ ग्रहण करने के 6 महीने बाद किसी राजनीतिक दल में शामिल हो जाये तो उसकी सदस्यता समाप्त हो जायेगी।*

**अपवाद-** निम्नलिखित परिस्थितियों में सदस्य का दल बदलना नहीं समझा जायेगा और उसकी सदस्यता समाप्त नहीं होगी-

(क) *किसी दल में फूट के कारण उसके $\frac{1}{3}$ सदस्य दल को छोड़ दें।*

(ख) *किसी दल के किसी अन्य दल में विलय की स्थिति में दल के कम-से-कम $\frac{2}{3}$ सदस्य उसकी स्वीकृति दें।*

दल-बदल के सम्बन्ध में उठे किसी भी प्रश्न पर अन्तिम निर्णय सदन के अध्यक्ष का होगा तथा किसी भी न्यायालय को उसमें हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं होगा।

53. **तिरेपनवाँ संशोधन, 1986-** इस संशोधन के द्वारा मिजोरम को पूर्ण राज्य का दर्जा दिया गया और उसकी सांस्कृतिक विशिष्टता को बनाए रखने की दृष्टि से विशेष स्थिति प्रदान की गई।

54. **चौवनवाँ संशोधन, 1986-** इस संशोधन द्वारा सर्वोच्च न्यायालय तथा उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों के वेतन में वृद्धि की गई। सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश का मासिक वेतन 10,000 रुपये तथा अन्य न्यायाधीशों के मुख्य न्यायाधीश के वेतन 9,000 रुपये मासिक तथा अन्य न्यायाधीशों का वेतन 8,000 रुपये मासिक कर दिया गया।

55. **पचपनवाँ संशोधन, 1986-** इस संशोधन के द्वारा अरुणाचल प्रदेश को राज्य का दर्जा दिया गया और उसके राज्यपाल को कुछ विशेषाधिकार दिये गये।

56. **छप्पनवाँ संशोधन, 1987-** इस संशोधन द्वारा गोवा को राज्य का दर्जा दिया गया।

57. **सत्तावनवाँ संशोधन, 1988-** इस संशोधन के द्वारा गोआ राज्य की विधानसभा के सदस्यों की संख्या 40 निश्चित की गई और यह कहा गया कि दमन व दीव के सदस्य अलग हो जायेंगे।

58. **अट्ठावनवाँ संशोधन, 1987-** इस संशोधन के द्वारा संविधान की धारा 330 तथा 322 में संशोधन करते हुए अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, मिजोरम तथा नागालैण्ड में जनजातियों के लिए आरक्षण की व्यवस्था की गई। यह व्यवस्था 2010 ई. तक चलेगी।

59. **उनसठवाँ संशोधन, 1988-** यह संशोधन पंजाब में धारा 352 को लागू करने के लिए किया गया। इसमें बाहरी आक्रमण, सशस्त्र विद्रोह के साथ आन्तरिक गड़बड़ी को भी जोड़ दिया गया।

60. **साठवाँ संशोधन, 1988-** इस संशोधन द्वारा व्यावसायिक कर की दरों में कुछ परिवर्तन किया गया।

61. **इकसठवाँ संशोधन, 1989-** इस संशोधन को संसद ने 1988 में संविधान के 62वें संशोधन के रूप में पेश किया था, परन्तु पास होने पर यह 61वाँ संशोधन बना। इसके अनुसार लोकसभा तथा राज्यों की विधानसभाओं के चुनाव के लिए मतदान की आयु 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष कर दी गई है।

62. **बासठवाँ संशोधन, 1990-** इस संशोधन के द्वारा लोकसभा एवं विधानसभाओं में अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लिए सीटों का आरक्षण अगले 10 वर्ष के लिए बढ़ा दिया गया है। यह आरक्षण 2000 तक कर दिया गया है।

63. **तिरेसठवाँ संशोधन, 1990-** इस संशोधन के द्वारा पंजाब में राष्ट्रपति शासन की अवधि तीन वर्ष समाप्त होने के बाद 6 महीने और बढ़ाने के लिए पास किया गया।

64. **चौसठवाँ संशोधन, 1990-** इस संशोधन के द्वारा पंजाब में राष्ट्रपति शासन की अवधि अगले 6 महीने के लिए बढ़ाई गई।

65. **पैंसठवाँ संशोधन, 1990-** राज्यों के 55 भूमि सीमा कानूनों को संविधान की 9वीं सूची में शामिल किया गया है।

66. **छियासठवाँ संशोधन, 1990-** इस संशोधन द्वारा विभिन्न राज्यों के 55 भूमि सीमा कानूनों को संविधान की 9वीं सूची में शामिल कर दिया गया ताकि इन कानूनों की वैधता को न्यायालय में चुनौती दी जा सके।

67. **सड़सठवाँ संशोधन, 1990-** पंजाब में 10 नवम्बर, 1990 को समाप्त हो रहे राष्ट्रपति शासन को अगले 6 महीने तक बढ़ाने के लिए यह संवैधानिक संशोधन लागू किया गया।

68. **अड़सठवाँ संशोधन, 1991-** इस संशोधन के द्वारा पंजाब में राष्ट्रपति शासन की अवधि एक वर्ष तक और लागू करने की व्यवस्था की गई अर्थात् अब पंजाब में 5 वर्ष तक राष्ट्रपति शासन लागू किया जा सकता है।

69. **उनहत्तरवाँ संशोधन, 1991-** इन संशोधन के द्वारा संघ क्षेत्र दिल्ली में विधानसभा एवं मन्त्रिमण्डल की व्यवस्था की गई।

70. **सत्तरवाँ संशोधन, 1992-** इस संशोधन द्वारा अनुच्छेद 54 और 55 में राज्य शब्द के अन्तर्गत राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली और संघीय क्षेत्र पाण्डिचेरी को शामिल किया गया है। इसके अनुसार दिल्ली के लिए 70 सदस्यीय विधानसभा तथा 7 सदस्यीय मन्त्रिपरिषद की व्यवस्था की गई।

71. **इकहत्तरवाँ संशोधन, 1992-** इस संशोधन द्वारा कोंकणी, मणिपुर और नेपाली भाषाओं को राज्य भाषाओं के रूप में संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल कर दिया गया।

72. **बहत्तरवाँ संशोधन, 1992-** इस संशोधन द्वारा त्रिपुरा की विधानसभा में 20 सीटें अनुसूचित कबीलों के लिए आरक्षित की गईं।



73. **तिहत्तरवाँ संशोधन, 1992-** इस संशोधन द्वारा पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया गया। इन संस्थाओं में अनुसूचित जातियों तथा महिलाओं के लिए स्थान सुरक्षित रखने की व्यवस्था की गई।

74. **चौहत्तरवाँ संशोधन, 1992-** इस संशोधन द्वारा शहरी स्थानीय संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया गया।

75. **पिचहत्तरवाँ संशोधन, 1992-** इस संशोधन द्वारा राज्य स्तर पर भवन किराया ट्रिब्यूनल की स्थापना की व्यवस्था की गई।

76. **छियत्तरवाँ संशोधन, 1994-** इस संशोधन द्वारा संविधान की नौवीं अनुसूची में संशोधन कर तमिलनाडु में पिछड़े वर्गों के लिए राज्य में 69% के आरक्षण का प्रावधान सरकारी सेवाओं में कर दिया गया।

77. **सतत्तरवाँ संशोधन, 1994-** इस संशोधन द्वारा अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों के उम्मीदवारों के लिए सरकारी नौकरियों में आरक्षण के साथ-साथ पदोन्नति के मामले में भी आरक्षण की व्यवस्था की गई।

78. **अठहत्तरवाँ संशोधन, 1994-** इस संशोधन द्वारा राज्यों की कुछ भूमि सुधार कानूनों को संविधान की नौवीं अनुसूची में रखा गया।

79. **उनासीवाँ संशोधन 2000-** इस संशोधन के अनुसार अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के लिए स्थान सुरक्षित रखने की व्यवस्था को और 10 वर्ष के लिए (25 जनवरी, 2010) तक बढ़ा दिया गया है। इस विधेयक को 24 जनवरी, 2000 को राष्ट्रपति द्वारा स्वीकृति प्रदान की गई है।

80. **अस्सीवाँ संशोधन-** इस संशोधन के अनुसार माल विक्रय या क्रय पर केन्द्रीय सरकार द्वारा जो कर लगाए जाएंगे एवं इकट्ठे किये जायेंगे, वे राज्यों को सौंपे जायेंगे।

81. **इक्यासीवाँ संशोधन, 2000-** इस संशोधन द्वारा संविधान के अनुच्छेद 16 में एक नया खण्ड (4ख) जोड़ा गया। इसके द्वारा अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों तथा पिछड़े वर्गों के लिए सरकारी नौकरियों में 50% तक आरक्षण की सीमा को समाप्त कर दिया गया है।

82. **बयासीवाँ संशोधन, 2000-** इस संशोधन द्वारा अनुच्छेद 335 में यह व्यवस्था की गई कि यह अनुच्छेद केन्द्र अथवा राज्य की सेवाओं में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के लिए परीक्षा में अर्हता अंकों में छूट देने अथवा पदोन्नति के लिए मूल्यांकन के मापदण्ड में रियायत देने के लिए की गई व्यवस्था को संविधान के अनुच्छेद 335 का कोई भी प्रावधान राज्य को नहीं रोक सकेगा।

83. **तिरासीवाँ संशोधन, 2000-** इस संशोधन द्वारा अनुसूचित जाति व जनजातियों से सम्बन्धित 83वाँ संविधान संशोधन विधेयक अगस्त 2000 में संसद के दोनों सदनों ने पारित किया। इस विधेयक के तहत आदिवासी बहुल अरुणाचल प्रदेश को पंचायती राज संस्थाओं में अनुसूचित जाति के लिए आरक्षण का प्रावधान न करने की छूट प्रदान की गई है। अरुणाचल प्रदेश में कोई भी अनुसूचित जाति न होने के कारण उसे यह छूट प्रदान की गई है। इस संविधान संशोधन विधेयक को लोकसभा ने 22 अगस्त, 2000 को पारित किया।

84. **चौरासीवाँ संशोधन, 2000-** इस संविधान संशोधन के तहत भारतीय मानचित्र पर तीन नये राज्यों-छत्तीसगढ़, उत्तरांचल एवं झारखण्ड का सृजन हुआ। राष्ट्रपति ने इन नये राज्यों के सृजन सम्बन्धी विधेयक को 28 अगस्त, 2000 को अपनी स्वीकृति प्रदान की।

85. **पिच्चासीवाँ संशोधन, 2002-** सरकारी नौकरी में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजातियों के कर्मचारियों की पदोन्नति में आरक्षण की व्यवस्था की गयी है।

86. **छियासीवाँ संशोधन, 2002-** संसद ने 6 से 14 वर्ष तक की आयु के बालक-बालिकाओं के लिए निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा देने का प्रावधान किया है।

**प्रश्न 6 शाश्वत राष्ट्र के रूप में भारत (इण्डिया) को परिभाषित कीजिए।**

**उत्तर-** राष्ट्र राज्य की अवधारणा का उदय यूरोप में 15वीं सदी के बाद हुआ था। राष्ट्रवाद शब्द का उदय भी इसी सन्दर्भ में हुआ था। यहाँ 'वाद' प्रत्यय का उपयोग एक प्रकार के विचारों को इंगित करता है जिन्हें ताकत के आधार पर प्रसारित और अमल में लाया गया। वैदिक पृष्ठभूमि से 'राष्ट्र' शब्द सम्बन्ध रखता है। एक ओर जहाँ पश्चिमी राष्ट्रवाद राज्य की शक्ति से सम्बन्ध रखता है वहीं राष्ट्र की भारतीय अवधारणा जीवन के भू-सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़ी है। इनमें किसी पर कुछ थोपने या उत्पीड़न से जुड़ा कोई विचार दूर-दूर तक नहीं है। अतः भारतीय संघर्ष मे राष्ट्रवाद या 'नेशनलिज्म' जैसे शब्द अप्रासंगिक हो जाते हैं। वस्तुतः यहाँ राष्ट्र या राष्ट्रीयता जैसे सन्दर्भ मिलते हैं। इसलिए भारत की राष्ट्रीयता जैसा वाक्य प्रयोग में लाना उचित है।

भारतीय विचारधारा के अनुसार राष्ट्र का अर्थ है आमजन। इसका अर्थ किसी स्थान विशेष पर रहने वाले लोगों की गिनती नहीं बल्कि उनके जीवन के प्रति दृष्टिकोण, प्रकृति और ब्रह्माण्ड के साथ उनका सम्बन्ध, इतिहास एवं परम्परा आदि के प्रति उनका सम्बन्ध और रुझान होता है। संक्षेप में कहें तो यहाँ मतलब समूचे समाज पर असर डालने और उसका स्वरूप गढ़ने वाली चीजों से है।

भारतभूमि पर रहने वाले सभी लोग जो हिमालय से हिन्द महासागर तक फैले हैं, विभिन्न भाषा-भाषी जातियों, इष्टदेवों, अर्चना विधियों, खानपान की आदतों, परिधानों आदि के बावजूद जीवन, आदर्शों, प्रकृति, समाज और समूची मानव जाति के प्रति समान विचार रखते हैं। हजारों वर्षों से इस दृष्टिकोण का एक संस्कृति के तौर पर पोषण और अभ्यास किया गया है, जो समाज को एकसूत्र में बाँधे रखता है, यही सूत्रबद्धता भारत को राष्ट्र का दर्जा देती है। विविधता में एकता दर्शाने वाली आध्यात्मिकता एकीकृत और संपूर्ण विश्वदृष्टि ही भारत राष्ट्र की पहचान है।

शाश्वत (हमेशा रहने वाले) राष्ट्र के रूप में भारत को भारतीय संविधान की प्रस्तावना (उद्देशिका) में इस प्रकार परिभाषित किया गया है-

"हम भारत के लोग, भारत को एक सम्पर्ण प्रभुत्व सम्पन्न समाजवादी, पंथ निरपेक्ष लोकतन्त्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतन्त्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त करने के लिए तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता सुनिश्चित करने वाली बन्धुता बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प होकर इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई. को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।"



संविधान की इस प्रस्तावना के मुख्य लक्षण जो भारत को शाश्वत राष्ट्र के रूप में परिभाषित करते हैं, वे हैं-

1. *संविधान का स्रोत जनता है।*
2. *शासन के ध्येयों की घोषणा*
3. *सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न*
4. *लोकतन्त्रात्मक संविधान*
5. *गणराज्य*
6. *न्याय*
7. *स्वतन्त्रता*
8. *पंथनिरपेक्षता*
9. *समता*
10. *राष्ट्रीय एकता*

उच्चतम न्यायालय ने केशवानन्द भारती बनाम केरल राज्य के मामले में यह अभिनिर्धारित किया कि उद्देशिका संविधान का भाग है अतः इसमें संशोधन किया जा सकता है किन्तु न्यायालय ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि उद्देशिका के इस भाग में संशोधन नहीं किया जा सकता जो आधारभूत ढाँचे (बेसिक स्ट्रक्चर) से सम्बन्धित है।

यह प्रस्तावना (उद्देशिका) इस सन्दर्भ में भारत को एक शाश्वत (हमेशा रहने वाले)) राष्ट्र के रूप में परिभाषित करती है।

## इकाई-दो

**प्रश्न 1 सन् 1956 में राज्यों के पुनर्गठन पर आलेख लिखिए।**

**उत्तर-** 26 जनवरी, 1950 को भारतीय संविधान लागू किया गया, इसके बाद दिसम्बर, 1953 में राज्य पुनर्गठन आयोग गठित किया गया तथा 31 अगस्त, 1956 में संसद द्वारा राज्य पुनर्गठन अधिनियम लागू किया गया। इस अधिनियम में भाषाई आधार पर राज्यों और क्षेत्रों की सीमाओं को व्यवस्थित करने के लिए भारत सरकार द्वारा उठाए गए कदम शामिल थे और यह देश की राज्यों और क्षेत्रीय सीमाओं के एक महत्त्वपूर्ण सुधार का प्रतिनिधित्व करता है।

**राज्य पुनर्गठन आयोग 1953-** भारत के स्वतन्त्र होने के बाद भारत सरकार ने अंग्रेजी राज के दिनों के राज्यों को भाषायी आधार पर पुनर्गठित करने के लिए राज्य पुनर्गठन आयोग की स्थापना की। 1950 के दशक में बने पहले राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिश में राज्यों के बँटवारे का आधार भाषाई था। इसके पीछे तर्क दिया गया कि स्वतन्त्रता आन्दोलन में यह बात उठी थी कि जनतन्त्र में प्रशासन को आम लोगों की भाषा में काम करना चाहिए, ताकि प्रशासन लोगों के नजदीक आ सके।

अंग्रेजों के शासन से पहले भारत 21 प्रशासनिक इकाइयों (सूबों) में बँटा हुआ था। इनमें से कई सूबों की सांस्कृतिक पहचान सुस्पष्ट थी और कुछ में संस्कृतियों का मिश्रण था। किन्तु भारत को अपना उपनिवेश बनाने के बाद अंग्रेजों ने प्रशासनिक सुविधा का ख्याल करते हुए मनमाने तरीके से भारत को नए सिरे से बड़े-बड़े प्रान्तों में बाँटा। इससे बहुभाषी व बहुजातीय प्रान्त निर्मित हुए। इतिहासकारों की मान्यता है कि भले ही इन प्रान्तों को 'फूट डालो और राज

करो' के हथकण्डे का इस्तेमाल करके नहीं बनाया गया था, पर उनमें अपनी सत्ता टिकाए रखने के लिए अंग्रेजों ने इस नीति का जम कर उपयोग किया।

सन् 1947 में भारत को आजादी मिलते ही भारत के सामने 562 देशी रियासतों के एकीकरण व पुनर्गठन का सवाल मुँह बाए खड़ा था। इसे ध्यान में रखते हुए इसी साल श्याम कृष्ण दर आयोग का गठन किया गया। दर आयोग ने भाषायी आधार पर राज्यों के पुनर्गठन का विरोध किया। दर आयोग का मुख्य जोर प्रशासकीय सुविधाओं को आधार बनाने पर था किन्तु तात्कालीन जनाकांक्षाओं को देखते हुए तत्काल उसी वर्ष जे.बी.पी. आयोग (जवाहरलाल नेहरू, वल्लभ भाई पटेल और पट्टाभिसीतारमैया) का गठन किया जिसने प्रभावित जनता की आपसी सहमति, आर्थिक और प्रशासनिक व्यवहार्यता पर जोर देते हुए भाषाई आधार पर राज्यों के गठन का सुझाव दिया। इसके फलस्वरूप सबसे पहले 1953 में आंध्र प्रदेश का तेलगुभाषी राज्य के तौर पर गठन किया गया।

22 दिसम्बर 1953 में न्यायाधीश फजल अली की अध्यक्षता में राज्य पुनर्गठन आयोग का गठन हुआ। इस आयोग के तीन सदस्य-न्यायमूर्ति फजल अली, हृदयनाथ कुंजरू और के.एम. पणिक्कर थे। इस आयोग ने 30 दिसम्बर, 1955 को अपनी रिपोर्ट सौंपी। इस आयोग ने राष्ट्रीय एकता, प्रशासनिक और वित्तीय व्यवहार्यता, आर्थिक विकास, अल्पसंख्यक हितों की रक्षा और भाषा को राज्यों के पुनर्गठन का आधार बताया। सरकार ने इसकी सिफारिशों को कुछ सुधार के साथ स्वीकार कर लिया। जिसके बाद सन् 1956 में राज्य पुनर्गठन अधिनियम संसद ने पास किया। इसके तहत 14 राज्य और 6 केन्द्र शासित प्रदेश बनाए गए। फिर 1960 में पुनर्गठन के दूसरे दौर में 1960 में बम्बई राज्य को विभाजित कर महाराष्ट्र और गुजरात का गठन हुआ। 1963 में नागालैण्ड गठित हुआ। 1966 में पंजाब का पुनर्गठन हुआ और उसे पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में तोड़ दिया गया। 1972 में मेघालय, मणिपुर और त्रिपुरा बनाए गए। 1987 में मिजोरम का गठन किया गया और केन्द्र शासित राज्य अरुणाचल प्रदेश और गोवा को पूर्ण राज्य का दर्जा दिया गया। वर्ष 2000 में उत्तराखण्ड, झारखण्ड और छत्तीसगढ़ अस्तित्व में आए। इसके बाद 2 जून 2014 को तेलंगाना 29वाँ राज्य बना जो आन्ध्र प्रदेश राज्य से अलग हो गया।

**राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956-** राज्य पुनर्गठन आयोग दिसम्बर 1953 में स्थापित किया गया था और कम से कम प्रमुख भाषायी समूहों के लिए भाषायी राज्यों की स्थापना की सिफारिश की गई थी। 1956 में कुछ राज्यों का पुनर्गठन किया गया।

1956 के राज्य पुनर्गठन अधिनियम ने भारतीय राज्य और क्षेत्रीय सीमाओं में सुधार किया, उन्हें भाषा के अनुसार व्यवस्थित किया। भारतीय संविधान का नया मसौदा जो 26 जनवरी, 1960 को प्रभावी हुआ, ने राज्यों को इन चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया-

1. *राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 ने 14 राज्यों और 6 केन्द्र शासित प्रदेशों का निर्माण किया था। यह भारत के राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों को भाषायी आधार पर संगठित करने के लिए एक बड़ा सुधार था।*
2. *अधिनियम के अनुसार ये 14 राज्य थे-बिहार, असम, मध्य प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, मैसूर, मद्रास, केरल, जम्मू और कश्मीर, बॉम्बे, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश और उड़ीसा।*



3. *वही केन्द्र शासित प्रदेशों में हिमाचल प्रदेश, अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह, मणिपुर और त्रिपुरा शामिल थे।*
4. *राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 और इसकी आवश्यकताओं को संविधान (7वाँ संशोधन) अधिनियम, 1956 के साथ समवर्ती रूप से पारित किया गया था जिसने (अन्य बातों के अलावा) भारत के मौजूदा राज्य के लिए संवैधानिक ढाँचे के पुनर्गठन के लिए भारत के संविधान के अनुच्छेद 3 के भाग 1 में संशोधित किया गया।*

**प्रश्न 2 भाषायी और क्षेत्रीय तनाव क्या है? सन् 1956 में राज्यों के पुनर्गठन के समय इसकी भूमिका पर प्रकाश डालिए।**

**उत्तर-** सन् 1956 में क्षेत्रीय लोगों के बीच हिंसा और तनाव के संघर्ष से बचने के लिए राष्ट्र की एकता और अखण्डता बनाए रखने के लिए भारत में भाषायी आधार पर राज्यों का पुनर्गठन किया गया था। राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 भारत के राज्यों और क्षेत्रों की सीमाओं का एक प्रमुख सुधार था, जो उन्हें भाषाई आधार पर व्यवस्थित करता था।

अपनी भाषा को अलग मानने के कारण कुछ पुराने क्षेत्रों/राज्यों में भाषायी-क्षेत्रीय तनाव फैल रहा था क्योंकि उन क्षेत्रों में कई भाषाएं प्रचलन में थीं, अतः भाषावाद के कारण तनाव व संघर्ष से बचने के लिए उन प्रान्तों का पुनर्गठन आवश्यक हो गया था।

(1) **भाषायी तनाव-** भाषा मन के भावों को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है। भाषागत समानता विभिन्न व्यक्तियों को एक-दूसरे की ओर आकर्षित करती है जबकि भाषागत भिन्नता के कारण लोग पृथकता या अलगाव महसूस करते हैं। यही कारण है कि एक ही भाषा बोलने वाले दो अपरिचित व्यक्ति भी शीघ्र ही एक-दूसरे से अपनी बात कह सकते हैं तथा पारस्परिक निकटता बना लेते हैं। इससे पृथक दो अलग-अलग भाषाभाषी अपनी बात न तो कह सकते हैं और न ही समझ सकते हैं-निकट होते हुए भी वे एक-दूसरे से अलग रहते हैं। वास्तव में, भाषा में एकीकरण की प्रबल क्षमताएं पाई जाती हैं। हमारा देश एक बहुभाषायी देश है इसमें जहाँ एक ओर देश की सांस्कृतिक समृद्धि हुई है, भाषाओं की विविधता के कारण उत्पन्न होने वाली मुख्य समस्या है-भाषावाद का प्रबल होना। जब भाषाएं भाषावाद की शक्ल ले लेती हैं तो व्यक्ति अपनी भाषा को सर्वोत्कृष्ट मानकर अन्य भाषा-भाषियों को हीन समझकर उनकी उपेक्षा करता है। वह अपनी भाषा को पक्षपात करता है तथा अपनी ही भाषा को मान्यता दिलाने के लिए उचित-अनुचित प्रयास भी करता है। इससे भाषाभाषी तथा विभाषाभाषियों में तनाव तथा संघर्ष उत्पन्न होता है। ऐसी स्थिति सन् 1956 के पहले रह चुकी है जब पुराने प्रान्तों/राज्यों में एक से अधिक भाषाएं प्रचलन में होने के कारण जनता में परस्पर तनाव व सघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती थी तथा राष्ट्रीय एकता व अखण्डता पर कुठाराघात होता था। अतः ऐसे राज्यों को भाषायी आधार पर पुनर्गठित करना आवश्यक था।

(2) **क्षेत्रीय तनाव-** भाषायी भिन्नताएं होने पर कौनसी भाषा को राजभाषा तथा प्रशासकीय कार्यों के लिए मान्य भाषा बनाया जाए यह प्रश्न उन क्षेत्रों में वैमनस्य तनाव आदि उत्पन्न कर देता है। इस समस्या के निवारण का उपाय यही था कि ऐसे राज्यों को भाषा के आधार पर पुनर्गठित कर युक्तियुक्त किया जाए। क्षेत्रीय तनाव भी राज्यों में एकता व अखण्डता के मार्ग में अवरोधक सिद्ध होता है, अतः भाषाई और क्षेत्रीय आधार पर राज्यों का पुनर्गठन ही एकमात्र उपाय बचता था।

राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 के पारित होने तथा तदनुसार राज्यों का पुनर्गठन करने के प्रयासों से भारत में भाषायी व क्षेत्रीय तनाव से मुक्ति सम्भव थी।

**अवरोध-** राज्य पुनर्गठन आयोग और संविधान संशोधन अधिनियम के तहत 1956 में आन्ध्र प्रदेश, असम, बिहार, बम्बई, केरल, मध्य प्रदेश, मद्रास, मैसूर, उड़ीसा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल तथा जम्मू-कश्मीर को राज्य तथा दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, त्रिपुरा, अण्डमान और निकोबार मालाबार तट के छोटे द्वीप जैसे लक्षद्वीप आदि 14 राज्य तथा 6 केन्द्र शासित प्रदेशों में राज्य पुनर्गठन किये गए। बाद में भाषा के आधार पर समय-समय पर इन क्षेत्रों का बँटवारा करने की माँग होती रही और ये राज्य 14 से 28 हो गए तथा केन्द्र शासित प्रदेशों की संख्या भी बढ़ गई। राज्य पुनर्गठन के कारण तनाव, अवरोध आने से समय-समय पर कतिपय राज्यों में राजनीति हुई।

राज्यों में राजनीति-तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश, असम, पश्चिम बंगाल और जम्मू कश्मीर, पंजाब आदि में अवरोध संकट उत्पन्न हो गया जिनका उल्लेख निम्नवत है-

**तमिलनाडु-** त्रावणकोर तमिलनाडु कांग्रेस ने थोबलाई, अगस्त्येश्वरम, कल्कुलम, विल्वन कोड, नेम्यातिनकारा, थेनकोट्टई, देवीकुलम और पीरमाडे को मद्रास राज्य में विलय की माँग की। हालांकि राज्य पुनर्गठन आयोग ने इनमें से केवल थोवलाई, अगस्त्येश्वरम, कल्कुलम, विल्वन कोड और शेनकोट्टाई को मद्रास राज्य में विलय करने की अनुशंसा की थी। नेम्यातिनकारा तालुम में आयोग ने पाया कि 86% लोग मलयालम जानते थे। इसलिए आयोग ने इस तालुक को मद्रास राज्य में विलय का पक्ष नहीं लिया। लोकसभा में चर्चा के दौरान त्रावणकोर-कोचीन राज्य के प्रतिनिधियों ने मद्रास राज्य के साथ दक्षिण तालुओं के विलय के लिए आयोग की सिफारिशों का जोरदार विरोध किया।

भले ही एस.आर.सी. ने पूरे शेनकोट्टई तालुक के विलय की सिफारिश की, बाद में गठित संयुक्त समिति ने अकेले शेनकोट्टई के पूर्वी हिस्से को मद्रास राज्य में विलय की सिफारिश की। यह निर्णय अन्ततः 16 जनवरी, 1956 को आधिकारिक रूप से प्रकाशित किया गया। जुलाई 1956 की लोकसभा बैठक में नेयामोनी ने S.R.C. की सिफारिश के अनुसार शेनकोट्टई के पूर्ण विलय के तर्क दिये। सदन ने S.R.C. की सिफारिशों को खारिज करते हुए फैसले पर पुनर्विचार करने से इन्कार कर दिया।

तमिल बोलने वाले लोगों के प्रतिशत के आधार पर S.R. कमीशन ने त्रावणकोर-कोचीन राज्य के चार तालुकों अगस्तेश्वरम, थोवलई, कल्लुलम और विलावनकोड को तमिलनाडु में स्थानान्तरित करने की सिफारिश की। शेनकोट्टा तालुक को तमिलनाडु में स्थानान्तरित करने के लिए उसी यार्ड स्टिक का उपयोग किया गया था। भले ही शेनकोट्टा का आयोग द्वारा पूरी तरह से स्थानान्तरित कर दिया था, राज्यों की सटीक सीमाओं को तय करने के लिए नियुक्त संयुक्त समिति ने शेनकोट्टा तालुक को विभाजित कर दिया और त्रावणकोर-कोचीन राज्य को एक बड़ा हिस्सा बनाए रखने की अनुमति दी।

**आन्ध्र प्रदेश-तेलंगाना-** आयोग की रिपोर्ट में तेलगु बहुल तेलंगाना क्षेत्र (हैदराबाद राज्य के) और आन्ध्र राज्य (1953 में निर्मित) के विलय के पक्ष और विपक्ष में तर्कों का मूल्यांकन किया गया। S.R.C. के पैरा 369 से 389 आन्ध्र प्रदेश राज्य की स्थापना के लिए तेलंगाना और आन्ध्र प्रदेश के विलय से सम्बन्धित है। पैरा 386 में कहा गया है कि इन सभी कारकों पर विचार करने के बाद हम इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि फिलहाल तेलंगाना को अलग राज्य



बनाने की आवश्यकता नहीं है। तेलंगाना को एक अलग राज्य बनाने की अनेक सालों की कोशिशों और आन्दोलनों के बाद 2 जून 2014 को नया राज्य स्थापित हुआ। आज जिस तेलंगाना का नाम लिया जाता है वह कभी हैदराबाद और मराठवाड़ा का हिस्सा था जिसका 17 सितम्बर 1948 को भारत संघ में विलय हो गया। राज्य के गठन के समय तेलंगाना में आन्ध्र प्रदेश के 23 जिलों में से 10 जिले आये थे। ये हैं-हैदराबाद, आदिलाबाद, खम्मम, करीमनगर, महबूबनगर, मेडक, नलगोडा, निजामाबाद, रंगारेड्डी और वारंगल।

**असम-** असम और मिजोरम के बीच सीमा विवाद वर्ष 1875 और वर्ष 1933 की ब्रिटिश काल की दो अधिसूचनाओं की विरासत है जब मिजोरम को असम का एक जिला कहा गया। राज्य पुनर्गठन अधिनियम 1956 भारत के राज्यों और क्षेत्रों की सीमाओं का एक प्रमुख सुधार था, जो उन्हें भाषायी आधार पर व्यवस्थित करता था। बाद के वर्षों में असम को अरुणाचल, मिजोरम, नागालैण्ड, मेघालय में विभाजित किया गया।

**पंजाब-** पटियाला और पूर्वी पंजाब राज्य संघ को जोड़कर विस्तारित किया गया।

**पश्चिमी बंगाल-** पुरनलिया जिले को जोड़कर (जो पहले बिहार का हिस्सा था) पश्चिमी बंगाल को विस्तारित किया गया

**जम्मू-कश्मीर-** 1956 में सीमा में कोई बदलाव नहीं किया गया।

**प्रश्न 3 भारत में संसदीय लोकतन्त्र के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालिए।**

**उत्तर-** संसदीय सरकार एक लोकतान्त्रिक प्रशासन है जिसमें सरकार का गठन उस राजनैतिक दल द्वारा किया जाता है जो संघीय चुनाव के दौरान विधायिका या संसद में सबसे अधिक सीटें प्राप्त करता है। यह बहुमत दल प्रधानमन्त्री बनने के लिए एक नेता का चयन करता है। मन्त्रिमण्डल अन्य उच्च पदस्थ सदस्यों से बनी होती है। विपक्ष का गठन निर्वाचन उपरान्त अल्पसंख्यक दल द्वारा किया जाता है और इसकी भूमिका सत्ताधारी दल का मुकाबला करना है। यदि चुनाव में किसी भी पार्टी/दल को बहुमत नहीं मिलता है तो कुछ राजनीतिक दलों के सहयोग से गठबन्धन सरकार स्थापित की जाती है।

'संसदीय सरकार' शब्द का तात्पर्य इस तथ्य से है कि संसद के पास सभी अधिकार हैं। संसदीय और राष्ट्रपति प्रधान शासन प्रणाली में अन्तर है। संयुक्त राज्य अमेरिका जैसी राष्ट्रपति प्रणाली में कार्यकारी शाखा अलग होती है और राष्ट्रपति का निर्वाचन आम जनता द्वारा होता है।

संविधान सभा में व्यवस्था सम्बन्धी बहस के बाद देश की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए इंग्लैण्ड में प्रचलित संसदीय प्रणाली के वरण का निर्णय किया गया। यह हमारे संविधान में वर्णित व्यवस्था रचना की मुख्य विशेषता है। संविधान सभा के प्रबुद्ध गुट की दृष्टि में यह प्रणाली अधिक श्रेयस्कर समझी गई। तत्कालीन परिस्थितियों के दबाव को देखते हुए उन्होंने अतिवादी विकल्प को अस्वीकृत कर मध्य मार्ग अपनाने का प्रयत्न किया था। प्रो. बार्कर का यह कथन कि पश्चिम की मूल्यवान व्यवस्था के समक्ष भारतीय परम्परागत सिद्धान्तों का समर्पण एक महत्त्वपूर्ण तथ्य को इंगित करता है, युक्तिसंगत लगता है। प्रो. बार्कर की यह बात अपने स्वाभिमान के वशीभूत चाहे हम स्वीकार न करें, किन्तु सच्चाई यही है कि संविधान सभा में यह निर्णय ले कर इंग्लैण्ड की संसदीय प्रणाली में निहित क्षमता को आत्मसात कर सम्मान प्रदान किया।

संविधान सभा ने अध्यक्ष द्वारा प्रतिपादित विचारों के ठीक विपरीत इंग्लैण्ड की शासन प्रणाली का वरण किया। इसका कारण संविधान की संरचना सम्बन्धी नियुक्त अन्यान्य समितियों का निर्णय संसदीय प्रणाली के पक्ष में था। श्री वल्लभ भाई पटेल ने समितियों के निर्णय को प्रस्तुत करते हुए कहा था कि-"देश की परिस्थितियों को देखते हुए समितियों की राय में इंग्लैण्ड में विद्यमान संसदीय प्रणाली, जिससे हम भलीभाँति परिचित हैं, अधिक उपयुक्त होगी।"

## संसदीय प्रणाली का विकास

भारत में संसदात्मक शासन प्रणाली कार्यरत है। भारत की संसद में दो सदन हैं जिनका विवरण इस प्रकार है-

### (अ) लोकसभा

संसदीय सरकार का प्रथम तथा निचला सदन लोकसभा कहलाती है। यह नागरिकों का प्रतिनिधि सदन कहलाती है। इसकी रचना ब्रिटेन के हाउस ऑफ कामन्स और अमेरिका की प्रतिनिधि सभा की तरह हुई है। यह एक शक्तिशाली तथा प्रमुख सदन है क्योंकि भारत के प्रधानमंत्री सहित मंत्री- परिषद् इसी के प्रति उत्तरदायी रहती है हालांकि भारत में संसद सर्वोच्च राजनीतिक निकाय नहीं है लेकिन लोकतंत्र के सिद्धांत के अनुसार जनता की सच्ची प्रतिनिधि होने से यह शासन के निकायों में महत्वपूर्ण शासक निकाय है।

**लोकसभा का संगठन-** 31 वें संविधान संशोधन द्वारा इसकी सदस्य संख्या 545 हो गई है।पूरे देश को निर्धारित निर्वाचन क्षेत्रों में बांट कर अधिकतम 5 वर्ष के लिये प्रत्यक्ष निर्वाचन प्रणाली द्वारा लोक सभा सदस्यों का निर्वाचन किया जाता है। इसकी अवधि आपात स्थिति में एक साल बढ़ाई जा सकती है। निर्वाचन क्षेत्र एक सदस्यी रहते हैं व उम्मीदवारों में से सबसे ज्यादा मत पाने वाला उम्मीदवार लोकसभा सदस्य चुना जाता है।

**लोकसभा के पदाधिकारी-** लोकसभा अपने सदस्यों में से ही 5 वर्ष हेतु एक अध्यक्ष तथा एक उपाध्यक्ष चुनती है। ये लोकसभा के भंग होने तक अपने पद पर बने रहते हैं। भारत में ब्रिटेन के स्पीकर की तरह यह अपने पद से त्याग पत्र तो नहीं देता लेकिन लोकसभा की गरिमा तथा परम्परानुसार निष्पक्ष होने का प्रयत्न करता है। यह अपनी इच्छा से त्याग-पत्र दे सकता है। इसे 14 दिन का नोटिस देकर महाभियोग से हटाया भी जा सकता है।

**योग्यतायें-** एक लोकसभा सभा सदस्य बनने हेतु भारत के किसी नागरिक में निम्न योग्यताएं होनी जरूरी हैं - (1) उसकी आयु कम से कम 25 वर्ष हो।(2) वह पागल या दिवालिया न हो। (3) वह किसी सरकारी लाभ के पद पर न हो।

**लोकसभा सदस्यता हेतु मताधिकार-** भारत में वयस्क मताधिकार के आधार पर बिना धर्म, लिंग या जाति भेद के चुनाव होता है। कुछ सीटें अनुसूचित जाति तथा जनजाति के लिये आरक्षित की गई हैं। यदि निर्वाचन में कोई आंग्ल भारतीय न चुनकर आ सके तो राष्ट्रपति मनोनयन करके दो आंग्ल भारतीयों को इसका सदस्य बना सकता है।

**लोकसभा के सत्र-** संविधान के अनुसार लोकसभा के कम से कम दो सत्र प्रतिवर्ष होना जरूरी है। एक अधिवेशन की अंतिम बैठक और दूसरे अधिवेशन की प्रथम बैठक में 6 महीने से ज्यादा अंतर नहीं हो सकता।इनमें बजट सत्र सबसे महत्वपूर्ण है। सरकार के अनुरोध पर राष्ट्रपति विशेष सत्र भी बुला सकता है।



**लोकसभा के सदस्यों के विशेषाधिकार-**

लोकसभा के सदस्यों को निम्न विशेष अधिकार व उन्मुक्तियाँ दी गई हैं-

(अ) **भाषण की स्वतंत्रता** - लोकसभा का हर सदस्य स्वतंत्र रूप से अपने विचार व्यक्त कर सकता है। उनके दिये गये भाषण के विरुद्ध किसी भी न्यायालय में मुकदमा नहीं कायम किया जा सकता है।

(ब) **भाषण व कार्यों को प्रकाशित करना** - लोकसभा का सदस्य सदन में विचार-विमर्श, भाषण अथवा रिपोर्ट को प्रकाशित कर सकता है।

(स) **उन्मुक्तियाँ** - लोकसभा सदस्य को लोकसभा सत्र के प्रारम्भ होने के 40 दिन पहले से लेकर 40 दिन बाद तक किसी दीवानी प्रकरण में गिरफ्तार नहीं किया जा सकता।

**लोकसभा की शक्तियाँ व कार्य-** लोकसभा को भारत में सारी विधायिकीय शक्तियाँ मिली हुई हैं। वह कानूनों का निर्माण करती है और भारत सरकार के लिये बजट भी पारित करती है।

कार्यपालिका सम्बन्धी कार्यों की नजर से वह मंत्री-परिषद् जो उसके बहुमत दल के नेता के नेतृत्व में बनती है पर प्रश्न पूछ कर, अविश्वास और काम रोको प्रस्ताव के माध्यम से नियंत्रण रखती है। न्यायिक दृष्टि से इसे राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, स्पीकर पर महाभियोग लगानें का अधिकार भी मिला हुआ है। इस प्रकार उसे काफी शक्तियाँ मिली हुई हैं तथा वह पर्याप्त शक्तिशाली सदन है।

**लोकसभा का महत्व-** भारतीय शासन में लोकसभा एक महत्वपूर्ण सदन है। लोकसभा असल में जनता और सरकार के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी है। डॉ.एम.पी. शर्मा ने इसका मूल्यांकन करते हुये कहा है कि यदि संसद राज्य का सर्वोच्च अंग है तो लोकसभा संसद का सर्वोच्च अंग है।

डॉ.एन.के.श्रीवास्तव ने अपनी पुस्तक राजनीति शास्त्र के मूलाधार में कहा है। "भारत में लोकसभा यहाँ की संसदात्मक शासन-प्रणाली का सबसे महत्वपूर्ण भवन है। इसे देखकर सम्पूर्ण भारत का चित्र किसी भी व्यक्ति के सामने आ जाता है इस प्रकार यह भारत राष्ट्र का दर्पण है।"

**राज्य सभा से लोकसभा के सम्बन्ध-** राज्य सभा जो संसद का उच्च सदन कहलाता है से लोकसभा का सम्बन्ध सैद्धांतिक दृष्टि से बराबरी का है लेकिन राज्य सभा की सदस्य संख्या कम होने और इसकी विलम्बकारी शक्ति सीमित होने से राज्यसभा का महत्व स्वाभाविक रूप से लोकसभा की अपेक्षा कम है।

### (ब) राज्य सभा

भारत में संसद का उच्च सदन राज्य सभा कहलाता है। इसमें ज्यादा से ज्यादा 250 सदस्य हो सकते हैं। इनमें से 12 सदस्यों को राष्ट्रपति मनोनीत करता है जो देश में विज्ञान, कला, साहित्य तथा समाज सेवा के क्षेत्र में विशेष ख्याति प्राप्त किए हुए होते हैं। बाकी सदस्य संसद के कानून से राज्यों व केंद्र शासित क्षेत्रों से निर्धारित संख्या में निर्वाचित किए जाते हैं। प्रतिनिधियों की संख्या जनसंख्या के आधार पर होने से हर राज्य से अलग-अलग संख्या में राज्यसभा सदस्य निर्वाचित होते हैं।

**निर्वाचन-** राज्य सभा के सदस्यों का निर्वाचन हर राज्य के निर्वाचित विधायकों द्वारा 6 वर्ष हेतु आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली के आधार पर होता है। यह अप्रत्यक्ष होता है। यह

एकल संक्रमणीय मत पद्धति द्वारा होता है। इसके हर दो वर्ष बाद 1/3 सदस्य हट जाते हैं। इस तरह यह एक स्थायी सदन है। आनुपातिक प्रतिनिधित्व होने से सभी दलों को अपने अनुपात में प्रतिनिधित्व मिल जाता है।

**योग्यताएं-** राज्य सभा का सदस्य होने की निम्न योग्यताएं हैं- (1) उम्मीदवार की आयु कम से कम 30 वर्ष हो। (2) वह सांसद बनने की पात्रता रखता हो। (3) उस राज्य का नागरिक हो।

**पदाधिकारी-** राज्य सभा का पदेन अध्यक्ष भारतीय संघ का उपराष्ट्रपति होता है। इसके अलावा राज्य सभा अपने लिए एक उप-सभापति भी चुन लेती है जो सभापति की अनुपस्थिति में इसकी बैठकों की अध्यक्षता करता है।

**शक्तियां व कार्य-**

राज्यसभा को वे सभी विधायनी शक्तियां प्राप्त होती हैं जो लोकसभा को हैं लेकिन लोकसभा से किसी विधेयक पर मतभेद होने की स्थिति में वह साधारण विधेयक को एक बार वापस कर वह केवल 6 महीने विलम्बित कर सकता है और वित्त विधेयक को मात्र 14 दिन तक। संविधान संशोधन में उसके अधिकार लोकसभा के समान हैं। मंत्री परिषद के लोकसभा के प्रति गंभीर रूप से उत्तरदायी होने से इसकी प्रशासनिक शक्तियाँ भी कम होती हैं। इसके सदस्य राष्ट्रपति के निर्वाचन में बराबरी से ही भाग लेते हैं। राष्ट्रपति पर महाभियोग के संबंध में इसके अधिकार समान हैं। इसे राज्यसूची के किसी विषय को संघ सूची में शामिल करने का विशेषाधिकार मिला हुआ है।

**(1) कार्यपालिका सम्बन्धी शक्तियाँ -** राज्यसभा को कुछ कार्यपालिका सम्बन्धी शक्तियाँ भी मिली हुई हैं। हालांकि मंत्रि-परिषद् लोकसभा के प्रति उत्तरदायी है लेकिन इसके (राज्यसभा) के सदस्य प्रश्न पूछकर तथा स्थगन प्रस्ताव लाकर आदि साधनों से सरकार को नियंत्रण में रखते हैं।

**(2) विशेष अधिकार -** भारत में राज्य सभा को निम्न विशेषाधिकार भी प्राप्त हैं- (i) राज्यसभा को संविधान संशोधन के मामले में लोकसभा के बराबर अधिकार मिले हुए हैं। (ii) राष्ट्रपति के निर्वाचन तथा महाभियोग में भी उसे बराबर के अधिकार प्राप्त हैं। (iii) राष्ट्रपति की संकटकालीन घोषणा भी दोनों सदनों द्वारा स्वीकृत होती है।

**(3) राज्यसभा की विशिष्ट शक्तियाँ -** भारत की राज्यसभा को निम्न विशिष्ट शक्तियां मिली हुई हैं- (i) वह राज्य भूमि के किसी भी विषय पर संघ सरकार को कानून बनाने का अधिकार दे सकती है। (ii) बहुमत से प्रस्ताव कर सकती है। (iii) एक या ज्यादा अखिल भारतीय सेवाओं का गठन। (iv) लोकसभा के भंग होने की स्थिति में राज्यसभा ही राष्ट्रपति के आपातकालीन अधिकारों पर नियंत्रण रखती है। (v) भारत के उपराष्ट्रपति के निष्कासन प्रस्ताव को शुरू कर सकती है।

**राज्य सभा की स्थिति-** राज्य सभा के संगठन, शक्तियाँ तथा कार्यों से यह स्पष्ट है कि भारत की राज्यसभा न तो इंग्लैंड की लार्डसभा की तरह शक्तिहीन, महत्वहीन है न ही अमेरिका की सीनेट की तरह शक्तिशाली है। इसके निम्न दोष हैं - (1) राज्यसभा के गठन की पद्धति दोषपूर्ण है, क्योंकि इसमें राज्यों को समान प्रतिनिधित्व नहीं मिलता तथा राष्ट्रपति को मिले मनोनयन का अधिकार अलोकतांत्रिक है।

(2) अप्रत्यक्ष चुनाव पद्धति भी दोषपूर्ण ही है।



(3) राज्यसभा के कार्यसंचालन व्यवहार से संविधान निर्माताओं की इच्छा भी पूरी नहीं हुई है, क्योंकि संविधान निर्माता श्री निवास आयंगर का कहना था, "हम अनुभवी लोगों को एक मौका देना चाहते हैं जिससे वे ज्ञानवर्द्धक तथा सम्मानजनक वाद विवाद में भाग ले सकें। जबकि व्यवहार में यह हारे हुए राजनीतिज्ञ को पिछले दरवाजे से संसद में प्रवेश का माध्यम बनकर रह गई है। यह लोकसभा पर प्रतिबंध लगाने में भी सफल नहीं हुई। पिछले कुछ वर्षों में यह अभिजात्यता की भावना का भी शिकार हुई है।"

**राज्यसभा का महत्व-** असल में विगत वर्षों में राज्यसभा ने कई बार अपना महत्व सिद्ध किया है। 1961 में इसने दहेज विरोधी विधेयक अस्वीकृत किया। 1970 में 24वाँ संशोधन स्वीकार किया। उसने बैंकिंग सेवा आयोग को भी अस्वीकार किया। जनता काल में दोनों सदनों में टकराव भी दिखाई दिया।

**प्रश्न 4 भारत में कार्यरत विभिन्न राजनैतिक दलों की भूमिका स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर-** स्वाधीनता के बाद से अब तक भारत में अनेक राजनीतिक दलों का निर्माण हुआ है। कई राजनीतिक दल आज भी विद्यमान हैं और उनमें से कई टूट चुके हैं, विभाजित हो चुके हैं और उनका स्थान नए दलों ने ले लिया है। यहाँ हम देखने का प्रयत्न करेंगे कि संघ व्यवस्था के बारे में राजनीतिक दलों की क्या भूमिका है?

(1) **कांग्रेस-** कांग्रेस मजबूत केन्द्र के पक्ष में है। कांग्रेस केन्द्र को इतना शक्तिशाली रखना चाहती है जिससे वह न केवल संघ सरकार की जिम्मेदारियों को पूरा कर सके बल्कि राज्य सरकारों को दी गई बहुत-सी जिम्मेदारियों को भी व्यावहारिक रूप दे सके। कांग्रेस का मुख्य लक्ष्य पंचवर्षीय योजनाओं के आधार पर देश का सामाजिक और आर्थिक पुनर्निर्माण करना है। वह धन तथा आय के समतायुक्त वितरण के आधार पर देश में समाजवादी समाज के निर्माण हेतु कृत संकल्प है। इस ध्येय की प्राप्ति हेतु केन्द्र एवं राज्यों की सरकारों की नीतियों पर नियन्त्रण आवश्यक है। इसलिए कांग्रेस का लक्ष्य 'केन्द्रीकृत संघवाद' है।

(2) **भारतीय साम्यवादी दल-** भारतीय साम्यवादी दल देश के संघीय संविधान में परिवर्तनों की माँग करता है जिससे केन्द्रीय सरकार राज्यों के मामलों में हस्तक्षेप न कर सके। दल राज्यों के मध्य पाई जाने वाली क्षेत्रीय विषमताओं को दूर किए जाने पर बल देता है। वित्तीय और आर्थिक क्षेत्रों में राज्यों को अधिक अधिकार दिए जाने का साम्यवादी दल समर्थन करता है। सातवीं अनुसूची में दल इस प्रकार संशोधन चाहता है ताकि राज्यों की शक्ति में वृद्धि हो सके।

सरकांरिया आयोग को प्रस्तुत अपने ज्ञापन में भाकपा ने व्यक्त किया है-

1. *अनुच्छेद 356 में संशोधन किया जाए। राष्ट्रपति के राज्य विधानसभा के विघटन और निलम्बन तथा राज्य मन्त्रिमण्डल की बर्खास्तगी के व्यापक अधिकारों को समाप्त किया जाए,*
2. *वित्त आयोग की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा राज्यों से परामर्श करके तैयार किए गए और संसद द्वारा अनुमोदित पैनल की सिफारिश के आधार पर की जानी चाहिए,*
3. *योजना आयोग को एक संवैधानिक निकाय बनाया जाना चाहिए,*
4. *राष्ट्रीय विकास परिषद को संवैधानिक दर्जा दिया जाना चाहिए।*

भारतीय साम्यवादी दल ने स्पष्ट कहा है, "हम एक सुदृढ़ केन्द्र का समर्थन करते हैं, किन्तु हम सुदृढ़ केन्द्र का समर्थन करते हैं, किन्तु हम एक अशक्त परिसंघ के मत से सहमत नहीं

है वरन् हम एक सुदृढ़ केन्द्र चाहते हैं और साथ ही अधिक अधिकार और वित्त के साथ एक संघीय एकक चाहते हैं। हमारा विचार है कि केन्द्र तभी प्रबल हो सकता है जबकि संघीय एकक भी प्रबल हों।"

(3) **मार्क्सवादी साम्यवादी दल-** मार्क्सवादी साम्यवादी दल 'राज्य/स्वायत्तता' का प्रबल समर्थक है। ई.एम.एस. नम्बूदरीपाद ने अपनी पुस्तक 'इण्डिया अण्डर कांग्रेस रूल' में लिखा है कि "भारतीय संघ में सम्मिलित सभी राज्यों को अधिक-से-अधिक स्वायत्तता प्राप्त होनी चाहिए।" मार्क्सवादी दल ने सन् 1971 के चुनाव घोषणा-पत्र में समवर्ती सूची को राज्य सूची में परिवर्तित करने का सुझाव दिया। दल केन्द्र-राज्य सम्बन्धों में आमूल-चूल परिवर्तन चाहता है। कुछ वर्षों पूर्व दल ने सुझाव दिया था कि-

(i) *राज्यपालों के पद समाप्त कर दिये जाने चाहिए,*
(ii) *राष्ट्रपति शासन से सम्बन्धित प्रावधान हटा दिए जाने चाहिए,*
(iii) *समवर्ती सूची के विषय राज्य सूची में मिला दिए जाने चाहिए,*
(iv) *कुल आय के 75% स्रोत राज्यों को दिए जाने चाहिए,*
(v) *राज्यों में कार्यरत समस्त कर्मचारियों पर राज्य सरकार का पूर्ण नियन्त्रण होना चाहिए।*

1978 में पश्चिमी बंगाल की मार्क्सवादी सरकार ने 'राज्यों को स्वायत्तता' देने की दृष्टि से एक विस्तृत मसविदा केन्द्रीय सरकार के सम्मुख प्रस्तुत किया। सरकारिया आयोग को प्रस्तुत अपने ज्ञापन में मार्क्सवादी साम्यवादी दल ने व्यक्त किया है : राज्य स्वायत्तता के बिना भारत की एकता नहीं रहेगी। अवशिष्ट शक्तियाँ राज्यों के पास होनी चाहिए न कि केन्द्र के पास। राज्यपाल का पद समाप्त कर दिया जाए, यदि ऐसा करना सम्भव न हो तो वह पद ऐसे किसी व्यक्ति द्वारा भरा जाए जिसे राज्य विधानमण्डल का विश्वास प्राप्त हो। केवल संघ सेवाएं और राज्य सेवाएं होनी चाहिए, अखिल भारतीय सेवाएं नहीं होनी चाहिए। केन्द्र द्वारा की गई कुल वित्तीय उगाही में से 75 प्रतिशत प्रत्येक राज्य को मिलना चाहिए।

**(4) D.M.K. और अन्ना D.M.K.-** D.M.K. ने संविधान में संशोधन की सलाह दी ताकि भारत स्वशासी भाषायी राज्यों का एक विकेन्द्रित संघ बन जाए जिन्हें भारत से पृथक होने का अधिकार प्राप्त हो। इस दल ने प्रस्ताव रखा कि केन्द्रीय सरकार सभी राज्यों की सहमति से बनाई जाए तथा उसके नियन्त्रण में केवल प्रतिरक्षा एवं विदेश सम्बन्ध, इत्यादि राष्ट्रीय हित के विषय रहें। सितम्बर 1970 में D.M.K. ने 'राज्य स्वायत्तता शासन सम्मेलन' आयोजित किया। D.M.K. ने तमिलनाडु के लिए पृथक ध्वज की भी माँग की। D.M.K. का विचार है कि वर्तमान संविधान में राज्यों को दयनीय रूप से केन्द्र सरकार पर निर्भर रहना पड़ता है तथा केन्द्र सरकार न तो राज्यों की जनता की भावनाओं का आदर करती है और न ही उनकी समस्याओं तथा आवश्यकताओं को समझने का प्रयत्न करती है। अतः राज्यों को अधिकतम स्वायत्त शासन के अधिकार दिये जाने चाहिए ताकि जनता शीघ्रतापूर्वक स्थायी उन्नति कर सके।

D.M.K. की माँग थी कि आर्थिक नियोजन राज्यों से प्रारम्भ होना चाहिए तथा प्रत्येक राज्य में अलग से 'योजना आयोग' होने चाहिए। केन्द्र-राज्य सम्बन्धों के अध्ययन हेतु D.M.K. के सरकार ने 'राजमन्नार' समिति की नियुक्ति की। इसने छः प्रमुख सिफारिशें की-



(i) *एक अन्तर्राज्यीय परिषद की स्थापना की जाए जिसका अध्यक्ष प्रधानमन्त्री हो तथा राज्यों के मुख्यमन्त्री उसके सदस्य हों। राज्यों को प्रभावित करने वाला विधेयक इस परिषद के परामर्श के बाद संसद में रखा जाएगा।*
(ii) *योजना आयोग समाप्त कर दिया जाए। राज्यों में अपने आयोजन मण्डल हों और ये निकाय उन्हें परामर्श देने का कार्य करें।*
(iii) *वित्त आयोग स्थायी आधार पर स्थापित किया जाए तथा राज्यों के पक्ष में करों का पहले से अधिक वितरण हो ताकि उन्हें केन्द्र पर कम-से-कम निर्भर रहना पड़े।*
(iv) *केन्द्रीय एवं समवर्ती सूची के अनेक विषयों को राज्य सूची में स्थानान्तरित कर दिया जाए।*
(v) *राज्यपाल की नियुक्ति के लिए निर्धारित प्रक्रिया अपनाई जाए और राष्ट्रपति किसी उच्चाधिकार प्राप्त निकाय के परामर्श से राज्यपाल नियुक्त करें।*
(vi) *राज्यों के उच्च न्यायालय राज्यों के क्षेत्राधिकार के सभी मामलों के लिए उच्चतम न्यायालय हों।*

राजमन्नार समिति प्रतिवेदन के आधार पर 16 अप्रैल, 1974 को मुख्यमन्त्री करुणानिधि ने 'पूर्ण राज्य स्वायत्तता के साथ संघीय ढाँचा स्थापित' करने की माँग की।

इस सम्बन्ध में अन्ना D.M.K. के विचार D.M.K. के समान ही हैं। प्रादेशिक दल होने के कारण दोनों दल 'राज्य स्वायत्तता' के प्रबल समर्थक हैं।

(5) **अकाली दल-** अकाली दल राजनीतिक सत्ता के विकेन्द्रीकरण तथा 'राज्यों को अधिक स्वायत्तता' दिये जाने का समर्थक है। अकाली दल के नेताओं का कहना है कि विदेश विभाग, प्रतिरक्षा और संचार व्यवस्था, आदि कुछ विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के सम्बन्ध में सत्ता राज्यों को सौंप दी जानी चाहिए। फरवरी 1998 में प्रकाशित अपने घोषणा-पत्र में अकाली दल ने राज्यों को अधिक अधिकार देने की बात कही। केन्द्र राज्य सम्बन्धों को नया रूप देने के लिए अकाली दल ने अनुच्छेद 356 को रद्द करने की माँग की।

(6) **तेलगू देशम-** आन्ध्र प्रदेश में सत्तारूढ़ तेलगू देशम् केन्द्र के अधिकार सीमित करने के पक्ष में है। N.T. रामाराव के अनुसार केन्द्र के पास मात्र रक्षा, विदेशी मामले, सामान्य संचार तथा मुद्रा विभाग रहने चाहिए और शेष विभाग स्वतन्त्र रूप में राज्यों के अधीन होने चाहिए। सरकारिया आयोग को प्रस्तुत अपने ज्ञापन में तेलगू देशम् ने कहा कि राज्यपाल का पद समाप्त किया जाए, केन्द्र सरकार के पदों पर दफ्तरशाही के विभिन्न स्तरों पर राज्यों के अधिकारियों के पर्याप्त प्रतिनिधित्व की व्याख्या करके राज्यों के हितों की रक्षा की जाए, अन्तर्राज्यिक परिषद की स्थापना की जाए तथा समवर्ती सूची से सम्बन्धित मामलों पर कार्यवाही करने से पहले संघ राज्यों को अपने पूरे विश्वास में ले।

(7) **जनता पार्टी-** 1977 में गठित जनता पार्टी के चुनाव घोषणा-पत्र में 'आर्थिक और राजनीतिक सत्ता के विकेन्द्रीकरण' पर बल दिया गया था, लेकिन व्यवहार में सत्ता के विकेन्द्रीकरण की दिशा में कार्य नहीं किया गया। इसके द्वारा नौ राज्यों की विधानसभाओं को एक साथ भंग करके संघीय व्यवस्था पर प्रहार किया गया। इसके अतिरिक्त जनता पार्टी के नेताओं ने पश्चिमी बंगाल की मार्क्सवादी सरकार द्वारा प्रस्तुत 'राज्य स्वायत्तता' के मसविदे पर विचार करना भी उचित नहीं समझा।

सरकारिया आयोग को प्रस्तुत अपने ज्ञापन में जनता पार्टी ने कहा कि-राज्यों की विधायी शक्तियों पर केन्द्र की अतिक्रमण करने की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाया जाना चाहिए, राज्यपाल की नियुक्ति सम्बन्धित राज्य सरकार की सहमति से की जानी चाहिए, अनुच्छेद 356 को हटा दिया जाना चाहिए या उसमें संशोधन किया जाना चाहिए, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस और सीमा सुरक्षा बल जैसे अर्द्ध सैनिक बलों का प्रयोग राज्य सरकार के सिविल प्राधिकारियों से परामर्श किये बिना राज्य में नहीं किया जाना चाहिए।

(8) **भारतीय जनता पार्टी-** भारतीय जनता पार्टी की नीति अनेक बातों के सम्बन्ध में पुराने जनसंघ दल से मिलती हुई है और इस आधार पर सामान्यतया यह समझा जाता है कि भारतीय जनता पार्टी केन्द्र-राज्य सम्बन्धों में केन्द्रीय सरकार को अधिक शक्तिशाली बनाने के पक्ष में है। इस विचार की इस तथ्य से पुष्टि होती है कि 6 मई, 1980 को जारी किए गए आधारभूत नीति वक्तव्य में दल को जिन पाँच निष्ठाओं से प्रतिबद्ध बतलाया गया, उनमें प्रथम निष्ठा 'राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय समन्वय' है, लेकिन स्थिति का एक अन्य पक्ष यह भी है कि यह दल राज्य सरकारों पर केन्द्र के अनुचित नियन्त्रण का विरोध करता रहा है। अटलबिहारी वाजपेयी के शब्दों में, "वह एक मजबूत केन्द्र के पक्ष में हैं जो देश की एकता और अखण्डता की रक्षा करने में समर्थ हों, किन्तु उसे राज्यों के संविधान प्रदत्त अधिकारों के हनन का कोई अधिकार नहीं होना चाहिए_ राज्यों को और अधिक वित्तीय अधिकार दिया जाना एक उचित बात है ताकि वे जनता के प्रति अपने बढ़ते हुए दायित्व को पूरा कर सकें।" सरकारिया आयोग को प्रस्तुत अपने ज्ञापन में भाजपा ने व्यक्त किया है-

(i) *ऐसा कुछ भी नहीं किया जाना चाहिए जिससे देश की एकता कमजोर हो,*
(ii) *राज्यों के संसाधनों के अन्तरण की व्यवस्था इस प्रकार होनी चाहिए ताकि वह इनके दायित्वों के अनुरूप हो,*
(iii) *वित्त आयोग के स्वरूप में उचित रूप से परिवर्तन किया जाए,*
(iv) *राज्यपाल को शक्तियों का दुरुपयोग करने से रोकने के लिए संविधान के संगत उपबन्धों में संशोधन किया जाए।*

फरवरी 1998 में प्रकाशित भाजना के घोषणा-पत्र में कहा गया है कि पार्टी संविधान की धारा 356 का दुरुपयोग रोकने के लिए आवश्यक कदम तत्काल उठाएगी एवं राज्यों को अधिक अधिकार देने के लिए आवश्यक संशोधन करेगी। सरकारिया आयोग के सुझावों को तत्काल लागू किया जायेगा एवं राज्यपालों की नियुक्ति से पूर्व राज्य सरकारों से परामर्श किया जाएगा। भाजपा ने यह वादा भी किया है कि राज्यों को शक्तिशाली बनाने के लिए संसाधनों का आवंटन बढ़ाया जाएगा। भाजपा संविधान की धारा 370 को समाप्त करेगी जिसके अन्तर्गत जम्मू एवं कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा प्राप्त है। इस प्रकार भारतीय जनता पार्टी केन्द्र-राज्य सम्बन्धों के सन्दर्भ में वैधानिक सीमाओं का पालन करने वाले 'शक्तिशाली केन्द्र' के पक्ष में है।

(9) **संयुक्त मोर्चा-** फरवरी 1998 में प्रकाशित संयुक्त मोर्चे के घोषणा-पत्र में कहा गया है कि संयुक्त मोर्चा सरकार ने राज्यों के आर्थिक आधार को सुदृढ़ करने तथा संविधान की धारा 356 के दुरुपयोग को रोकने के अपने वायदे निभाए हैं। मोर्चा जम्मू-कश्मीर को अधिकतम स्वायत्तता देने, संविधान की धारा 370 को कायम रखने तथा जम्मू एवं लद्दाख को क्षेत्रीय स्वायत्तता देने को वचनबद्ध है।



इस प्रकार भारत के राजनीतिक दलों को संघवाद के सन्दर्भ में उनके विचारों के आधार पर तीन वर्गों में रखा जा सकता है : **प्रथम वर्ग** में ये दल आते हैं जो शक्तिशाली केन्द्र पर आधारत संघवादी व्यवस्था को बनाए रखना चाहते हैं। कांग्रेस इसी श्रेणी में है। **द्वितीय श्रेणी** में वे दल आते हैं जो वर्तमान संवैधानिक ढाँचे और केन्द्रीय सरकार की शक्तिशाली स्थिति को बनाए रखना चाहते हैं, किन्तु उनका आरोप है कि शासक दल (1971-76 के काल में सत्ता कांग्रेस और 1980-82 के काल में इन्दिरा कांग्रेस) संवैधानिक प्रावधानों का प्रयोग दलीय हितों की पुष्टि करते हुए राज्यों पर अनुचित नियन्त्रण स्थापित करने में कर रहा है। उनका विचार है कि राज्यों के हितों की रक्षा हेतु संवैधानिक प्रावधानों में परिवर्तन की आवश्यकता तो नहीं है, लेकिन केन्द्र में सत्तारूढ़ दल की इन प्रवृत्तियों पर अंकुश जरूरी है। जनता पार्टी, भारतीय जनता पार्टी, संयुक्त मोर्चा आदि इसी श्रेणी में आते हैं। **तृतीय श्रेणी** में वे दल आते हैं जो केन्द्र-राज्य सम्बन्धों में आमूल-चूल परिवर्तन करते हुए राज्यों को अधिक अधिकार दिए जाने का समर्थन करते हैं। ऐसे दलों में D.M.K. अन्ना D.M.K., अकाली दल, तेलगू देशम् , भारतीय साम्यवादी दल और मार्क्सवादी दल प्रमुख हैं।

(10) **आप पार्टी/आम आदमी पार्टी-** लोकसभा सीट तथा केन्द्र शासित दिल्ली व पंजाब में विधानसभा में बहुमत वाली आम आदमी पार्टी को निर्वाचन आयोग से राष्ट्रीय राजनैतिक दल के रूप में मान्यता प्राप्त हो चुकी है। इस दल के अध्यक्ष अरविन्द केजरीवाल हैं। लोकसभा में भी यह पार्टी सदस्यता ग्रहण कर चुकी है। इस पार्टी की स्थापना 2 अक्टूबर, 2012 को हुई। इसकी स्थापना सन् 2011 के भारतीय भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलन से हुई।

**प्रश्न 5 भारतीय लोकतन्त्र को कौनसे खतरे हैं? वर्णन कीजिए।**

**उत्तर-** भारत की प्रजातान्त्रिक व्यवस्था को खतरा उत्पन्न करने वाले तत्त्व निम्नलिखित हैं-

(1) **साम्प्रदायिकता, क्षेत्रीयतावाद, भाषावाद तथा जातिवाद-** इन सभी समस्याओं ने विघटनकारी तत्त्वों को बढ़ावा दिया है। प्रजातन्त्र में धर्म, जाति आदि के आधार पर हुए दंगे उचित नहीं हैं। चुनाव का आधार प्रमुख रूप से इन्हीं समस्याओं को बनाया जाता है। जो प्रजातान्त्रिक भावना के प्रतिकूल हैं।

(2) **बेरोजगारी, महँगाई, भ्रष्टाचार और आर्थिक विषमता-** देश में चारों ओर भ्रष्टाचार फैला हुआ है। महँगाई और बेरोजगारी दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। समाज में आर्थिक विषमता अपने अधिक रूप में विद्यमान है। ये ऐसी समस्यायें हैं जो एक प्रजातन्त्र व्यवस्था के लिये खतरा बन जाती है।

(3) **प्रशासन के प्रति असन्तोष-** भारत में प्रशासन में कोई सुधार करने के प्रयत्न नहीं किये गये। यह अंग्रेजों के समय प्रचलित प्रणाली पर ही आधारित है। नौकरशाही का बोलबाला है। इसलिये जनता में प्रशासन के प्रति असन्तोष बढ़ता ही जा रहा है और जनता में रोष उत्पन्न हो रहा है जो कभी भी गम्भीर रूप धारण कर लेता है।

(4) **राजनीतिक नेताओं की पदलोलुपता और सिद्धान्तहीन राजनीति-** हमारे देश का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह रहा है कि हमारे अपने स्वार्थों के लिए राष्ट्रहित की अवहेलना करने को तत्पर रहते हैं। वे केवल चुनावों में ही जनता के सम्पर्क में आते हैं और चुनावों के पश्चात् अगले चुनावों तक वे जनता से कोई सम्पर्क नहीं बनाते। उन्हें अपने पदों की चिन्ता रहती है। जनता के कल्याण की उन्हें चिन्ता नहीं रहती है। इसलिये देश में सिद्धान्तहीन राजनीति का बोलबाला रहा है। 1967 ई. के पश्चात् इस ओर विशेष प्रगति हुई। देश में दल-बदल का जोर रहा और प्रजातान्त्रिक परम्पराओं का खुले रूप में उल्लंघन हुआ। सभी राजनीतिक दल

सिद्धान्तवादिता का त्याग कर व्यक्तिगत स्तर की राजनीति करने लगे हैं। सत्ता के केन्द्रीकरण के प्रयास किये गये। इस प्रकार यह स्थिति विशेष रूप से 1967 ई. के पश्चात् प्रजातान्त्रिक व्यवस्था के लिये एक खतरा बन गई।

(5) **पृथकतावादी प्रवृत्ति का विकास-** स्वतन्त्रता के पश्चात् कुछ ऐसी आशा थी कि देश में पृथकतावादी शक्तियों का दमन हो गया है परन्तु कांग्रेस की तुष्टीकरण की नीति के फलस्वरूप ये शक्तियाँ गम्भीर रूप से सामने आई हैं। मुस्लिम लीग का पुनः जन्म हुआ। मुस्लिम लीग, साम्यवादी दल, द्रविड़ मुनेत्र कड़गम, नक्सलवाद जैसे दल पृथकतावादी प्रवृत्तियों को बढ़ावा देते हैं। ये नेता अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए पृथकतावादी प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित करते हैं। जो कि देश की प्रजातान्त्रिक व्यवस्था के लिए अत्यन्त हानिकारक है।

(6) **पड़ौसी देशों में तानाशाही की स्थापना-** भारत के पड़ौसी देशों चीन, पाकिस्तान, बर्मा आदि में लोकतन्त्र असफल सिद्ध हुआ और वहाँ किसी न किसी रूप में तानाशाही स्थापित हुई। इन राष्ट्रों का भारत की राजनीति पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक हौ इस स्थिति ने यह सोचने के लिए बाध्य कर दिया कि क्या भारत में भी भ्रष्टाचार आदि दुर्गुणों के विद्यमान रहते प्रजातन्त्र विद्यमार रह सकेगा।

(7) **सुदृढ़ दलीय व्यवस्था का अभाव-** देश में सुदृढ़ दलीय व्यवस्था का अभाव भी एक खतरा है। यहाँ असन्तुष्ट देता अपने दल से अलग होकर अपना पृथक् दल बनाने में तत्पर रहते हैं जिसके फलस्वरूप देश में अनेक छोटे-छोटे राजनीतिक दलों का निर्माण हुआ है जो अपने संकुचित हितों को ही दृष्टि में रखते हैं और राष्ट्रहित की अवहेलना करने में नहीं हिचकिचाते। यह स्थिति देश की प्रजातान्त्रिक व्यवस्था के लिए घातक है। पिछले अनेक वर्षों से कोई भी एक राजनीतिक दल अकेले बहुमत प्राप्त कर सरकार बनाने में सक्षम नहीं हुआ। परिणामतः शासन में अस्थिरता तथा जल्दी चुनावों के बोझ को जनता को झेलना पड़ा।

(8) **साम्राज्यवादी शक्तियाँ-** रूस, अमेरिका जैसे साम्राज्यवादी देश प्रजातन्त्र में विश्वास नहीं करते। संसार के अन्य अविकसित देशों में किसी न किसी रूप में क्रान्ति कराते रहते हैं और अपना प्रभाव वहाँ पर बढ़ाने में प्रयत्नशील रहते हैं। भारत को इन साम्राज्यवादी शक्तियों से गम्भीर खतरा है।

(9) **सजग जनमत का अभाव-** भारतीय प्रजातन्त्र की एक बड़ी कमी यह है कि यहाँ सजग जनमत का अभाव है। भारत में अभी तक स्वस्थ और सचेष्ट जनमत का निर्माण नहीं हो पाया है जो कि प्रजातन्त्र की मूल विशेषता है।

(10) **राष्ट्रीय चरित्र का पतन-** हमारे देश में राष्ट्रीय चरित्र जैसी कोई चीज न तो हमारे नेताओं में विद्यमान है और न ही जनता में। यहाँ भाई-भतीजावाद प्रमुख हैं। राष्ट्र प्रेम की भावना प्रायः समाप्त होती जा रही है। शासक एवं शासित दोनों ही वर्गों में जीवन मूल्यों का तेजी से ह्रास हुआ है। नेतृत्व करने वाला वर्ग जनता के समक्ष उदाहरणीय व्यक्तित्व प्रस्तुत करने में पूर्णतः विफल रहा है। राजनीतिक क्षेत्र में नैतिकता को ताक पर रख दिया है जबकि प्रजातान्त्रिक व्यवस्था में राजनीतिक नैतिकता पर आधारित होनी चाहिये। गाँधी जी ने भी इसी बात पर बल दिया था परन्तु हमारे यहाँ इन बातों की पूर्ण अवहेलना की गई है जो देश के लिये घातक सिद्ध हो सकती है।



## इकाई-तीन

**प्रश्न 1 गोवा मुक्ति आन्दोलन को संक्षेप में बताते हुए गोवा में पुर्तगाली शासन की स्थापना, गोवा में स्वाधीनता हेतु प्रारम्भिक संघर्ष, राममनोहर लोहिया के सत्याग्रह तथा सैनिक कार्यवाही और गोवा की आजादी का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर-** गोवा मुक्ति आन्दोलन से आशय उस सम्पूर्ण संघर्ष से है जो गोवा को पुर्तगाल से मुक्त कराने के लिए किया गया था। जब भारत के बड़े क्षेत्र पर अंग्रेज शासन कर रहे थे तब गोवा, दमन और दीव पर पुर्तगाल का शासन था। गोवा मुक्ति आन्दोलन का संघर्ष 19वीं शताब्दी में ही छोटे से स्तर पर आरम्भ हो चुका था लेकिन 1940 से 1961 के बीच एक प्रबल आन्दोलन के रूप में सामने आया। अंततः दिसम्बर 1961 में भारतीय सेना के तीनों अंगों ने मिलकर गोवा को मुक्त करा लिया।

**गोव्रा में स्वाधीनता हेतु प्रारम्भ संघर्ष-** 15 जुलाई, 1583 को कुंकली में पुर्तगालियों के खिलाफ पहला विद्रोह हुआ। इसके बाद तो 1788 में पिण्टो विद्रोह और राणे विद्रोह आदि में गोवा मुक्ति आंदोलन में अहम भूमिका निभाई। इसी क्रम में गोवा के प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी T.B. कुन्हा ने साल 1928 में गोवा एक्शन कमेटी बनाई जिसने गोवा की आजादी के लिए सत्याग्रह और अहिंसा के माध्यम से जनजागरण किया। गोवा मुक्ति आन्दोलन में महिलाओं ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। सुधाताई जोशी ऐसी ही एक वीरांगना हैं।

**कुंकली विद्रोह-** पुर्तगालियों के विरुद्ध पहला विद्रोह 15 जुलाई 1583 को कुंकली में हुआ जब धर्म परिवर्तन कराने आए पाँच पादरियों पर स्थानीय लोगों ने योजनाबद्ध तरीके से हमला किया और उनकी हत्या कर दी। स्थानीय लोगों के लिए अब ये अस्मिता और अस्तित्व की लड़ाई बन गई थी। इस घटना का बदला पुर्तगालियों ने धोखे से लिया। उन्होंने बातचीत के लिए कुंकली इलाके से 15 लोगों को बुलाया और उन्हें धोखे से हमला कर मार डाला। माना जाता है कि ये गोवा के स्वतन्त्रता संग्राम के पहले शहीद थे।

**पिंटो विद्रोह-** सन् 1788 में पिंटो विद्रोह हुआ। वितोरिया फारिया और जास गोंसाल्वेजजो उस समय पुर्तगाल में थे। दोनों यूरोप में लोकतन्त्र के आगमन को देख रहे थे। ये दोनों गोवा लौटे और आजादी और लोकतन्त्र के विचार को गोवा में पोषित किया। पिंटो परिवार की मदद से 1788 में विद्रोह हुआ जिसे कुचल दिया गया। 13 दिसम्बर, 1788 को 47 नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया जिनमें से कई को फाँसी दी गई।

**राणे विद्रोह-** गोवा के स्वतन्त्रता आन्दोलन का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण अध्याय है राणे सशस्त्र विद्रोह। 1755 से 1912 तक राणे समुदाय ने अनेकों बार शासकों से सशस्त्र संघर्ष किया। शासकों ने बार-बार संघर्ष को बर्बर तरीके से कुचल दिया। बन्दूक, तलवार आदि हथियारों के साथ सत्तरी इलाके के राणों ने बहादुरी से लड़ाई लड़ी और पुर्तगाली शासन के दिल में खौफ भर दिया। पहाड़ी इलाकों और अंदरूनी जंगलों में तकरीबन 150 साल तक गुरिल्ला लड़ाई चलती रही।

**गोवा में कांग्रेस कमेटी का गठन-** 1926 में तीरस्ताव दे ब्रागांझा कुन्हा भारत लौटे और उन्होंने अपने पाँच साथियों के साथ मिलकर 1928 में गोवा कांग्रेस कमेटी का गठन किया जिसने गोवा की मुक्ति के लिए सत्याग्रह और अहिंसा को अपना हथियार बनाया। T.V. कुन्हा

के ही एक सम्बन्धी रहे लुईस दे मिनिझिस ब्रागांझा जो एक पत्रकार और उपनिवेशवादी कार्यकर्त्ता थे, वे लगातार पुर्तगाल शासन के खिलाफ सक्रिय रहे।

**गोवा में सेंसरशिप और कालोनियल एक्ट का आदेश-** सन् 1930 में पुर्तगाल में कोलोनियल एक्ट पारित किया गया जिसके अनुसार पुर्तगाल के किसी भी उपनिवेश पर रैली, मीटिंग और अन्य कोई सरकार विरोधी सभा और गतिविधि पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। 'जयहिन्द' तक बोलने पर जेल में डाला जाने लगा। 1932 में नए शासक के दौरान गोवा में दमन अपने चरम पर पहुँच गया। शादी के कार्ड भी सेंसर किए जाने लगे कि कहीं आजादी का कोई गुप्त संदेश तो नहीं फैलाया जा रहा।

**डॉ. राममनोहर लोहिया का योगदान-** जब 15 अगस्त, 1947 को अंग्रेजों ने भारत को स्वतन्त्र घोषित किया तब भी पुर्तगाली गोवा, दमन और दीव में जमे रहे।

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन से प्रेरित होकर 1940 के दशक में गोवा के स्वतन्त्रता आन्दोलन ने गति प्राप्त कर ली थी। पूरे देश में जिस तरह अंग्रेजी शासन को समाप्त करने के लिए आन्दोलन चल रहे थे, उसी तरह गोवा में भी पुर्तगालियों के खिलाफ स्थानीय लोगों का निरन्तर और स्वतः स्फूर्त प्रतिरोध हुआ था। पुर्तगाली शासन द्वारा किये जा रहे नियन्त्रण के उपायों का कड़ा विरोध हुआ।

डॉ. राममनोहर लोहिया का गोवा को मुक्त कराने में बहुत योगदान था। वे 1946 में गोवा गए थे जहाँ उन्होंने देखा कि पुर्तगाली तो अंग्रेजों से भी बदतर थे। 8 जून, 1946 को बीमार राममनोहर लोहिया ने पुर्तगाली प्रतिबन्ध को पहली बार चुनौती दी। वहाँ के नागरिकों को सभा सम्बोधन का भी अधिकार नहीं था। लोहिया ने ये सब देखा तो तुरन्त 200 लोगों की एक सभा बुलाई। तेज बारिश के बावजूद उन्होंने एक सभा को सम्बोधित किया जिसमें पुर्तगाली दमन के विरोध में आवाज उठाई। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया लेकिन जनता के भारी आक्रोश के कारण उन्हें छोड़ना पड़ा पर गोवा आने पर 5 साल का प्रतिबन्ध लगा दिया गया, लेकिन इसके बाद भी गोवा की आजादी की लड़ाई जारी रही।

11 जून, 1953 को पुर्तगाल की राजधानी लिस्बन में भारत ने अपने दूतावास बन्द कर दिए। फिर पुर्तगाल पर दबाव डालना शुरू किया। 15 अगस्त, 1955 को तीन से पाँच हजार आम लोगों ने गोवा में घुसने की कोशिश की। लोग निहत्थे थे और पुर्तगाली पुलिस ने गोली चला दी। 30 लोगों की जान चली गई।

तनाव के बाद गोवा पर सेना की चढ़ाई की तैयारी की गई। 1 नवम्बर, 1961 को भारतीय सेना के तीनों अंगों को युद्ध के लिए तैयार रहने को कहा गया। आखिरकार 2 दिसम्बर, 1961 को गोवा मुक्ति का अभियान शुरू किया गया। जमीन से सेना, समुद्र से नौसेना और हवा से वायुसेना ने मिलकर ऑपरेशन विजय के नाम से संघर्ष किया। आखिर में 19 दिसम्बर, 1961 को रात साढ़े आठ बजे भारत में पुर्तगाल के गवर्नर जनरल मैन्यु आंतोलियो सिल्वा ने समर्पण सन्धि पर हस्ताक्षर किये और गोवा पर 451 साल का पुर्तगाली राज समाप्त हुआ।

**प्रश्न 2 भारत पाक युद्ध 1965 पर संक्षिप्त पर सारगर्भित जानकारी दीजिए।**

**उत्तर-** 1965 का भारत-पाक युद्ध इन मुठभेड़ों का नाम है जो दोनों देशों के बीच अप्रैल, 1965 से सितम्बर, 1965 के बीच हुई थीं। इसे कश्मीर के दूसरे युद्ध के नाम से भी जाना जाता है। भारत और पाकिस्तान के बीच जम्मू-कश्मीर राज्य पर अधिकार के लिए विभाजन के समय से ही विवाद चल रहा था। 1947 में भारत पाकिस्तान के बीच प्रथम युद्ध भी कश्मीर के लिए



ही हुआ था। इस लड़ाई की शुरुआत पाकिस्तान ने अपने सैनिकों को घुसपैठियों के रूप में भेज कर इस उम्मीद में की थी कि कश्मीर की जनता भारत के खिलाफ विद्रोह कर देगी। इस अभियान का नाम पाकिस्तान ने युद्धाभियान जिब्राल्टर रखा था। पाँच महीने तक चलने वाले इस युद्ध में दोनों पक्षों के हजारों लोग मारे गए। इस युद्ध का अन्त संयुक्त राष्ट्र के द्वारा युद्ध विराम की घोषणा के साथ हुआ और ताशकन्द में दोनों पक्षों में समझौता हुआ।

इस युद्ध का अधिकांश हिस्सा दोनों पक्षों की थल सेना ने लड़ा। कारगिल युद्ध के पहले कश्मीर के विषय में कभी इतना बड़ा सैनिक जमावड़ा नहीं हुआ था। युद्ध में पैदल और बख्तरबन्द टुकड़ियों ने वायुसेना की मदद से अनेक अभियानों में हिस्सा लिया। दोनों पक्षों के बीच हुए अनेक युद्धों की तरह इस युद्ध की अनेक जानकारियाँ दोनों पक्षों ने सार्वजनिक नहीं की हैं।

भारत और पाकिस्तान के 1947 में हुए बँटवारे के समय से ही भारत और पाकिस्तान के बीच कई मुद्दों पर तनातनी चल रही थी हालांकि जम्मू और कश्मीर का मुद्दा इसमें बड़ा था पर अन्य सीमा विवाद भी थे, इनमें सबसे प्रमुख कच्छ का रण, जो कि एक बंजर इलाका है के बँटवारे पर था। 20 मार्च, 1965 में पाकिस्तान ने जानबूझकर कच्छ के रण में झड़पें शुरू कर दीं। शुरू में इनमें केवल सीमा सुरक्षा बल ही शामिल थे पर बाद में दोनों देशों की सेना भी शामिल हो गई थी। 1 जून 1965 में ब्रिटिश प्रधानमन्त्री हैराल्ड विल्सन ने दोनों पक्षों के बीच लड़ाई रुकवा क़र इस विवाद को हल करने के लिये एक निष्पक्ष मध्यस्थ न्यायालय की स्थापना कर दी। इस न्यायालय ने (जिसका निर्णय तो बाद में 1968 में आया पर रुख पहले से स्पष्ट हो चुका था) कच्छ के रण की करीब 900 वर्ग किलोमीटर जगह पाकिस्तान को दे दी। हालांकि पाकिस्तान का दावा 3500 वर्ग किलोमीटर पर था।

कच्छ के रण में मिली सफलता से उत्साहित पाकिस्तान के राजनेताओं खासकर तत्कालीन विदेश मंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो ने राष्ट्रपति और सेनाध्यक्ष जनरल अयूब खान पर दबाव डाला कि वे पाकिस्तान को कश्मीर पर हमले का आदेश दें। भारत उस समय चीन से युद्ध हार चुका था और उसका मानना था कि भारत उस समय युद्ध करने की स्थिति में नहीं था। इसके अलावा भुट्टो और उनके विचार से सहमत अन्य जनरलों याह्या खान और टिक्का खान का यह भी मानना था कि कश्मीर की जनता भारत से आजाद होकर पाकिस्तान में विलय की इच्छुक है और सैनिकों को घुसपैठियों के वेश में भेजने पर उनके समर्थन में विद्रोह कर देगी। आखिर जनरल अय्यूब खाँ दबाव में आ गए और उन्होंने गुप्त सैनिक अभियान ऑपरेशन जिब्राल्टर का आदेश दे दिया। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य कश्मीर की जनता में विद्रोह भड़काना और भारतीय संचार तन्त्र एवं परिवहन व्यवस्था को नुकसान पहुँचाना था। पाकिस्तान के घुसपैठियों को जल्दी ही पहचान लिया गया और विद्रोह करने के बजाय जनता ने उनकी सूचना भारतीय सैनिकों को दे दी और यह अभियान पूर्णतः विफल हो गया था। 5 अगस्त, 1965 को 26,000 से 30,000 के बीच पाकिस्तानी सैनिकों ने कश्मीर की स्थानीय आबादी की वेशभूषा में नियन्त्रण रेखा को पार कर भारतीय कश्मीर में प्रवेश कर लिया। भारतीय सेना ने स्थानीय आबादी से इसकी सूचना पाकर 15 अगस्त को नियन्त्रण रेखा को पार किया। शुरुआत में भारतीय सेना को अच्छी सफलता मिली। उसने तोपखाने की मदद से तीन महत्त्वपूर्ण पहाड़ी ठिकानों पर कब्जा जमा लिया। पाकिस्तान ने टिथवाल, उरी और पुंछ क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण बढ़त पा ली पर 18 अगस्त को पाकिस्तानी अभियान की ताकत में काफी कमी आ गई थी। भारतीय अतिरिक्त टुकड़ियाँ लाने में सफल हो गए और भारत ने पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में 8

किलोमीटर अन्दर घुस कर हाजी पीर पर कब्जा कर लिया। इस कब्जे से पाकिस्तान सकते में आ गया। अभियान जिब्राल्टर के घुसपैठियों सैनिकों का रास्ता भारतीयों के कब्जे में आ गया था और अभियान में पाक विफल हो गया। यही नहीं, पाकिस्तान की कमान को लगने लगा कि पाकिस्तानी कश्मीर का महत्वपूर्ण शहर मुजफ्फराबाद अब भारतीयों के कब्जे में जाने ही वाला है। मुजफ्फराबाद पर दबाव कम करने के लिए पाकिस्तान ने एक नया अभियान ऑपरेशन 'ग्रैंड स्लैम' शुरु किया।

1 सितम्बर, 1965 को पाक ने ग्रैंड स्लैम अभियान के तहत सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण शहर (भारत के) अखनूर पर कब्जा करने के उद्देश्य से एक जवाबी हमला शुरू किया जिससे संचार बाधित हो और भारतीय सैनिकों के लिए आपूर्ति मार्ग बन्द हो जाए। अय्यूब खान ने गणना की थी कि हिन्दू मनोबल सही समय और स्थान पर एक-दो कठोर प्रहारों से अधिक बर्दाश्त नहीं करेगा हालांकि इस समय तक आपरेशन जिब्राल्टर विफल हो चुका था व भारत ने हाजी पीर दर्रे पर कब्जा कर लिया था। ऐसे में पाकिस्तानी सेना को आगे बढ़ने में एक दिन की देरी हो गई और उन 24 घण्टों में भारत को अखनूर की रक्षा के लिए अतिरिक्त सैनिक और सामान लाने का मौका मिल गया। खुद भारतीय सेना के स्थानीय कमाण्डर थौचवेक के थे कि पाकिस्तान इतनी आसान जीत क्यों छोड़ रहा है। एक दिन की देरी के बावजूद भारत के पश्चिमी कमान के सेना प्रमुख यह जानते थे कि पाकिस्तान बहुत बेहतर स्थिति में है और उसको रोकने के लिए उन्होंने यह प्रस्ताव तत्कालीन सेनाध्यक्ष जनरल चौधरी को दिया कि पंजाब सीमा पर एक नया मोर्चा खोल कर लाहौर पर हमला कर दिया जाए। जनरल चौधरी इस बात से सहमत नहीं थे लेकिन तत्कालीन प्रधानमन्त्री लाल बहादुर शास्त्री ने उनकी बात अनसुनी कर इस हमले का आदेश दे दिया।

भारत ने 6 सितम्बर को अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा को पार कर पश्चिमी मोर्चे पर हमला कर युद्ध की आधिकारिक शुरुआत कर दी। 6 सितम्बर को भारत की 15वीं पैदल सैन्य इकाई ने द्वितीय विश्व युद्ध के अनुभवी मेजर जनरल प्रसाद के नेतृत्व में इच्छोगिल नहर के पश्चिमी किनारे में पाकिस्तान के बड़े हमले का सामना किया। इच्छोगिल नहर भारत और पाकिस्तान की वास्तविक सीमा थी। इस हमले में खुद मेजर जनरल प्रसाद के काफिले पर भी हमला हुआ और उन्हें अपना वाहन छोड़कर भागना पड़ा। भारत ने प्रतिआक्रमण में बरकी गाँव के समीप नहर को पार करने में सफलता अर्जित कर ली। इससे भारतीय सेना लाहौर हवाई अड्डे पर हमला करने की सीमा में पहुँच गई।

परिणामस्वरूप अमेरिका ने अपने नागरिकों को लाहौर से निकालने के लिए कुछ समय के लिए युद्ध विराम की अपील की। इसी लोन पाक ने लाहौर पर दबाव को कम करने के लिए खेमकरण पर हमला कर उस पर कब्जा कर लिया। बदले में भारत ने वेदिया और उसके आसपास के गाँवों पर हमला कर दिया।

6 सितम्बर, 65 के लाहौर पर हमले में भारतीय सेना के प्रथम सैन्य खण्ड (इनफैंट्री डिवीजन) के साथ द्वितीय बख्तरबन्द उपखण्ड (ब्रिगेड) के तीन टैंक दस्ते शामिल थे। वे तुरन्त ही सीमा पार कर इच्छोगिल नहर पहुँच गए। पाकिस्तानी सेना ने पुलियाओं पर रक्षा दस्ते तैनात कर दिये व जिन पुलों को बचाया नहीं जा सकता था उनको उड़ा दिया। पाक के इस कदम से भारतीय सेना का आगे बढ़ना रुक गया। जाट रेजीमेंट की एक इकाई 3 जाट ने नहर पार करके डोगराई और बातामोर पर कब्जा कर लिया। उसी दिन पाकिस्तानी सेना ने बख्तरबन्द इकाई



और वायुसेना की मदद से भारतीय सेना की 15वें खण्ड पर बड़ा प्रति आक्रमण किया। हालांकि इससे 3 जाट को मामूली नुकसान ही हुआ लेकिन 15वें खण्ड को पीछे हटना पड़ा और उसके रसद और हथियारों के वाहनों को काफी क्षति पहुँची। भारतीय सेना के बड़े अधिकारियों को जमीनी हालात की सही जानकारी नहीं थी अतः उन्होंने इस आशंका कि 3 जाट को भी भारी नुकसान हुआ है उसे पीछे हटने का आदेश दे दिया। इससे 3 जाट के कमान अधिकारी को बड़ी निराशा हुई और बाद में उन्हें डोगराई पर फिर कब्जा करने के लिए बड़ी कीमत चुकानी पड़ी।

8 सितम्बर 1965 को 5 मराठा लाइट इन्फैंट्री का एक दस्ता राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण कस्बे मुनाबाव में तैनात राजस्थान सैन्य बल को मजबूती प्रदान करने के लिए भेजा गया। उनको पाकिस्तानी सेना के पैदल दस्ते को आगे बढ़ने से रोकने का आदेश मिला था पर वे केवल उनकी चौकी की रक्षा ही कर पाये। पाक सेना के तोपखाने से हुई भारी बमबारी और हवाई तथा पैदल सैनिक आक्रमण के बीच 5 मराठा के जवानों ने बड़ी वीरता का परिचय दिया। परिणामस्वरूप आज उस चौकी को मराठा हिल्स के नाम से जाना जाता है। 5 मराठा की मदद के लिए भेजे गए 3 गुरखा और 954 भारी तोपखाना का दस्ता पाकिस्तानी वायु सेना के भारी हमले के कारण पहुँच नहीं पाया और रसद लेकर बारमेठ से आ रही ट्रेन भी गदरा रोड रेल अड्डे के पास हमले का शिकार हो गई। 10 सितम्बर को मुनाबाओ पर पाकिस्तान का कब्जा हो गया।

9 सितम्बर की घटनाओं ने दोनों देशों की सेनाओं के सबसे गर्वित खण्डों का दम्भ चूर-चूर कर दिया। भारत के 1 बख्तरबंद खण्ड जिसे भारतीय सेना की शान कहा जाता था ने सियालकोट की दिशा में हमला कर दिया।

इस समय तक युद्ध में ठहराव आ गया था और देश अपने जीते हुए इलाकों की रक्षा में ज्यादा ध्यान दे रहे थे। लड़ाई में भारतीय सेना के 3,000 और पाकिस्तानी सेना के 3800 जवान शहीद हो चुके थे। भारत ने युद्ध में 710 वर्ग किलोमीटर इलाके में और पाक ने 210 वर्ग कि.मी. इलाके में कब्जा कर लिया था। भारत के कब्जे में सियालकोट, लाहौर और कश्मीर के उपजाऊ इलाके थे जबकि पाक के कब्जे में सिन्ध और छम्ब के बंजर इलाके थे।

**प्रश्न 3 1971 के भारत पाक युद्ध की संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित जानकारी दीजिए।**

**उत्तर-** 1971 भारत-पाक युद्ध में पाकिस्तान को बड़ी हार का सामना करना पड़ा। पूर्वी पाकिस्तान आजाद हो गया और बांगला देश के रूप में एक नया देश बना। 16 दिसम्बर को ही पाकिस्तानी सेना ने आत्म समर्पण कर दिया।

1971 का भारत-पाक युद्ध भारत एवं पाकिस्तान के बीच एक सैन्य संघर्ष था। इसका आरम्भ तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान के स्वतन्त्रता संग्राम के चलते 3 दिसम्बर, 1971 से 16 दिसम्बर, 1971 तक हुआ था एवं ढाका समर्पण के साथ इसका समापन हुआ था। युद्ध का प्रारम्भ पाकिस्तान द्वारा भारतीय वायुसेना के 11 स्टेशनों पर सिलसिलेवार हवाई हमले से हुआ जिसके परिणामस्वरूप भारतीय सेना पूर्वी पाकिस्तान में बंगलादेशी स्वतन्त्रता संग्राम में बंगाली राष्ट्रवादी गुटों के समर्थन में कूद पड़ी। मात्र 13 दिन चलने वाला यह युद्ध इतिहास में दर्ज लघुतम युद्धों में एक रहा।

युद्ध के दौरान भारतीय एवं पाकिस्तानी सेनाओं का एक ही साथ पूर्वी तथा पश्चिमी दोनों फ्रंटों पर सामना हुआ और ये तब तक चला जब तक कि पाकिस्तानी पूर्वी कमान ने समर्पण अभिलेख पर 16 दिसम्बर, 1971 में ढाका में हस्ताक्षर नहीं कर दिये, जिसके साथ ही पूर्वी पाकिस्तान को एक नया राष्ट्र बांग्लादेश घोषित किया गया। लगभग 90,000 से 93,000

पाकिस्तानी सैनिकों को भारतीय सेना द्वारा युद्धबन्दी बनाया गया था। इनमें 79,676 से 91,000 तक पाकिस्तानी सशस्त्र सेना के वर्दीधारी सैनिक थे जिनमें कुछ बंगाली सैनिक भी थे जो पाकिस्तान के प्रति वफादार थे। शेष 10324 से 15,000 युद्धबन्दी वे नागरिक थे जो या तो सैन्य सम्बन्धी थे या पाकिस्तान के सहयोगी। एक अनुमान के अनुसार इस युद्ध में लगभग 30,000 से 3,00,000 बांग्लादेशी नागरिक हताहत हुए। इस संघर्ष के कारण 80,000 से लगभग 1 लाख लोग पड़ौसी देश भारत में शरणार्थी के रूप में घुस गए।

**पृष्ठभूमि-** पूर्वी पाकिस्तान में स्थापित प्रभावशाली बंगला लोगों और पाकिस्तान के चार प्रान्तों में बसे बहु जाति पाकिस्तानी लोगों के बीच राज करने के अधिकार को लेकर चल रहे मुक्ति संग्राम ने भारत-पाक युद्ध में चिंगारी का काम किया। पाकिस्तान (पश्चिमी) एवं पूर्वी पाकिस्तान के बीच 1947 में संयुक्त राजशाही द्वारा भारत की स्वतन्त्रता के फलस्वरूप पाकिस्तान के सृजन के समय से ही राजनैतिक तनाव चल रहा था जो समय के साथ बढ़ता जा रहा था। इसको हवा देने वाले मुख्य कारकों में 1950 का प्रसिद्ध भाषा आन्दोलन, 1964 के पूर्व के बड़े दंगे और अन्ततः 1969 में भारी विरोध प्रदर्शन थे। परिणामस्वरूप पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान को अपने पद से त्यागपत्र देकर सेना प्रमुख जनरल याह्या खान को पाकिस्तान की केन्द्रीय सरकार संभालने का मौका देना पड़ा। पूर्वी एवं पश्चिमी पाकिस्तान की भौगोलिक दूरी भी अत्यधिक थी - लगभग 1600 कि.मी. जो बंगाली संस्कृति एवं पाकिस्तानी संस्कृति के राष्ट्रीय एकीकरण के प्रत्येक प्रयास में बाधा बनती थी।

बंगाली प्रभाव को दबाने और उन्हें इस्लामाबाद की केन्द्रीय सरकार बनाने में हिस्सेदारी देने के अधिकार से रोकने के लिए एक विवादित वन यूनिटी कार्यक्रम चलाया गया जिसके अन्तर्गत पूर्वी एवं पश्चिमी पाकिस्तान की स्थापना की गई, किन्तु इस प्रयास का स्थानीय पश्चिमी लोगों द्वारा घोर विरोध किया गया एवं इसके कारण सरकार हेतु दोनों धड़ों को साथ-साथ चलाना असम्भव होता गया। 1969 में तत्कालीन राष्ट्रपति याह्या खान ने प्रथम आम चुनावों की घोषणा में 1970 में पश्चिमी पाकिस्तान की स्थिति पर स्थगन कर दिया जिससे कि उसे अपनी 1947 में पाकिस्तान की स्थापना के समय बनाई गई चार प्रान्तों वाली मूल विषम स्थिति में बहाल किया जा सके। इसके साथ ही वहाँ बंगालियों और बहुजातीय पाकिस्तानियों के बीच धार्मिक व जातीय विवाद भी उठने लगे क्योंकि बंगाली लोग उन प्रभावशाली पाकिस्तानियों से बहुत भिन्न थे। 1970 में हुए आम चुनावों में पूर्वी पाकिस्तान की अवामी लीग को पूर्वी पाकिस्तान की विधानसभा की 169 में से 167 सीटें मिलीं जिसके परिणामस्वरूप उसे 313 सीटों वाली नेशनल असेम्बली में लगभग पूर्ण बहुमत मिल गया जबकि पश्चिमी पाकिस्तान का वोट बैंक कंजरवेटिव पाकिस्तानी मुस्लिम लीग और समाजवादी पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी और तत्कालीन साम्यवादी अवामी नेशनल पार्टी में बँट गया।

अवामी लीग नेता शेख मुजीबुर्रहमान ने अपनी राजनीतिक स्थिति पर जोर देते हुए इस संवैधानिक संकट को एक छहसूत्री कार्यक्रम के द्वारा समाधान कर दिया, साथ ही राज्य करने के बंगालियों के अधिकार का पुरजोर समर्थन किया। अवामी लीग की चुनावी जीत के चलते बहुत से पाकिस्तानियों को यह भय लगा कि कहीं इस तरह बंगाली संविधान को भी 6 सूत्री कार्यक्रम की ओर न घुमा ले।

26 मार्च, 1971 को पाकिस्तानी सेना के मेजर जिया उर रहमान ने शेख मुजीबुर्रहमान की ओर से बंगलादेश की स्वतन्त्रता का एलान कर दिया।



**बांग्ला मुक्ति संघर्ष में भारत की भूमिका-** तत्कालीन भारतीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने 27 मार्च, 1971 को पूर्वी पाकिस्तान के मुक्ति संघर्ष के लिए अपनी सरकार का पूर्ण समर्थन देते हुए कहा कि लाखों शरणार्थियों को भारत में शरण देने से कहीं बेहतर है कि पाकिस्तान के विरुद्ध युद्ध कर संघर्ष को विराम दिया जाए। 28 अप्रैल, 1971 को इन्दिरा गाँधी मन्त्रिमण्डल ने भारतीय तत्कालीन सेनाध्यक्ष सैम मानिकशॉ को पूर्वी पाकिस्तान को कूच करने का आदेश दिया। पूर्वी पाकिस्तान सेना से विलग हुए अधिकारियों एवं भारतीय रॉ. के घटकों द्वारा तुरन्त ही भारतीय शरणार्थी शिविरों से मुक्तिवाहिनी के गुरिल्लाओं हेतु पाकिस्तान के विरुद्ध प्रशिक्षण देने के लिए एवं भर्ती का काम आरम्भ कर दिया गया। 1971 में पूर्व में भारत समर्थित बांग्लादेशी राष्ट्रवाद की सशक्त लहर फैल गई थी। इसके बाद स्थिति अहिंसात्मक होती गई। पाकिस्तान के राष्ट्रभक्त बंगाली राजनीतिज्ञों की वाहन में बम लगाकर हत्याएं और सरकारी सचिवालयों में उच्च पदासीनों को लक्ष्य बनाने व हत्याएं करने के कार्य में तेजी दिखाई देने लगी।

**भारत की पाकिस्तान के साथ आधिकारिक भिड़न्त-** अप्रैल, 1971 के अन्त तक आते तक भारतीय प्रधानमन्त्री ने भारतीय सेनाध्यक्ष सैम मानेकशॉ से भारत के पाकिस्तान से युद्ध करने की तैयारी के सम्बन्ध में चर्चा कर ली थी।

वर्षाकाल उपरान्त नवम्बर 1971 तक परिस्थितियों को देखते हुए युद्ध अपरिहार्य हो रहा था जिसके बारे में सोवियत संघ ने पाकिस्तान को चेतावनी भी दी थी। इस चेतावनी को उस समय पाकिस्तान की एकता और अखण्डता के लिए आत्मघाती मार्ग कहा गया था। नवम्बर, 1971 के माह भर पाकिस्तानी रूढ़िवादी अपरिवर्तनवादी राजनीतिज्ञों द्वारा उकसाए गए हजारों लोगों ने लाहौर और अन्य पाकिस्तानी शहरों में क्रश इण्डिया (भारत को कुचल दो) का मार्च निकाला। इसकी प्रतिक्रियास्वरूप भारत ने अपनी पश्चिमी सीमाओं पर वृहत स्तर पर सेना का जमावड़ा करना आरम्भ कर दिया। 23 नवम्बर को पाकिस्तानी राष्ट्रपति याह्या खान ने पूरे पाकिस्तान में आपातकाल की घोषणा कर दी तथा अपने लोगों को युद्ध हेतु तैयार रहने का आह्वान किया।

3 दिसम्बर की शाम लगभग 5.40 बजे पाक वायुसेना ने भारत पाक सीमा से 480 कि.मी. दूर बसे आगरा सहित उत्तर पश्चिमी भारत के 11 वायुसेना बेस पर अप्रत्याशित रूप से हमले किये। इस हमले से विश्व प्रसिद्ध ताजमहल को घास-फूस व पत्तियों, बेलों व लताओं से ढँक कर गन्दे कपड़ों से घेर दिया गया था क्योंकि उसका सफेद संगमरमर रात्रि की चाँदनी में मार्गदर्शक की भाँति चमकता था।

इन रिक्ति पूर्व हमलों, जिन्हें ऑपरेशन चंगेज खान भी कहा गया था की प्रेरणा इजराइल के अरब-इजराइल छह दिवसीय युद्ध में ऑपरेशन फोकस की विजय से ली गई थी, परन्तु उसी शाम राष्ट्र के नाम एक सन्देश में प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाँधी ने कहा कि ये हवाई हमले पाकिस्तान की ओर से भारत पर युद्ध की घोषणा हैं और उसी रात को भारतीय वायुसेना ने पहली पहल जवाबी हवाई कार्यवाही भी कर दी। अगले दिन ही इन जवाबी हमलों को वृहत स्तर पर हवाई आक्रमण में बदल दिया गया।

इसके साथ ही 1971 के भारत-पाक युद्ध का आधिकारिक आरम्भ हुआ और प्रधानमन्त्री ने सेना की टुकड़ियों को सीमा की ओर कूच करने के आदेश दिये तथा पूरे स्तर पर पाकिस्तान पर आक्रमण कर दिया। नौसेना और हवाई हमले भी प्रारम्भ हुए।

23 नवम्बर, 1971 को भारतीय सेनाओं ने पूर्वी मोर्चे पर प्रवेश किया तथा पूर्वी पाकिस्तान की सीमाओं में घुस कर बंगाली राष्ट्रवादी संघर्षकर्त्ता साथियों का साथ दिया। भारतीय सेना के पूर्वी कमान के जनरल आफीसर मुख्य कमान अध्यक्ष लेफ्टीनेंट जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा ने पूर्वी पाकिस्तान पर पूरा जोर लगाकर आक्रमण किया और इनकी सहायता वायुसेना ने भी की। इससे ढाका वायुक्षेत्र का प्रचालन रुक गया। इसी बीच भारतीय नौसेना ने पूर्वी पाकिस्तान के समुद्री मार्ग पर अवरोध उत्पन्न किये। इसके बाद 16 दिसम्बर, 1971 को भारतीय सेनाओं ने ढाका को घेर लिया और अन्ततः 30 मिनट में समर्पण कर देने का अल्टीमेटम जारी किया। इसकी घोषणा सुनने के बाद पूर्वी पाकिस्तान ने तैनात अपने लेफ्टीनेंट जनरल नियाजी के नेतृत्व में पाकिस्तानी पूर्वी कमान ने बिना किसी अवरोध के समर्पण कर दिया।

16 दिसम्बर, 1971 को पाकिस्तान ने अन्ततः एकतरफा युद्ध विराम की घोषणा कर दी एवं इसके साथ ही अपनी संयुक्त थल सेना को भारतीय सेना को सौंप दिया जिसके साथ ही 1971 का यह भारत-पाक युद्ध आधिकारिक रूप से समाप्त हुआ।

**प्रश्न 4 भारत-चीन युद्ध 1962 के कारणों का वर्णन कीजिए। इस युद्ध में भारत की पराजय क्यों हुई? युद्ध के परिणामों का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर-**

## भारत पर चीन का आक्रमण

2 जून, 1962 को भारत सरकार ने यह घोषणा की कि चीन के साथ 1954 का समझौता समाप्त हो गया है क्योंकि चीन की सरकार ने भारतीय यात्रियों तथा व्यापारियों को तंग करके और भारतीय सीमा पर आक्रमण करके इस समझौते का पूर्णतया उल्लंघन किया है। 12 जुलाई, 1962 को भारत-चीन सीमा पर स्थिति अत्यन्त खराब हो गई क्योंकि उस दिन एक चीनी सैनिक टुकड़ी ने ग्लवान घाटी की भारतीय पुलिस चौकी को अपने घेरे में ले लिया और कई दिन तक उसका घेरा डाले रखा। 8 सितम्बर को चीनी सेनाओं ने मेकमोहन रेखा पार करके भारतीय सीमा में प्रवेश किया। 20 अक्टूबर, 1962 को चीनी सेनाओं ने उत्तर-पूर्वी सीमान्त तथा लद्दाख के मोर्चे पर एक साथ बड़े पैमाने पर आक्रमण किया। टिड्डी दल की भाँति ये भारतीय चौकियों पर टूट पड़े।

**चीन द्वारा एक तरफा युद्ध की घोषणा-** चीन की सेनाओं ने 15 और 16 नवम्बर, 1962 को भारत की सीमा पर विशाल पैमाने पर आक्रमण किये। 18 नवम्बर, 1962 को चीनी सेनाओं ने नेफा में वालोंग नामक स्थान पर कब्जा कर लिया। 19 नवम्बर, 1957 को चीनी सेना ने सेला रिज पर कब्जा कर लिया, 21 नवम्बर, 1962 को चीन ने एकतरफा युद्ध की घोषणा कर दी। चीन की सरकार ने यह घोषणा की कि उसकी सेना 21 नवम्बर, 1962 की आधी रात से गोली चलाना बन्द कर देगी और 1 दिसम्बर, 1962 से चीनी सेना 7 नवम्बर, 1962 की नियन्त्रण रेखा से 20 किलोमीटर पीछे हट जायेगी। चीन की घोषणा में यह भी कहा गया कि वह अवैध मैकमोहन रेखा के उत्तर में हट जायेगा परन्तु नियन्त्रण रेखा के अन्तर्गत वह कुछ असैनिक निरीक्षक चौकियाँ रखेगा। चीन की इस घोषणा के बाद युद्ध बन्द हो गया। चीन ने कुछ जीते हुए भारतीय प्रदेशों, युद्धबन्दियों और पकड़े हुए सैनिक सामान को भी वापस लौटा दिया था।

### भारत पर चीनी आक्रमण के कारण

भारत पर चीन के आक्रमण के निम्नलिखित कारण थे-

(1) *चीन की विस्तारवादी नीति।*



(2) *चीन आक्रमण करके अपनी शक्ति प्रदर्शित करना चाहता था ताकि उसे अधिक शक्तिशाली माना जाए ताकि एशिया में उसका नेतृत्व स्थापित हो जावे।*

(3) *भारत और चीन दोनों की विचारधाराओं में भिन्नता थी। चीन एक साम्यवादी देश था। भारत एक प्रजातांत्रिक देश था। विचारधारा की इस प्रतिस्पर्धा में चीन साम्यवादी विचारधारा की श्रेष्ठता सिद्ध करना चाहता था। उसकी विजय से एशिया के अन्य नवोदित राष्ट्र चीन की विचारधारा से प्रभावित हो सकते थे।*

(4) *तिब्बत के प्रति भारतीय नीति से चीन नाराज था। दलाईलामा को शरण देने के कारण वह हमसे नाराज था।*

(5) *चीन इस युद्ध के द्वारा सम्पूर्ण विश्व को यह बता देना चाहता था कि 'आगे से अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में चीन को सोवियत संघ का पूरक न मानें'।*

(6) *चीन ने भारत पर आक्रमण करने से पूर्व यह अच्छी तरह जान लिया था कि युद्ध में उसी की विजय होगी। वह यह जानता था कि भारत को यह कल्पना भी नहीं हो सकती कि चीन भारत पर आक्रमण करेगा।*

### भारत की पराजय के कारण

भारत की पराजय के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे-

1. **सैनिक शक्ति के प्रति उदासीनता-** स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् रक्षा के सबसे महत्त्वपूर्ण अंग सेना की उपेक्षा की गई। हमारे प्रधानमंत्री को अपने गुप्तचर विभाग से लगातार रिपोर्ट मिल रही थी की चीनियों ने हमारी सीमा के बिल्कुल निकट ही बहुत बड़ी मात्रा में सेनाएं और शस्त्र जमा कर लिए हैं तथा हवाई अड्डे बना लिये हैं और उनकी गतिविधियों में बहुत तेजी है परन्तु हमारे प्रधानमंत्री अन्त तक इस बात पर दृढ़ रहे कि चीनियों से हमारा कोई बड़ा युद्ध नहीं होगा। इसलिए सेना के प्रति उदासीनता की नीति रखी।

2. **सेना में असन्तोष-** डी.आर. मानकेकर ने लिखा है कि "प्रतिरक्षा मंत्री श्री कृष्णमेनन ने अपनी गलत नीतियों के द्वारा सेना में असन्तोष उत्पन्न कर दिया। उसने कनिष्ठ अधिकारियों को वरिष्ठ अधिकारियों के विरुद्ध खड़ा कर दिया। उसने कनिष्ठ अधिकारियों से अपना सीधा सम्पर्क स्थापित कर लिया और प्रधान सेनापतियों के दक्ष परामर्श को अस्वीकार कर दिया।"

3. **सेना के आधुनिकीकरण पर ध्यान नहीं दिया गया-** हमारे देश में यह निरन्तर धारणा चल रही थी कि भारत गाँधीजी का देश है, वहाँ पर अहिंसा का प्रभाव है, जब तक हम किसी पर आक्रमण नहीं करते, तो हमारे ऊपर कौन आक्रमण करेगा? इन धारणाओं के कारण हमारी सरकार ने प्रतिरक्षा पर उचित ध्यान नहीं दिया। सेना के आधुनिकीकरण की ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

4. **यातायात की कठिनाई-** लद्दाख और नेफा में हमारी सड़कें तथा हवाई अड्डे अन्तर्राष्ट्रीय सीमा के पास नहीं थे। वे सीमा से काफी दूर थे, इसलिए संकट के समय वहाँ तेजी से सैनिक साज व सामान तथा शस्त्र नहीं पहुँच सकते थे जबकि चीनियों की सड़कें तथा हवाई अड्डे तिब्बत में हमारी अन्तर्राष्ट्रीय सीमा के बिल्कुल समीप थे। इसलिए हमारी सरकार को अपनी अग्रिम चौकियों को सैनिक सहायता पहुँचाने में अत्यन्त कठिनाई हुई।

5. **सीमा पर कुशल सैनिक नेतृत्व की कमी-** जब युद्ध छिड़ा तो उस समय हमारी सेना में अच्छे अधिकारियों के नेतृत्व की नितान्त कमी थी। उस समय लेफ्टिनेंट जनरल कौल

दिल्ली में बीमार पड़े थे। उन्हीं के जिम्मे नेफा, असम, उत्तरप्रदेश और बिहार की रक्षा का भार था। अन्य सैनिक अधिकारियों में आपस में अनबन थी।

6. **चीन की सुदृढ़ स्थिति-** सन् 1954 से ही चीन आक्रमण की तैयारी कर रहा था। उसने अपने नक्शों में भारतीय सीमा का काफी भाग अपने अधिकार में दिखाया था। भारत की सीमा तक चीन ने पक्की सड़कों का निर्माण कर लिया था। अतः उसे सैनिक सामान तथा रसद पहुँचाने में कोई कठिनाई नहीं हुई। भारत की सीमा पर उसके सैनिकों का जबर्दस्त जमाव था। युद्ध की दृष्टि से चीन की स्थिति सुदृढ़ थी। चीन पहाड़ी पर था। वह पहाड़ की ऊँचाइयों से नीचे प्रहार कर सकता था।

7. **हमारे प्रधानमंत्री की चीन के प्रति गलत धारणा-** भारत चीन की नीयत को समझ नहीं पाया। भारत के प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू और रक्षामंत्री श्री कृष्णमेनन की यह स्पष्ट मान्यता थी कि चीन कभी भी भारत पर आक्रमण नहीं करेगा भारत का चीन के प्रति गलत राजनीतिक अनुमान था। इसकी उसे महँगी कीमत चुकानी पड़ी।

## भारत-चीन युद्ध के परिणाम

भारत-चीन युद्ध के निम्नलिखित परिणाम प्रकट हुए-

1. **भारत की प्रतिष्ठा को धक्का-** 1962 के युद्ध से पूर्व भारत की अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा शिखर तक पहुँच गई थी परन्तु इस युद्ध में भारत की हार से उसके अन्तर्राष्ट्रीय मान सम्मान को गहरा धक्का लगा। भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने स्वतन्त्रता के पश्चात् अपनी शान्तिपूर्ण तथा सह-अस्तित्व की नीति से भारत की प्रतिष्ठा को अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में बड़ा ऊँचा उठाया था। उन्होंने संसार के अधिक से अधिक देशों के साथ भारत के कूटनीतिक, व्यापारिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित किये थे। परन्तु इस युद्ध में पराजय के कारण भारत की प्रतिष्ठा को आघात लगा।

2. **भारत की विदेश नीति की असफलता-** भारत की विदेश नीति आदर्शवाद पर आधारित थी। यह यथार्थवाद व व्यावहारिकता से बहुत दूर थी। भारत स्वयं सैनिक व आर्थिक दृष्टि से कमजोर था। उसका आदर्शवाद थोथा था। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में किसी भी देश की प्रतिष्ठा कोरे आदर्शों पर आधारित नहीं होती है, उसके लिए आर्थिक रूप से तथा सैनिक रूप से भी सुदृढ़ होना जरूरी है। भारत को अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए व्यावहारिक होना चाहिए था।

3. **श्री नेहरू की प्रतिष्ठा को आघात-** श्री नेहरू ने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। स्वतन्त्रता के पश्चात् वे भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री बने और उन्होंने भारत की विदेश नीति का निर्माण किया और इसका संचालन जीवन-पर्यन्त किया। वे ही आयोजन आयोग के अध्यक्ष थे। उन्होंने ही स्वतन्त्र भारत की आर्थिक प्रगति की नींव रखी थी। इसलिए उनकी भारत तथा विदेशों में प्रतिष्ठा थी। परन्तु जब भारत चीन से युद्ध में पराजित हो गया तो श्री नेहरू की प्रतिष्ठा को धक्का लगा। विश्व में उनकी छवि धूमिल हुई। संसार के सम्मुख प्रकट हो गया कि नेहरू आदर्शवाद अपनाए हुए थे। यथार्थ के धरातल पर उनका आदर्शवाद असफल हो गया।

4. **देश की प्रतिरक्षा के प्रति पूर्ण सजग होना-** भारत का यह विश्वास था कि कोई भारत पर कोई बड़ा आक्रमण नहीं करेगा। फलतः सेना को न तो इस युद्ध का मुकाबला करने के लिए तैयार किया और न ही मनोवैज्ञानिक ढंग से देश को तैयार किया गया। परन्तु चीन



आक्रमण ने भारत की आँखें खोल दी। श्री नेहरू ने कहा कि, "चीन के आक्रमण ने हमारी आँखों को हमेशा के लिए खोल दिया है और वे हमेशा खुली रहेंगी।" इसके बाद भारत सरकार ने देश की प्रतिरक्षा की तरफ बहुत ध्यान दिया।

5. **आर्थिक विकास में रुकावट-** चीनी आक्रमण से पूर्व भारत विकास कार्यों पर अपना ध्यान केन्द्रित किए हुए था और प्रतिरक्षा पर कम धन व्यय किया जा रहा था। परन्तु चीनी आक्रमण से उनको गहरा धक्का लगा और उनको परिस्थिति से विवश होकर 100 करोड़ रुपया तत्काल संसद से स्वीकार करना पड़ा। उसके बाद पाकिस्तानी आक्रमणों के कारण हमें अपनी प्रतिरक्षा पर भारी राशि व्यय करनी पड़ी। यह स्वाभाविक ही था कि इसके कारण हमारी आर्थिक प्रगति कुछ मन्द हो गई।

6. **तटस्थ राष्ट्रों से निराशा-** भारत ने तटस्थ राष्ट्रों से मित्रता के सम्बन्ध स्थापित किये थे। भारत ने इण्डोनेशिया की स्वतन्त्रता के लिएं महत्त्वपूर्ण योग दिया था। 1956 में जब स्वेज नहर के राष्ट्रीयकरण के कारण मिश्र पर ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस तथा इजरायल का आक्रमण हो गया था तो उस समय हमारे प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने तीखे शब्दों में ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस तथा इजराइल की निन्दा की थी परन्तु जब भारत पर आक्रमण हुआ तो किसी भी तटस्थ राष्ट्र ने चीन के नग्न आक्रमण की निन्दा करने का साहस नहीं किया केवल कुछ राष्ट्रों ने बीच-बचाव करने की कोशिश अवश्य की जो चीन की हठधर्मी के कारण असफल हुई।

7. **देश में उत्साह एवं एकता का वातावरण निर्मित होना-** चीनी आक्रमण के फलस्वरूप भारतीय जनता अपने छोटे-मोटे संघर्षों एवं वैमनस्यता को भूल गए और अपनी स्वतन्त्रता को रक्षा के लिए एकता के सूत्र में बँध गए। उनमें उस समय आक्रमणकारी का मुकाबला करने के लिए अदम्य उत्साह, त्याग तथा बलिदान की भावना उत्पन्न हो गई।

8. **चीन और पाकिस्तान में मित्रता-** अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के क्षेत्र में भारत-चीन युद्ध के परिणामस्वरूप एक उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ-वह यह है कि चीन और पाकिस्तान में मित्रता हो गई।

9. **रूस और चीन में मतभेद-** चीन ने भारत पर आक्रमण किया। वह यह चाहता था कि रूस खुलकर उसका समर्थन करे परन्तु रूस तटस्थ रहा। चीन के लिए रूस की यह तटस्थता किसी अपराध से कम नहीं थी। रूस और चीन के मध्य मतभेद उग्र हो गये और अन्ततः दोनों के बीच शीतयुद्ध आरम्भ हो गया।

## इकाई-चार

**प्रश्न 1 देश की अर्थव्यवस्था से क्या आशय है? भारतीय अर्थव्यवस्था के भारत के उत्पाद से सम्बन्ध को स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर-** अर्थव्यवस्था में उत्पादन के अन्तर्गत इन सभी वस्तुओं को सम्मिलित किया जाता है। जैसे की-कृषि की फसल, वनज, पशुधन, इस्पात, सीमेंट, मोटर गाड़ियाँ, साइकिलें, पावरोटी इत्यादि इसी प्रकार 'सेवाएं' भी बैंकिंग, बीमा, जहाजरानी आदि के माध्यम से प्रदान की जाती है। हम सभी उत्पाद और सेवाओं का स्थानीय मुद्रा यानी अमेरिकी डॉलर, भारतीय रुपया आदि के रूप में कुछ वित्तीय मूल्य होता है।

इस प्रकार उत्पाद का आशय वास्तव में सभी प्रकार की उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं का किसी भी अर्थव्यवस्था में एक निश्चित अवधि के अन्दर (तिमाही, छमाही या सालान्त) सकल वित्तीय मूल्य से है।

अन्य शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि 'उत्पाद' का मतलब उन सभी उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं से है जिनका मुद्रा के द्वारा विनिमय किया जा सकता है। उदाहरणस्वरूप एक मछुआरे द्वारा पकड़ी गई सारी मछलियों में से कुछ वह अपने खाने के लिए रख सकता है और बाकी बची मछलियों को बाजार में बेचने के लिए कर सकता है। इस प्रकार सभी मछलियों का मूल्य वित्तीय मूल्य उत्पाद की विचारधारा के अन्तर्गत समझना चाहिए।

अभी तक उत्पाद की विचारधारा सहज लग रही है, परन्तु कुछ और गहराई से विचार करने पर कहा जा सकता है कि उत्पाद के अन्तर्गत दर्मियानी वस्तुएं; जैसे इस्पात, सीमेंट आदि भी शामिल की जा सकती हैं जो कि अन्य "अन्तिम रूप से तैयार माल या उत्पाद" आगे के किसी और उत्पाद के रूप में इस्तेमाल नहीं किया जा सकता, सिवाय मोटरकार और भवनों के जो कि एक अपवाद है।

यदि हम 'दर्मियानी' और अन्तिम रूप से तैयार माल, दोनों को उत्पाद की परिभाषा के अन्तर्गत लाते हैं तो इसका मतलब एक ही माल को दो बार गणना में लेना और इससे अर्थव्यवस्था के उत्पाद को बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत करना होगा। उदाहरणस्वरूप गेहूँ का उत्पादन और मिल में पिसाई से पावरोटी का उत्पादन होता है। अतः उत्पाद निर्धारण की दृष्टि से सिर्फ पावरोटी का मौद्रिक मूल्य विचार में लिया जाएगा न कि गेहूँ या आटे का। इस प्रकार यह निर्णायक निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अर्थव्यवस्था के उत्पाद के अन्तर्गत सिर्फ 'अन्तिम रूप से तैयार माल' और सेवाओं के, एक निश्चित अवधि के अन्दर मौद्रिक मूल्य को शामिल किया जाना चाहिए।

किन्तु पुनः प्रयुक्त वस्तुओं के बारे में क्या जैसे पुनः प्रयुक्त कार? क्या वे अर्थव्यवस्था में उत्पाद को प्रदर्शित करते हैं? इसका उत्तर हाँ में है क्योंकि उत्पादन हुआ था। इस प्रकार एक अर्थव्यवस्था में 'उत्पाद' अन्तिम वस्तु और सेवा का मूल्य दिये गये समय में होता है।

वस्तुओं का उत्पादन और सेवा प्रदान करने को आर्थिक गतिविधियों की संज्ञा दी जाती है, परन्तु प्रश्न यह है कि एक अर्थव्यवस्था में इनके उत्पादक कौन हैं? ये अकेला व्यक्ति, छोटे व्यवसायी, टाटा, बिरला, रिलायंस उद्योग जैसी निजी कम्पनियाँ_ या और भी कोई? हो सकता है, या सरकारी उपक्रम जैसे सार्वजनिक क्षेत्र की कम्पनी तेल और प्राकृतिक गैस (ONGC), स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड (SAIL) या विदेशी कम्पनियाँ जैसे कि नोकिया, सोनी, सैम्संग आदि_।

यदि हम किसी देश की भौगोलिक सीमाओं के अन्दर कुल अन्तिम रूप से तैयार माल और प्रदत्त सेवाओं का, कौन उत्पादन कर रहा है, इसकी चिन्ता किये बिना, मौद्रिक मूल्य का निर्धारण करें तब इसे अर्थव्यवस्था के "घरेलू उत्पाद" की संज्ञा दी जा सकती है।

इस प्रकार भारतीय सन्दर्भ में, घरेलू उत्पाद के अन्तर्गत समस्त 'अन्तिम रूप से तैयार माल' एवं प्रदत्त सेवाएं, जिन्हें व्यक्तिगत तौर पर निजी कम्पनियों द्वारा, सार्वजनिक क्षेत्र और विदेशी कम्पनियों द्वारा प्रदत्त किया जा रहा है, उनके कुल मौद्रिक मूल्य को शामिल किया जाता है।



एक अर्थव्यवस्था के अन्दर यह देखने के बाद कि वस्तुओं का उत्पादक कौन है, हमें अब यह देखना है कि वस्तुओं का उत्पादन होता कैसे है। किसी भी प्रकार का उत्पादन करने के लिए हमें सर्वप्रथम एक स्थान और बुनियादी ढाँचे की जरूरत होती है। जहाँ वस्तुओं का उत्पादन हो सके। अतः हमें चाहिए थोड़ी जमीन (या बिल्डिंग) धन प्रारम्भिक पूँजी के रूप में जिसके द्वारा मशीनें और कच्चा माल खरीदा जा सके और बाजार में बना माल बेचने के लिए विज्ञापन आदि की प्रक्रिया, माल ढुलाई आदि की व्यवस्था। साथ ही चाहिए उत्पादन करने के लिए श्रमिक और एक व्यक्ति जिसे हम उद्यमी के नाम से जानते हैं। इन सभी को एक अर्थव्यवस्था में "उत्पादन के कारक" कहा जाता है।

इस प्रकार "उत्पादन के जीवन-चक्र में उत्पादन के प्रत्येक 'कारक' से एक जुड़ी कीमत" होती है, जैसे कि निवेश के लिए प्रारम्भिक पूँजी, भूमि या बुनियादी ढाँचे का किराया, श्रमिकों की मजदूरी या कर्मचारियों की तनख्वाह आदि; इन सब खर्च के बाद उद्यमी जो लाभ कमाता है, वह वस्तुतः उत्पादन के लिये उठाये गये जोखिम का परिणाम है।

यहाँ यह ध्यान देना चाहिए कि अर्जित लाभ किसी आर्थिक गतिविधि की कीमत है, परन्तु यह कीमत उत्पादन के किसी कारक की आय भी है। उदाहरणस्वरूप भूमि से प्राप्त किराया, उसकी आय है; पूँजी से प्राप्त आय उसकी आय है, मजदूरी एवं तनख्वाह श्रमिक तथा सुपरवाइजर की आय है और उद्यमी द्वारा अर्जित लाभ उसके द्वारा लिए गये जोखिम की आय है। इसी उदाहरण को अंकों के माध्यम से समझने की कोशिश करते हैं। एक विनिर्माण कम्पनी का विवरण निम्नवत है-

| | | |
|---|---|---|
| भूमि (किराया) | : | 10,000/- रुपये |
| श्रमिक (मजदूरी, तनख्वाह) | : | 1,000/- रुपये |
| पूँजी (ब्याज) | : | 230/- रुपये |
| उद्यमी (लाभ) | : | 500/- रुपये |
| कुल योग | : | 12,250/- रुपये |

उपर्युक्त उदाहरण में उद्यमी द्वारा की गई कुल कीमत 12,250/- रुपये है (सभी कीमतें शामिल)। तब कुल उत्पाद कितना हुआ। वह भी 12,250/- रुपये ही होगा; और उत्पादन के सभी कारकों की आय क्या है? पहले उत्तर जैसा 12,250/- रुपये। मूलतः इसका आशय यह है कि उत्पादन/कीमत ही उत्पादन के कारकों की आय है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि उत्पाद और उससे अर्जित आय एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इस प्रकार हमारे द्वारा उत्पाद या आय कहने का आशय एक ही है।

कभी-कभी उत्पाद को एक अर्थव्यवस्था की उपज या उत्पादन के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है (मात्रा × साधन लागत)। अतः एक अर्थव्यवस्था में घरेलू उत्पाद एवं घरेलू आय का मतलब एक ही है।

अब तक हमने घरेलू उत्पाद/उत्पादन/आय की चर्चा की है, परन्तु उन भारतीयों की आय के बारे में क्या जो विदेशों में रह रहे हैं? उत्पाद के समग्र विश्लेषण के लिए यह आवश्यक है कि देश की भौगोलिक सीमाओं के बाहर देखा जाए तो सभी भारतीयों की आय को सम्मिलित करें बिना इस बात का ध्यान दिये की वे वर्तमान में किस देश में निवास कर रहे हैं।

परन्तु, यदि हम अप्रवासी भारतीयों की आय को 'उत्पाद' में शामिल करते हैं तो यह तर्कसंगत होगा कि भारत के अन्दर रह रहे विदेशियों की आय हमें अपने 'उत्पाद' श्रेणी से निकाल देना चाहिए। इसे "विदेश से शुद्ध कारक आय" भी कहा जाता है। अतः

घरेलू उत्पाद + विदेश से शुद्ध कारक आय – भारतवासी विदेशियों की आय = राष्ट्रीय आय

अथवा

घरेलू उत्पाद (+/–) विदेशों से शुद्ध कारक आय = राष्ट्रीय उत्पाद

"विदेश से शुद्ध कारक आय" (NFIAD) धनात्मक या ऋणात्मक हो सकती है और यह इस बात पर निर्भर करता है कि अप्रवासी भारतीयों की आय, भारत में अर्जन कर रहे विदेशियों से ज्यादा या कम है अर्थात् राष्ट्रीय उत्पाद, घरेलू उत्पाद से कम होगी, यदि अप्रवासी भारतीयों की आय भारत में अर्जन कर रहे विदेशियों से कम है या इसके प्रतिकूल है।

किसी देश की बढ़ी हुई विदेशी मुद्रा, प्रभावित ऋण अथवा घरेलू परिसम्पत्ति की विदेशों को बिकवाली राष्ट्रीय उत्पाद में कमी करेगा जबकि घरेलू उत्पाद अप्रभावित रहेगा।

**प्रश्न 2 भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रमुख लक्षणों की व्याख्या कीजिए।**

**उत्तर-** अल्पविकसित देशों की विभिन्न आर्थिक, जनांकिकीय और सामाजिक, राजनीतिक विशेषताएं भारत पर लागू होती हैं। भारत को विकसित देशों जैसे-अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन इत्यादि की तुलना में अल्पविकसित अर्थव्यवस्था में ही रखा जाता है और इस संबंध में निम्न तर्क दिए जाते हैं-

(1) **ऊँची जन्म व मृत्यु दर-** वर्तमान अनुमानों के मुताबिक भारत की जन्म व मृत्युदर क्रमशः 28.6 व 9.2 प्रति हजार है जो बहुत ज्यादा है। इसलिए भारत अल्पविकसित देशों के अंतर्गत आता है।

(2) **निम्न प्रत्याशित आयु-** विकसित देशों में औसत प्रत्याशित आयु 71 से 79 वर्ष के बीच रहती है, वहीं वर्तमान में भारत की प्रत्याशित आयु 62 वर्ष है। इस तरह यह अल्पविकसित देशों की श्रेणी में आता है।

(3) **पुरानी उत्पादन विधियां-** अल्पविकसित देशों में पुरानी तथा परंपरागत उत्पादन विधियां पाई जाती हैं। भारत में भी यही स्थिति है। यहां आज भी कृषि व औद्योगिक उत्पादन में पुरानी प्रविधियां काम में आ रही हैं।

(4) **निम्न साक्षरता-** विकसित देशों में साक्षरता का प्रतिशत 95 से भी ज्यादा होता है, वहीं भारत में यह अभी भी 52 प्रतिशत के आसपास है। इस तरह यह अल्पविकसित देशों की श्रेणी में आता है।

(5) **कृषि की प्रधानता-** कृषि की प्रधानता अल्पविकसित अर्थव्यवस्था की मुख्य पहचान है जो भारत पर भी लागू होता है। आज भी भारत की 65 प्रतिशत जनसंख्या कृषि व्यवसाय में लगी है और राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान 31 प्रतिशत से ज्यादा है।

(6) **प्रति व्यक्ति निम्न आय-** अल्पविकसित देशों की तरह भारत में भी प्रति व्यक्ति आय बहुत निम्न है। स्विट्जरलैंड और कनाडा में प्रति व्यक्ति आय 37930 व 25880 डॉलर है, वहीं भारत में 320 डॉलर प्रति व्यक्ति है।

(7) **पूंजी-निर्माण का नीचा स्तर-** संयुक्त राष्ट्रसंघ के विश्व आर्थिक सर्वेक्षण के मुताबिक पूंजी-निर्माण की दर जहां जापान में 33 व कनाडा में 21 है, वहीं भारत की 15.6 प्रतिशत है। इस हिसाब से भी भारत अल्पविकसित है।



(8) **बेरोजगारी-** बाकी अल्पविकसित देशों की तरह भारत में भी बेरोजगार लोगों की एक बड़ी फौज निवास करती है। शिक्षित बेरोजगारों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। कृषि पर आधारित अर्थव्यवस्था होने से यहां प्रच्छन्न बेरोजगारी भी भारी मात्रा में पाई जाती है।

(9) **जनसंख्या का बड़ा आकार-** भारत की जनसंख्या वर्तमान में लगभग 100 करोड़ है जो विश्व स्तर पर चीन के बाद दूसरे स्थान पर है। इस आधार पर भी भारत की गणना अल्पविकसित देशों में की जाती है।

उक्त विवेचन के आधार पर भारतीय अर्थव्यवस्था को अल्पविकसित तृतीय संसार के सदस्य के रूप में माना जाता है लेकिन भारतीय अर्थव्यवस्था में कुछ नवीन विशेषताएं, जैसे-प्रति व्यक्ति वास्तविक आय, पूंजी-निर्माण दर, उत्पादिता आदि में वृद्धि की प्रवृत्ति, आर्थिक व सामाजिक उपरि-पूंजी में विस्तार, योजनाबद्ध विकास, समाजवादी अर्थव्यवस्था, सेवा क्षेत्र का तेजी से विकास आदि भी हैं। ये विशेषताएं सभी अल्पविकसित देशों में नहीं होती हैं। इसलिए भारत को एक अल्पविकसित या अर्द्धविकसित देश के स्थान पर एक विकासशील देश या विकासशील अर्थव्यवस्था कहना अधिक उचित होगा।

**प्रश्न 3 स्वतन्त्रता के बाद से भारत में किए गए भूमि सुधार उपायों का वर्णन कीजिए। भारत में भूमि सुधार नीति के अन्तर्गत पंचवर्षीय योजनाकाल में किए गए उपायों पर प्रकाश डालिए।**

**उत्तर-**

## भूमि सुधार से आशय

भूमि सुधार का संकुचित एवं विस्तृत दो प्रकार से अर्थ लगाया जाता हे। संकुचित अर्थ में भूमि सुधार से तात्पर्य ऐसे संस्थागत परिवर्तनों से है जिनमें भूमि स्वामित्व का वितरण छोटे किसानों तथा कृषि श्रमिकों के पक्ष में हो। विस्तृत अर्थ में इसका तात्पर्य भूमि व्यवस्था में होने वाले प्रत्येक परिवर्तन से है। मिर्डल के अनुसार, "भूमि सुधार मनुष्य एवं भूमि में संबंध का योजनाबद्ध एवं संस्थागत पुनर्संगठन है।"

## भारत में भूमि सुधार का महत्व या आवश्यकता

कृषि एवं ग्रामीण विकास के लिए भूमि सुधार पहली आवश्यक शर्त है। कृषि क्षेत्र में भूमि सुधार के महत्व को मिर्डल ने इन शब्दों में व्यक्त किया है, "अल्पविकसित देशों में भूमि सुधार ही कृषि विकास का मूल-मंत्र है।" भारत में भूमि सुधार के महत्व को निम्नलिखित आधारों पर स्पष्ट किया जा सकता है-

1. **कृषि उत्पादन में वृद्धि के लिए-** देश में बढ़ती हुई कृषि पदार्थों की मांग को पूरा करने के लिए कृषि उत्पादन में वृद्धि करना आवश्यक है। कृषि उत्पादन में वृद्धि करने के लिए भूमि सुधार कार्यक्रम को लागू करना आवश्यक है।

2. **औद्योगिक विकास के लिए-** देश में उद्योगों को आवश्यक कच्चा माल और धन कृषि क्षेत्र से ही प्राप्त होता है। अतः भूमि सुधार कार्यक्रम के माध्यम से औद्योगिक कच्चे माल एवं वित्त की पूर्ति में वृद्धि की जा सकती है।

3. **सामाजिक न्याय-** सामाजिक न्याय की मांग है 'जमीन उसी की हो जो वास्तव में इसे जोतता है।' अतः सामाजिक न्याय की प्राप्ति हेतु भूमि सुधार कार्यक्रम लागू करना जरूरी है।

4. **नियोजित विकास के लिए-** देश में आर्थिक नियोजन की सफलता कृषि के विकास पर निर्भर है तथा कृषि विकास हेतु यह आवश्यक है कि भूमि सुधार कार्यक्रम लागू किए जाएं।

5. **ग्रामीण क्षेत्रों में आय की विषमताओं को कम करना-** ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी अनेक कृषि जोतें इतनी छोटी हैं कि उन पर कृषि कार्य करना लाभप्रद नहीं होता है। ऐसे कृषकों की आय भी बहुत कम है। जबकि उन कृषकों के पास बड़ी मात्रा में भूमि है जिनकी आय का स्तर भी बहुत ऊंचा है। कृषि क्षेत्र की आय की इस विषमता को छोटे एवं सीमांत कृषकों तथा भूमि के वास्तविक काश्तकारों में भूमि का पुनर्वितरण करके दूर किया जा सकता है।

## भूमि सुधार के उद्देश्य

1. **कृषि उत्पादन में वृद्धि-** भूमि सुधार का एक प्रमुख उद्देश्य कृषि उत्पादन की वृद्धि में आने वाली उन बाधाओं को दूर करना है, जो भूमि संबंधी ढांचे के कारण उत्पन्न होती हैं। भूमि के इस दोषपूर्ण ढांचे के कारण एक ओर तो छोटी भूमि वाले किसानों में कृषि उत्पादन को बढ़ाने के लिए आवश्यक कृषि औजारों को खरीदने की शक्ति नहीं होती, और दूसरी ओर काश्तकारी पर काम करने वाले किसानों को कृषि संसाधनों के उचित प्रयोग की प्रेरणा नहीं रहती। भूमि सुधार द्वारा इन दोषों को दूर करने के लिए चकबंदी, सहकारी खेती, गहन खेती आदि को अपनाया गया है।

2. **सामाजिक न्याय-** सामाजिक न्याय की प्राप्ति भूमि सुधार का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। भू-धारण संबंधी सुधार के फलस्वरूप किसान का शोषण रुकेगा और अपने निवेश व श्रम का पूरा फल उसे मिल सकेगा। साथ ही भूमि की सीमाबंदी और भूमिहीन एवं छोटे किसानों के बीच भूमि के समान वितरण से धन और आय की असमानताएं घटेंगी। चकबंदी सहकारी खेती आदि उपायों से कृषि जोत के आकार में वृद्धि होने से किसानों की आमदनी बढ़ेगी।

3. **राजनैतिक उद्देश्य-** भूमि सुधार राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए भी किया जाता है जिसके अंतर्गत ग्रामीण जन समूह को अपने पक्ष में करने के लिए भूमि सुधार की योजना बनाई जाती है और उसको कार्यरूप में परिणित किया जाता है।

## भारत में भूमि सुधार की प्रगति या सरकार द्वारा किए गए प्रयास

भारत में भूमि सुधार का उद्देश्य सामाजिक न्याय की दृष्टि से कृषि जोतों के स्वामित्व का पुनर्वितरण करना तथा भूमि के अनुकूलतम उपयोग की दृष्टि से कार्यशील जोतों का पुनर्गठन करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु भारत में भूमि सुधार के अंतर्गत निम्न कार्यक्रमों को शामिल किया गया है-

1. **मध्यस्थों का उन्मूलन-** स्वतंत्रता के पूर्व भारत में तीन प्रणालियां प्रचलित थीं-जमींदारी, महालवारी तथा रैयतवाड़ी। स्वतंत्रता के बाद यह माना गया कि ये तीनों प्रणालियां ज्यादा उत्पादन तथा सामाजिक एवं आर्थिक न्याय दोनों ही दृष्टिकोण से उपयुक्त नहीं हैं। अतः स्वामित्व प्रणाली का पुनर्गठन करने की आवश्यकता महसूस की गई। स्वतंत्रता के बाद मध्यस्थों के उन्मूलन का 1948 में मद्रास सरकार के अधिनियम के साथ प्रारंभ हुआ तथा 1954-55 में पश्चिम बंगाल सरकार के अधिनियम के साथ पूर्ण हुआ। इसके कारण 30.4 लाख कास्तकारों तथा बटाईदारों को 62.2 लाख एकड़ कृषि क्षेत्र के स्वामित्व का अधिकार प्राप्त हुआ है।

2. **काश्तकारी सुधार-** मध्यस्थों के उन्मूलन हेतु पारित अधिनियमों का वास्तविक उद्देश्य भूमि जोतने वालों को भूमि प्रदान करना था, पर इससे काश्तकारी की समस्या का उन्मूलन नहीं हो सका। काश्तकारी सुधारों के निम्न तीन उपाय हैं-



(i) **लगान का नियमन-** *स्वतंत्रता के पश्चात् लगान के नियम हेतु विभिन्न राज्य सरकारों ने जरूरी कानून पास किए हैं, हालांकि सभी राज्यों में लगान की दर अलग-अलग हैं।*

(ii) **काश्तकारों स्वामित्व का अधिकार-** *पहले काश्तकारों को भूमि खरीदने का ऐच्छिक अधिकार प्राप्त था, पर यह प्रभावशाली सिद्ध नहीं हो सका। अतः तीसरी योजना में अनिवार्य खरीदी की व्यवस्था लागू करने का सुझाव दिया तथा इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु विभिन्न राज्यों में जरूरी कानून लागू किए गए। जैसे पंजाब में काश्तकारों के लिए खरीददारी का ऐच्छिक अधिकार प्राप्त है। अन्य राज्यों में से असम, बिहार, जम्मू-कश्मीर तथा तमिलनाडु में खरीददारी के ऐच्छिक अधिकार की व्यवस्था नहीं हो सकी है।*

(iii) **भू-धारणा की सुरक्षा-** *जमींदारी-उन्मूलन के बाद बड़े पैमाने पर खुद-काश्त के नाम पर काश्तकारों को भूमि से बेदखल कर दिया। क्योंकि भूमि, सुधार के प्रारंभिक वर्षों में खुद काश्त की परिभाषा में कई खामियां रह गई थीं। इस बेदखली को रोकने हेतु कई तरह से भूमि पुनर्ग्रहण की व्यवस्थाएं निर्मित की गई।*

3. **कृषि जोतों पर सीमा निर्धारण-** भारत में वर्तमान जोतों पर सीमा निर्धारण तथा क्रियान्वयन से संबंधित कानून दो चरणों में लागू हुए हैं। प्रथम चरण में सीमाबंदी कानूनों में भू-धारक को क्रियान्वयन की इकाई माना गया। 1972 के बाद द्वितीय चरण में परिवार को क्रियान्वयन की इकाई माना गया तथा सीमा स्तर घटाया गया।

4. **सहकारी खेती-** भारत में कृषि सहकारी समितियां दो तरह की हैं-सेवा सहकारिता तथा सहकारी संयुक्त कृषि समितियां। सेवा सहकारिताओं का मुख्य उद्देश्य अपने सदस्यों को उन्नत बीज, खाद, कीटनाशक, कृषि उपकरण आदि उपलब्ध कराना तथा उपज के विपणन की व्यवस्था करना है। सहकारी संयुक्त कृषि समितियों का उद्देश्य अपने सदस्यों को विस्तृत रूप से खेती के लाभ पहुंचाना है।

5. **कृषि जोतों की चकबंदी-** स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कई राज्य सरकारों ने अनिवार्य चकबंदी की व्यवस्था लागू की। इसके कारण देश में लगभग 45 मिलियन हेक्टेयर भूमि की चकबंदी हो चुकी है जो चकबंदी योग्य भूमि का 1/4 भाग है। एक तरफ कुछ राज्यों ने ऐच्छिक चकबंदी की वैधानिक व्यवस्था की है तो दूसरी तरफ केरल एवं तमिलनाडु जैसे कुछ राज्यों में अभी कानून बनाना ही शेष है।

## भारत में भूमि सुधार नीति

स्वतंत्रता के बाद से ही देश में भूमि सुधार कार्यक्रमों को महत्व दिया गया है। नियोजन काल के प्रारंभ से ही हर योजना में इस पर समुचित बल दिया गया है जिसका अलग-अलग विवरण इस प्रकार है-

**प्रथम योजना-** इस योजना में यह स्वीकार किया गया कि भूमि स्वामित्व और खेती प्रारूप की संरचना राष्ट्रीय विकास के लिए एक आधारभूत प्रश्न है, अतः राज्य सरकारों द्वारा भूमि सुधार के आवश्यक कदमों को उठाने की दृष्टि से भूमि सुधार कार्यक्रमों की एक रूपरेखा तैयार की गई। इस कार्य के लिए योजना आयोग ने एक भूमि सुधार मंडल की नियुक्ति की।

**द्वितीय योजना-** इस योजना में भूमि-सुधार की नीति द्विमुखी थी-

1. *कृषि उत्पादन में आने वाली ऐसी बाधाओं को दूर किया जाए जो कृषि संरचना की प्रकृति के कारण होती हैं एवं शीघ्रता से ऐसी दशाएं उत्पन्न की जाएं जिससे उच्च स्तर की कार्य कुशलता और उत्पादकता वाली कृषि व्यवस्था को विकसित किया जा सके।*
2. *समाजवादी समाज की स्थापना करना तथा सामाजिक विषमताओं को दूर करना।*

इस नीति में निम्न उपाय अपनाने का सुझाव दिया गया था- (अ) मध्यस्थ किरायेदारों का उन्मूलन, (ब) काश्तकारी व्यवस्था में सुधार, (स) भूमि की उच्चतम सीमा का निर्धारण, (द) चकबंदी, तथा (य) कृषि व्यवस्था का पुनर्संगठन।

**तृतीय योजना-** इस योजना में भूमि सुधार कार्यक्रमों को शीघ्रता से पूरे किए जाने पर बल दिया। सन् 1966 में 'भूमि सुधार कार्यान्वयन समिति' ने भारत में किए गए भूमि सुधार कार्यक्रमों का विस्तृत अध्ययन किया।

**चतुर्थ योजना-** इस योजना में यह सुझाव दिया गया कि कृषि में हुए तकनीकी विकास तथा समय की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए भूमि नीति को पुनः तैयार किया जाए। इसके साथ ही भूमि सुधार से संबंधित विद्यमान अधिनियमों की समीक्षा की जाए और उनके शीघ्र क्रियान्वयन के उपाय किए जाएं। नवंबर 1969 में सरकार द्वारा आयोजित सम्मेलन में राज्य सरकारों को यह निर्देश दिए गए कि वे भूमि-सुधार संबंधी अधिनियमों को शीघ्र लागू करने की व्यवस्था करें।

**पांचवीं योजना-** इस योजना में सर्वाधिक महत्व काश्तकारी व्यवस्था की ओर दिया गया। इस योजना में मार्ग दर्शक बातों के रूप में निम्न बातों पर पुनः जोर दिया गया-

1. *भूमि का किराया सकल उत्पादन के 1/5 से 1/4 तक से अधिक नहीं होना चाहिए।*
2. *विशिष्ट दशाओं को छोड़कर काश्तकारों को स्थायी घोषित कर दिया जाना चाहिए।*
3. *उन भूमि क्षेत्रों को जिन्हें भू-स्वामी प्राप्त नहीं कर सकते, काश्तकारों के स्वामित्व में भू-स्वामी और काश्तकार के संबंध समाप्त कर देना चाहिए।*

इस योजना में भूमि-सुधार कार्यक्रम के लिए 163 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया था।

**छठवीं योजना-** इस योजना में भूमि सुधार कार्यक्रमों के अंतर्गत निम्न बातों को शामिल किया गया-

1. *जिन राज्यों में किरायेदारों के लिए स्वामित्व अधिकारों के संबंध में वैधानिक प्रावधान नहीं हैं, उन राज्यों में उचित उपाय किए जाएं।*
2. *भूमि की अधिकतम सीमा से आधिक्य भूमि सरकार द्वारा ले ली जाए और उसका वितरण कर दिया जाए।*
3. *भूमि अभिलेखों को नवीनतम करने का कार्य योजना के अंत में पूरा कर लिया जाए।*
4. *सभी राज्यों में चकबंदी कार्यक्रम इस प्रकार चलाए जाएं कि दस वर्षों में यह कार्य पूरा हो जाए।*



इस योजना में भूमि सुधार कार्यक्रमों पर 305 करोड़ रुपये व्यय करने का प्रावधान रखा गया।

**सातवीं योजना-** इस योजना में भूमि सुधार को गरीबी विरोधी कार्यक्रम का एक अभिन्न अंग बनाया गया है। जिन राज्यों में किरायेदारों के अधिकारों की सुरक्षा और किराये के नियमन के अधिनियम नहीं बनाए गए हैं, उन राज्यों में इस दिशा में आवश्यक प्रयास किए जाएंगे। प्राप्त आधिक्य भूमि के पुनर्वितरण की उचित व्यवस्था की जाएगी। पूर्वी राज्यों में चकबंदी कार्यक्रमों को उचित प्रकार से लागू किया जाएगा तथा सभी राज्यों में भूमि के आंकड़ों को पूर्ण एवं नवीन बनाया जाएगा। कुल मिलाकर इस योजना में भूमि सुधार कार्यक्रमों के लिए 393.83 करोड़ रु. की व्यवस्था की गई है।

## भारत में भूमि सुधार कार्यक्रमों की धीमी प्राप्ति के कारण या आलोचनाएं

संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमि संबंधी एक रिपोर्ट के अनुसार, "भारत में भूमि सुधार के हाल के अधिनियम संख्यात्मक दृष्टि से सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण हैं, पर इनकी प्राप्ति धीमी है।" भारतवर्ष में भूमि सुधार कार्यक्रमों की धीमी प्रगति के मुख्य कारण निम्न हैं-

1. **वास्तविक स्वामित्व हस्तांतरण में दोष-** सरकार ने बड़े जमींदारों से अतिरिक्त जमीन लेकर छोटे कृषकों एवं भूमिहीन श्रमिकों को दी है, लेकिन इन कृषकों एवं श्रमिकों को इन भूमियों पर वास्तविक कब्जा अभी तक नहीं मिला है। अभी भी ये जमीनें जमींदारों के कब्जे में हैं।
2. **जाली सहकारी कृषि समितियां-** डॉ. के.एन. राज के शब्दों में "प्रायः सहकारी कृषि समितियां संपन्न व्यक्तियों द्वारा सस्ती दरों पर विकास कार्यक्रमों हेतु प्रदान की जाने वाली सुविधाओं को हथियाने का साधन बनी हुई हैं।" इस तरह भूमि सुधार कार्यक्रमों का वास्तविक लाभ जरूरतमंदों को कम ही प्राप्त हुआ है।
3. **भूमि के प्रति लगाव-** भारत में कृषक जमीन को अपने पुत्रों के समान प्रेम करता है तथा उसे आसानी से छोड़ता नहीं है इसलिये चकबंदी तथा सीमा बंदी के कानूनों की प्राप्ति धीमी है।
4. **भूमि संबंधी प्रलेखों का अपूर्ण होना-** भारत में भूमि संबंधी आंकड़े तथा प्रलेख अपूर्ण हैं जिसके कारण भू-स्वामित्व के निर्धारण में कठिनाई आती है।
5. **भूमि सुधार कार्यक्रम में भिन्नता-** भूमि सुधार कार्यक्रमों की आलोचना इस आधार पर की जाती है कि विभिन्न राज्यों में भूमि सुधार संबंधी अधिनियम भिन्न-भिन्न हैं जिससे राष्ट्रीय स्तर पर उनको एक साथ क्रियान्वित नहीं किया जा सकता है।
6. **प्रभावशाली क्रियान्वयन का अभाव-** भारतवर्ष में भूमि सुधार कार्यक्रमों की धीमी प्राप्ति का कारण इनको प्रभावशाली तरीके से क्रियान्वित नहीं किया जाना भी है। भूमि सुधार कानूनों में ऐसी कई कमियां हैं जिनके कारण बड़े जमींदारों ने इनसे बचने के कई रास्ते निकाल लिए हैं।

## भूमि-सुधार कार्यक्रमों की सफलता के लिए सुझाव

1. *भूमि सुधार कानूनों को प्रभावशाली तरीकों से लागू किया जाए। इस संबंध में बड़े किसानों के प्रभाव तथा राजनीतिक दबावों को खत्म किया जाए।.*
2. *कार्यक्रम लागू करने की प्रक्रिया को सरल बनाया जाए।*
3. *बेनामी भूमि को भूमिहीनों में वितरित किया जाए।*

4. *नए भू-स्वामियों को संगठित किया जाए एवं उन्हें कृषि कार्य हेतु उचित साधन तथा वित्तीय सुविधाएं प्रदान की जाएं।*
5. *भूमि संबंधी रिकार्ड को संशोधित तथा पूर्ण किया जावे।*
6. *भूमि सुधार कार्यक्रम के अंतर्गत जिन कृषकों एवं श्रमिकों को भूमि वितरित की गई है सरकार उनको जमीनों पर वास्तविक कब्जा दिलवाए।*
7. *भूमि सुधार कानूनों का प्रचार-प्रसार करके जनता का अधिक से अधिक सहयोग प्राप्त किया जाए।*

उपरोक्त सुझावों को कार्यरूप देकर देश में भूमि-सुधार कार्यक्रमों को सफल बनाया जा सकता है।

**प्रश्न 4 भूदान आन्दोलन क्या था? इसके उद्भव और विकास की विवेचना कीजिए।**

**उत्तर-** भूदान भूमि सुधार करने, कृषि में संस्थागत परिवर्तन लाने, जैसे भूमि का पुनर्वितरण सिर्फ सरकारी कानूनों के जरिए नहीं बल्कि एक आन्दोलन के जरिए करने की एक कोशिश थी। प्रसिद्ध गाँधीवादी रचनात्मक कार्यकर्त्ता आचार्य विनोबा भावे ने पचास के दशक के अवध में इस आन्दोलन के लिए गाँधीवादी तकनीकों एवं रचनात्मक कार्यों तथा ट्रस्टीशिप जैसे विचारों को प्रयोग में लाया। दुर्भाग्य से इसके क्रांतिकारी महत्त्व को आम तौर पर अनदेखा कर दिया गया है।

विनोबा भावे ने सर्वोदय समाज की स्थापना की, जो रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं का अखिल भारतीय संघ था। इसका उद्देश्य या देश में अहिंसात्मक तरीके से सामाजिक परिवर्तन लाना। वे और उनके अनुयायी पदयात्राएं किया करते, गाँव-गाँव पैदल जाकर बड़े भूस्वामियों से अपनी जमीन का कम से कम छठा हिस्सा 'भूदान' के रूप में भूमिहीनों ओर गरीब किसानों के बीच बाँटने के लिए देने का अनुरोध करते। उद्देश्य था, इस प्रकार 5 करोड़ एकड़ जमीन हासिल करना, जो भारत में 30 करोड़ एकड़ जोतने-लायक जमीन का छठा हिस्सा बनता था। विचार यह था कि औसतन पाँच सदस्यों का परिवार अपनी जमीन का छठा भाग छोड़ दे और भूमिहीन गरीब को अपने परिवार का सदस्य बना लें।

आन्दोलन सरकार से स्वतन्त्र था लेकिन इसे कांग्रेस का समर्थन हासिल था। ए.आई.सी.सी. ने कांग्रेसजनों से इसमें सक्रियता से भाग लेने का अनुरोध किया। भूतपूर्व प्रमुख कांग्रेस नेता और उस वक्त के प्रजा सोशलिस्ट पार्टी (P.S.P.) के महत्तवपूर्ण नेता जयप्रकाश नारायण सक्रिय राजनीति छोड़ 1953 में भूदान आन्दोलन में शामिल हो गए।

विनोबा को जमीन का पहला दान 18 अप्रैल, 1951 को आन्ध्र प्रदेश के तेलंगाना क्षेत्र में पोचमपल्ली ग्राम में मिला। इस जगह कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में सशस्त्र किसान विद्रोह का असर अभी भी महसूस किया जा रहा था। तीन महीनों से भी कम समय में उन्होंने इस क्षेत्र के करीब 200 गाँवों का दौरा किया और दान के रूप में 12,200 एकड़ भूमि पाई। इसके बाद आन्दोलन उत्तर भारत में, खासतौर पर बिहार और उत्तर प्रदेश में फैल गया। शुरू के वर्षों में आन्दोलन को काफी हद तक सफलता मिली। उसे मार्च 1956 तक दान के रूप में 40 लाख एकड़ से अधिक जमीन मिली।

इसके बाद आन्दोलन का जोर खत्म होने लगा और दान के रूप में बहुत कम जमीन मिलने लगी।



इसके अलावा, दान की गई भूमि का एक खासा भाग खेती लायक नहीं था, या मुकदमों में फँसा हुआ था। शायद इसलिए भी करीब 45 लाख एकड़ भूदान भूमि में से केवल 6 लाख 54 हजार एकड़ ही 1957 के अन्त तक 2 लाख परिवारों के बीच असल में बाँटी जा सकी। 1961 के आरम्भ तक 8 लाख 72 हजार एकड़ जमीन बाँटी गई।

1955 का अन्त आते-आते आन्दोलन ने एक नया रूप धारण किया- वह था 'ग्रामदान' का। इसका प्रेरणा-स्रोत भी गाँधीवादी विचार था, अर्थात् 'सारी भूमि गोपाल को', 'गोपाल' अर्थात् भगवान की। ग्रामदान वाले गाँवों की भूमि को सामूहिक स्वामित्व की या सबों के लिए बराबर वाली भूमि माना गया। यह किसी एक व्यक्ति की नहीं मानी गई। आन्दोलन की शुरुआत उड़ीसा में हुई और वहाँ वह बड़ा सफल रहा। 1960 का अन्त आते-आते देश में ग्रामदान गाँवों की कुल संख्या 4500 से अधिक हो चुकी थी।

इनमें से 1946 गाँव उड़ीसा में थे, 603 महाराष्ट्र में, 543 केरल में, 483 आन्ध्र प्रदेश में, और 250 मद्रास में। कहा जाता है कि यह आन्दोलन उन्हीं गाँवों में सफल रहा जहाँ वर्ग-विभेद अभी उभरे नहीं थे, और जहाँ जमीन या दूसरी सम्पत्ति का अन्तर लगभग नहीं के बराबर था, जैसे कुछ आदिवासी समुदायों में। कहा जाता है कि विनोबा जी ने ऐसे ही गाँवों का चुनाव किया।

बड़ी आशाएं जगाने के बावजूद साठ के दशक तक भूदान/ग्रामदान आन्दोलन का जोर समाप्त हो गया। इसकी रचनात्मक क्षमताओं का आम तौर पर उपयोग नहीं किया जा सका, लेकिन कार्यक्रम किसी तरह आगे खिंचता चला गया। मूल रूप से यह भुला दिया गया, हालांकि कभी-कभार अजीब तरीकों से इसे पार किया जाता रहा, जैसे जून 1999 के अपने निर्णय में बिहार सरकार ने घोषणा की कि वह राज्य भूदान समिति को भंग कर रही है क्योंकि वह पिछले 38 वर्षों में भूदान में पाई आधी जमीन भी नहीं बाँट पाई है।

भूदान आन्दोलन और उसकी सम्भावनाओं का उचित मूल्यांकन आज तक नहीं किया गया है। इसे बड़ी आसानी से 'यूरोपियन' या कल्पनावादी कहकर नकार दिया गया है। इतना ही नहीं; इसे वर्ग-सहयोगी, वर्ग-संघर्ष को रोकने वाला और प्रतिक्रियावादी भी बताया गया है। भारत में कृषि सुधारों के एक इतिहासकार के अनुसार इसका उद्देश्य "किसानों के क्रांतिकारी संघर्ष पर ब्रेक लगाना था।" ऐसे विचार प्रकट करना कोई अचरज की बात नहीं है। पहले भी, इससे भी कहीं अधिक सफल गाँधीजी के आन्दोलनों का चरित्र-चित्रण कुछ गलत ढंग से किया जाता रहा है।

भूदान आन्दोलन के कुछ बड़े महत्त्वपूर्ण पहलू नोट करने लायक हैं। पहला, यह मार्के की बात है कि आजादी के बाद यह उन प्रथम कोशिशों में से एक है जिन्होंने ऊपर से सरकारी कोशिशों के जरिए नहीं, बल्कि आन्दोलन के जरिए भूमि सुधार की कोशिशें कीं। दूसरा, इस आन्दोलन में बड़ी क्षमताएं थीं क्योंकि यह ट्रस्टीशिप या सारी जमीन ईश्वर को होने की समझ पर आधारित था। यदि भूस्वामी ट्रस्टियों या सम्पत्ति के बराबर के हकदार नहीं बनना चाहते, तो उनके खिलाफ गाँधीवादी तरीके से सत्याग्रह चलाया जा सकता था। उदाहरण के लिए 1961 में तमिलनाडु के सर्वोदय नेताओं ने यही सुझाव रखा था-"उन भूस्वामियों के खिलाफ सत्याग्रह शुरू कीजिए जो ग्रामदान गाँव में सहयोग करने से इन्कार करते हों, और अपनी भूमि दान करने के वादे से मुकर जाते हों।" कुछ सोशलिस्ट ऐसे थे जो गाँधीवादी विचारों एवं व्यवहार से प्रभावित थे। उनमें से कई पचास के दशक के आरम्भ में P.S.P. (प्रजा सोशलिस्ट पार्टी) में थे।

वे अन्याय के खिलाफ सत्याग्रह के जरिए जन असहयोग आन्दोलन करके ट्रस्टीशिप और रचनात्मक कार्यों को क्रान्तिकारी क्षमता मुखर करना चाहते थे लेकिन सर्वोदय समाज यह काम करने में असफल रहा। वह ऐसा व्यापक जन-आन्दोलन नहीं विकसित कर पाया जो देश के बड़े भागों में सामाजिक परिवर्तन की असीम शक्ति पैदा कर दे।

फिर भी, आन्दोलन ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उसने एक ऐसी नैतिक परिस्थिति, ऐसा वातावरण पैदा किया जो भूस्वामियों पर दबाव डालते हुए भूमिहीनों के पक्ष में वातावरण निर्मित करे। प्रसिद्ध कम्युनिस्ट नेता E.M.S. नम्बूदिरीपाद तक ने इसे स्वीकार किया है। उनके एक लेख 'सर्वोदय और कम्युनिज्म' का हवाला देते हुए कोतोव्स्की लिखते हैं-"भूदान और ग्रामदान आन्दोलनों ने एक हद तक किसानों की राजनीतिक गतिविधियों को प्रेरित किया है। साथ ही उन्होंने भूमि के पुनर्वितरण, भूमि में व्यक्तिगत सम्पत्ति की समाप्ति और कृषि उत्पादक सहकारों के विकास के पक्ष में राजनीतिक प्रचार एवं आन्दोलन के अनुकूल वातावरण तैयार किया है।"

**प्रश्न 5 भारत में हरित क्रान्ति आन्दोलन पर एक समीक्षात्मक टीप लिखिए।**

**उत्तर:-** हरित-क्रान्ति का तात्पर्य भारत में कृषि फसलों के उत्पादन में तेज गति से वृद्धि करने के लिए उपयोग में लायी गयी नई कृषि नीति से है। इस नवीन कृषि नीति में अधिक उपज देने वाले बीजों का रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशक दवाओं, नवीन कृषि तकनीकों के साथ सिंचाई सुविधा वाले क्षेत्रों में उचित सामंजस्य स्थापित कर उपयोग किया जाता है। इससे कृषि उत्पादन में तेज वृद्धि होती है। क्योंकि ये कृषिगत संसाधन एकमुश्त उपयोग में लाये जाते हैं, अतः इन्हें "एकमुश्त कार्यक्रम" भी कहा जाता है।

## हरित-क्रान्ति के मुख्य तत्व

हरित-क्रान्ति के प्रमुख तत्व निम्न हैं-

(1) **उर्वरकों का अधिक प्रयोग-** रासायनिक उर्वरकों का ज्यादा उपयोग हरित-क्रान्ति का एक प्रमुख तत्व है। उन्नत बीजों के उपयोग से प्रति हेक्टेयर अधिकतम उत्पादन की मात्रा प्राप्त करने हेतु वैज्ञानिकों द्वारा सुझाये गये रासायनिक खादों का पर्याप्त मात्रा में उपयोग किया जाना जरूरी होता है।

(2) **अधिक उपज देने वाले बीजों का उपयोग-** हरित-क्रान्ति में अधिक उपज देने वाले बीजों के उपयोग पर बल दिया गया है। बीजों की नयी-नयी किस्मों की खोज की गयी है। इन नई किस्म के बीजों की मुख्य विशेषता यह है कि ये रासायनिक खाद के प्रति बहुत संवेदनशील हैं। इसके कारण ही इसकी उत्पादकता परम्परागत बीजों की तुलना में दो या तीन गुनी से अधिक है।ये उन्नत बीज कम अवधि में पक कर तैयार होते हैं, जिससे दोहरी फसल ली जा सकती है।

(3) **कीटनाशकों का उपयोग-** उन्नत किस्म के बीज व रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से तैयार फसलों पर कीटों का प्रकोप तुरंत होता है। इसलिए फसलों की सुरक्षा के लिए आवश्यकतानुसार कीटनाशकों का प्रयोग जरूरी होता है। बुवाई के समय भी बीज के साथ इन दवाओं को मिलाया जाता है।

(4) **सिंचाई सुविधाओं का विस्तार-** उन्नत बीजों के उपयोग से अधिकतम उत्पादन उन्हीं क्षेत्रों में प्राप्त हो सकता है, जहां सिंचाई की उचित व्यवस्था हो। उन्नत बीजों की उपज में बार-बार सिंचाई करने की जरूरत पड़ती है। मानसूनी वर्षा से यह सम्भव नहीं। हरित-क्रान्ति पंजाब, हरियाणा तथा पश्चिमी उत्तरप्रदेश में जहां सिंचाई की सुविधाएं हैं, अधिक सफल हुई है।



(5) **बहुफसली कार्यक्रम-** अधिक उपज देने वाले बीजों के उपयोग से अल्प समय में फसल तैयार होती है। किसान एक वर्ष में बड़ी आसानी से दो-तीन फसलें ले सकता है। बहुफसली कार्यक्रम का लाभ लेने हेतु किसान अपने फसल चक्र में परिवर्तन भी करता है। इसलिए बहुफसली कार्यक्रम भी हरित-क्रान्ति का एक प्रमुख तत्व है।

(6) **कृषि मशीनीकरण-** कृषि क्षेत्रों में औजारों एवं मशीनों का उपयोग भी हरित-क्रान्ति का अभिन्न अंग बन गया है। कृषि में यन्त्रीकरण से ही फसल को बोने तथा काटने का काम तेजी से किया जा सकता है और बहुफसली कार्यक्रम सफल हो सकता है। ट्रैक्टर, थ्रेसर, पम्पसेट, स्प्रे मशीन आदि आधुनिक कृषि उपकरणों का प्रयोग जरूरी हो गया है।

## हरित-क्रान्ति की समस्याएं या कमियां

(1) **पूंजीवादी खेती को प्रोत्साहन-** हरित-क्रान्ति में किसानों को उन्नत किस्म के बीज, रासायनिक खाद, कीटनाशक दवाइयां खरीदने तथा सिंचाई एवं बाकी कार्यों हेतु प्रयुक्त यन्त्रों को प्राप्त करने हेतु बड़ी मात्रा में पूंजी व्यय होती है। इससे पूंजीवादी कृषि को बढ़ावा मिला है।

(2) **बड़े कृषकों को लाभ-** हरित-क्रान्ति में खेती करने हेतु बड़ी मात्रा में पूंजी का विनियोग करना पड़ता है। बड़े तथा सम्पन्न किसानों ने अपने साधन तथा प्रभाव के आधार पर इसका लाभ उठाया है। देश के तीन चौथाई लघु तथा सीमान्त कृषक खुद के साधनों के अभाव में हरित-क्रान्ति के लाभों से आज भी वंचित हैं।

(3) **श्रमिकों में बेरोजगारी-** हरित-क्रान्ति में बड़े-बड़े फार्मों में कृषि के नवीन तकनीकी के उपयोग के कारण यंत्रों का प्रयोग बढ़ा है। इसमें मानवीय श्रम की जरूरत कम पड़ती है। इससे खेतिहर श्रमिकों में बेरोजगारी बढ़ी है।

(4) **प्रभाव कुछ फसलों तक ही सीमित-** हरित-क्रान्ति कुछ फसलों जैसे- गेहूं, ज्वार, बाजरा, मक्का तक ही सीमित है। बाकी फसलों पर इसका प्रभाव नहीं पड़ा है। यहां तक कि चावल भी इससे कम ही प्रभावित रहा है। सबसे ज्यादा वृद्धि गेहूं के उत्पादन में हुई है। अतः आलोचक इसे हरित-क्रान्ति के स्थान पर गेहूं क्रान्ति कहते हैं।

(5) **क्षेत्रीय असन्तुलन में वृद्धि-** हरित-क्रान्ति कुछ ही राज्यों तक सीमित है। सिंचाई की सुविधा वाले राज्यों पंजाब, हरियाणा, दिल्ली व पश्चिमी उत्तर प्रदेश में यह सफल रहा है। बाकी क्षेत्रों में हरित-क्रान्ति का कम लाभ मिला है। इससे क्षेत्रीय विषमता में वृद्धि हुई है।

## भारतीय अर्थव्यवस्था पर हरित-क्रान्ति का प्रभाव

(1) **रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के प्रयोग में वृद्धि-** हरित-क्रान्ति के कारण रासायनिक खादों तथा कीटनाशक दवाओं के उपयोग में भारी वृद्धि हुई है। रासायनिक खादों में नाइट्रोजन, फॉस्फेट व पोटाश की खपत वर्ष 1960-61 में 2.92 लाख टन थी, जो 1993-94 में बढ़कर 138 लाख टन तक पहुंच गयी । कीटनाशकों के उपयोग में भी वृद्धि हुई है।

(2) **सिंचाई योजनाओं का विस्तार-** हरित-क्रान्ति की सफलता हेतु सिंचाई सुविधाओं का विस्तार किया गया है। देश में बड़ी सिंचाई योजनाओं के साथ ही छोटी सिंचाई परियोजनाओं पर भी ध्यान दिया गया है। नलकूपों की भी व्यवस्था हुई है।

(3) **आधुनिक उपकरणों के उपयोग में वृद्धि-** हरित-क्रान्ति में विभिन्न प्रकार के कृषि कार्यों के लिए ट्रेक्टर, थ्रैसर, उड़ावली पंखे, डीजल इंजन, पम्प सेट जैसे कृषि यंत्रों के प्रयोग में काफी बढ़ोत्तरी हुई है।

(4) **कृषि साख का विस्तार-** हरित-क्रान्ति में आधुनिक कृषि आदानों को खरीदने के लिए पर्याप्त धन राशि की जरूरत पड़ती है। किसानों को इस हेतु कृषि साख का वितरण सहकारी बैंकों, भूमि विकास बैंकों, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों तथा राष्ट्रीयकृत वाणिज्यिक बैंकों के माध्यम से किया जा रहा है। इस तरह कृषि साख का विस्तार हुआ है।

(5) **उत्पादन में वृद्धि-** उन्नत किस्म के बीजों के उपयोग से हरित-क्रांति में खाद्यान्न के उत्पादन में बहुत वृद्धि हुई है। खासकर गेहूं, चावल, मक्का, ज्वार, बाजरा आदि अन्न के उत्पादन में बहुत वृद्धि हुई है। हरित-कान्ति के कारण देश अन्न के उत्पादन में आत्मनिर्भर हो गया है। सन् 1965-66 में देश में खाद्यान्न उत्पादन 72.4 मिलियन टन था, जो 1994-95 में बढ़कर 185.0 मिलियन टन तक पहुंच गया।

(6) **अधिक उपज देने वाली फसलों के अधीन भूमि में वृद्धि-** हरित-क्रान्ति से अधिक उपज देने वाली फसलों के अधीन भूमि क्षेत्र में भारी वृद्धि हुई है। इस भूमि का क्षेत्रफल 1966-67 में 1.89 मिलियन हेक्टेयर था, जो कि 1994-95 में बढ़कर 71.3 मिलियन हेक्टेयर हो गया।

(7) **प्रति हेक्टेयर उपज में वृद्धि-** भारत की नवीन कृषि नीति के कारण खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि का मुख्य कारण विभिन्न फसलों की प्रति हेक्टेयर उपज में वृद्धि होना है। चावल व गेहूं की प्रति हेक्टेयर उपज 1960-61 में क्रमशः 1013 किलोग्राम तथा 851 किलोग्राम थी, जो 1994-95 में क्रमशः 1921 किलोग्राम तथा 2553 किलोग्राम हो गई है।

## हरित क्रांति की सफलता के लिए सुझाव

1. **सिंचाई के साधनों का विकास-** हरित क्रांति की सफलता के लिए सिंचाई के साधनों का विकास किया जाना चाहिए। इस हेतु सरकार दो प्रकार से सहायता कर सकती है एक तो छोटे व मध्यम कृषकों को ऋण दे सकती है जिससे कि वे खेतों में नलकूप व पंपिंग सेट लगा सकें और दूसरा स्वयं नहरें व सिंचाई साधनों में वृद्धि कर सकती है।

2. **हरित क्रांति का विस्तार-** हरित क्रांति की सफलता के लिए यह सुझाव दिया जाता है कि हरित क्रांति का विस्तार किया जाए जिससे कि यह देश में समान रूप से लागू हो सके। विशेष रूप से दालों को इसके अंतर्गत लिया जाना चाहिए इसके अतिरिक्त अन्य फसलों को भी लिया जाना चाहिए। अन्य फसलों में कपास, गन्ना, तिलहन व जूट लिया जा सकता है।

3. **कृषि वित्त की सुविधा-** हरित क्रांति से किसान अधिक लाभ उठा सकें इसके लिए किसानों को वित्तीय सुविधाएं दी जानी चाहिए जिससे कि वे आवश्यक बीज, रासायनिक खाद, आधुनिक कृषि उपकरण खरीद सकें।

4. **छोटे कृषकों को हरित क्रांति के क्षेत्र में लाया जाए-** छोटे कृषकों को हरित क्रांति के क्षेत्र में लाया जाना चाहिए इसके लिए-

(i) *भूमि सुधार कार्यक्रमों को तेजी से लागू किया जाना चाहिए।*
(ii) *किसानों को कृषि यंत्र किराए पर मिल सकें ऐसी सुविधा होनी चाहिए।*
(iii) *छोटे कृषकों को साख सुविधाएं दी जानी चाहिए जिससे कि वे विभिन्न कृषि इनपुट खरीद सकें।*

5. **ग्रामीण रोजगार अवसरों में वृद्धि-** हरित क्रांति से कुछ कृषकों के बेरोजगार हो जाने की संभावना रहती है। इसके लिए यह सुझाव दिया जाता है कि ग्रामीण क्षेत्रों के अंतर्गत बिजली की व्यवस्था हो जिससे कि ग्रामीण उद्योग-धंधे आधुनिक रूप लेकर पनप सकें और इन बेकार श्रमिकों को रोजगार मिल सके।



6. **एकीकृत फार्म नीति-** हरित क्रांति के लिए एकीकृत फार्म नीति अपनायी जानी चाहिए ताकि फार्म तकनीक आदानों व प्रदानों के संबंध में एक उचित नीति अपनायी जा सके। किसानों को उन्नत बीज, रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक दवाइयां, मशीनें एवं उपकरण उचित मूल्य पर एवं उचित समय पर मिल सकें। इसके अतिरिक्त सरकार के द्वारा उचित मूल्य पर क्रय करने के लिए भी गारंटी दी जानी चाहिए।

7. **व्यापारिक फसलों को कृषि क्रांति में शामिल करना-** हरित क्रांति के अंतर्गत व्यापारिक फसलों को भी शामिल किया जाना चाहिए जबकि अभी तक खाद्यान्नों विशेषकर गेहूं को ही शामिल किया गया है। इस कारण कुछ विद्वान इसे 'गेहूं की क्रांति' नाम देते हैं। अतः सुझाव दिया जाता है कि अन्य खाद्यान्नों व व्यापारिक फसलों जैसे कपास, गन्ना, तिलहन, चावल आदि को भी शामिल किया जाना चाहिए।

8. **संस्थागत परिवर्तनों को प्रोत्साहन-** नवीन कृषि नीति से लाभ प्राप्त करने हेतु संस्थागत परिवर्तनों को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। इसके लिए कृषि जोतों का रिकार्ड तैयार किया जाना चाहिए। बटाईदारों को स्वामित्व अधिकार दिलाए जाएं। सीमा-निर्धारण के फलस्वरूप भूमिहीन कृषकों में प्राप्त भूमि का वितरण किया जाना चाहिए। जोतों के विभाजन पर रोक लगाई जानी चाहिए एवं चकबंदी को प्रभावी बनाया जाना चाहिए।

## हरित क्रांति : मूल्यांकन

यह कहना शायद गलत होगा कि देश में हरित क्रांति आ गई है। हमारा देश मानसून पर निर्भर रहने के कारण कृषि उत्पादन में स्थायी सुधार लाने में समर्थ नहीं है। जिस वर्ष मौसम अनुकूल रहता है उस वर्ष हरित क्रांति आ जाती है एवं सूखे की स्थिति जिस साल निर्मित हो जाती है उस वर्ष 'हरित क्रांति' चली जाती है। देश के खाद्यान्नों में अवश्य वृद्धि हुई है एवं आत्मनिर्भरता की ओर भी हमने कदम बढ़ा दिया है लेकिन अभी स्थायित्व नहीं है। 1970-71 में खाद्यान्नों का उत्पादन 10.78 करोड़ टन हुआ था, क्योंकि उस वर्ष मौसम अनुकूल था, किन्तु 1971-72 में मौसम प्रतिकूल हो जाने के कारण 20 लाख टन खाद्यान्न की कमी हो गई।

अतः जब तक देश में अनिश्चितताओं पर विजय प्राप्त नहीं कर ली जाती, सिंचाई का उत्तम प्रबंध नहीं कर लिया जाता, उत्पादन के उपादानों की पूर्ति में वृद्धि नहीं होती, कृषकों को उन्नतिशील नहीं बना लिया जाता है तब तक 'हरित क्रांति' स्थायी नहीं हो सकती है।

**प्रश्न 6 भारत में योजना आयोग द्वारा नियोजित अर्थव्यवस्था के आरम्भ और विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के मूल्यांकन पर प्रकाश डालिए।**

**उत्तर-**

## पहली पंचवर्षीय योजना (1951-56)

(I) *यह हैरोड-डोमर मॉडल पर आधारित थी।*
(II) 1952 *में सामुदायिक विकास कार्यक्रम आरम्भ किया गया।*
(III) *प्रमुख अर्थशास्त्री* K.N. *राज इस योजना के मुख्य शिल्पकार थे।*
(IV) *ध्यान केन्द्रित था-*

(i) *कृषि, बड़े पैमाने पर खाद्यान्न के आयात को देखते हुए और खाद्य सुरक्षा प्राप्त करने के लिए।*
(ii) *सिंचाई (भाखरा नांगल, दामोदर घाटी, हीराकुण्ड आदिक जैसी नदी घाटी परियोजनाएं प्रारम्भ की गयी)।*
(iii) *ग्रामीण विकास*

(iv) कीमत स्थिरता
(v) विद्युत-शक्ति एवं परिवहन।

(III) इस योजना के दौरान
(i) राष्ट्रीय परिवार नियोजन कार्यक्रम 1952 में शुरू किया गया था।
(ii) राज्य वित्तीय निगम अधिनियम 1951 में पारित किया गया था।
(iii) सम्पत्ति शुल्क 1953 में पेश किया गया था।

## दूसरी पंचवर्षीय योजना (1956-61)

(I) यह नेहरू-महलानोबिस रणनीति पर आधारित थी।
(i) J.L. नेहरू की विजन से व्यक्त की गयी PC महलानोबिस इसके मुख्य शिल्पकार थे।

(II) तीव्र औद्योगीकरण आत्म-निर्भरता और भारी पूँजीगत वस्तु उद्योगों में निवेश पर ध्यान केन्द्रित था।

(III) विदेशी ऋणों के माध्यम से भारी आयात की वकालत की।
(i) इस आधार पर कि यह चौतरफा निवेश, सहयोग, टाउनशिप निर्माण को आकर्षित करेगी तथा इसका परिणाम उच्च विकास दर होगा-रिस कर नीचे पहुँचने का प्रभाव।
(ii) बिजली, परिवहन आदि जैसी बुनियादी अवसंरचना उपलब्ध कराने के लिए आयात प्रतिस्थापन और सार्वजनिक क्षेत्र पर जोर।

(IV) यद्यपि इसने बहुत जल्द बुनियादी जोर को कृषि से उद्योग की तरफ स्थानान्तरित कर दिया।

(V) इस योजना के दौरान कीमतों में 30% तक वृद्धि हो गयी, जबकि पहली पंचवर्षीय योजना के दौरान इसमें 13% की गिरावट हुई थी।

(VI) इस योजना के दौरान-
(i) 1956 का औद्योगिक नीति संकल्प (IPR 1956) अपनाया गया था।
(ii) दुर्गापुर, भिलाई और राउरकेला इस्पात संयन्त्र क्रमशः ब्रिटेन, रूस और जर्मनी के सहयोग से स्थापित किये गये थे।

## तीसरी पंचवर्षीय योजना (1961-66)

संकल्पना के स्तर पर ये सोचा गया था कि भारतीय अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ने के चरण में प्रवेश कर चुकी है।

(I) इसका लक्ष्य भारत को बनाना था एक-
(i) 'आत्म-निर्भर', और
(ii) 'स्व-उत्पादक' अर्थव्यवस्था।

(II) ध्यान निम्न दोनों पर केन्द्रित था-
(i) भारी औद्योगीकरण और
(ii) खाद्यान्न उत्पादन

(III) पहली दो योजनाओं के अनुभव के आधार पर निर्यात और उद्योग को समर्थन प्रदान करने के लिए कृषि को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गयी।



(IV) हालांकि चीनी आक्रमण (1962), भारत-पाकिस्तान युद्ध (1965) और भयंकर सुरक्षा (1965-66) जैसी अप्रत्याशित घटनाओं के कारण योजना अपने लक्ष्यों तक पहुँचने में पूरी तरह विफल रही।
(i) विदेशी मुद्रा संकट के कारण भारत ने IMF से उधार लिया। जून, 1966 में पहली बार रुपये का अवमूल्यन किया गया था, यद्यपि तकनीकी रूप से यह तीसरी पंचवर्षीय योजना के दौरान नहीं किया गया था।
(ii) भारत को तीव्र खाद्यान्न संकट का भी सामना करना पड़ा था और संयुक्त राज्य अमेरिका ने भारतीय रुपये के बदले भारत को खाद्यान्न का निर्यात किया। खाद्य सहायता को लोकप्रिय रूप से PL-480 के नाम से जाना जाता है, क्योंकि इसे अमेरिका के लोक कानून की धारा 480 के अन्तर्गत प्रदान किया गया था।.

(V) इस योजना के दौरान
(i) भारतीय खाद्य निगम की स्थापना 1965 में हुई थी।
(ii) भारतीय औद्योगिक विकास बैंक (IDBI) की स्थापना भारतीय औद्योगिक विकास बैंक अधिनियम 1964 के तहत की गयी थी।
(iii) यूनिट ट्रस्ट ऑफ इण्डिया (UTI) की स्थापना 1963 में हुई थी।
(iv) कृषि मूल्य आयोग की स्थापना 1965 में की गयी थी, बाद में इसका नाम बदलकर कृषि लागत और मूल्य आयोग (CAPC) कर दिया गया।

इसके कारण चौथी पंचवर्षीय योजना को अन्तिम रूप देने में भी देरी हुई।

## तीन वार्षिक योजनाएं (1966-69)

(I) यद्यपि, चौथी पंचवर्षीय योजना का ड्राफ्ट तैयार था, लेकिन खराब वित्तीय स्थिति के कारण अगले तीन वर्षों के लिए वार्षिक योजना बनायी गयी। इस तीन वर्ष की अवधि को समीक्षकों द्वारा योजना अवकाश का नाम दिया गया।

(II) इन तीन वार्षिक योजनाओं के दौरान एक सर्वथा नयी कृषि रणनीति कार्यान्वित की गयी, जिसमें सम्मिलित थे-
(i) हरित क्रान्ति के अन्तर्गत उच्च प्रक्रम उपज किस्म (HYV) वाले बीजों का व्यापक वितरण।
(ii) उर्वरकों का व्यापक उपयोग
(iii) सिंचाई क्षमता का दोहन; और
(iv) मृदा संरक्षण पर फोकस।

(III) इन तीन वार्षिक योजनाओं के दौरान अर्थव्यवस्था ने तीसरी पंचवर्षीय योजना के दौरान मिले संकटों को आत्मसात कर लिया।

## चौथी पंचवर्षीय योजना (1969-74)

(I) गाडगिल रणनीति पर आधारित थी, जिसका मुख्य फोकस कृषि में विकास पर था, ताकि अन्य क्षेत्रों को आत्मनिर्भरता की तरफ आगे बढ़ने और प्रगति करने में सक्षम बनाया जा सके।

(II) योजना के पहले दो वर्षों में रिकॉर्ड उत्पादन देखा गया। यद्यपि, अन्तिम तीन वर्ष खराब मानसून के कारण अपने लक्ष्य को पूरा नहीं कर सके।

(III) पहली बार सामाजिक न्याय को महत्त्व दिया गया।
(IV) बैंकों का राष्ट्रीयकरण, राजाओं को मिलने वाले प्रीवी पर्स की समाप्ति, हरित क्रान्ति के नतीजे, भारत-पाक युद्ध इस योजना अवधि के दौरान हुई महत्त्वपूर्ण गतिविधियाँ थीं।
(V) परिवार नियोजन इस योजना का एक अन्य महत्त्वपूर्ण पक्ष था।
(VI) 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के पहले और बाद में बांग्लादेशी शरणार्थियों का बड़ी संख्या में आना एक प्रमुख चुनौती था।
(VII) इस योजना के दौरान-
  (i) एकाधिकार और प्रतिबन्धात्मक व्यापार व्यवहार अधिनियम,1969, शुरू किया गया था।
  (ii) कमान क्षेत्र विकास कार्यक्रम यानी कमाण्ड एरिया डेवलपमेंट प्रोग्राम (CADP) 1974-75 में शुरू किया गया था।

## पाँचवीं पंचवर्षीय योजना (1974-79)

(I) यह डी.डी. धर द्वारा तैयार की गयी थी।
(II) इसने दो मुख्य उद्देश्यों की प्राप्ति को प्रस्तावित किया-
  (i) निर्धनता उन्मूलन (गरीबी हटाओ) और
  (ii) आत्म-निर्भरता की प्राप्ति
(III) निम्नलिखित कार्यक्रम प्रारम्भ किये गये-
  (i) न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम, कुछ आधारभूत न्यूनतम जरूरतों को उपलब्ध कराना तथा इस प्रकार लोगों के जीवन स्तर में सुधार करना।
  (ii) निर्देशित निर्धनता-विरोधी कार्यक्रम : 1975 में बीस-सूत्री कार्यक्रम को अपनाया गया, जिसका उद्देश्य लोगों, विशेषरूप से BPL परिवारों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना था।
(IV) मुख्य उपकरण थे-
  (i) उच्च संवृद्धि दर को बढ़ावा देना,
  (ii) आय का बेहतर वितरण और
  (iii) घरेलू बचत की दर में उल्लेखनीय वृद्धि।

1975 में आपातकाल की घोषणा के कारण योजना रद्द कर दी गयी और 1978 में नयी जनता सरकार द्वारा आवर्ती योजना (1978-83) प्रारम्भ की गयी। यद्यपि आवर्ती योजना को भी 1980 में सरकार में परिवर्तन के कारण बीच में ही समाप्त कर दिया गया। कांग्रेस सरकार ने 1978-79 को मूल चौथी पंचवर्षीय योजना का भाग माना तथा 1979-90 को पृथक वार्षिक योज़ना के रूप में लिया।

(V) इस योजना के दौरान, मरुस्थल विकास कार्यक्रम को केन्द्र प्रायोजित योजना के रूप में 1977-78 में शुरू किया गया था।

## छठी पंचवर्षीय योजना (1980-85)

(I) निम्न पर फोकस किया गया-
  (i) राष्ट्रीय आय में वृद्धि



  (ii) तकनीकी का आधुनिकीकरण
  (iii) निर्धनता और बेरोजगारी में निरन्तर कमी को सुनिश्चित करना।
(II) योजना को "गरीबी हटाओ" के नारे के साथ अपनाया गया, ताकि अधिक लक्षित दृष्टिकोण के साथ ग़रीबी का उन्मूलन किया जा सके।
(III) औद्योगीकरण से अवसंरचना विकास की तरफ झुकाव देखा गया।
(IV) रोजगार सृजित करने वाले कुछ फोकस कार्यक्रम थे-
  (i) राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम
  (ii) एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम
  (iii) ग्रामीण एवं सूक्ष्म उद्योग विकास कार्यक्रम
(V) सबसे अधिक वित्तीय आवंटन ऊर्जा क्षेत्र को दिया गया।
(VI) इस योजना के दौरान-
  (i) नाबार्ड की स्थापना 1982 में की गयी थी।
  (ii) भारतीय निर्यात-आयात बैंक की स्थापना 1982 में भारतीय निर्यात-आयात बैंक अधिनियम 1981 के तहत की गयी थी।

## सातवीं पंचवर्षीय योजना (1985-90)

(I) फोकस निम्न पर दिया गया-
  (i) खाद्यान्न उत्पादन में तीव्र वृद्धि
  (ii) रोजगार अवसर में वृद्धि; और
  (iii) योजना की रूपरेखा या फ्रेमवर्क के भीतर उत्पादकता
(II) दीर्घकालिक राजकोषीय नीति शुरू की गयी।
(III) पहली बार एक 3 वर्षीय आयात-निर्यात नीति की घोषणा की गयी।
(IV) इसे अवसंरचना योजना का भी नाम दिया गया था।
(V) आयात प्रतिस्थापन रणनीति को उचित महत्त्व दिया गया और अर्थव्यवस्था धीरे-धीरे उदारीकरण की तरफ बढ़ने लगी।
(VI) इस योजना के दौरान
  (i) जवाहर रोजगार योजना 1989 में शुरू की गयी थी।
  (ii) ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड की शुरुआत 1987 में की गयी थी।

## वार्षिक योजनाएं (1990-92)

केन्द्र में तेजी से बदलती राजनीतिक परिस्थिति के कारण आठवीं पंचवर्षीय योजना 1990 में शुरू नहीं हो सकी और 1990-91 और 1991-92 को वार्शिक योजनाओं के रूप में माना गया। आठवीं योजना अन्ततः 1992-97 की अवधि के लिए तैयार की गयी।

इसके अतिरिक्त 1991 में BOP संकट और IMF द्वारा रखी गयी शर्तों के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था में भारी परिवर्तन आया और इसके कारण आठवीं पंचवर्षीय योजना में 2 वर्ष की देरी भी हुई।

## आठवीं पंचवर्षीय योजना (1992-97)

(I) उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (LPG) की नीति लागू की गयी।

(II) संरचनात्मक सुधारों को अपनाया गया और देश के आर्थिक विकास मॉडल को फिर से परिभाषित किया गया।
(III) उदारीकरण के राव-मनमोहन सिंह मॉडल पर आधारित योजना।
(IV) योजना मॉडल का आदेशात्मक एवं निर्देशात्मक (कठोर) से सांकेतिक (मृदु) योजना की तरफ बदलाव।
(V) इस योजना के कुछ प्रमुख परिणाम थे-
  (i) तीव्र समग्र आर्थिक विकास।
  (ii) कृषि, विनिर्माण और सम्बद्ध क्षेत्रों में विकास की उच्च दर।
  (iii) आयात और निर्यात में वृद्धि।
  (iv) व्यापार और चालू खाते के घाटे में सुधार।
(VI) यद्यपि इस योजना में सामाजिक व्यय की अनदेखी की गयी।
(VII) इस योजना के दौरान-
  (i) रोजगार आश्वासन योजना 1993 में शुरू की गयी थी।
  (ii) स्वर्ण जयन्ती शहरी रोजगार योजना 1997 में शुरू की गयी थी।
  (iii) राष्ट्रीय महिला कोष (RMK) की स्थापना 1993 में हुई थी।
  (iv) मध्यान्ह भोजन योजना 1995 में शुरू की गयी थी।

## नौवीं पंचवर्षीय योजना (1997-2002)

(I) इसे चार महत्त्वपूर्ण आयामों के सन्दर्भ में विकसित किया गया था।
  (i) जीवन की गुणवत्ता
  (ii) उत्पादनपूर्ण रोजगार का सृजन
  (iii) क्षेत्रीय संतुलन और
  (iv) आत्म-निर्भरता
(II) कृषि और ग्रामीण विकास को भी प्राथमिकता दी गयी।
(III) स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना (SGSY) 1999 में लॉन्च की गई तथा प्रधानमन्त्री ग्राम सड़क योजना (PMGSY) 2000 में शुरू की गयी।
(IV) इस योजना के दौरान सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों का निजीकरण शुरू किया गया, जबकि पिछली योजना में विनिवेश की शुरुआत हुई थी।
(V) इस योजना के दौरान
  (i) अन्त्योदय अन्न योजना 2000 में शुरू की गयी थी।
  (ii) सर्व शिक्षा अभियान (SSA) 2001 में शुरू किया गया था।

## दसवीं पंचवर्षीय योजना (2002-2007)

मुख्य उद्देश्य थे-
(I) निम्न में कमी करना
  (i) निर्धनता अनुपात को योजना की अवधि के अन्त तक 5% अंकों तक।
  (ii) साक्षरता और मजदूरी में लिंग-अन्तराल को कम-से-कम 50% तक।
  (iii) 2001-2011 के बीच जनसंख्या वृद्धि की दशकीय दर को 16.2% तक लाना।



  (iv) शिशु मृत्यु दर को 2007 तक प्रति 1,000 जन्म पर 45 और 2012 तक प्रति 1,000 जन्म पर 28 तक।
  (v) समग्र पूँजी का बहिर्गमन।
(II) निम्न में वृद्धि करना
  (i) प्रति वर्ष 8 प्रतिशत जीडीपी विकास दर
  (ii) साक्षरता दर को 2007 तक 72% और 2012 तक 80% तक लाना।
  (iii) वन एवं वृक्ष आच्छादन 2007 तक 25% और 2012 तक 33% तक लाना।
  (iv) घरेलू बचत विदेशी निवेश और विदेशी मुद्रा
(III) सार्वभौम रूप से प्राथमिक शिक्षा को उपलब्ध कराना।
(IV) अतिरिक्त श्रम बल को लाभदायक और उच्च-गुणवत्ता वाला रोजगार उपलब्ध कराना।
(V) 2007 तक सभी प्रमुख प्रदूषित नदियों तथा 2012 तक अन्य अधिसूचित विस्तारों को स्वच्छ करना था।
(VI) परिणाम
  (i) 2002-03 में भीषण सूखा पड़ा
  (ii) NREGA और राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन शुरू किया गया।
(VII) राष्ट्रीय कार्य के लिए भोजन कार्यक्रम यानी नेशनल फूड फॉर वर्क प्रोग्राम (NFWP) 2004 में शुरू किया गया था।

## ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना (2007-12)

(I) वैश्विक वित्तीय संकट (2008) के उभरने के दौरान योजना शुरू की गयी।
(II) योजना की प्रमुख विशेषताएं थीं-
  (i) निम्न में वृद्धि-
    (a) सकल GDP वृद्धि को 8% से 10% तक करना।
    (b) कृषि क्षेत्र के विकास को 4% तक करना।
    (c) अकुशल श्रमिकों को वास्तविक मजदूरी दर को 20% तक करना।
    (d) 7 वर्ष या अधिक आयु के व्यक्तियों के लिए साक्षरता दर 85% तक करना।
    (e) 0-6 आयु वर्ग के लिंग-अनुपात को 2011-12 तक 935 और 2016-17 तक 950 करना।
    (f) वन आच्छादन को 5% अंकों तक करना।
    (g) 2016-17 तक ऊर्जा क्षमता 20% अंकों तक करना।
  (ii) निम्न में कमी
    (a) प्राथमिक स्कूलों में बच्चों को पढ़ाई छोड़ने की 2003-04 में 52.2% की दर को 2011-12 में 20% करना।
    (b) कुल प्रजनन दर को 2.1% तक करना।
    (c) शिशु मृत्यु दर को 28 तक करना।

(d) 0 से 3 वर्ष आयु के बच्चों के बीच कुपोषण के वर्तमान स्तर को आधे तक लाना।

(e) लड़कियों और महिलाओं में रक्त-अल्पता को 50% तक लाना।

(iii) 70 मिलियन नये कार्य अवसरों को सृजित करना तथा शिक्षित बेरोजगारी को 5% से नीचे लाना।

(iv) पहली बार, सामाजिक सेवाओं के क्षेत्र के लिए कुल परिव्यय का 30.2% रखा गया।

(v) इस बात को सुनिश्चित करना कि सभी सरकारी योजनाओं के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष लाभार्थियों में 33% महिलाएं और बच्चियाँ हों।

(vi) 2009 के अन्त तक 1,000 या उससे अधिक जनसंख्यावाली बस्तियों तक हर मौसम में उपलब्ध रहने वाले सड़क सम्पर्क को सुनिश्चित करना।

(vii) 2007 तक सभी गाँवों को टेलीफोन के माध्यम से जोड़ना तथा 2012 तक सभी गाँवों में बॉडबैंड कनेक्टिविटी उपलब्ध कराना।

(viii) 2011-12 तक सभी प्रमुख शहरों में WHO मानकों के अनुरूप वायु गुणवत्ता प्राप्त करना।

(III) ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना का विषय था-'तेज और अधिक समावेशी विकास की ओर'

## बारहवीं पंचवर्षीय योजना (2012-17)

(I) योजना के लक्ष्य

(i) कृषि में 4% विकास पर प्राप्त करना।

(ii) 10% अंकों तक निर्धनता कम करना, और

(iii) तीव्र, संधारणीय और अधिक समावेशी विकास को प्राप्त करना।

(II) थीम-"तेज, अधिक समावेशी और संधारणीय विकास"

बारहवीं योजना, योजना आयोग की अन्तिम योजना थी। 2015 में योजना आयोग का स्थान लेने के लिए नीति आयोग की स्थापना की गयी।

## पंचवर्षीय योजनाओं की उपलब्धियाँ और समीक्षा

### उपलब्धियाँ

(i) GDP, प्रतिव्यक्ति आय, बचत और निवेश में वृद्धि।

(ii) MMR, IMR साक्षरता दर आदिक जैसे सामाजिक संकेतकों में सुधार।

(iii) उद्योग और आन्तरिक विकास में प्रगति।

(iv) भारत में लगभग सभी आधारभूत और पूँजीगत वस्तु उद्योगों तथा उपभोक्ता वस्तु उद्योगों में आत्म-निर्भरता प्राप्त की।

(v) औद्योगिक संरचना में विविधीकरण का उत्तम कार्य किया गया।

(vi) वृहत शिक्षा प्रणाली का विकास।

(vii) आर्थिक अवसंरचना का विकास, विशेष रूप से परिवहन, सिंचाई और दूरसंचार के क्षेत्र में।

(viii) विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विकास।



### आलोचना

(i) निर्धनता उन्मूलन में विफल।

(ii) आय और लैंगिक असमानता दूर करने में विफल।

(iii) सभी योग्य व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध कराने में विफल।

(iv) भूमि सुधार को लागू करने में विफल।

(v) काले धन की वृद्धि को नियन्त्रित करने में विफल।

(vi) आर्थिक शक्ति के सन्केन्द्रण को रोकने में विफल।

(vii) शिक्षा परिणामों की गुणवत्ता संतोषजनक नहीं थी।

(viii) विकास में क्षेत्रीय असन्तुलन देखा गया था।

(ix) योजना की केन्द्रीकृत प्रकृति (योजनाएं माँग संचालित होने के स्थान पर कार्यक्रम संचालित थी)।

**प्रश्न 7 भारत सरकार की वर्तमान औद्योगिक नीति की प्रमुख विशेषताओं को बताइए तथा नीति की प्रगति और समस्याओं का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।**

**उत्तर- नीति का आधार- निजी क्षेत्र को अधिक प्रोत्साहन**

संसार के विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्था में पिछले कुछ वर्षों में हुए परिवर्तनों का प्रभाव भारत की अर्थव्यवस्था पर भी पड़ा है। विश्व में जो देश साम्यवाद के समर्थक थे उनका प्रभाव कम हुआ, दूसरी और अमेरिका जैसी पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाओं का प्रभाव बढ़ा। इन्हीं सब बातों ने सरकार को नवीन औद्योगिक नीति घोषित करने को विवश किया।

जुलाई 1991 में जो नई औद्योगिक नीति घोषित की गई उसमें सरकार ने लाइसेंसिंग सम्बन्धी अनेक प्रतिबंध हटा लिये और निजी क्षेत्र को अनेक प्रोत्साहन दिये। सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र के सम्बन्ध में भी नई नीति की घोषणा की। वास्तव में इस नीति से यह पता लगा कि सरकार समाजवाद के सम्बन्ध में नये ढंग से सोचना चाहती है।

### नीति के उद्देश्य

सरकार ने इस नीति की घोषणा करते समय इसके निम्न उद्देश्य बताये-

(i) **उद्योगों पर से अनावश्यक नियंत्रण हटाना-** सरकार ने इस नीति में यह बताया कि सरकार औद्योगिक विकास की गति में तीव्रता लाने के लिए उद्योगों पर से जो नियंत्रण आवश्यक नहीं हैं उन्हें हटा लेगी।

(ii) **नवप्रवर्तन एवं तकनीकी विकास पर अधिक ध्यान-** इस नीति का एक उद्देश्य तकनीकी विकास एवं नवप्रवर्तन से भी अनावश्यक नियंत्रण हटाना था।

(iii) **पूंजी बाजार का विकास-** पूंजी बाजार का विकास करना भी इस नीति का एक प्रमुख उद्देश्य था।

(iv) **लघु उद्योगों के विकास पर ध्यान-** नवीन औद्योगिक नीति में यह बताया गया कि सरकार बड़े उद्योगों के साथ-साथ लघु उद्योगों के विकास पर भी समान ध्यान देगी।

(v) **निर्यात बढ़ाने पर अधिक ध्यान-** विदेशी मुद्रा के संकट को हल करने के लिए सरकार विदेशी विनिमय तथा तकनीक को अपनावेगी ताकि निर्यात बढ़ सके।

(vi) **औद्योगिक क्षेत्र में एकाधिकार को समाप्त करना-** इस नीति का उद्देश्य औद्योगिक क्षेत्र में एकाधिकार को समाप्त करना भी था।

(vii) **सार्वजनिक क्षेत्र को घाटे से उबारना** - इस नीति में सार्वजनिक क्षेत्र को घाटे से उबारने एवं इनकी कुछ इक्विटी बाजार में करने की बात कही गई।

## नीति की प्रमुख विशेषताएं

नवीन औद्योगिक नीति की प्रमुख विशेषताएँ या तत्व इस प्रकार हैं -

I. **सार्वजनिक क्षेत्र के क्रम में नीति** - इस औद्योगिक नीति में सार्वजनिक क्षेत्र या लोक उपक्रम के क्रम में निम्नलिखित बातों का समावेश किया गया -

(1) **कुछ विशिष्ट उद्योगों में ही विनियोग** - *सरकार ने इस नीति में इस बात पर बल दिया कि केवल सैनिक साजो-सामान, परमाणु ऊर्जा, खनन, रेल परिवहन में ही सामान्तया विनियोग करेगी तथा अन्य क्षेत्रों को निजी उद्योगपतियों के लिए छोड़ देगी।*

(2) **आरक्षित क्षेत्र** - *इस नीति में सरकारी क्षेत्र के लिए आरक्षित सूची में अब 17 क्षेत्रों के स्थान पर मात्र 8 ही क्षेत्र होंगे जो क्रमशः इस प्रकार हैं* - (i) *शस्त्र, गोला बारूद सम्बन्धित सुरक्षा उपकरण, सेना के लिए विमान एवं जलपोत,* (ii) *आणविक ऊर्जा,* (iii) *कोयला एवं लिग्नाइट,* (iv) *खनिज तेल,* (v) *लोहा, मैंगनीज, क्रोम, जिप्सम, गन्धक, सोना, हीरा खनन आदि,* (vi) *ताम्बा, जस्ता, शीशा, टिन,* (vii) *आणविक ऊर्जा में प्रयुक्त होने वाले खनिज, एवं* (viii) *रेल परिवहन।*

(3) **जनता की भागीदारी** - *सार्वजनिक क्षेत्र में जनता की भागीदारी के लिए कुछ उद्योगों के अंश आम जनता, विशिष्ट वित्तीय संस्थाओं, कर्मचारियों आदि को बेचे जायेंगे। इस निर्णय से अब सार्वजनिक क्षेत्र के अंश पूँजी बाजार में क्रय-विक्रय के लिए उपलब्ध हो सकेंगे।*

(4) **प्रबन्ध व्यवस्था में सुधार** - *सार्वजनिक क्षेत्र की प्रबन्ध व्यवस्था में सुधार हेतु अनेक कदम उठाये गये, जैसे - पेशेवर प्रबन्धकों की नियुक्ति, प्रबन्धकों को अधिक अधिकार आदि।*

(5) **रुग्ण उपक्रमों के क्रम में नीति** - *जो उपक्रम निरन्तर रुग्ण चल रहे हैं, उनके सुधार के लिए उन्हें औद्योगिक एवं वित्तीय पुनर्निर्माण मण्डल या इसी प्रकार की अन्य संस्थाओं को सौंपा जायेगा। इस क्रम में इस बात का पूरा ध्यान रखा जायेगा कि श्रमिकों के हितों पर कुठाराघात नहीं हो।*

(6) **काम-काज में सुधार हेतु प्रयत्न** - *सार्वजनिक उपक्रमों में काम-काज के सुधार हेतु आपसी सहमति समझौतों पर अधिक बल दिया जायेगा। प्रबन्धकों को इस क्रम में अधिक स्वायत्तता प्रदान की जायेगी, साथ ही अधिक जवाबदेहता भी। इन समझौतों को संसद में भी चर्चा हेतु रखा जायेगा।*

(7) **श्रमिकों की सुरक्षा** - *इस नीति में श्रम सुरक्षा एवं श्रम-कल्याण को प्राथमिकता दी गई है। सार्वजनिक क्षेत्र में कार्यरत श्रमिकों की सुरक्षा हेतु 'सामाजिक सुरक्षा व्यवस्था' प्रारम्भ की जायेगी, जिसमें श्रमिकों की छंटनी आदि की दशा में उनके पुनर्वास आदि के क्रम में व्यवस्था की जायेगी।*



II. **निजी क्षेत्र के क्रम में नीति** - वास्तव में यह नीति सार्वजनिक क्षेत्र की अपेक्षा निजी क्षेत्र को अधिक बढ़ावा देने वाली तथा इस क्षेत्र के विकास एवं विस्तार को अधिक गति प्रदान करने के उद्देश्य से बनायी गयी। निजी क्षेत्र के सम्बन्ध में इस नीति में निम्नलिखित बातें हैं -

(1) **निजी क्षेत्र की भूमिका का विकास** - सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित उद्योगों की सूची में से 9 उद्योगों को निजी क्षेत्र द्वारा भी स्थापित करने की छूट देकर निजी क्षेत्र के कार्यक्षेत्र का विस्तार किया गया। नीति में निजी क्षेत्र को अब अधिक विकास के अवसर प्रदान किये गये हैं।

(2) **लाइसेन्स प्रणाली में संशोधन** - लाइसेन्सिग प्रणाली में संशोधन कर इस नीति में मात्र 18 उद्योगों को छोड़कर शेष सभी उद्योगों की स्थापना के लिए निजी क्षेत्र को लाइसेन्स लेने की व्यवस्था से मुक्त कर दिया गया। ये उद्योग इस प्रकार हैं - (i) कोयला एवं लिग्नाइट, (ii) पैट्रोल शोधक, (iii) शराब, (iv) चीनी, (v) पशु-चर्बी एवं तेल, (vi) सिगरेट, सिगार इत्यादि (vii) एसबेस्टस, (viii) प्लाईबुड एवं प्लाईबुड से सम्बन्धित उत्पाद, (ix) कच्ची खालें तथा चमड़ा, (x) फर की खाल, (xi) कार, (xii) कागज तथा अखबारी कागज, (xiii) इलेक्ट्रोनिक, वायुयान तथा रक्षा उपकरण, (xiv) औद्योगिक विस्फोटक सामग्री तथा माचिस, (xv) खतरनाक रसायन, (xvi) औषधि तथा दवाइयाँ, (xvii) मनोरंजक इलेक्ट्रोनिक उपकरण- टी.वी., वी सी आर आदि, (xviii) घरेलू उत्पाद तथा रेफ्रिजरेटर, वाशिंग मशीन , ए सी आदि।

उदारीकरण के तहत जुलाई 1990 के पश्चात् इन अनिवार्य लाइसेन्स लेने वाले उद्योगों की सूची को कम किया गया है। लघु उद्योग मन्त्री प्रो.पी.जे.कुरियन ने 4 जुलाई, 1992 को इस क्रम में कहा कि 11 उद्योगों को ओर अधिक बन्धनमुक्त करने की नीति के तहत सरकार ने देश में बनी यात्री कारों, इलेक्ट्रोनिक सामान तथा घरेलू जरूरत की कई चीजों के लिए लाइसेन्स समाप्त करने का फैसला किया है।

सरकार ने अब इस अनिवार्य लाइसेन्स सूची में से तीन उद्योगों- कारों, रेफ्रिजरेटर, ए.सी., वाशिंग मशीन, चमड़ा तथा चमड़े से बनी वस्तुओं को हटा दिया है, अर्थात अब इनके उत्पादन हेतु लाइसेन्स लेने की आवश्यकता नहीं रही।

III. **लघु उद्योगों के क्रम में नीति** - लघु उद्योगों को विशेष महत्व देते हुए इस औद्योगिक नीति में इस क्रम में निम्नलिखित बातों को स्वीकार किया गया -

(1) **पूँजी सीमा का पुनः निर्धारण** - लघु उद्योग का निर्धारण उसकी विनियोजित पूँजी से किया जाता है। अब अति लघु उद्योग उसे माना जायेगा जिसमें 5 लाख रुपये (संयंत्र एवं मशीनरी पर विनियोजन) तक पूँजी विनियोग की गई हो। लघु उद्योग की दशा में यह विनियोजन सीमा 60 लाख रुपये तथा सहायक उद्योगों की दशा में 75 लाख रुपये होगी, अर्थात उपरोक्त सीमा तक पूँजी विनियोजन वाले उद्योग लघु उद्योग की श्रेणी में आयेंगे।

(2) **आरक्षण** - लघु उद्योगों के लिए 836 वस्तुओं के उत्पादन का आरक्षण होगा अर्थात उपरोक्त सूची में वर्णीत 836 वस्तुओं का उत्पादन अन्य क्षेत्र द्वारा नहीं हो सकेगा।

(3) **लाइसेन्स व्यवस्था से छूट** - लघु उद्योगों को लाइसेन्स व्यवस्था से पूर्णमुक्त किया गया है।

(4) इस नीति के तहत अब लघु उद्योग अपनी अंशधारिता का 24 प्रतिशत तक हिस्सा वृहत उद्योगों को दे सकते हैं। इस व्यवस्था से लघु उद्योगों को अधिक मात्रा में पूँजी तथा प्रोद्योगिकी प्राप्त हो सकेगी।

(5) इस औद्योगिक नीति के अन्तर्गत केवल सम्बन्धित राज्य के विशेष विभाग या निदेशालय में उद्योग को पंजीयन कराने पर ही, उद्योग सभी सुविधाएँ प्राप्त करने का अधिकारी हो जायेगा।

(6) एक खिड़की ऋण योजना के तहत परियोजना हेतु ऋण की रकम 20 लाख रुपये कर दी गई है।

(7) लघु उद्योगों के विकास हेतु केन्द्र, राज्य एवं विशिष्ट वित्तीय संस्थाओं के सहयोग से एक नवीन योजना का क्रियान्वयन किया जायेगा।

(8) लघु उद्योगों के विलम्बित भुगतान समस्या के समाधान हेतु भारतीय विकास बैंक की सेवाओं का विस्तार किया जायेगा।

(9) निर्यात को प्रोत्साहन देने हेतु लघु उद्योग विकास संगठन के अधीन एक निर्यात विकास केन्द्र' स्थापित किया जायेगा।

(10) इस क्षेत्र से सम्बन्धित मामलों को शीघ्र निपटाने हेतु 3 माह की समय सीमा निर्धारित की गई है।

(11) लघु उद्योगों को विशेष महत्व देने की नीति के तहत जुलाई 1992 में अलग से लघु मन्त्रालय बनाया गया, तथा लघु उद्योग मन्त्री के पद का सृजन किया गया।

(12) ग्रामीण और खादी लघु उद्योगों को औद्योगिक एवं श्रम कानूनों के तहत विशेष रियायतें देने हेतु जुलाई 1993 में एक समिति का गठन किया गया है जो तीन माह में आनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर देगी। इस समिति के एस.बी.महापात्र, आर.बन्दोपाध्याय तथा डॉ.डी.सी.श्रीवास्तव सदस्य हैं।

IV. **उद्योगों को कानूनी एवं प्रशासनिक नियन्त्रणों से मुक्ति** - इस नीति में अनेक प्रशासनिक एवं कानूनी व्यवस्थाओं से मुक्त कर उद्योगों के विकास एवं विस्तार प्रक्रिया को सरल बना दिया गया है। अब उद्योगों को अपनी क्षमता के विस्तार करने एवं विविधीकरण के लिए पूर्व अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं है। इस हेतु एकाधिकार एवं प्रतिबन्धात्मक व्यापार, व्यवहार अधिनियम में भी संशोधन किया गया है।

V. **विदेशी पूँजी विनियोजन एवं प्रौद्योगिकी के क्रम में नीति** - इस क्रम में निम्नलिखित बातों का समावेश किया गया है -

(1) *उच्च प्राथमिकता वाले 34 उद्योगों में विदेशी पूँजी का हिस्सा 51 प्रतिशत तक हो सकता है। इस हेतु विदेशी मुद्रा नियमन कानून 'फेरा' में आवश्यक संशोधन किये जायेंगे।*

(2) *उपरोक्त प्रकार के पूँजी विनियोजन वाली औद्योगिक इकाइयों पर कल-पुर्जे, कच्चेमाल तथा तकनीकी जानकारी के आयात के क्रम में सामान्य नियम लागू होंगे, लेकिन रिजर्व बैंक विदेशों में भेजे जाने वाले लाभांश पर निगरानी रखेगा जिससे बाहर भेजे गये लाभांश तथा निर्यात आय के मध्य सन्तुलन स्थापित हो सके।*

(3) *विदेशी उद्यमियों को पूँजी निवेश हेतु प्रेरित किया जायेगा, इस क्रम में विदेशी विनियोग के अनुमोदन हेतु एक विशेषाधिकार प्राप्त बोर्ड की स्थापना की जायेगी।*



(4) *विदेशी प्रौद्योगिकी के आयात हेतु प्राथमिकता प्राप्त उद्योगों को घरेलू विक्रय के 5 प्रतिशत तक या निर्यात के 8 प्रतिशत तक अथवा एक करोड़ रुपये तक की एक मुश्त रकम की अदायगी के मामले में किसी प्रकार की पूर्व अनुमति की आवश्यकता नहीं होगी।*

(5) *गैर प्राथमिकता प्राप्त उद्योगों में विदेशी पूँजी निवेश की प्रक्रिया को अधिक सरल बनाया गया है।*

(6) *गैर उच्च प्राथमिकता वाले उद्योगों की दशा में विदेशी प्रौद्योगिकी के आयात हेतु विदेशी मुद्रा के लिए अनुमोदन की आवश्यकता होगी, किन्तु यदि उद्योग स्वयं विदेशी मुद्रा की व्यवस्था करता है तो ऐसे अनुमोदन की आवश्यकता नहीं होगी।*

(7) *विदेशी तकनीकी विशेषज्ञों की नियुक्ति एवं देश में ही विकसित तकनीकों का विदेशों में परीक्षण हेतु किसी प्रकार पूर्व अनुमति की आवश्यकता नहीं होगी।*

VI. **जनसंख्या-पर्यावरण एवं उद्योग** - ऐसे नगर जिनकी जनसंख्या 10 लाख से अधिक है, उन नगरों में इलेक्ट्रानिक्स एवं गैर प्रदूषणकारी उद्योगों को ही स्थापित करने की अनुमति दी जायेगी। अन्य उद्योगों की स्थापना नगर की सीमा से 20 किलोमीटर दूर की जायेगी।

पर्यावरण की सुरक्षा एवं जनसंख्या के घनत्व को कम करने के उद्देश्य से यह नीति अपनायी गयी है। देश की क्षेत्रीय विषमता को कम करने के उद्देश्य से इस नीति में पिछड़े क्षेत्रों में उद्योग लगाने पर विशेष सरकारी प्रोत्साहन की व्यवस्था भी की गयी है।

VII. **श्रमिकों के सम्बन्ध में नीति** - श्रमिकों के सम्बन्ध में यह औद्योगिक नीति उनके हितों को संरक्षण देने वाली है। इस नीति में श्रमिकों के हितों की सुरक्षा, श्रम कल्याणकारी योजनाओं में अभिवृद्धि, तकनीकी परिवर्तनों के अनुरूप श्रमिकों को तैयार करने हेतु प्रशिक्षण एवं कौशल, विकास कार्यक्रम प्रारभ करने, संस्था के प्रगति, विकास तथा प्रबन्ध में भागीदारी तथा रुग्ण उपक्रमों को श्रमिक सहकारी समितियों के द्वारा संचालित करने की बात कही गयी है।

## नीति का आलोचनात्मक मूल्यांकन

नवीन औद्योगिक नीति, 1991 की विपक्षी राजनेताओं ने तो आलोचना की किन्तु व्यवसायियों एवं विभिन्न औद्योगिक संगठनों ने इस नीति की सराहना की। प्रसिद्ध उद्योगपति एस.एल.किर्लोस्कर ने इस औद्योगिक नीति पर अपना मत इस प्रकार व्यक्त किया - 'नई उदार औद्योगिक नीति एक ऐतिहासिक कदम है, परन्तु यदि यह अल्पकालिक ही रही तो इसके समुचित लाभ नहीं मिल पायेंगे।' इन्जीनियरी उद्योग के फैडरेशन ने इसे एक उत्कृष्ट औधोगिक नीति कहा। फिक्की (FICCI) के अध्यक्ष श्री एस.के.बिड़ला का इस क्रम में मत है कि 'इस नीति के द्वारा अनेक अव्यावहारिक प्रतिबन्धों को हटा दिया या सुधार दिया गया है। इससे भारत अन्तर्राष्ट्रीय मुख्य धारा में सम्मलित हो सकेगा।' भारत के प्रधानमन्त्री श्री पी.वी. नरिसंहराव के अनुसार - 'यह औद्योगिक नीति 1956 की औद्योगिक नीति का तार्किक विकसित स्वरूप है। यह बाधाओं एवं अवरोधों को दूर कर औद्योगिक विकास की गति को तीव्र करेगी।' प्रसिद्ध उद्योगपति श्री एस.एस.थापर के अनुसार -'भारतीय अर्थव्यवस्था को उन्मुक्त बनाने की दशा में यह नीति एक महत्वपूर्ण कदम है।'

जुलाई 1993 में इस औद्योगिक नीति को दो वर्ष पूरे हो गये। इन दो वर्षों में भारतीय अर्थ नीति में अनेक परिवर्तन किये गये, जिससे औद्योगिक विकास में वृद्धि हो सके। इस अवधि

के दौरान औद्योगिक नीति के अन्तर्गत अनेक कदम उठाये गये। रुपये की विनिमय दर में कमी, स्वर्ण हस्तान्तरण, लघु उद्योगों के लिए पृथक नीति, नयी आयात-निर्यात नीति, इस्पात विनियन्त्रण, अनिवासी भारतीयों को विशेष छूट, रुपये की पूर्ण परिवर्तनीयता, 'फैरा' में संशोधन, संस्थागत विदेशी निवेश, निजी क्षेत्र को बढ़ावा आदि अनेक प्रयास भारतीय अर्थव्यवस्था में सुधार हेतु किये गये। अगस्तर, 1991 से जून, 1993 तक 82 अरब 52 करोड़ 87 लाख रुपये के विदेशी निवेश प्रस्तावों को स्वीकृति दी। 31 मई 1993 से सरकार ने निर्यात वृद्धि हेतु प्रोत्साहन राशि योजना के अन्तर्गत आने वाली वस्तुओं की संख्या 352 से बढ़ाकर 683 कर दी है। इन सब प्रयासों के कारण अनेक सुपरिणाम सामने आये हैं। मुद्रास्फीति पर नियन्त्रण हो सका है। 1991 में यह दर 13.6 प्रतिशत थी जो 30 जनवरी, 1993 को घटकर मात्र 6.9 प्रतिशत रह गयी। केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन के अनुसार सकल राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि की दर में बढ़ोतरी हुई है। 1991-92 में दर 1.2 प्रतिशत थी जो 1993-93 में 4 प्रतिशत (अनुमानित) रही। नयी औद्योगिक नीति की घोषणा के पश्चात् देश में उद्योगों की संख्या में दस गुना बढ़ोतरी हुई है। नयी नीति में अनेक उद्योगों के लिए लाइसेन्स समाप्त कर दिये गये हैं तथा लाइसेन्स प्रक्रिया को सरल एवं कारगर बना दिया गया है। इससे औद्योगिक विकास को अत्यधिक प्रोत्साहन मिला है। विदेशी प्रौद्योगिकी सम्बन्धी समझौतों तथा स्वीकृत विदेशी निवेशों में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। औद्योगिक संवृद्धि की दर 1992-93 में (अप्रेल-अक्टूबर) 3.8 प्रतिशत रही जो कि वर्ष 1991-92 में 0.1 प्रतिशत की ऋणात्मक दर से अधिक है।

लाइसेन्स व्यवस्था से अधिकांश उद्योगों को मुक्ति, कठोर नियन्त्रण व्यवस्था में छूट, लालफीताशाही एवं भ्रष्टाचार में कमी, एकाधिकार कानून की प्रायः समाप्ति, सार्वजनिक क्षेत्र या लोक उपक्रम में सुधार, औद्योगिक विकास एवं विस्तार हेतु वातावरण का निर्माण, पूर्ण क्षमता के उपयोग के प्रयास, श्रम कल्याण को प्राथमिकता, वित्तीय संस्थाओं के हस्तक्षेप पर रोक, उद्यमशीलता का विकास, लघु एवं ग्रामीण क्षेत्र के उद्योगों को अधिक सुविधाएँ आदि इस उदार औद्योगिक नीति की श्रेष्ठताएं हैं।

लेकिन फिर भी यह औद्योगिक नीति आलोचनाओं से परे नहीं है। भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर ने वर्तमान आर्थिक घोटाले (बैंक एवं शेयर बाजार से सम्बन्धित) को नई औद्योगिक नीति का ही परिणाम बतलाया है। डॉ. के.एन.काबरा ने इसे कृषि एवं उद्योगों में दूरी बढ़ाने वाली नीति बतलाया है। जार्ज फर्नाण्डीस ने इसे पूँजीवाद को बढ़ावा देने वाली तथा श्रम विरोधी नीति कहा है। के पी उन्नीकृष्णन ने इस नीति की आलोचना करते हुए कहा कि लगता है कि हमारी नीति और कार्यक्रम अब नई दिल्ली के बजाय वाशिंगटन में तय होंगे। वस्तुतः इस नीति के आलोचकों ने इस नीति को अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष एवं विश्व बैंक द्वारा निर्देशित तथा समाजवादी समाज की स्थापना की विरोधी बतलाया है। आलोचकों का मत है कि इन दो वर्षों में जो थोड़े बहुत सुखद परिणाम प्राप्त हुए हैं उसका एकमात्र कारण यह नीति नहीं है, अपितु अच्छा मानसून भी इसका एक प्रमुख कारण है। यह नीति एकाधिकारी प्रवृत्तियों में वृद्धि करने वाली, विदेशी हस्तक्षेप बढ़ाने वाली (जो अन्ततः आर्थिक गुलामी के स्वरूप में भारत को पराधीन बना देगी), पूँजीवाद को बढ़ावा देने वाली तथा लघु एवं कृषि पर आधारित उद्योगों का विनाश करने वाली साबित होगी। लाइसेन्स व्यवस्था से मुक्ति तथा विकास एवं विस्तार की स्वतन्त्रता देश के बड़े-बड़े उद्योगपतियों का एकाधिकार ही स्थापित करेगी। यह स्थिति पूँजीवादी तानाशाही लायेगी तथा सामाजिक न्याय का गला घोंटने वाली होगी।



प्रवासी भारतीयों को पूँजी निवेश हेतु प्रोत्साहन एवं अधिक सुविधाएँ देना एक सही कदम है, किन्तु प्रबन्ध व्यवस्था में उन पर प्रतिबन्ध का कदम उचित नहीं लगता। विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पिनयों को 51 प्रतिशत पूँजी निवेश की सुविधा देना आवश्यक हो तो इसे 100 प्रतिशत तक करने का प्रावधान, आर्थिक गुलामी को बढ़ावा देने वाला है। इसलिए बहुराष्ट्रीय निगमों और विदेशी निवेश को आमन्त्रित करने से पूर्व यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि इससे राष्ट्रहित प्रभावित न हो। गरीबी एवं बेकारी को नियन्त्रण करने हेतु इस नीति में कोई विशेष प्रावधान नहीं हैं, इसलिए इस हेतु प्रभावपूर्ण कदम उठाये जाने चाहिए।

**प्रश्न 8 महिलाओं के साथ लैंगिक असमानता का वर्णन करते हुए उनकी स्थिति सुधारने हेतु सरकार द्वारा किये गये प्रयासों का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर-**

## बचपन में किए जाने वाले लिंग आधारित भेदभाव के मुद्दे

बचपन में महिलाओं के साथ किए जाने वाले भेदभाव के मुद्दे एवं क्षेत्र का वर्णन निम्नांकित रूप में किया जा सकता है-

(i) *सीमित एवं अपर्याप्त सुख-सुविधाओं के साथ बालिका का लालन-पालन।*
(ii) *बालिकाओं को या तो बिल्कुल ही न पढ़ाना या साधारण से स्कूल में पढ़ाना।*
(iii) *छोटे भाई-बहिनों को खिलाने की जिम्मेदारी।*
(iv) *स्कूल में पढ़ने वाली बालिका से चौका-बर्तन, खाना पकाना, झाड़ू-बुहारी जैसे कार्य कराया जाना जबकि बालकों को ऐसे कार्यों से मुक्त रखा जाना।*
(v) *लड़कियों का जन्म-दिन न मनाया जाना और न उन्हें उपहार आदि दिया जाना।*
(vi) *पढ़ाई पूरी किए बिना ही उन्हें स्कूल न जाने देना।*
(vii) *भाइयों की तुलना में बहिनों को अधिक त्याग करने के लिए प्रेरित करना।*

## विवाह के समय लिंग आधारित भेदभाव के मुद्दे

विवाह के समय लिंग के आधार पर किए जाने वाले भेदभाव के मुद्दे इस प्रकार हैं-

(i) *शारीरिक रूप से परिपक्व हुए बिना ही विवाह कर देना।*
(ii) *वर पक्ष द्वारा विवाह से पूर्व लड़कियों को इस प्रकार से देखना मानो कि वे एक वस्तु हो।*
(iii) *लड़कियों को अपनी पसन्द का वर चुनने की स्वतन्त्रता न होना अधिकांश मामलों में माँ-बाप द्वारा पुत्री का विवाह अपनी सुविधा एवं इच्छा से एक अधिकार के रूप में कर देना।*
(iv) *सभी प्रकार से योग्य होते हुए भी कन्या से विवाह करने पर दहेज लिया जाना। दहेज के लिए बहुओं को शारीरिक एवं मानसिक यातनाएं देना तथा जान से भी मार डालना।*
(v) *कतिपय समाजों में पुरुषों को एक से अधिक पत्नी रखने का अधिकार लेना, जबकि स्त्रियों को इसी प्रकार के अधिकार से वंचित रखना।*
(vi) *पति की मृत्योपरान्त स्त्री (विधवा) द्वारा दूसरा विवाह न होने देना, जबकि पुरुषों द्वारा पत्नी की मृत्यु हो जाने पर दूसरा विवाह किए जाने की छूट।*
(vii) *विधवाओं पर अच्छे कपड़े पहनने, अच्छा भोजन करने, उत्सव-समारोहों में भाग लेने पर प्रतिबन्ध लगाया जाना, जबकि विधुरों को इस प्रकार प्रतिबन्धों से मुक्त रखना।*

## रोजगार तथा आय सृजन में महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव

रोजगार तथा आय सृजन में महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव निम्नलिखित हैं.

(i) *अधिकांश देशों में संवैधानिक तौर पर रोजगार के अवसरों की समानता होते हुए भी व्यावहारिक तौर पर महिलाओं को कमी ही रोजगार प्रदान करना।*

(ii) *अधिकांश निजी प्रतिष्ठानों में विवाहित महिलाओं को नौकरी पर रखा जाना, क्योंकि विवाहित महिलाओं के गर्भवती होने पर सवेतन अवकाश देना होगा।*

(iii) *असंगठित क्षेत्र में महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम मजदूरी दिया जाना।*

(iv) *कार्यस्थलों पर महिलाओं को मानसिक एवं शारीरिक उत्पीड़न करना।*

(v) *सेल्स प्रोमोशन के नाम पर विज्ञापन एवं प्रचार में नारी देह का अपमानजनक प्रदर्शन करना।*

(vi) *पर्यटन जैसे उद्योगों में अधिक-से-अधिक ग्राहक आकर्षित करने के लिए नारी देह को एक वस्तु के रूप में प्रयुक्त करना।*

(vii) *कारखानों एवं अन्य प्रतिष्ठानों में महिलाओं को नियमित नौकरी पर न दर्शाकर संविदा पर दर्शाना और इस तरह से उन्हें राज्य बीमा योजना, क्षतिपूरक भुगतान आदि लाभों से वंचित कर देना।*

(viii) *पुरुष श्रमिकों की अपेक्षा महिला श्रमिकों से अधिक घण्टे कार्य कराना।*

## स्त्रियों की स्थिति सुधारने हेतु सरकार द्वारा किये गये प्रयास

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद सरकार द्वारा महिलाओं की स्थिति को सुधारने, उनको समस्याओं का समाधान करने और उन्हें शिक्षित, प्रशिक्षित और समाजोपयोगी बनाने आदि की दृष्टि से महिला कल्याण से सम्बन्धित अनेक कार्यक्रम शुरू किये गये, जिनका वर्णन निम्नांकित रूप में किया जा सकता है-

(1) भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 50% भाग महिलाओं से सम्बन्धित है। स्पष्ट है कि इतने विशाल भाग की उपेक्षा करना असम्भव है। सन् 1971 में देश की महिलाओं की स्थिति का अध्ययन करने तथा उसमें सुधार करने की दृष्टि से एक 'समिति' का गठन किया गया जिसने सन् 1975 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस समिति द्वारा प्रस्तुत किये गये सुझावों के आधार पर सरकार ने अनेक 'महिला कल्याण कार्यक्रम' संचालित किये हैं।

(2) महिलाओं को पुरुषों के ही समान वेतन प्रदान करने की व्यवस्था के लिए सरकार द्वारा सन् 1979 में 'समान वेतन अधिनियम' पारित किया गया, ताकि स्त्रियों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में पर्याप्त सुधार किया जा सके।

(3) स्त्रियों की स्थिति सुधारने के लिए सरकार द्वारा सन् 1961 और 1976 में 'मातृत्व हित लाभ अधिनियमों' को पारित किया गया।

(4) 'हिन्दू विवाह अधिनियम, सन् 1955' के द्वारा स्त्रियों को भी विवाह-विच्छेद करने का अधिकार प्रदान किया गया।

(5) सन् 1961 में दहेज की समस्या को नियन्त्रित करने के लिए 'दहेज निरोधक अधिनियम' को पारित किया गया जिसे सन् 1986 में कुछ संशोधन करके और भी अधिक कठोर बनाया गया।



(6) सन् 1968 से प्रौढ़ स्त्रियों के लिए शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम 'केन्द्रीय महिला कल्याण बोर्ड' के अन्तर्गत संचालित किया गया। सन् 1992-93 में 3642 स्त्रियों को इस कार्यक्रम से लाभान्वित किया गया।

(7) सन् 1975-76 से 15 से 45 वर्ष के आयु समूह के लिए 'प्रकार्यात्मक साक्षरता कार्यक्रम' शुरू किया गया, जिसके अन्तर्गत महिलाओं को स्वच्छता, स्वास्थ्य, आहार एवं पोषक-तत्त्वों, गृह प्रबन्ध एवं शिशु की देखभाल और शिक्षा और व्यवसाय के सन्दर्भ में अनौपचारिक शिक्षा प्रदान की जा रही है।

(8) ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाली महिलाओं के उत्थान एवं कल्याणार्थ गाँवों में 'महिला मण्डलों' की स्थापना की गयी है।

(9) सन् 1975 में सम्पूर्ण विश्व में आयोजित 'अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष' के दौरान भारत में विभिन्न सामाजिक-आर्थिक कल्याण स्थापना की गयी है।

(10) सरकार द्वारा 18 से 30 वर्ष की आयु समूह की अभावग्रस्त स्त्रियों के लिए विभिन्न व्यवसायों में प्रशिक्षित करने के उद्देश्यवश 'प्रशिक्षण केन्द्रों' की स्थापना की गई है।

(11) स्त्रियों को अच्छी रोजगार सेवायें उपलब्ध कराने के उद्देश्य से सन् 1986-87 में 'महिला विकास निगम' स्थापित किये गये।

(12) 2 अक्टूबर, 1993 से सम्पूर्ण देश में 'महिला समृद्धि योजना' शुरू की गयी है जिसके अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्र की महिलायें डाकखाने में 300 रुपये जमा कर सकती हैं। एक वर्ष की अवधि तक वह रुपये जमा रहने के पश्चात् सरकार द्वारा उन्हें 75 रुपये का अंशदान अपनी ओर से प्रदान किया जाता है।

(13) 'पंचायत राज संस्थाओं' एवं 'नगर परिषदों' में महिलाओं के लिए 33.3% स्थानों को आरक्षित किया गया है, ताकि वे भी राजनीतिक सहभागिता कर सकें।

(14) निर्धन एवं जरूरतमन्द महिलाओं को ऋण सम्बन्धी सुविधायें प्रदान करने के उद्देश्य से 'महिलाओं के लिए राष्ट्रीय कोष' भी स्थापित किया गया है।

(15) ग्रामीण निर्धनता के उन्मूलन कार्यक्रम के अन्तर्गत 40% महिलाओं को शामिल किया गया है। अरुणाचल प्रदेश, जम्मू एवं कश्मीर, लेह-लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, लाहौल एवं किन्नौर, चमौली, बनासकांठा, जैसलमेर, श्रीकरणपुर जैसे सीमावर्ती क्षेत्रों में मातृत्व सेवायें, शिशु देख-रेख, शिल्पकला-प्रशिक्षण और सामाजिक या प्रौढ़ शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से 'सीमावर्ती क्षेत्र कल्याण केन्द्र' स्थापित किये गये हैं।

(16) नगरों में निवास करने वाली कामकाजी महिलाओं को आवासीय सुविधायें प्रदान करने के लिए विभिन्न नगरों में 'महिला होस्टल' स्थापित किये गये हैं। इस समय भारत में इस प्रकार के 811 होस्टल हैं, जिनमें 56,974 कामकाजी महिलायें निवास करती हैं।

(17) महिलाओं पर किये जाने वाले अत्याचारों, उत्पीड़नों पर अंकुश लगाने तथा स्त्रियों में चेतना और जागृति उत्पन्न करने के उद्देश्य से 'शिक्षा के माध्यम' को प्रोत्साहन प्रदान किया जा रहा है। सन् 1958 से समाज कल्याण बोर्ड के द्वारा अनाथ और जरूरतमन्द महिलाओं को कार्य दिलाने में सहायता प्रदान की जा रही है।

(18) सरकार द्वारा जनवरी सन् 1992 में एक 'राष्ट्रीय महिला आयोग' का गठन किया गया ताकि महिलाओं पर होने वाले अन्यायों का सामना किया जा सके। यह आयोग स्त्रियों के सम्बन्ध में लागू होने वाले कानूनों की समीक्षा करता है तथा सम्बन्धित मन्त्रालयों,

राज्य सरकारों एवं गैर-सरकारी संगठनों से सम्पर्क स्थापित करते हुए महिलाओं की शिकायतों को दूर करने के उपाय भी सुझाता है।

(19) सार्वजनिक स्थानों में महिलाओं से अभद्र, अशोभनीय, भद्दे और अश्लील प्रदर्शनों पर रोक लगाने के लिए सन् 1968 में 'महिलाओं का अश्लील चित्रण' (निवारण) अधिनियम पारित करके दोषी लोगों को दो हजार रुपयों और दो वर्ष तथा कारावास का दण्ड देने का प्रावधान कर दिया गया है।

(20) 20 अगस्त, 1995 से 'इन्दिरा महिला योजना' को देश के 2,000 विकास खण्डों में शुरू किया गया, जिसका उद्देश्य निम्न स्तर पर महिलाओं को संगठित और अधिकारयुक्त करना ही है।

(21) 'स्त्रियों एवं बच्चों के यौन-उत्पीड़न और अवैध व्यापार' की रोकथाम के लिये केन्द्र सरकार के द्वारा एक समिति गठित की गयी है। इस समिति ने सम्बन्धित स्त्रियों की कार्यवाही करने की योजना तैयार कर भेजी है, ताकि केन्द्र व राज्य सरकारें इस सम्बन्ध में उसके निर्देशानुसार ही कार्य करें।

(22) सरकार द्वारा सन् 1982-83 में 'ड्वाकरा योजना' 50 जिलों में शुरू की गयी, जिसे सन् 1994-95 में देश के समस्त जिलों में लागू किया गया। इस योजना का उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं तथा बच्चों का विकास करना, उनकी आय में वृद्धि करना आदि है। इससे अभी तक लगभग 40 लाख से भी अधिक महिलायें लाभान्वित हुई हैं।

(23) 2 अक्टूबर, 1993 से देश भर में 1.32 लाख डाकखानों के माध्यम से 'महिला समृद्धि योजना' शुरू की गयी, जिसका उद्देश्य ग्रामीण स्त्रियों में नियमित रूप से बचत की आदत को प्रोत्साहित करना है। इस योजना से स्त्रियों के अधिकार में वृद्धि होगी तथा वे घरेलू संसाधनों पर अधिक नियन्त्रण भी रख सकेंगी।

(24) सन् 1958 में 'वयस्क महिलाओं को शिक्षा तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण उपलब्ध कराने की सघन योजना' शुरू की गयी, जिसको केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड संचालित करता है। इस योजना में उन स्त्रियों और कन्याओं को, जो स्कूली शिक्षा को अधूरी छोड़ चुकी है, आगे भी शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करके उन्हें रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये जाते हैं।

(25) 'राष्ट्रीय मातृत्व लाभ योजना' के अन्तर्गत गरीबी की रेखा से नीचे जीवन-यापन करने वाले परिवारों की 19 वर्ष अथवा इससे अधिक आयु वाली गर्भवती स्त्रियों को पहले 2 बच्चों को जन्म पर आर्थिक सहायता, प्रसव के 8 से 12 सप्ताह पहले 300 रुपये की किश्त के रूप में प्रदान की जाती है।

(26) सन् 2001 में महिला समस्या कार्यक्रम देश के 10 राज्यों के 60 जिलों में 9,000 गाँवों में प्रारम्भ किया गया है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक व आर्थिक रूप से लाभ-वंचित वर्गों की महिलाओं को शिक्षित करना और सशक्त बनाना है। महिला शिक्षा तथा साक्षरता में महिला समस्या कार्यक्रम के योगदान हेतु 2001 में यूनेस्को के द्वारा इस कार्यक्रम को सम्मानीय उल्लेख का नोमा साक्षरता पुरस्कार भी प्रदान किया गया है।

उपर्युक्त प्रयासों के अतिरिक्त सन् 1987 में महिलाओं को रोजगार और प्रशिक्षण प्रदान करने का कार्यक्रम, आंगनबाड़ी, शिशु-सदन, बच्चों के अवकाश शिविर, प्रशिक्षण रोजगार एवं उत्पादन केन्द्र योजना सन् 1983 आदि अनेक सरकारी प्रयास हैं, जिन्होंने महिलाओं की



स्थिति को सुधारने में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। स्पष्ट है कि महिला सशक्तिकरण के सन्दर्भ में स्त्रियों की विभिन्न संवैधानिक गारंटियाँ देकर, यथा-कानूनन समानता, लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं रोजगार के समान अवसर, समान काम के लिए समान वेतन/मजदूरी, कामकाज का उपयुक्त वातावरण, मातृत्व लाभ और पंचायतों/नगरपालिकाओं में सीटों का आरक्षण आदि स्त्रियों की स्थिति में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर रहा है।

**प्रश्न 9 भारत में महिलाओं सम्बन्धी सामाजिक कुरीतियों एवं उन्हें प्रदत्त कानूनी (वैधानिक) अधिकारों का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर-** भारत में महिलाओं से सम्बन्धित अनेक सामाजिक बुराइयाँ प्रचलन में थीं, जिन्हें सुधारने के लिए अनेक सुधार आन्दोलन सामाजिक नेताओं तथा महापुरुषों द्वारा चलाए गए।

महिलाओं की अशिक्षा व साक्षरता बढ़ाने के प्रयास तथा राजनीतिक आन्दोलनों में महिलाओं की भागीदारी, संयुक्त परिवारों के विघटन से स्त्रियों की स्थिति में सुधार, पाश्चात्य संस्कृति एवं साहित्य का प्रभाव, औद्योगिकीकरण एवं नगरीकरण, महिलाओं को प्रदत्त वैधानिक अधिकार, यातायात व संचार साधनों का विस्तार, सहशिक्षा तथा अन्तर्जातीय विवाह का प्रसारण आदि द्वारा भी महिलाओं की स्थिति में सुधार लाया गया जिनका शीर्षक वार विवरण इस प्रकार है-

स्त्रियों की स्थिति में होने वाले परिवर्तन केवल नये सामाजिक विधान का ही परिणाम नहीं है। इसके लिए अनेक कारण उत्तरदायी हैं। स्त्रियों की स्थिति में सुधार या परिवर्तन के लिए निम्नलिखित कारण उत्तरदायी हैं-

(1) **स्त्री शिक्षा-** स्त्री शिक्षा से स्त्रियों की स्थिति में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। वे घर की चाहरदीवारी और पर्दे से निकलकर खुली दुनिया में आयीं। वे पुरुषों के समान अपने राजनीतिक और साम्पत्तिक अधिकारों की विषमता के लिए आन्दोलन करने लगीं। शिक्षित होने से उन्हें अपनी दुर्दशा का भान होने लगा और वे प्राचीन रूढ़ियों, रीति-रिवाजों की छोड़कर नई दुनिया में आयीं। आज स्त्रियाँ बड़े-बड़े पदों, जैसे-मन्त्री, राजदूत यहाँ तक कि प्रधानमन्त्री के पद पर भी बड़ा शालीनता से काम कर रही हैं। उनमें आर्थिक आत्म-निर्भरता बढ़ी है। उनमें आधुनिकता में भी वृद्धि हुई है।

(2) **सुधार आन्दोलन-** समाज सुधार आन्दोलनों ने भी स्त्रियों की स्थिति को सुधारने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इन आन्दोलनों से स्त्रियों में चेतना का विकास हुआ। राजा राममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, रानाडे, महर्षि कर्वे, स्वामी दयानन्द सरस्वती और श्रीमती एनी बेसेण्ट ने इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किये। राजा राममोहन राय ने सती प्रथा के विरोध में तो ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने विधवा पुनर्विवाह निषेध, बाल-विवाह एवं बहुपत्नी विवाह के निषेध में आन्दोलन किये। महर्षि कर्वे द्वारा स्थापित कर्वे महिला विश्वविद्यालय, विधवा-गृह, स्वयं सेवकों को प्रशिक्षित करने के लिए 'निष्काम कर्म मठ' इस दिशा में महत्त्वपूर्ण प्रयास कर रहे हैं। इस क्षेत्र में अनेक प्रगतिशील स्त्रियों, जैसे-सरोजनी नायडू, अरुणा आसफअली, विजयलक्ष्मी पण्डित, दुर्गाबाई देशमुख और पद्मिनी सेन गुप्ता ने भी महत्त्वपूर्ण कार्य किये।

(3) **राजनीतिक आन्दोलन-** स्वतन्त्रता आन्दोलन भी स्त्रियों की परिस्थिति में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन लाया। गाँधीजी, मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू ने स्वतन्त्रता संग्राम में स्त्रियों का भी आह्वान किया और अनेक स्त्रियाँ इस संग्राम में भाग लेने के लिए आगे आयीं। उन्होंने विदेशी वस्त्र बहिष्कार आन्दोलन, असहयोग आन्दोलन, टैक्स न देना, शराब की दुकानों पर धरना

देना, जेल जाना आदि अनेक आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया। इस प्रकार उनका दिल खुल गया और इससे अन्य स्त्रियों को प्रेरणा भी मिली।

(4) **संयुक्त परिवार का विघटन-** जैसे-जैसे संयुक्त परिवारों की संख्या में कमी होती जा रही है स्त्रियों की स्थिति में सुधार होता जा रहा है।

(5) **पाश्चात्य संस्कृति एवं साहित्य-** वैज्ञानिक शिक्षा के प्रसार, अंग्रेजी साहित्य के अध्ययन और पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से भारतीय स्त्रियों के मन में अन्धविश्वास, संकीर्णता, रूढ़िवादिता, कुरीतियों का अनुसरण आदि का उन्मूलन हुआ है। उनमें तार्किक वृद्धि का विकास हुआ। बाल-विवाह, सती-प्रथा, दहेज-प्रथा, विधवा विवाह निषेध, शिशु कन्या वध, दासी प्रथा जैसी कुप्रथाओं पर कुठाराघात हुआ। स्त्रियाँ भौतिक प्रगति की दौड़ में आगे आ गयीं।

(6) **औद्योगीकरण एवं नगरीकरण-** स्त्रियों की स्थिति में सुधार होने का एक प्रमुख कारण उद्योगों का विकास और उनमें स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करने की मनोवृत्ति का विकास होना है। उद्योगों का विकास होने से स्त्रियों को आर्थिक जीवन में प्रवेश करने के अधिक अवसर उपलब्ध होने लगे, फलतः पुरुष पर उसकी आर्थिक निर्भरता कम हो गई। समाज में नगरीय विशेषताओं के महत्त्व में वृद्धि होने से सभी स्त्री-पुरुष व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का महत्त्व देने लगे। इसके फलस्वरूप अन्तर्जातीय विवाह आरम्भ हुए, विधवाओं का पुनर्विवाह करना अनैतिक नहीं वरन् अच्छा समझा जाने लगा, स्त्रियों को अधिकाधिक शिक्षा दी जाने लगी, उन्होंने राजनीतिक कार्यों में रुचि लेना आरम्भ कर दिया, छापेखाने और यातायात के साधनों में वृद्धि होने से स्त्रियों की गतिशीलता में वृद्धि हुई और विवाह सम्बन्धों में स्त्रियों की इच्छा को महत्त्व दिया जाने लगा। इन सभी परिवर्तनों में स्त्रियों में पहले की अपेक्षा काफी सुधार हो गया।

(7) **वैधानिक अधिकार-** ब्रिटिश काल में स्त्रियों के प्रति हो रहे कुछ अमानुषिक कार्यों, जैसे-सती प्रथा के प्रति, स्त्रियों की निम्न दशा के लिए उत्तरदायी अनेक प्रथाओं, जैसे-बाल-विवाह निषेध, शिशु कन्या वध आदि को रोकने के लिए अधिनियम भी हैं जो स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद समाज में लागू किये गये। उदाहरण के लिए, हिन्दू विवाह अधिनियम, 1955 के द्वारा बाल-विवाह के समाप्त होने के साथ ही, स्त्रियों को विवाह-विच्छेद और न्यायिक पृथक्करण के अधिकार भी प्राप्त हो गये। 'हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम, 1956' के द्वारा स्त्रियों की सम्पत्ति में सभी प्रकार के अधिकार दिये गये। संविधान में भी स्त्री और पुरुषों में कोई भेद न रखने का उल्लेख किया गया। इन सभी सुविधाओं से स्त्रियों को अपना स्वतन्त्र अस्तित्व बनाने और सभी प्रकार के विकास करने के अनुकूल अवसर प्राप्त हुए।

(8) **यातायात व संचार के साधनों का विस्तार-** यातायात व संचार के साधनों का विकास होने से भी स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन आया। यातायात के साधन सुगम हो जाने से एक स्थान से दूसरे स्थान पर आना-जाना सरल हो गया। सामाजिक सम्पर्क बढ़े। विचारों का आदान-प्रदान होने लगा। संचार के साधनों में विकास के साथ समाचार-पत्र, रेडियो, टेलीविजन, तार, टेलीफोन, मोबाइल, ई-मेल, इण्टरनेट आदि का प्रयोग और पारस्परिक सम्पर्क और सामाजिक जीवन में अधिक गतिशीलता उत्पन्न हुई। सांस्कृतिक आदान-प्रदान बढ़ा। स्त्रियों पर पाश्चात्य देशों के विचारों, ज्ञान-विज्ञान, साहित्य और आदर्शों तथा रहन-सहन के तरीकों का व्यापक प्रभाव पड़ा। इस कारण उनकी स्थिति में सुधार हुआ।

(9) **सह शिक्षा-** सह-शिक्षा के कारण महिला आन्दोलन को प्रोत्साहन मिला। सह-शिक्षा के अन्तर्गत युवक-युवतियों को केवल आधुनिक वैज्ञानिक शिक्षा ही नहीं बल्कि उनको



एक-दूसरे के सम्पर्क में आने और एक-दूसरे के विचारों को समझने में सहायता मिलती है। इससे संकीर्णता का अन्त होता है।

(10) **अन्तर्जातीय विवाह-** अन्तर्जातीय विवाहों ने स्त्रियों में पर्दा-प्रथा को कम किया, पुरुषों के साथ समानता प्रदान की, साहस में वृद्धि की, रूढ़िवादिता समाप्त की, लौकिक दृष्टिकोण से संकीर्णता समाप्त की और उन्हें अधिक स्वतन्त्र बनाया।

**प्रश्न 10 भारत में आपातकाल एवं उसकी आलोचना सम्बन्धी विवेचना कर इसमें जयप्रकाश नारायण की भूमिका बताइए।**

**उत्तर-** 25 जून 1975 से 21 मार्च, 1977 तक की 21 महीनों की अवधि में भारत में आपातकाल (इमर्जेंसी) घोषित थी। तत्कालीन राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद ने तत्कालीन भारतीय प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाँधी के कहने पर भारतीय संविधान के अनुच्छेद 352 के अधीन आपातकाल की घोषणा कर दी। स्वतन्त्र भारत के इतिहास में यह सबसे विवादास्पद और अलोकतान्त्रिक काल था। आपातकाल में चुनाव स्थगित हो गए तथा नागरिक अधिकारों को समाप्त करके मनमानी की गई। इन्दिरा गाँधी के राजनीतिक विरोधियों को कैद कर लिया गया और प्रेस पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। प्रधानमन्त्री के बेटे संजय गाँधी के नेतृत्व में बड़े पैमाने पर पुरुष नसबन्दी अभियान चलाया गया। जयप्रकाश नारायण ने इसे 'भारतीय इतिहास की सर्वाधिक काली अवधि' कहा था।

इन्दिरा गाँधी को उस समय सरकार के पास जनता के बीच उनकी करिश्माई अपील का समर्थन प्राप्त था। इसका एक और कारण सरकार द्वारा लिये गये फैसले भी थे। इनमें जुलाई 1969 में प्रमुख बैंकों का राष्ट्रीयकरण व सितम्बर 1970 में प्रिवीपर्स का उन्मूलन शामिल था। ये फैसले अपने विरोधियों को सार्वभौमिक झटका देने के लिए अध्यादेश के माध्यम से अचानक किये गए थे। इसके बाद सिंडीकेट और अन्य विरोधियों के विपरीत इन्दिरा को गरीब समर्थक, धर्म, अर्थशास्त्र, धर्मनिरपेक्षता व समाजवाद के साथ पूरे देश के विकास के लिए खड़ी एक छवि के रूप में देखा गया। प्रधानमन्त्री को विशेष रूप से वंचित वर्गों, दलितों, महिलाओं और अल्पसंख्यकों द्वारा बहुत समर्थन मिला। 1971 के आमचुनाव में 'गरीबी हटाओ' का इन्दिरा का लोकलुभावन नारा लोगों को इतना पसन्द आया कि पुरस्कार स्वरूप उन्हें एक विशाल बहुमत (518 में से 352 सीटें) से जिता दिया।

दिसम्बर 1971 में इनके सक्रिय युद्ध नेतृत्व में भारत ने पूर्व में पूर्वी पाकिस्तान (बांग्लादेश) को अपने कट्टर दुश्मन देश पाकिस्तान से स्वतन्त्रता दिलवाई। परन्तु 1975 की तपती गर्मी के दौरान अचानक भारतीय राजनीति में भी बेचैनी दिखी। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के उस फैसले से जिसमें इन्दिरा गाँधी को चुनाव में धाँधली करने का दोषी पाया गया और उन पर 6 वर्षों तक कोई भी पद सम्भालने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था लेकिन इन्दिरा गाँधी ने इस फैसले को मानने से इन्कार करते हुए सर्वोच्च न्यायालय में अपील करने की घोषणा की और 26 जून को आपातकाल लागू करने की घोषणा कर दी गई। आपातकाल लागू होते ही आन्तरिक सुरक्षा कानून (मीसा) के तहत राजनीतिक विरोधियों की गिरफ्तारी की गई जिनमें जयप्रकाश नारायण, जॉर्ज फर्नांडिस और अटल बिहारी वाजपेयी आदि भी शामिल थे।

**पृष्ठभूमि-** इलाहाबाद हाई कोर्ट में उत्तर प्रदेश बनाम राजनारायण सम्बन्धी मामले सन् 1971 में हुए लोकसभा चुनाव का था जिसमें इन्दिरा ने अपने मुख्य प्रतिद्वन्द्वी राजनारायण को पराजित किया था लेकिन चुनाव परिणाम आने के चार साल बाद राजनारायण ने हाईकोर्ट इलाहाबाद में चुनाव परिणाम को चुनौती दी। उनकी दलील थी कि इन्दिरा गाँधी ने चुनाव में

सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग किया, तय सीमा से अधिक राशि खर्च की और मतदाताओं को प्रभावित करने के लिए गलत तरीकों का इस्तेमाल किया गया। इस न्यायालयीन प्रकरण में इन्दिरा गाँधी दोषी पायी गई थीं और उन्हें फैसले में 6 वर्ष के लिए निर्वाचन न लड़ने तथा कोई भी पद संभालने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। फैसला जस्टिस जगमोहनलाल सिन्हा ने दिया था। 24 जून, 1975 को सुप्रीम कोर्ट ने आदेश बरकरार रखा लेकिन इन्दिरा गाँधी को प्रधानमन्त्री की कुर्सी पर बने रहने की इजाजत दे दी। 25 जून, 1975 को जयप्रकाश नारायण ने इन्दिरा गाँधी को इस्तीफा देने तक देश भर में रोज प्रदर्शन का आह्वान किया और 25 जून को ही देश में आपातकाल लागू कर दिया गया। इन्दिरा गाँधी ने 18 जनवरी 1977 को लोकसभा भंग करते हुए घोषणा की कि मार्च में लोकसभा के लिए आमचुनाव होंगे। सभी राजनीतिक बन्दियों को रिहा कर दिया गया। 23 मार्च को आपातकाल समाप्त हुआ।

16 से 20 मार्च को 6वें लोकसभा के चुनाव सम्पन्न हुए जिसमें जनता पार्टी भारी बहुमत से सत्ता में आई। संसद में कांग्रेस के सदस्यों की संख्या 350 से घटकर 153 पर सिमट गई। स्वयं इन्दिरा गाँधी और संजय गाँधी चुनाव हार गए। मोरारजी देसाई प्रधानमन्त्री बने। कांग्रेस को उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब, हरियाणा और दिल्ली में एक भी सीट नहीं मिली। नई सरकार ने आपातकाल के दौरान लिए गए निर्णयों की जाँच के लिए शाह आयोग का गठन किया।

**जयप्रकाश नारायण की भूमिका-** जयप्रकाश नारायण (1902 से 1979) : जयप्रकाश नारायण (संक्षेप में J.P.) ने इन्दिरा गाँधी के न चाहते हुए भी इस्तीफा देने तक देशभर में रोज प्रदर्शन करने का आह्वान किया था। यह आह्वान 25 जून, 1975 को किया गया और इसी दिन राष्ट्रपति के अध्यादेश पारित करने के बाद सरकार ने देश में आपातकाल लागू कर दिया। स्वतन्त्र भारत के इतिहास में यह सबसे विवादास्पद और अलोकतान्त्रिक काल था। आपातकाल लगने से चुनाव स्थगित हो गए और इन्दिरा गाँधी के विरोधियों को कैद कर लिया गया। मीसा कानून के तहत जयप्रकाश नारायण भी गिरफ्तार कर लिये गये।

जयप्रकाश नारायण भारतीय स्वतन्त्रता सेनानी और राजनेता थे। इन्हें 1970 में इन्दिरा गाँधी के विरुद्ध विपक्ष का नेतृत्व करने के लिए जाना जाता है। इन्दिरा गाँधी को पदच्युत करने के लिए उन्होंने 'सम्पूर्ण क्रान्ति' नामक जन आन्दोलन चलाया। वे समाज सेवक थे जिन्हें 'लोकनायक' के नाम से भी जाना जाता है। 1998 में उन्हें मरणोपरान्त भारतरत्न से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त उन्हें समाजसेवा के लिए 1965 में मैगससे पुरस्कार प्रदान किया गया था। पटना के हवाई अड्डे का नाम उनके नाम पर रखा गया। दिल्ली सरकार का सबसे बड़ा अस्पताल भी उनके नाम पर है।

पटना में अपने विद्यार्थी जीवन में जे.पी. ने स्वतन्त्रता संग्राम में हिस्सा लिया। वे मार्क्सवाद के समाजवाद से प्रभावित थे।

जयप्रकाश का जन्म उत्तरप्रदेश के सिताब दियारा में 11 अक्टूबर, 1902 में एक कायस्थ परिवार में हुआ। 1929 में जब वे अमेरिका से लौटे तब भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम तेजी पर था। उन्होंने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का नेतृत्व किया। 1932 में महत्त्वपूर्ण कांग्रेस नेताओं के जेल जाने के बाद उन्होंने भारत के अलग-अलग हिस्सों में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का नेतृत्व किया। उन्होंने कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी (C.S.P.) को जन्म दिया। जब कांग्रेस ने 1934 में चुनाव में हिस्सा लेने का फैसला किया तो J.P. और C.S.P. ने इसका विरोध किया। 1948



में उन्होंने कांग्रेस के समाजवादी दल के साथ मिलकर समाजवादी सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना की। 1954 में गया बिहार में उन्होंने विनोबा भावे के सर्वोदय आन्दोलन के लिए जीवन समर्पित करने की घोषणा की।

J.P. इन्दिरा गाँधी की प्रशासनिक नीतियों के विरुद्ध थे। 1975 में जब इन्दिरा गाँधी ने आपातकाल लागू किया तब J.P. 600 से अधिक विरोधी नेताओं के साथ बन्दी बना लिये गये। अस्वस्थ होने के कारण 7 माह बाद उनको मुक्त कर दिया गया। सन् 1977 में जे.पी. के प्रयासों से एकजुट विरोध पक्ष ने इन्दिरा गाँधी को चुनाव में पराजित कर दिया।

जयप्रकाश नारायण का निधन उनके निवास स्थान पटना में 8 अक्टूबर, 1979 को हृदय की बीमारी और मधुमेह के कारण हुआ। उनके सम्मान में तत्कालीन प्रधानमन्त्री चौधरी चरणसिंह ने 7 दिनों के राष्ट्रीय शोक की घोषणा की। जे.पी. की शोक यात्रा में कई हजार लोग शामिल हुए।

आपातकाल में सम्पूर्ण क्रान्ति के उद्घोष के कारण उनका योगदान अविस्मरणीय है। 5 जून, 1975 को उन्होंने घोषणा की-"भ्रष्टाचार मिटाना, बेरोजगारी दूर करना, शिक्षा में क्रान्ति लाना आदि ऐसी चीजें हैं जो आज की व्यवस्था से पूरी नहीं हो सकतीं, क्योंकि वे इस व्यवस्था की ही उपज हैं। वे तभी पूरी हो सकती हैं जब सम्पूर्ण व्यवस्था बदल दी जाए। इस सम्पूर्ण व्यवस्था में परिवर्तन के लिए सम्पूर्ण क्रान्ति आवश्यक है।"

J.P. के सम्पूर्ण क्रान्ति के आह्वान पर उन्होंने आगामी चुनाव में श्रीमती इन्दिरा गाँधी की सत्ता को उखाड़ फेंका। सम्पूर्ण क्रान्ति की तपिश इतनी भयानक थी कि केन्द्र में कांग्रेस को सत्ता से हाथ धोना पड़ गया। जयप्रकाश नारायण घर-घर में क्रान्ति के पर्याय बन गए। लालूप्रसाद यादव, नीतिश कुमार, रामविलास पासवान, सुशील मोदी आदि आज के नेता उनकी छात्र युवा संघर्ष वाहिनी का हिस्सा थे।

जयप्रकाश नारायण ने अनेक पुस्तकों की रचना की। उनकी प्रमुख रचनाओं के शीर्षक हैं-समाजवाद, सर्वोदय और लोकतन्त्र, भारतीय राजव्यवस्था की पुनः रचना, मेरी जीवन यात्रा आदि। J.P. राष्ट्रवाद के समर्थक थे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद वे भारत की एकता के लिए भारतीय राष्ट्रवाद की अवधारणा का समर्थन करते थे। जयप्रकाश नारायण के अनुसार भारत में विविधताओं के बीच एकता की स्थिति है और भारत जैसे देश में धर्मनिरपेक्षतावाद ही राष्ट्रवाद का आधार हो सकता है। वे हिन्दू राष्ट्रवाद की अवधारणा के आलोचक थे।

**प्रश्न 11 राममनोहर लोहिया : व्यक्ति और कार्य पर आलेख लिखिए।**

**उत्तर-** डॉ. राममनोहर लोहिया का जन्म 23 मार्च, 1910 को उत्तरप्रदेश के अयोध्या जनपद नामक स्थान में हुआ था। उनके पिता श्री हीरालाल पेशे से अध्यापक और हृदय से सच्चे राष्ट्रभक्त थे। जब राममनोहर ढाई वर्ष की आयु के थे तब उनकी माताजी चन्दा देवी का देहान्त हो गया। उन्हें दादी के अलावा सरयू देवी (परिवार की नाइन) ने पाला। टंडन पाठशाला में चौथी तक पढ़ाई करने के बाद वे विश्वेश्वरनाथ हाईस्कूल में दाखिल हुए।

राममनोहर लोहिया के पिताजी गाँधीजी के अनुयायी थे। जब वे गाँधीजी से मिलने जाते तो राममनोहर को भी अपने साथ ले जाया करते थे। इसके कारण गाँधीजी के विराट व्यक्तित्व का राममनोहर पर गहरा असर हुआ। पिताजी के साथ 1918 में वे अहमदाबाद कांग्रेस अधिवेशन में पहली बार शामिल हुए।

बम्बई के मारवाड़ी स्कूल में राममनोहर ने पढ़ाई की। लोकमान्य गंगाधर तिलक की मृत्यु के दिन विद्यालय के लड़कों के साथ 1920 में पहली अगस्त को हड़ताल की। गाँधीजी की पुकार पर 10 वर्ष की आयु में स्कूल त्याग दिया। पिताजी को विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के आन्दोलन के चलते सजा हुई। 1921 में फैजाबाद किसान आन्दोलन के दौरान उनकी जवाहरलाल नेहरू से मुलाकात हुई। 1924 में प्रतिनिधि के रूप में कांग्रेस के गया अधिवेशन में शामिल हुए। 1925 में मैट्रिक की परीक्षा दी। कक्षा में 61 प्रतिशत नम्बर लाकर प्रथम आए। इन्टर की दो वर्ष की पढ़ाई बनारस के काशी विश्वविद्यालय में हुई। कॉलेज के दिनों से ही उन्होंने खद्दर पहनना शुरू कर दिया। 1926 में पिताजी के साथ गौहाटी कांग्रेस अधिवेशन में गए। 1927 में इंटर पास किया तथा आगे की पढ़ाई के लिए कलकत्ता जाकर ताराचन्द दत्त स्ट्रीट पर स्थित पोद्दार होस्टल में रहने लगे। विद्यासागर कॉलेज में दाखिला लिया। अखिल बंग विद्यार्थी परिषद के सम्मेलन में सुभाषचन्द्र बोस के न पहुँचने पर उन्होंने सम्मेलन की अध्यक्षता की। 1928 में कलकत्ता में कांग्रेस अधिवेशन में शामिल हुए। 1928 से अखिल भारतीय विद्यार्थी संगठन में सक्रिय हुए। साइमन कमीशन के बहिष्कार के लिए छात्रों के साथ आन्दोलन किया। कलकत्ता में युवकों के सम्मेलन में जवाहरलाल नेहरू तथा सुभाषचन्द्र बोस और लोहिया विषय निर्वाचन समिति के सदस्य चुने गए। 1930 में द्वितीय श्रेणी में B.A. की परीक्षा पास की।

**यूरोप प्रवास-** 1930 जुलाई में लोहिया अग्रवाल समाज के कोष से पढ़ाई के लिए इंग्लैण्ड रवाना हुए। वहाँ से वे बर्लिन गए। विश्वविद्यालय के नियम के अनुसार उन्होंने प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रो. बर्नर जेम्बार्ट को अपना अध्यापक चुना। 3 महीने में जर्मन भाषा सीखी। 22 मार्च, 1930 को गाँधीजी ने दांडी यात्रा आरम्भ की। जब नमक कानून तोड़ा गया तब पुलिस अत्याचार से पीड़ित होकर पिता हीरालालजी ने लोहिया को विस्तृत पत्र लिखा। 23 मार्च, 1930 को लाहौर में भगतसिंह को फाँसी दिये जाने के विरोध में लीग ऑफ नेशंस की बैठक में बर्लिन पहुँचकर सीटी बजाकर दर्शक दीर्घा से विरोध प्रकट किया। भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे बीकानेर के महाराजा द्वारा प्रतिनिधित्व किये जाने पर लोहिया ने रूमानिया की प्रतिनिधि को खुली चिट्ठी लिखकर उसे अखबारों में छपवाकर उसकी कॉपी बैठक में बँटवाई। गाँधी-इर्विन समझौते का लोहिया ने प्रवासी भारतीय विद्यार्थियों की संस्था 'मध्य यूरोप हिन्दोतानी संघ' की बैठक में संस्था के मन्त्री के तौर पर समर्थन किया। कम्युनिस्टों ने विरोध किया। बर्लिन के स्पोर्टस पैलेस में हिटलर का भाषण सुना। 1932 में लोहिया ने नमक सत्याग्रह विषय पर अपना शोध प्रबन्ध पूरा करके बर्लिन विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की।

**स्वदेश आगमन एवं स्वतन्त्रता संग्राम-** 1933 में लोहिया मद्रास पहुँचे। रास्ते में सामान जब्त कर लिया गया। तब समुद्री जहाज से उतरकर हिन्दू अखबार के दफ्तर पहुँचकर दो लेख लिखकर 25 रुपये प्राप्त कर कलकत्ता गए। कलकत्ता से बनारस जाकर मालवीयजी से मुलाकात की। उन्होंने रामेश्वर दास बिड़ला से मुलाकात कराई जिन्होंने निजी सचिव बनने का प्रस्ताव दिया। लेकिन दो हफ्ते साथ रहने के बाद लोहिया ने निजी सचिव बनने से इन्कार कर दिया। तब पिताजी के मित्र सेठ-जमुनालाल बजाज लोहिया को गाँधीजी के पास ले गए तथा उनसे कहा कि ये लड़का राजनीति करना चाहता है। कुछ दिन जमुनालाल बजाज के साथ रहने के बाद शादी का प्रस्ताव मिलने पर शहर छोड़कर वापस कलकत्ता चले गए। विश्व राजनीति के आगामी 10 वर्ष विषय पर ढाका विश्वविद्यालय में व्याख्यान देकर कलकत्ता आने-जाने की राशि जुटाई। पटना में 17 मई 1934 को आचार्य नरेन्द्र देव की अध्यक्षता में देश के समाजवादी अंजुमन-ए-इस्लामिया हॉल में इकट्ठे हुए जहाँ समाजवादी पार्टी की स्थापना का निर्णय लिया





गया। यहाँ लोहिया ने पूर्ण स्वराज्य का लक्ष्य जोड़ने का संशोधन पेश किया, जिसे अस्वीकार कर दिया गया। 21-22 अक्टूबर, 1934 को बम्बई के वर्ली स्थित रेडिमनी टैरेस में 150 समाजवादियों ने इकट्ठे होकर कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना की। लोहिया राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य चुने गए। कांग्रेस सोशलिस्ट साप्ताहिक मुखपत्र के संपादक बनाए गए।

गाँधीजी के विरोध में जाकर उन्होंने काउंसिल प्रवेश का विरोध किया। गाँधीजी ने लोहिया के लेख पर दो पत्र लिखे। 1936 में मेरठ अधिवेशन में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी ने कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों के लिए पार्टी का दरवाजा खोल दिया। लोहिया बार-बार कम्युनिस्टों के प्रति सचेत रहने की चेतावनी जयप्रकाश नारायण जी एवं अन्य नेताओं को देते रहे। 1935 में जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में लखनऊ में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ जहाँ लोहिया को परराष्ट्र विभाग का मंत्री नियुक्त किया गया, जिसके चलते उन्हें इलाहाबाद आना पड़ा। 1938 में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी में लोहिया राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य चुने गए। उन्होंने कांग्रेस के परराष्ट्र विभाग के मन्त्री पद से इस्तीफा दे दिया। 1940 में रामगढ़ कांग्रेस में कम्युनिस्टों को पार्टी से निकालने का निर्णय लिया गया। 1939 में त्रिपुरी कांग्रेस में सुभाषचन्द्र बोस को समाजवादियों ने समर्थन दिया। डॉ. लोहिया तटस्थ बने रहे। लोहिया ने गाँधी जी द्वारा यह कहे जाने पर कि बोस का चुनाव मेरी शिकस्त है पर प्रस्ताव पेश करते हुए कहा कि यह प्रस्ताव गाँधीजी से सम्मानपूर्वक आह्वान करता है कि उनकी शिकस्त नहीं हुई है। गाँधीजी की इच्छानुसार सुभाषचन्द्र बोस कार्यकारिणी बनाने को तैयार नहीं हुए तथा नेहरू सहित अन्य कांग्रेस के नेताओं ने बोस के साथ कार्यसमिति में रहने से इन्कार कर दिया तब बोस ने कांग्रेस के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दिया तथा कांग्रेस से नाता तोड़ लिया।

लोहिया ने महायुद्ध के समय युद्ध भर्ती का विरोध, देशी रियासतों में आन्दोलन, ब्रिटिश माल जहाजों से उतारने व लादने वाले मजदूरों का संगठन तथा युद्ध कर्ज को मंजूर व अदा न करने जैसे चार सूत्रीय मुद्दों को लेकर युद्ध विरोधी प्रचार शुरू कर दिया। 1939 के मई महीने में दक्षिण कलकत्ता की कांग्रेस कमेटी में युद्ध विरोधी भाषण करने पर उन्हें 24 मई को गिरफ्तार किया गया। कलकत्ता के चीफ प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट के सामने लोहिया ने स्वयं अपने मुकदमे की पैरवी व बहस की। 14 अगस्त को उन्हें रिहा कर दिया गया। 9 अक्टूबर 1939 को कांग्रेस समिति की बैठक वर्धा में हुई जिसमें लोहिया ने समझौते का विरोध किया।

**भारत छोड़ो आन्दोलन-** 9 अगस्त, 1942 को जब गाँधीजी व अन्य कांग्रेस नेता गिरफ्तार कर लिये गए, तब लोहिया ने भूमिगत रहकर 'भारत छोड़ो आन्दोलन' को पूरे देश में फैलाया। अनेक भारतीय नेताओं का केन्द्रीय संचालक मण्डल बनाया गया। लोहिया पर नीति निर्धारण का विचार देने का कार्यभार सौंपा गया। लोहिया ने भूमिगत रहते हुए जंग आगे बढ़ो, क्रान्ति की तैयारी करो, आजाद राज कैसे बने जैसी पुस्तिकाएं लिखीं। 20 मई, 1944 को लोहिया को बम्बई में गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तारी के बाद लाहौर किले की एक अंधेरी कोठरी में रखा गया जहाँ 14 वर्ष पहले भगतसिंह को फाँसी दी गई थी। पुलिस द्वारा लगातार उन्हें यातनाएं दी गई, 15-15 दिन तक उन्हें सोने नहीं दिया जाता था। किसी से मिलने नहीं दिया गया। 4 महीने तक ब्रश या पेस्ट तक भी नहीं दिया गया। हर समय हथकड़ी बाँधे रखी जाती थी। लाहौर के प्रसिद्ध वकील जीवनलाल कपूर द्वारा हैबियस कारपस की दरख्वास्त लगाने पर उन्हें तथा जयप्रकाश नारायण को स्टेट प्रिजनर घोषित किया गया। मुकदमे के चलते सरकार को लोहिया को लिखने-पढ़ने की सुविधा देनी पड़ी। पहला पत्र लोहिया ने ब्रिटिश लेबर पार्टी के अध्यक्ष प्रो. हैराल्ड जेलास्की को लिखा जिसमें पूरी स्थिति का विस्तृत ब्यौरा दिया। 1945

में लोहिया को लाहौर से आगरा जेल भेज दिया गया। द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त होने पर गाँधीजी तथा कांग्रेस नेताओं को छोड़ दिया गया। केवल लोहिया व जयप्रकाश नारायण ही जेल में थे। इसी बीच अंग्रेजों की सरकार और कांग्रेस के बीच समझौते की बातचीत शुरू हो गई। इंग्लैण्ड में लेबर पार्टी की सरकार बन गई। लोहिया के पिता हीरालाल जी की मृत्यु हो गई किन्तु लोहिया जी ने सरकार की कृपा पर पैरोल पर छूटने से इन्कार कर दिया।

**गोवा मुक्ति आन्दोलन-** 11 अप्रैल, 1946 को लोहिया को आगरा जेल से रिहा कर दिया गया। 15 जून को लोहिया ने गोवा के पंजिम में गोवा मुक्ति आन्दोलन की पहली सभा की। लोहिया को 18 जून को गोवा मुक्ति आन्दोलन की शुरुआत के दिन ही गिरफ्तार कर लिया गया। 14 अगस्त 1946 को 'हरिजन' में गाँधीजी ने लिखा कि लोहिया को बधाई दी जानी चाहिए। 30 दिसम्बर, 1946 को नवाखली में हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच अविश्वास को दूर करने में गाँधीजी के साथ विस्तृत कार्यक्रम तैयार किया। पूरे साल नवाखली, कलकत्ता, बिहार, दिल्ली सभी जगह लोहिया-गाँधी के साथ मिलकर सांप्रदायिकता की आग को बुझाने की कोशिश करते रहे। 9 अगस्त, 1947 से लगातार हिंसा रोकने का प्रयास चलता रहा। 14 अगस्त की रात को 'हिन्दू मुस्लिम भाई-भाई' के नारों के साथ लोहिया जी ने सभा की। 31 अगस्त को वातावरण फिर बिगड़ गया। गाँधीजी अनशन पर बैठ गए तब लोहिया ने दंगाइयों से हथियार इकट्ठे कराए। लोहिया के प्रयास से शान्ति समिति की स्थापना हुई और 4 सितम्बर को गाँधीजी ने अनशन तोड़ा। 29 सितम्बर को बेलगाँव में लोहिया को फिर गिरफ्तार कर लिया गया। 26, 27, 28 फरवरी 1947 को सोशलिस्ट पार्टी की कार्यकारिणी की बैठक में तटस्थ रहने का निर्णय लिया गया।

**स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात्** - जनवरी 1947 में लोहिया ने नेपाली राष्ट्रीय कांग्रेस को स्थापित करने तथा राणाशाही के विरुद्ध सत्याग्रह प्रारम्भ करने की पहल की। 25 जनवरी, 1948 को बम्बई हड़ताल को लेकर लोहिया जी ने गाँधीजी से समर्थन माँगा। 28 जनवरी को गाँधीजी ने कहा कि कल आना पेट भर बातें होंगी। 30 जनवरी को लोहिया जब बिड़ला भवन के लिए निकले तब उन्हें गाँधीजी की हत्या की खबर सुनने को मिली।

मार्च 1948 में नासिक सम्मेलन में सोशलिस्ट दल ने कांग्रेस से अलग होने का निश्चय किया। लोहिया जी की प्रेरणा से रियासतों की समाप्ति का आन्दोलन 650 रियासतों में समाजवादी चला रहे थे। 2 जनवरी, 1948 को रीवा में 'हमें चुनाव चाहिए, विभाजन रद्द करो' के नारे के साथ आन्दोलन किया गया जिसमें पुलिस ने गोली चलाई व 4 आन्दोलनकारी शहीद हुए। 1949 को सोशलिस्ट पार्टी द्वारा लोहिया के नेतृत्व में नेपाली कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष विश्वेश्वर प्रसाद कोइराला के आमरण अनशन तथा नेपाल में राणाशाही के अत्याचार के खिलाफ सभा की। नेपाली दूतावास की ओर जब जुलूस बढ़ा तब लाठीचार्ज किया गया। लोहिया को गिरफ्तार किया गया। 20 जून को देश भर में लोहिया दिवस मनाया गया। मुकदमे में दो महीने की कैद हुई। 3 जुलाई को उन्हें रिहा किया गया।

1951 में लोहिया को 3 जुलाई को समाजवादियों के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में बुलाया गया। सम्मेलन में जर्मनी, यूगोस्लाविया, अमेरिका, हवाई, जापान, हांगकांग, थाईलैण्ड, सिंगापुर, मलाया, इंडोनेशिया तथा लंका भी गए। लोहिया विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइंस्टीन से प्रिन्स्टन में मिले। आइंस्टीन ने कहा कि किसी मनुष्य से मिलना कितना अच्छा होता है, आदमी कितना अकेला पड़ जाता है। लोहिया ने अमेरिका में सैकड़ों स्थानों पर भाषण दिये। उस समय उन्होंने



एशिया की समस्त सोशलिस्ट पार्टियों का संगठन निर्मित करने का विचार बनाया। 25 मार्च से 29 मार्च 1952 में एशियाई सोशलिस्ट कांफ्रेंस हुई लेकिन लोहिया शामिल नहीं हो सके। जयप्रकाश नारायण भारतीय प्रतिनिधिमण्डल के नेता बनकर रंगून गए।

**अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन-** लोहिया जानते थे कि विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका में अंग्रेजी का प्रयोग आम जनता की प्रजातन्त्र में शत प्रतिशत भागीदारी के रास्ते में रोड़ा है। उन्होंने इसे सामंती भाषा बताते हुए इसके प्रयोग के खतरों से बारम्बार आगाह किया और बताया कि यह मजदूरों, किसानों और शारीरिक श्रम से जुड़े आम लोगों की भाषा नहीं है। दुख है कि लोहिया के अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन (1957) को हिन्दी भाषा थोपने के तौर पर लिया गया, जबकि लोहिया ने क्षेत्रीय भाषाओं की उन्नति और उनके प्रयोग की खुलकर वकालत की। उनके अनुसार अंग्रेजी हटाओ का अर्थ 'मातृभाषा लाओ' था।

**देहावसान-** 30 सितम्बर 1967 को लोहिया को नई दिल्ली के विलिंग्टन अस्पताल (जिसे अब लोहिया अस्पताल कहा जाता है) को पौरुष ग्रन्थि के ऑपरेशन के लिए भर्ती किया गया जहाँ 12 अक्टूबर, 1967 को उनका देहान्त 57 वर्ष की आयु में हो गया।

लोहिया गैर कांग्रेसवाद के शिल्पी, प्रखर लेखक, विचारक, चिंतक, समाजवादी विचारधारा के मौलिक व ठेठ चिंतक थे। वे राजनीतिक शुचिता के पक्षधर थे। उनकी कुछ रचनाएं ये हैं-

1. *अंग्रेजी हटाओ*
2. *इतिहास चक्र*
3. *देश, विदेश नीति-कुछ पहलू*
4. *धर्म पर एक दृष्टि*
5. *भारत विभाजन के गुनाहगार*
6. *मार्क्सवाद और समाजवाद*
7. *समाजवादी चिंतन*
8. *जाति प्रथा*
9. *मार्क्स गाँधी और समाजवाद तथा*
10. *अन्य*

## इकाई-पाँच

**प्रश्न 1 विदेश नीति से क्या आशय है ? विदेश नीति को प्रभावित करने वाले तत्त्वों का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर-** आज विश्व के राज्य एक दूसरे से भौगोलिक दूरी पर स्थित होते हुए भी वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के कारण सिकुड़ कर पास आ गये हैं। विश्व के किसी भी कोने में घटने वाली घटना दूसरे राष्ट्रों पर अवश्य ही किसी न किसी तरह से प्रभाव डालती है। हम यह भी जानते हैं कि व्यापारिक, राजनीतिक, सैनिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक तकरीबन हर दृष्टिकोण से विश्व के राष्ट्र चाहे छोटे हों या बहुत बड़े, किसी न किसी तरह एक दूसरे पर आश्रित हैं। यही कारण है कि आज विश्व राजनीति में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के विकास तथा निर्माण को यथेष्ठ महत्व मिलता जा रहा है। अपने विदेश संबंधों को अपनी इच्छानुसार परिचालित

करने के लिए एक श्रेष्ठ विदेश नीति की बहुत आवश्यकता होती है। अब यदि देखा जाये तो विदेश नीति ही वह कला है जो अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का शुद्ध आधार प्रस्तुत करती है। एक राष्ट्र द्वारा अपनायी जाने वाली विदेश नीति से ही यह अनुमान लगाया जाता है कि उस राष्ट्र के क्या-क्या राष्ट्रीय हित हैं और वह किस प्रकार उन्हें सुरक्षित रखना व विकसित करना चाहता है। यहां यह बात हमेशा ध्यान रखनी चाहिए कि विदेश नीति में गतिशीलता का बहुत महत्व है। साधारण शब्दों में यदि विदेश नीति को समझा जाये तो यह स्पष्ट होता है कि वह नीति है या दृष्टिकोण है, जिसके द्वारा कोई राष्ट्र, विश्व के अन्य राष्ट्रों के साथ व्यवहार करता है, जिसमें संबंधों का निर्माण या उनसे दूरी अथवा अनुकूलता या प्रतिकूलता बनायी जाती है। परंतु विदेश नीति को स्पष्ट रूप से समझने के लिए उसकी परिभाषाओं पर दृष्टि डालना आवश्यक है।

## विदेश नीति की परिभाषा

इस संदर्भ में प्रमुख विद्वानों की परिभाषाओं का वर्णन और विश्लेषण देखना चाहिए, अतः प्रस्तुत है कुछ विद्वानों की परिभाषाएं-

1. **जॉर्ज मोडलेस्की-** *"विदेश नीति एक राज्य की गतिविधियों का सुव्यवस्थित व विकासशील रूप है, जिसके द्वारा एक राज्य अन्य राज्यों के व्यवहार को अपने अनुकूल बनाने अथवा यदि ऐसा न हो पाये तो अंतर्राष्ट्रीय वातावरण के अनुसार-बदलने का प्रयास करता है।"*

यदि मॉडलेस्की की परिभाषा की विवेचना की जाये तो निम्नांकित तथ्य सामने आते हैं-

1. *अपनी इच्छानुसार दूसरे राज्यों की गतिविधियों पर नियंत्रण।*
2. *अपनी गतिविधियों का व्यवस्थित रूप में विकास।*
3. *आवश्यकतानुसार अपनी गतिविधियों में परिवर्तनों या इन पर भी नियंत्रण रखना।*
4. *अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का विकास।*

2. **एंडरसन व क्रिस्टल के अनुसार-** *विदेशनीति, नीति के सामान्य सिद्धांतों का निर्धारण एवं क्रियान्वयन करती है जिसके द्वारा किसी राज्य के आचरण को प्रभावित करके अपने महत्वपूर्ण हितों की सुरक्षा एवं पुष्टिकरण करता है।*

इस परिभाषा का विश्लेषण हमें निम्नांकित तथ्य प्रस्तुत करता है-

1. *नीति के निर्धारण व क्रियान्वयन।*
2. *दूसरे राज्यों के आचरणों को अपने हितों के अनुसार प्रभावित करना।*
3. *अपने हितों की सुरक्षा तथा उनका विकास।*

## विदेश नीति को प्रभावित करने वाले तत्व

किसी देश की विदेश नीति को प्रभावित करने के लिए कुछ तत्व उत्तरदायी होते हैं। इन्हीं तत्वों के आधार पर विदेश नीति का निर्माण किया जाता है-

1. **राष्ट्रीय स्वार्थ (हित)** - राष्ट्र के हित या स्वार्थ सबसे महत्वपूर्ण होते हैं। प्रत्येक देश अपने देश को शक्तिशाली बनाने के लिए प्रयास करता है कि उसके राष्ट्रीय स्वार्थ सुरक्षित रह पायें। ये हित हमेशा एक से नहीं रहते हैं। समय-समय पर आवश्यकतानुसार परिवर्तित होते हैं। यही कारण है कि राज्यों की विदेश नीति में परिवर्तनशीलता या लचक अथवा आप कह



सकते हैं कि गतिशीलता रहती है। विदेश नीति एक ऐसी कुशल कला है जो इस प्रकार गढ़ी जाती है कि राष्ट्रीय हित या स्वार्थ पूरे किये जा सकें।

2. **राष्ट्र की प्रतिष्ठा और आदर्श-** विदेश नीति का निर्माण करते समय हमेशा अपने राष्ट्र की प्रतिष्ठा तथा आदर्शों को सामने रखना होता है। एक शांतिप्रिय तथा नैतिकता से पूर्ण मनोवृत्ति वाला राज्य अपनी शक्ति का प्रयोग यकायक नहीं करता है। वह अपने संघर्ष शांतिपूर्ण तरीकों से ही हल करने में रुचि लेता है और उन सभी राष्ट्रों के साथ सहयोग करता है, जो विश्व शांति में अपनी रुचि रखते हैं। इसके विपरीत जो राष्ट्र आतंकवादी हैं, युद्धप्रिय हैं वे अपनी विदेश नीति में उग्रता रखते हैं और युद्धों को अपना साधन मानकर दूसरे राष्ट्रों पर हावी होकर उन्हें प्रभावित करते हैं।

3. **सांस्कृतिक विकास-** हर देश में उसकी कुछ अपनी परंपराएं होती हैं और वह उन्हीं सामाजिक आदर्शों तथा मूल्यों को ध्यान में रखकर विदेशनीति का निर्माण करते हैं।

4. **जनता की रुचि-** किसी भी देश की सरकार अपनी जनता की रुचि के विरुद्ध विदेश नीति नहीं अपना सकती है, यदि वह ऐसा करती है तो उसे अपने घर के अंदर ही विरोध सहना होता है और कभी-कभी उसे अपनी विदेश नीति में सफलता भी मिलती है। विशेषकर प्रजातांत्रिक राष्ट्रों में जनता बहुत महत्वपूर्ण होती है। अमेरिका की सरकार को निक्सन के काल में और राष्ट्रपति रीगन के वर्तमान समय में अपनी कुछ नीतियों को न केवल बदलना पड़ा बल्कि कुछ पहले से उठाये गये कदमों को भी पीछे खींचना पड़ा है क्योंकि जनता उन नीतियों के विरुद्ध थी।

5. **भौगोलिक स्थिति-** यह दो तरह से प्रभावित करती है-(i) स्थिति, (ii) देश के अंदर संसाधन तथा उसका उपयोग। यदि कोई राष्ट्र बहुत महत्वपूर्ण राजनैतिक स्थिति में है तो अपनी विदेश नीति में उसे बहुत सतर्कता रखनी होती है। देश के अंदर मौजूद संसाधनों का किस प्रकार विश्व बाजार में उपयोग दे सकता है अथवा किस प्रकार उसका राजनीतिक उपयोग हो सकता है आदि को ध्यान में रखकर विदेश नीति बनायी जाती है।

## विदेश नीति के निर्धारक तत्व

यद्यपि विदेश नीति के निर्धारक तत्वों एवं ऊपर बताये गये विदेश नीति को प्रभावित करने वाले तत्वों में बहुत अंतर नहीं हैं, फिर भी प्रभावित करने वाले तत्व, नीति के निर्धारक तत्वों को इंगित करते हैं। विदेश नीति के निर्धारक तत्व दो प्रमुख रूप से हमारे सामने आते हैं-

1. *आधारभूत निर्धारक तत्व*
2. *विशिष्ट निर्धारक तत्व*

आधारभूत तत्वों में सर्वप्रथम आत्मरक्षा का तत्व सामने आता है, क्योंकि यदि राष्ट्र की अखंडता तथा प्रभुसत्ता बनाये रखनी है तो उसे बाह्य आक्रमणों से सुरक्षित रखना जरूरी है।

दूसरा तत्व है- राष्ट्रीय सुरक्षा का। 'राष्ट्रीय सुरक्षा' एक व्यापक शब्द है इसमें न केवल बाह्य शक्तियों से सुरक्षा का प्रश्न आता है बल्कि इसमें आंतरिक सुरक्षा (व्यवस्था) जिसमें शांति व उत्पादन सम्मिलित है, भी आता है।

इसके अलावा आधारभूत तत्व हैं-राष्ट्र की राजनीतिक शक्ति और आर्थिक शक्ति या हित जिनका संवर्धन किया जाता है।

संक्षेप में कह सकते हैं इसमें राष्ट्रीय सुरक्षा व राष्ट्रीय अखंडता, राष्ट्रीय हितों का विकास तथा संवर्धन आता है।

विशिष्ट तत्वों में राष्ट्रीय जनमत जिसका वर्णन प्रभावित करने वाले तत्वों में भी किया जा चुका है आता है। इसके अतिरिक्त मनोवैज्ञानिक तत्व भी सम्मिलित किये जाते हैं। इन्हीं विशिष्ट तत्वों उन व्यक्तियों के व्यक्तित्व व विचारधारा का भी महत्व है जो विदेश नीति बनाते हैं।

विदेश नीति का निर्धारण करते समय विश्व संगठन की भूमिका तथा महत्व को भी नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है। कभी-कभी विश्व जनमत एक प्रबल निर्धारक तत्व के रूप में सामने उपस्थित हो जाता है। इस संदर्भ में 1956 की घटना, जिसके संबंध में मिस्र और ब्रिटेन तथा फ्रांस का उदाहरण दिया जा सकता है। ब्रिटेन तथा फ्रांस ने स्वेज नहर विवाद के कारण मिस्र पर आक्रमण किया परंतु विश्व जनमत के प्रबल विरोध के कारण उन्हें अपनी सेनाएं पीछे हटानी पड़ीं।

कुछ लोग उपरोक्त विशिष्ट तत्वों को आत्मपरक तथा स्थितिपरक तत्वों में विभाजित करके इनका अध्ययन करते हैं।

**प्रश्न 2 भारत की विदेश नीति राष्ट्रीय हितों की उपज है-इस कथन की समीक्षा कीजिए।**

**उत्तर-** किसी भी देश की विदेश नीति का निर्माण कई तत्वों से मिलकर होता है। विदेश नीति कई तत्वों का मिला जुला रूप होती है। भारत भी इसका अपवाद नहीं है। भारत की विदेश नीति के निर्माण में कई तत्वों ने योगदान दिया है।

भारत की विदेश नीति के निर्धारण में कई तत्वों का योगदान है। ये तत्व हैं -

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1 | राष्ट्रीय हित, | 2 | भौगोलिक स्थिति, |
| 3 | सैनिक शक्ति, | 4 | आर्थिक स्थिति, |
| 5 | ऐतिहासिक परम्पराएँ, | 6 | वैचारिक स्थिति, |
| 7 | अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थतियां, | 8 | आन्तरिक शक्तियां, |
| 9 | वैयक्तिक प्रभाव, | | |

हालांकि भारत की विदेश नीति के निर्धारण पर इन सभी तत्वों का प्रभाव रहा है, फिर भी यह एक निर्विवाद सत्य है कि विदेश नीति पर सर्वाधिक प्रभाव राष्ट्रीय हित का ही है।

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री पामर्स्टन ने कहा था कि, "ब्रिटेन के कोई स्थायी मित्र अथवा स्थाई शत्रु नहीं हैं। ब्रिटेन का सिर्फ स्थायी हित है।" इसी तरह संयुक्त राज्य अमेरिका के विदेश मन्त्री चार्ल्स ईवान्स ने कहा था कि, "विदेश नीति का निर्माण सूक्ष्म सिद्धान्तों के आधार पर नहीं होता बल्कि वह राष्ट्रीय हितों के क्रियात्मक विचारों की परिणति होती है।" उपरोक्त कथन विदेश नीति के निर्धारण में राष्ट्रीय हित के महत्व को रेखांकित करते हैं।

भारतीय विदेश नीति के निर्धारण में भी सर्वाधिक प्रभाव निर्विवाद रूप से भारत के राष्ट्रीय हितों का ही पड़ा है। पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने इसी तत्व के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहा कि, "किसी भी देश की विदेश नीति की आधारशिला उसके राष्ट्रीय हित की सुरक्षा होती है, यही बात भारत की विदेश नीति के सन्दर्भ में भी लागू होती है।" भारत की पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के शब्दों में, "विदेश नीति के क्षेत्र में निर्धारित स्थितियाँ नहीं होती। यहाँ तक कि कुछ देश अतीत में सदा हमारे साथ मित्रतापूर्वक नहीं रहे, मैं जानती हूं। मैं मानती हूं कि कुछ देश जहां मित्रता हो उसे विस्तार दिया जाना चाहिए। जहां मतभेद हों उन्हें दूर किया जाना चाहिए तथा जहां विरोध हो हमें उसे खत्म करने का प्रयास करना चाहिए। सिर्फ कुछ मूल्य तथा हित स्थायी हैं, जिन पर समझौता नहीं हो सकता।"



## भारतीय विदेश नीति का राष्ट्रीय हित

भारतीय विदेश नीति को जिन राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा करनी होती है वे निम्न हैं -

1. *कृषि तथा औद्योगिक विकास के माध्यम से आत्मनिर्भर बनकर अन्य विकसित राज्यों की बराबरी करने की महत्वाकांक्षा।*
2. *एशिया एवं विश्व में एक विकसित तथा सुदृढ़ राष्ट्र के रूप में महत्वपूर्ण स्थान पाने की आकांक्षा।*
3. *प्रवासी भारतीयों के हितों की सुरक्षा।*
4. *भारतीय सीमा की सुरक्षा जिसमें विशाल समुद्र तट की सुरक्षा भी शामिल है।*
5. *खाद्यान्न की कमी की स्थिति में उसकी पूर्ति निश्चित करना।*
6. *आर्थिक दृष्टि से पिछड़ेपन को दूर करने हेतु विदेशी मदद की प्राप्ति।*
7. *भारत की वैज्ञानिक एवं तकनीकी उन्नति।*

सन् 1947 से आज तक भारतीय विदेश नीति के क्रियान्वयन का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि भारतीय विदेश नीति भारत के इन राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा तथा प्राप्ति के लिये लगातार संलग्न रही है। इस दृष्टि से अगर महाशक्तियों से भारत के सम्बन्धों को लें तो स्पष्ट होता है कि भारत तथा अमेरिकी सम्बन्धों में मित्रता एवं तनाव के सम्बन्ध साथ-साथ चले हैं। दियेगोगार्सिया में सैनिक अड्डे के निर्माण पर अगर भारत ने अमेरिका का विरोध किया तो दूसरी तरफ अमेरिका से आर्थिक सम्बन्धों में प्रगाढ़ता लाने के प्रयत्न भी साथ-साथ चलते रहे हैं। यह राष्ट्रीय हितों का ही तकाजा था कि भारत तथा संयुक्त राज्य अमेरिका के सम्बन्धों में यह स्थिति साथ-साथ चली। स्वतन्त्रता के बाद भारत ने राष्ट्र संघ का सदस्य बने रहने का निर्णय लिया। सोवियत संघ की ओर भारतीय विदेश नीति के झुकाव में भी राष्ट्रीय हितों की रक्षा को देखा जा सकता है। हालांकि आलोचकों ने यह कह कर भारत की आलोचना की कि सोवियत संघ की तरफ भारतीय विदेश नीति के झुकाव से भारत की असंलग्नता नीति को आघात पहुंचा है। सन् 1971 ई. की भारत सोवियत मित्रता संधि पर भी यह कर आक्षेप किया गया कि इस सन्धि ने भारतीय गुट निरपेक्षता नीति का अन्त कर दिया है। लेकिन यहां यह उल्लेखनीय है कि इस सन्धि द्वारा भारत ने अपनी सुरक्षा को मजबूत किया। सन् 1971 के भारत पाकिस्तान युद्ध में जब संयुक्त राज्य अमेरिका ने बंगाल की खाड़ी में सातवां जहाजी बेड़ा भेजा तो सोवियत संघ ने भी भारत के पक्ष में सोवियत नौ सैनिक बेड़े को सतर्क रहने का आदेश दिया।

राष्ट्रीय हित की रक्षा ही भारत की पश्चिम एशिया नीति में देखी जा सकती है। अरब राष्ट्रों से तेल की प्राप्ति एवं इन देशों में भारतीय आर्थिक हितों की रक्षा तथा प्रवासी भारतीय की रक्षार्थ भारत ने पश्चिम एशिया समस्या में अरब राष्ट्रों का समर्थन किया। हालांकि इजराइल ने भारत का कोई अहित नहीं किया था एवं भारत का अरब राष्ट्रों को समर्थन भारत की गुटनिरपेक्षता नीति का उल्लंघन था, लेकिन फिर भी पश्चिम एशिया में भारतीय विदेश नीति इस दृष्टि से सफल कही जा सकती है कि इसने भारतीय राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा की है।

भारत के द्रुत गति से आर्थिक विकास हेतु यह जरूरी है कि उसके पड़ोस में शान्ति बनी रहे, यही कारण है कि भारत ने अपने पड़ोसी राष्ट्रों से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाने के प्रयत्न किये हैं। भारत के श्रीलंका, नेपाल, भूटान, बर्मा, चीन एवं पाकिस्तान आदि से सम्बन्धों का यह मूल तत्व रहा है कि वह अपने पड़ोस में शान्ति चाहता है। सन् 1971 के शिमला समझौते के

तहत भारत ने पाकिस्तान से युद्ध में जीती हुई भूमि सहृदयता से पाकिस्तान को लौटा दी। इसके पीछे भी पड़ोस में शान्ति बनाये रखने की इच्छा स्पष्ट होती है।

भारत की हिन्द महासागर नीति का मुख्य लक्ष्य भी भारतीय समुद्री सीमा एवं समुद्री रास्ते के सहारे भारतीय व्यापार की सुरक्षा रहा है। भारत का यह अतीत का कटु अनुभव रहा है कि पाश्चात्य विदेशी आक्रांता पहले समुद्र के रास्ते भारत से व्यापार करने हेतु आये एवं बाद में उन्होंने भारत की राजनीतिक सम्प्रभुता को समाप्त कर भारत पर अधिकार कर लिया। इस विशाल समुद्र तट की सुरक्षा एवं व्यापारी मार्गों की रक्षा हेतु ही भारत दिएगोगार्सिया में अमेरिकी नौसैनिक अड्डे का विरोध करता रहा है, साथ ही भारत यह नहीं चाहता कि हिन्द महासागर स्थित या हिन्द महासागर के तटीय देशों पर ऐसे किसी देश का प्रभाव स्थापित हो जो भारत का विरोधी है। भारत लगातार अपनी नौसेना को सुदृढ़ बना रहा है यह भी इसी राष्ट्रहित की प्राप्ति हेतु किया जा रहा है।

भारत के आर्थिक विकास हेतु यह जरूरी है कि वह अन्य देशों से आर्थिक मदद प्राप्त करे। भारत सहायता क्लब, विश्व बैंक, संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, जर्मनी आदि देशों से भारत ने अपनी आर्थिक परियोजनाओं हेतु काफी मात्रा में आर्थिक मदद प्राप्त की है। भारत की कई परियोजनाओं हेतु विदेश पूंजी को आकर्षित करने में सफलता प्राप्त करना भारत की विदेश नीति की महत्वपूर्ण सफलता है।

भारतीय विदेश नीति के निर्धारण तथा संचालन में राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा इतनी महत्वपूर्ण रही है कि सरकारों के परिवर्तन के पश्चात् भी विदेश नीति में आधारभूत बदलाव नहीं आया है। अटलबिहारी वाजपेयी जब विपक्ष में थे तब भारतीय विदेश नीति की कटु आलोचना करते थे, पर जब वह विदेश मन्त्री बने तो उन्होंने लगभग वही नीति अपनाई जो जवाहरलाल नेहरू ने अपनाई थी। उपरोक्त विवेचना से स्पष्ट है कि भारत की विदेश नीति राष्ट्रीय हितों की रक्षा में सफल रही है, इस के लिये जरूरत पड़ने पर मूल सिद्धान्तों एवं आदर्शों में भी भारत लचीलापन लाया है।

**प्रश्न 3 गुटनिरपेक्षता या असंलग्नता की नीति का क्या अर्थ है? भारत द्वारा गुटनिरपेक्षता नीति अपनाये जाने के कारणों पर प्रकाश डालिए।**

**उत्तर-** गुट-निरपेक्षता या असंलग्नता एक नीति है, इसका अभिप्राय सैनिक गुटों से अपने आपको अलग बनाये रखना है। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में सैन्य गुटबन्दी का युग नाटो तथा वारस जैसी सैनिक सन्धियों के कारण आया था। निर्गुट राष्ट्र इनमें से किसी में भी शामिल नहीं होता है। **स्वार्गनवर्ग** के अनुसार गुट निरपेक्षता सन्धियों से अलग रहने की **नीति** को कहते हैं।"

**गुट निरपेक्षता का उद्देश्य** - गुट निरपेक्षता के प्रमुख उद्देश्य विचारों की स्वतन्त्रता को स्थापित रखना, प्रादेशिक अखण्डता की रक्षा, अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति बनाये रखने का प्रयत्न करना तथा तृतीय विश्व युद्ध की संभावना को रोकना है। **पण्डित नेहरू** ने कहा था - "तृतीय विश्व युद्ध को रोकना गुट-निरपेक्षता का केवल लक्ष्य ही नहीं बल्कि यह उसके अस्तित्व की आवश्यक शर्त भी है।"

## भारत में गुट निरपेक्षता (असंलग्नता) की नीति का विकास

गुट निरपेक्ष नीति का राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान शनैः शनैः विकास हुआ। असंलग्नता की नीति के विकास के प्रमुख चरण निम्नलिखित थे -



1. **साम्राज्यवाद का विरोध** - भारत स्वयं साम्राज्यवाद को भोग रहा था। वह ब्रिटेन का उपनिवेश था और जानता था कि उपनिवेशवाद कितना अपमानजनक होता है। राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान भारत अपनी स्वतन्त्रता के लिए ही नहीं, अन्य अफ्रीकी-एशियाई देशों के लिए भी लड़ रहा था। गुट निरपेक्षता की नीति का आज भी एक महत्वपूर्ण पक्ष है, उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद का विरोध। यह नीति भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान ही विकसित हुई। 1927 में ब्रुसेल्स में श्री नेहरू ने साम्राज्यवाद विरोधी सम्मेलन में भाग लिया था और सारी दुनिया से साम्राज्यवाद के अन्त की माँग की थी। **डॉ. विमलप्रसाद** के अनुसार - "असंलग्नता की नीति का विकास राष्ट्रीय आन्दोलन के समय ही हो गया था।"

2. **गुट निरपेक्षता का मार्ग** - 1936 में सम्पूर्ण विश्व संकट के दौर से गुजर रहा था। द्वितीय विश्व युद्ध की काली छाया सारे संसार पर मँडरा रही थी। एक ओर इटली और जर्मनी जैसे फासिस्ट राज्य थे, तो दूसरी ओर ब्रिटेन, अमेरिका और फ्रांस जैसे साम्राज्यवाद राज्य। **श्री नेहरू** ने उस समय भी स्पष्ट कर दिया गया था कि भारत न तो फासीवादियों के साथ है न साम्राज्यवादियों के साथ। **श्री नेहरू** ने कहा था - "भारत का मार्ग स्पष्ट है। वह फासीवाद का पूरी तरह विरोधी है और वह साम्राज्यवाद का भी विरोधी है।" वास्तव में भारत की विदेश नीति उसी समय विकसित हो रही थी।

3. **स्वतन्त्र विदेश नीति** - द्वितीय विश्व युद्ध के बाद धीरे-धीरे यह प्रकट होने लगा था कि संसार दो गुटों में बँट रहा है - रूसी गुट और अमेरिकी गुट। रूस और अमेरिका दोनों सर्वोच्च शक्तियों के रूप में उभर चुके थे। भारत स्वतन्त्र नहीं हुआ था। उस समय भी नेहरू ने कहा था कि भारत दोनों गुटों से अलग स्वतन्त्र विदेश नीति अपनायेगा। 16 सितम्बर 1946 को अन्तरिम सरकार के विदेश मन्त्री के नाते श्री नेहरू ने कहा था - "विदेश नीति के क्षेत्र में, भारत एक स्वतन्त्र नीति अपनायेगा। वह शक्ति-समूहों से पृथक रहेगा।"

4. **शान्ति व अहिंसा की नीति** - राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान भारत ने बार-बार शान्ति और अहिंसा पर बल दिया। गाँधीजी के नेतृत्व में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की मुख्य धारा अहिंसक धारा ही थी। गाँधीजी ने असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन और भारत छोड़ो आन्दोलन इन तीनों के द्वारा अहिंसा का ही मार्ग अपनाया। राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान ही यह स्पष्ट हो गया था कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात भारत का मार्ग विश्व शान्ति का मार्ग होगा। संविधान सभा में श्री नेहरू ने कहा था - "हम शान्ति चाहते हैं। जहाँ तक सम्भव हो हम किसी भी देश के साथ युद्ध करना नहीं चाहते।" यही मार्ग गुट निरपेक्षता का भी मार्ग बना, क्योंकि गुट-निरपेक्षता की नीति मुख्य रूप से विश्व शान्ति की नीति है।

5. **सभी से मित्रता** - राष्ट्रीय आन्दोलन के समय भारत को जिस-जिस देश ने उसके स्वतन्त्रता के अभियान में सहयोग दिया, हमने उसे स्वीकार किया। अमेरिका में गदर पार्टी बनी, अमेरिकी कांग्रेस के सदस्यों ने भारतीय स्वतंत्रता का समर्थन किया, "एटलांटिक चार्टर के समय राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने आग्रह किया कि भारत को स्वतंत्र किया जाय। भारत ने कृतज्ञतापूर्वक आभार माना। इसी तरह सोवियत संघ ने भी बार-बार साम्राज्य विरोधी संघर्ष में भारत के समर्थन का ऐलान किया। आयरलैण्ड के कई नेताओं ने और विशेष रूप से श्रीमती एनीबेसेन्ट ने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया। अतः यह स्वाभाविक था कि आरम्भ से ही भारत की नीति सभी से मित्रता की नीति रही। यह निरपेक्षता की नीति है। फ्रेंक मोरायस के शब्दों में

"नेहरू की विदेश नीति अनिवार्यतः भारत की आवश्यकताओं के अनुरूप है तथा वह राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास और पृष्ठभूमि से उत्पन्न है।"

**भारत द्वारा गुट-निरपेक्षता नीति अपनाये जाने के कारण**

15 अगस्त, 1947 को भारत ने ब्रिटिश दासता से मुक्ति प्राप्त की। विश्व स्पष्टतः दो खेमों में विभाजित हो चुका था। एक तरफ पश्चिमी खेमा था जिसका नेतृत्व संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा किया जा रहा था, तो दूसरी तरफ साम्यवादी खेमा था, जिसका नेतृत्व तत्कालीन सोवियत संघ द्वारा किया जा रहा था। भारत ने किसी गुट में शामिल न होकर असंलग्नता का तीसरा मार्ग चुना। भारत द्वारा असंलग्नता की नीति अपनाये जाने के मुख्य कारण निम्न थे-

1. **विश्वशान्ति की इच्छा-** भारत द्वारा इस नीति के अपनाने का प्रथम कारण यह था कि उस समय द्वितीय विश्वयुद्ध को खत्म हुए दो ही वर्ष हुए थे कि सोवियत खेमे एवं अमेरिकी खेमे में शीत युद्ध शुरू हो गया। भारत इस तनाव को बढ़ाना नहीं चाहता था। अतः उसने असंलग्न रहने का निर्णय किया। उसकी इच्छा थी कि दोनों गुटों में मित्रतापूर्ण वातावरण बने। 3 अक्टूबर, 1960 को अपनी इसी इच्छा को अभिव्यक्त करते हुए जवाहरलाल नेहरू ने संयुक्त राष्ट्र महासभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि, "शान्ति के बगैर हमारे सभी स्वप्न मिट्टी में मिल जाते हैं। इसलिए हमें संसार से युद्ध को, युद्ध के खतरों को एवं युद्ध के कारणों को मिटाना होगा। बहुत पहले भारत के एक पुत्र महात्मा बुद्ध ने कहा था कि विजय वही है, जिसमें सभी समान रूप से विजय हों तथा किसी की पराजय न हो।"

2. **राष्ट्रीय स्वाभिमान का तकाजा-** जवाहरलाल नेहरू ने यह स्पष्ट करते हुए कहा था कि "किसी गुट के साथ सैनिक सन्धियों में बँध जाने से सदा उनके संकेतों पर नाचना पड़ता है तथा साथ ही अपनी स्वतन्त्रता भी बिल्कुल नष्ट हो जाती है। इसलिए चाहे कुछ भी हो जाए किसी भी देश के साथ सैनिक सन्धि नहीं करेंगे। जब हम गुट निरपेक्षता अथवा संलग्नता का विचार छोड़ देते हैं तो हम लंगर छोड़कर बहने लगते हैं। किसी भी देश के साथ बँधना आत्मसम्मान खोना है। यह बहुमूल्य निधि का विनाश है।"

3. **इस नीति का भारत के राष्ट्रीय हित के अनुकूल होना-** भारत द्वारा इस नीति के अपनाये जाने का एक कारण यह भी था कि यह नीति भारत के राष्ट्रीय हितों के अनुकूल थी। जब भारत स्वतन्त्र हुआ था तब आर्थिक दृष्टि से काफी कमजोर था एवं उसकी सैनिक ताकत भी काफी कमजोर थी। इस स्थिति में भारत हेतु उचित यही था कि वह किसी एक गुट में सम्मिलित होकर दूसरे गुट को अपना दुश्मन न बनाये एवं सभी देशों से मैत्री बनाये रखते हुए अपनी स्थिति को सम्भाले।

4. **भारत को आर्थिक सहायता की जरूरत-** अंग्रेजों द्वारा किये गये शोषण के कारण भारत आर्थिक दृष्टि से काफी पिछड़ गया था। लाखों शरणार्थियों के पाकिस्तान से भारत आ जाने के कारण भारत की अर्थव्यवस्था पर काफी दबाव आ गया था। अपने आर्थिक विकास हेतु भारत ने जिन योजनाओं का निर्माण किया था उसके लिए उसे विदेशी सहयोग की जरूरत थी। यह तभी सम्भव था जब वह किसी भी गुट में सम्मिलित न होकर सभी से आर्थिक सहयोग प्राप्त करे।

5. **भारत की भौगोलिक स्थिति-** अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण भी भारत को गुट निरपेक्षता की नीति अपनानी पड़ी। विश्व के दो विशाल साम्यवादी राज्यों के पड़ोस में स्थित होने के कारण वह साम्यवादी गुट से शत्रुता मोल नहीं ले सकता था।



6. **विश्व की घटनाओं के स्वतन्त्र तथा निष्पक्ष मूल्यांकन की इच्छा-** भारत द्वारा गुट निरपेक्ष नीति अपनाये जाने का एक कारण यह भी था कि वह किसी एक गुट का पिछलग्गू बनकर अपनी स्वतन्त्र निर्णय शक्ति नहीं खोना चाहता था। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में स्वतन्त्र न्यायोचित एवं राष्ट्र हित में निर्णय लेने की इच्छा ने ही भारत को गुट निरपेक्षता की नीति अपनाने को विवश किया।

7. **विश्व में स्थित दोनों गुटों से भारत के सैद्धान्तिक मतभेद-** क्योंकि साम्यवादी गुट लोकतन्त्र का विरोधी था तथा वहाँ व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का अभाव था। इसलिए स्वभावतः ही भारत का उस गुट से सैद्धान्तिक मतभेद था, क्योंकि भारत के संविधान में लोकतन्त्र और स्वतन्त्रता के मूल्यों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इसी तरह पश्चिमी गुट द्वारा अपनाई गई साम्राज्यवादी एवं उपनिवेशवादी तथा रंगभेदी नीति भारतीय सिद्धान्तों से मेल नहीं खाती थी। ऐसी स्थिति में भारत के सामने दोनों शक्ति गुटों से अलग रहने का निर्णय लेने के अलावा कोई रास्ता भी नहीं था।

8. **अन्तर्राष्ट्रीय गतिरोध को दूर करने एवं अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व को उन्नत करने की इच्छा-** भारत द्वारा असंलग्नता की नीति अपनाने के पीछे यह बलवती इच्छा भी काम कर रही थी कि दोनों शक्ति गुटों में जब कोई गतिरोध पैदा हो तो भारत उसे हल करने में मदद दे। इससे भारत के स्वतन्त्र अन्तर्राष्ट्रीय व्यक्तित्व का विकास होगा।

9. **एशियाई देशों को नेतृत्व देने तथा मार्गदर्शन करने की भारतीय इच्छा-** भारत जब स्वतन्त्र हुआ तब कई एशियाई एवं पराधीन अफ्रीकी देश भारत की तरफ मार्गदर्शन के लिए देखने लगे। उन्हें आशा थी कि भारत पश्चिमी साम्राज्यवाद के विरुद्ध मोर्चा बनाने में उनकी मदद करेगा। भारतीय प्रधानमन्त्री उनकी आशाओं पर पानी नहीं फेरना चाहते थे। वह चाहते थे कि भारत इन देशों का मार्गदर्शन करे। यही कारण था कि श्री नेहरू ने 1947 में दिल्ली में हुए एशियाई सम्मेलन देशों के मुक्ति आन्दोलनों का समर्थन किया था।

**प्रश्न 4 पंचशील क्या है? इसके पाँच सिद्धान्त कौनसे हैं? चीन से हुए समझौते की व्याख्या कीजिए।**

**उत्तर-** शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व के पाँच सिद्धान्तों को पंचशील कहा जाता है। इनका उल्लेख चीन-भारतीय समझौते 1954 की प्रस्तावना में किया गया था। इन पाँच सिद्धान्तों को बाद में चीन के संविधान की प्रस्तावना सहित कई प्रस्तावों और बयानों में अपनाया गया।

ये पाँच सिद्धान्त हैं-

1. *एक दूसरे देश की प्रादेशिक अखण्डता और प्रभुसत्ता का सम्मान करना।*
2. *एक दूसरे के विरुद्ध आक्रमण कार्यवाही न करना।*
3. *एक दूसरे के आन्तरिक विषयों में हस्तक्षेप न करना।*
4. *समानता और परस्पर लाभ की नीति का पालन करना, तथा*
5. *शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व की नीति में विश्वास रखना।*

**इतिहास-** पंचशील समझौता आर्थिक और सुरक्षा सहयोग को आगे बढ़ाने के लिए भारत और चीन के बीच सबसे महत्त्वपूर्ण सम्बन्धों में से एक के रूप में कार्य करता है। पाँच सिद्धान्तों की एक अन्तर्निहित धारणा यह थी कि नए स्वतन्त्र राज्य उपनिवेशवाद के बाद अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के लिए एक नया और अधिक सैद्धान्तिक दृष्टिकोण विकसित करने में सक्षम होंगे।

एक भारतीय राजनयिक और चीन के विशेषज्ञ V.V. परांजपे के अनुसार पंचशील के सिद्धान्तों को पहली बार सार्वजनिक रूप से झोऊ एन. लाई द्वारा तैयार किया गया था-"31 दिसम्बर 1953 को तिब्बती व्यापार वार्ता में भारतीय प्रतिनिधिमण्डल का स्वागत करते हुए कहा, "विदेशों के साथ चीन के सम्बन्धों को नियन्त्रित करने वाले पाँच सिद्धान्त" फिर 18 जून 1954 को दिल्ली में एक संयुक्त बयान में सिद्धान्तों पर भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और झोउ एन लाई द्वारा जोर दिया गया था। बीजिंग में भारत चीन संधि पर हस्ताक्षर के कुछ ही दिनों बाद कोलम्बो, श्रीलंका में 'एशियाई प्रधान मन्त्री सम्मेलन' के समय दिया गया प्रसारण भाषण। नेहरू ने यहाँ तक कहा-"यदि इन सिद्धान्तों को पारस्परिक रूप से मान्यता दी गई थी तो सभी देशों के सम्बन्ध हैं तो वास्तव में शायद ही कोई संघर्ष होगा और निश्चित रूप से कोई युद्ध नहीं होगा।" यह सुझाव दिया गया कि पाँच सिद्धान्त आंशिक रूप से इंडोनेशियाई राज्य के पाँच सिद्धान्तों के रूप में उत्पन्न हुए थे। जून 1945 में सुकर्णो इण्डोनेशियाई नारी ओनालिस्ट नेता ने पाँच सामान्य सिद्धान्तों या पंचशील की घोषणा की थी जिस पर भविष्य की संस्थाओं की स्थापना की जानी थी। 1949 में इण्डोनेशिया स्वतन्त्र हुआ।

इन पाँच सिद्धान्तों को संशोधित रूप में अप्रैल 1955 में बाण्डुंग इण्डोनेशिया में ऐतिहासिक एशियाई-अफ्रीकी सम्मेलन में जारी दस सिद्धान्तों के एक बयान में शामिल किया गया था। "भारत, यूगोस्लाविया और स्वीडन द्वारा संयुक्त रूप से प्रस्तुत शान्ति पूर्ण सह अस्तित्व पर एक प्रस्ताव को संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 1957 में सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया था।" पाँच सिद्धान्तों के रूप में उन्हें कोलम्बो और अन्य स्थानों पर अपनाया गया था, 1961 में बेलग्रेड, यूगोस्लाविया में स्थापित गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का आधार बना।"

ऊपर वर्णित 28 अप्रैल, 1954 का समझौता आठ वर्षों तक चलने के लिए निर्धारित किया गया था, जब यह समाप्त हो गया तो सम्बन्धों में पहले से ही खटास आ रही थी। समझौते में नवीनीकरण का प्रावधान नहीं था और दोनों पक्षों के बीच चीन-भारतीय युद्ध छिड़ गया था। इस प्रकार पंचशील समझौते की समयावधि समाप्त होते ही वर्ष 1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया।

**प्रश्न 5 भारत और दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (दक्षेस / सार्क) पर सारभूत टिप्पणी लिखिए।**

**उत्तर-**

## भूमिका

सार्क या दक्षेस के निर्माण की प्रक्रिया का श्रेय तत्कालीन बांग्लादेश के राष्ट्रपति श्री जियाउर रहमान को दिया जाता है। उन्होंने क्षेत्रीय सहयोग के विषय में विचार करते हुये 'बांग्लादेश पेपर' नामक अपना विचार पत्र प्रस्तुत किया। उनके इस प्रस्ताव को दक्षिण एशिया के राज्यों ने बहुत गम्भीरता से लिया।

आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास को गति देने के लिए तथा एक-दूसरे की प्रभुसत्ता व स्वतन्त्रता को सम्मान देने के उद्देश्य से दक्षिण एशिया के सात राज्य क्रमशः भारत, पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका तथा मालद्वीप सहमत हुये।

सच तो यह है कि द्वितीय युद्ध के पश्चात् से क्षेत्रीय संगठनों का विकास हुआ। कहीं सैनिक संगठन जैसे नाटो, वारसा तथा सीटो, तो कही स्वंतन्त्रता और समानता के लिए जैसे ओ.ए.यू. या कहीं आर्थिक सहयोग के लिए ई.ई.सी. आदि संगठन बने। इन्हीं की प्रेरणा लेकर 'सार्क' का गठन हुआ।



सार्क की विशेषता यह है कि यह न तो कोई सैनिक संगठन है और न ही राजनीतिक संगठन है। यह तो शांतिपूर्ण विकास के लिए आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक विकास का संगठन है।

## दक्षेस (सार्क) सम्मेलन

सार्क सम्मेलनों का श्रीगणेश बांग्लादेश से हुआ। पहला शिखर सम्मेलन 7 व 8 दिसम्बर, 1985 को ढाका में आयोजित किया गया। इसके बाद वर्ष 1986 में यह सम्मेलन भारत में बंगलौर शहर में हुआ और इस यात्रा का अगला पड़ाव था- नेपाल का काठमांडू शहर, जहां यह वर्ष 1987 में हुआ। फिर चौथा सार्क सम्मेलन हुआ पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद में, जो 29 से 31 दिसम्बर 1988 तक चला फिर यह सम्मेलन मालद्वीप की राजधानी माले में 1990 में सम्पन्न हुआ। इसके बाद छठा सम्मेलन श्रीलंका में सम्पन्न हुआ। सातवां सम्मेलन पुनः बांग्लादेश में 10 अप्रैल 93 से हुआ। आठवां सम्मेलन भारत में और नौवां सम्मेलन नेपाल में हुआ।

**सम्मेलनों में** - सर्वप्रथम हुये सम्मेलन में आर्थिक उन्नति, सामाजिक न्याय, शांति और स्वतन्त्रता को मजबूत बनाने के लिए आपसी सहयोग को महत्व दिया गया एवम् खेलकूल, कला व संस्कृति के विकास के लिए चर्चा करके सार्क के चार्टर को स्वीकार किया गया।

विशेष बात यह थी कि यह कहा गया कि इस मंच से द्विपक्षीय विग्रह व तनाव पैदा करने वाले विषयों को नहीं उठाया जायेगा। इसलिए सम्मेलन में अफगानिस्तान या तमिल समस्या को नहीं उठाया गया।

सातवें सम्मेलन के प्रारम्भ होने से पूर्व तक के सार्क अध्यक्ष श्रीलंका के राष्ट्रपति ने पाकिस्तान और बांग्लादेश में राष्ट्राध्यक्षों को स्पष्ट कर दिया था कि इस मंच से कश्मीर या अयोध्या (बाबरी मस्जिद-राम जन्म भूमि विवाद) विवाद को नहीं उठाने दिया जायेगा। राष्ट्रपति प्रेमदास का विचार था कि ऐसे विषय सार्क चार्टर के विषय में नहीं आते हैं।

सार्क सम्मेलनों में महत्वपूर्ण विषय जैसे आतंकवाद (बंगलौर-भारत 1986), क्षेत्रीय खाद्य सुरक्षा (नेपाल-काठमांडू 1987) तथा मादक पदार्थों की तस्करी पर रोक (पाकिस्तान-इस्लामाबाद 1988) आदि उठाये गये हैं। इन सबका उद्देश्य सामाजिक विकास आदि ही रहा है। सार्क के सातवें सम्मेलन में भी आर्थिक सहयोग व गरीबी उन्मूलन को प्रमुखता के साथ उठाया गया। 63 बिन्दुओं वाले ढाका घोषणा पत्र में दक्षिण एशियायी देशों के मध्य व्यापार वरीयता के प्रस्ताव को स्वीकार किया गया। पाकिस्तान द्वारा प्रस्तुत संशोधन बेमानी रहे, अतः वह अलग-थलग पड़ गया।

दक्षेस के सातवें सम्मेलन के प्रारम्भ में श्री प्रेमदास ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता बेगम खालिदा जिया को सौंपी। उन्होनें इस सम्मेलन में सभी का स्वागत करते हुये साझा दृष्टि की आवश्यकता बतायी। उन्होंने शीत युद्ध के समापन से उत्पन्न परिस्थिति, जातीयता तथा राष्ट्रीयता जैसी प्रवृत्तियों का उल्लेख करते हुए मांग की कि विकसित राष्ट्र तीसरी दुनिया के राष्ट्रों का भी विकास करवायें।

भारतीय प्रधानमंत्री श्री राव ने आतंकवाद के उन्मूलन पर जोर देकर कहा कि दक्षेस राष्ट्रों को असंगत बातें त्याग कर अपनी शक्ति को गरीबी, अशिक्षा, सामाजिक तथा आर्थिक बुराइयों को दूर करने में लगाना चाहिए।

यद्यपि यहां कश्मीर आदि मुद्दे नहीं उठाने चाहिए थे तो भी पाकिस्तानी प्रधानमन्त्री नवाज शरीफ अपनी हरकतों से बाज नही आये। उन्होंने इशारा करते हुए कहा कि दमित लोगों की स्वतंत्रता और आत्म-निर्णय के अधिकार का मसला सामूहिक दायित्व समझा जाना चाहिए।

**भारतीय तिरंगे का अपमान-** इस सातवें सम्मेलन के प्रारम्भ होने के पूर्व अयोध्या घटना को लेकर ढाका वासियों ने भारत विरोधी प्रदर्शन किये और श्री राव को ढाका में न उतरने देने की धमकी दी थी। बहरहाल यह एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति थी। अत्यन्त कड़ी सुरक्षा व्यवस्था में सम्मेलन हुआ।

ढाका के कट्टरपंथी मुस्लिम संगठन के कार्यकर्ताओं ने यहां भारतीय तिरंगे को जलाया। निश्चय ही इस प्रकार की कार्यवाही से सम्मेलन की भावना को धक्का लगा है।

## दक्षेस के मार्ग की कठिनाइयां

दक्षेस के आलोचक उसके मार्ग में निम्न कठिनाइयां बताते हैं-

1. *दक्षिण एशिया की कोई पृथक पहचान नहीं है। अतः क्षेत्रीय सहयोग का यह प्रयत्न मृत शिशु की भांति है। पाकिस्तान अपने आपको इस्लामिक मध्यपूर्व का अंग समझता है, दक्षिण एशिया का नहीं। नेपाल कभी चीन की ओर देखता है तो कभी भारत की ओर। श्रीलंका भी हाल तक आशियान की सदस्यता का इच्छुक था।*
2. *दक्षेस देशों में अत्यधिक विविधता है। इसमें तीन इस्लामिक, दो बौद्ध, एक हिन्दू तथा एक धर्मनिरपेक्ष देश है। इन देशों की नीतियां और दृष्टिकोण एक-दूसरे के विरोधी हैं, यहां तक कि संयुक्त राष्ट्र संघ में ये एक-दूसरे के विरुद्ध मतदान करते हैं।*
3. *दक्षेस देशों में भारत आकार, आबादी और शक्ति की दृष्टि से बड़े भाई की स्थिति रखता है, जिससे छोटे देशों में शंका और अविश्वास पैदा हो सकता है।*
4. *इन देशों में विवाद और संघर्ष के अनेक बिन्दु विद्यमान हैं। भारत-पाकिस्तान के बीच काश्मीर विवाद है तथा पाकिस्तान भारत के विरुद्ध उग्रवादियों को सहायता दे रहा है। भारत-बांग्लादेश में गंगा के पानी को लेकर विवाद है। भारत-श्रीलंका के मध्य तमिल प्रवासियों का मुद्दा है। ये मुद्दे क्षेत्रीय सहयोग के विकास में कभी भी रुकावट डाल सकते हैं।*
5. *दक्षेस राष्ट्र आज भी एक-दूसरे से कटे हुए हैं।*

## सार्थक बनाने हेतु सुझाव

इसकी सफलता के लिए निम्नांकित सुझाव दिये जा सकते हैं-

1. *महाशक्तियों को क्षेत्र से दूर रखा जाए।*
2. *द्विपक्षीय और बहुपक्षीय सहयोग को बढ़ावा दिया जाए।*
3. *अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर दक्षेस देशों द्वारा मतैक्य का दृष्टिकोण अपनाया जाए।*
4. *सहयोग के नये क्षेत्र ढूंढे जाएं, विशेषकर व्यापार, उद्योग, वित्त, ऊर्जा और मुद्रा के क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा दिया जाए।*
5. *सांस्कृतिक सम्पर्क और एक-दूसरे देश की आवाजाही को बढ़ावा दिया जाए।*



6. *इसे आर्थिक मंच के साथ-साथ राजनीतिक विचार विमर्श का मंच भी बनाया जाए।*
7. *टकराव उत्पन्न करने वाले मुद्दों को टाला नहीं जाए अपितु बातचीत द्वारा इनका समुचित समाधान ढूंढा जाए।*

## महत्व

दक्षेस की कोई बड़ी उपलब्धि भले ही नहीं रही हो, परन्तु यह एक तथ्य है कि इसके सदस्य देश नियमित रूप से मिल बैठकर समस्याओं पर चर्चा करते हैं। यह इस क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। प्रथम शिखर सम्मेलन के बाद से इस संगठन ने तेजी से प्रगति की है। संतोष की बात यह है कि इसका निर्माण किसी महाशक्ति के इशारे पर न होकर क्षेत्रीय आवश्यकताओं के कारण हुआ है। साथ ही यह भी स्मरणीय है कि दक्षिण एशिया गुट निरपेक्ष जैसे महान आन्दोलन के जनकों में से एक रहा है। यह आशा की जाती है कि दक्षिण एशियाई देशों का यह विशाल संगठन 21 वीं सदी की शान्ति, सद्भाव एवं शोषण मुक्त अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के लिए मार्ग प्रशस्त कर सकेगा।

## दक्षिण एशिया क्षेत्र में भारत की भूमिका

दक्षेस की संपूर्ण गतिविधियों में भारत सामूहिक रूप से शामिल रहा है। अतः भारत की भूमिका से इंकार नहीं किया जा सकता। इसके अलावा भारत दक्षिण एशिया का एक मुख्य केन्द्र होने से भी इसके महत्व को नकारा नहीं जा सकता। यही नहीं इस संगठन के सुचारु रूप से कार्य करने एवं सफलताओं तथा असफलताओं में भी भारत की अत्यंत महत्वपूर्ण भागीदारी है।

दक्षिण एशिया क्षेत्र में भारत सबसे बड़ा एवं केन्द्रस्थ देश है। दक्षिण एशिया के सभी राष्ट्र इसके पड़ौसी हैं। एक ओर पाकिस्तान, अफगानिस्तान है, तो दूसरी ओर नेपाल, भूटान, बंगलादेश, बर्मा आदि देश हैं तो तीसरी तरफ श्रीलंका है। इस तरह दक्षिण एशिया के क्षेत्र में भारत की स्थिति अत्यंत महत्व की है। भारत के इन देशों के साथ अधिकांशतः अच्छे संबंध नहीं रहे हैं। ए.जी. नूरानी के शब्दों में, "1977-79 तक की छोटी अवधि को छोड़कर भारत के अपने छोटे-छोटे पड़ौसी देशों से इतने तनाव रहित संबंध कभी नहीं रहे, जितने आज हैं।" इसके मुख्य कारण हैं-(i) इस क्षेत्र के राजनीतिज्ञों द्वारा पारस्परिक संबंधों को मधुर बनाने के संबंध में प्रयत्न न करना, (ii) 1977 से पहले एवं 1980 के पश्चात् भारत की नीतियों के संबंध में यह झूठा प्रचार कि उसकी नीतियाँ इस क्षेत्र में भारतीय श्रेष्ठता की है। हालांकि जनता काल में इस धारणा को तोड़ा गया, पर बाद में यह धारणा फिर बलवती हो गई। (iii) भारत के साथ पड़ौसियों के बिगड़े संबंध होने का एक अन्य कारण यह बताया जाता है कि भारत पड़ौसियों को सुविधाएं प्रदान करने में आधारहीन आनाकानियाँ अथवा अड़चनें डालता है। 1979 में श्रीमती गाँधी ने अपने चुनाव अभियान में कुछ ऐसी ही भारतीय श्रेष्ठता वाली बातें कहीं जिससे 1980 से 84 के बीच भारत के पाकिस्तान, बंगलादेश, नेपाल, श्रीलंका के साथ पुनः तनावमय संबंध हो गये। 1984 से 1989 तक राजीव गाँधी के काल में भी इन संबंधों में तनाव बने रहे। पाकिस्तान, श्रीलंका तथा नेपाल सभी से 1989 तक तनावपूर्ण संबंध बने रहे। 1990 में नई सरकार आई तथा वी.पी. सिंह के नेतृत्व में संबंधों में सुधार के प्रयास किये गये एवं जून 1990 तक नेपाल और श्रीलंका से संबंधों में कुछ सुधार हुआ है पर कश्मीर में आतंकवादियों को प्रशिक्षण एवं सहयोग देने के कारण पाकिस्तान से संबंध और बिगड़ गये।

## सार्क सम्मेलनों में भारत की भूमिका

'सार्क' (SAARC) की सफलता में भारत की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। उसकी भूमिका को निम्न बिन्दुओं के अंतर्गत स्पष्ट किया गया है-

1. **दक्षेस की स्थापना में भारत का योगदान-** जहाँ तक दक्षेस की स्थापना का प्रश्न है इसमें भारत की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारत ने उसकी स्थापना की सारी गतिविधियों के समय अपने हितों के साथ-साथ अपने उत्तरदायित्व को भी पूर्ण रूप से निभाया है। परिणामस्वरूप उसने इस संदर्भ में अपने पड़ौसी राज्यों के हितों तथा उसकी आकांक्षाओं को ध्यान में रखा है। अतएव दक्षेस के जन्म में भारत की भूमिका स्पष्ट झलकती है।

2. **भारत का समानता का व्यवहार-** 'सार्क' की सफलता का बहुत बड़ा कारण इसके सम्मेलनों में भारत का सभी छोटे बड़े पड़ौसी देशों से समानता का व्यवहार करना बताया जा सकता है।

3. **पड़ौसी देशों की भारत के विरुद्ध साझा राजनीति तथा भारत की भूमिका-** इस क्षेत्र में अविश्वास तथा गलतफहमियाँ भारत के कारण बनी हुई हैं। पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल, बंगलादेश सभी को भारत से कोई न कोई शिकायत जरूर हो रही है। किसी के साथ नदी जलविवाद, सीमा पर तारों की बाड़ का विवाद है तो किसी के साथ 'शांति क्षेत्र' के प्रस्ताव पर अविश्वास है तथा किसी से तमिल विवाद है। नेपाल, श्रीलंका तथा पाकिस्तान सभी के बीच परस्पर कोई न कोई शंका अवश्य रही। ये सभी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से अपने को भारत से परेशान बताकर साझा राजनीति अपनाते रहे हैं। महाशक्तियों के साथ रिश्ते में भी चारों भारत से विपरीत अमेरिका के समर्थक रहे हैं। सार्क में इन्होंने साझी राजनीति अपनाते हुए भारत को उन कारणों को मिटाने हेतु राजी कर लिया जिनसे शंका बनी हुई थी, जैसे बंगलादेश की सीमा पर तारों की बाड़ न लगाने, श्रीलंका की तमिल समस्या के संदर्भ में आतंकवाद को प्रश्रय देने का वायदा। भारत का व्यवहार उदारता एवं सहभागी का रहा है।

4. **दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग परिषद् में भारतीय नेतृत्व-** प्रारंभिक भाषणों में हालांकि सभी नेताओं ने भारतीय नेतृत्व को स्वीकारा। जयवर्धने ने कहा, "राजीव गाँधी भारत के निर्वाचित नेता हैं उन पर हमारी उम्मीदें टिकी हुई हैं। वे हमें नाकाम न होने दें। हमारा कर्तव्य है कि हम उनकी अधिकाधिक मदद करें। उन्हें बताना चाहिए कि हममें से हर को क्या करना चाहिए तथा हमें जितना संभव हो, उसके अनुसार काम करना चाहिए।" सार्क का नेतृत्व स्वीकारने हेतु भारत को यह निमंत्रण था पर सार्क पर हस्ताक्षर होने के पश्चात् पड़ौसी देशों के भाषणों में यह भावना कहीं दिखाई नहीं दी है। श्री हरिशंकर व्यास ने लिखा है कि "ढाका में ऐसा कुछ नहीं हुआ जो भविष्य में भारतीय हितों हेतु लाभदायक हो। अगर भारतीय नेतृत्व को स्वीकारा जाता अथवा बाजार खोलने जैसा निर्णय होता तो मामला अलग होता। नेतृत्व सौंपने का अर्थ यह नहीं कि सभी देश भारत की चौधराहट को खुले आम स्वीकार करें, लेकिन यह विश्वास तो दिखाना चाहिए कि इस क्षेत्र में भारत की निर्णायक स्थिति के तथ्य को स्वीकारने में उन्हें कोई परेशानी नहीं।" पर हस्ताक्षर के बाद के भाषणों में वह भावना लुप्त दिखाई दी है। यही स्थिति काठमांडू तथा इस्लामाबाद सम्मेलन में दिखाई दी। प्रायः भारत की स्थिति को ध्यान में रखते हुए इन देशों को शुरू से ही यह आशंका रही है कि कहीं सार्क के मंच से भारत हावी न हो जाये।



5. **क्षेत्रीय सहयोग की नीतियाँ-** दक्षेस की स्थापना के साथ ही भारत की विदेश नीति क्षेत्रीय सहयोग के विकास हेतु अत्यधिक अनुकूल रही है। भारत ने अपनी दक्षिण एशिया नीतियों को जिस तरह बनाया उससे दक्षेस देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा मिला है।

## निष्कर्ष

कई समस्याओं के बावजूद भी भारत तथा दक्षेस देशों के बीच अच्छे संबंधों की व्यापक संभावनाएं उपलब्ध हैं, दक्षिण एशिया के देशों के बीच आर्थिक मुद्दों के अलावा अन्य बहुत से अविवादित मुद्दे हैं जहाँ ये देश भरपूर सहयोग दिखा सकते हैं। मुख्य रूप से आतंकवाद, नियंत्रण, नशीली दवाओं की तस्करी। पर्यावरण के संबंध में समन्वय, बाढ़ नियंत्रण, गैर कानूनी शरणार्थी नियंत्रण आदि क्षेत्रों में बगैर किसी दबाव के समानता के आधार पर व्यापक सहयोग की संभावनाएं हैं।

**प्रश्न 6 आतंकवाद का अर्थ बताते हुए भारत में आतंकवाद के उद्भव और विकास को बताइए। आतंकवाद के कारणों पर भी प्रकाश डालिए।**

**उत्तर-** आतंकवाद की नवीन अवधारणा आज सम्पूर्ण विश्व के लिए एक गम्भीर चुनौती बन गयी है। यह एह ऐसी गम्भीर राजनीतिक समस्या है, जिसका विश्व के अनुमानतः सभी देशों की सरकारों को आतंकवाद का सामना करना पड़ता है। सम्पूर्ण एशिया के साथ-साथ यूरोपीय राष्ट्र भी आतंकवादी समस्या से जूझ रहे हैं। आतंकवाद का यह शक्तिशाली दानव अपने शिकंजे में इंग्लैण्ड जैसे पुराने प्रजातन्त्र एवं श्रीलंका जैसे नये प्रजातन्त्रों को शान्त एवं निरीह जनता को मौत की नींद सुला रहा है। इस आतंकवाद ने राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक सभी क्षेत्रों में उथल-पुथल मचा रखी है तथा यह इन क्षेत्रों के स्थानीय, प्रान्तीय, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय आदि सभी स्तरों पर छाया हुआ है। गरीब, विपन्न एवं बेरोजगार युवा वर्ग तथा अति भौतिक सम्पन्नता से विमुख पश्चिमी देशों के युवा वर्ग को यह आतंकवाद का मार्ग सीधा एवं सरल लगता है। इस कारण आधुनिक राजवैज्ञानिक एवं समाजशास्त्री आतंकवाद की बढ़ती हुई घटनाओं एवं प्रभावों से भयभीत हैं तथा इसके किसी उचित समाधान की खोज में हैं।

प्रायः राजनीतिक विचारक आतंकवाद का तात्पर्य राजनीतिक उग्रता एवं अपराधवादिता की भावना से लगाते हैं लेकिन यह धारणा भ्रमपूर्ण है। राजनीतिक उग्रता आतंकवाद को मात्र इसलिये कहा जाता है कि राजनीतिक उग्रता का प्रयोग भी आतंकवाद की भाँति राज्य या राज्य की वैधानिक व्यवस्था द्वारा स्वीकृत अभिकरणों द्वारा और नागरिकों द्वारा राज्य सरकार की नीतियों अथवा व्यवस्था के विरोध में किया जाता है। **R.O. ब्राउन ने लिखा है,** "आतंकवाद अपराध, हिंसा और क्रूरता का सम्मिश्रण है जो निःसन्देह भय उत्पन्न करने का ही कार्य करता है।"

आतंकवाद की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए **विल्किन्सन ने लिखा है कि,** "आतंकवाद शब्द अस्पष्ट तथा जटिल अवधारणा है, जिसका प्रयोग विविध रूपों में किया गया है। आतंक एक व्यक्तिगत अनुभव है, क्योंकि हमें डर के विशिष्ट व्यक्तिगत अनुभव होते हैं। इसलिए हम किसी अनुभव, प्रतीक या चेतावनी से अन्यों की तुलना में अधिक डरते हैं।" उन्होंने आगे भी लिखा है कि, "आतंकवाद कत्ल तथा विनाश का व्यक्तिगत प्रयोग है अथवा अपनी माँगें मनवाने के लिए व्यक्तियों, समूहों, समुदायों या सरकारों को कत्ल तथा तबाही की धमकी देता है।"

आतंकवाद के सम्बन्ध में **श्री रॉबर्ट वी. ओकले ने लिखा है कि,** "आतंकवाद से सम्बन्धित कार्य न तो शानदार होते हैं और न ही स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु अद्‌भुत युद्ध-कौशल से युक्त बल्कि केवल अपराध से सम्बन्धित होते हैं।" अर्थात् व्यक्ति आतंकवाद के माध्यम से व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति अथवा विदेशी ताकतों के इशारों पर लूटपाट, डकैतियाँ, क्रूर एवं जघन्य अपराध तथा हिंसात्मक कार्यवाहियाँ आदि करते हैं तथा आतंक को शस्त्र के रूप में प्रयोग करते हैं।

आज राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक आतंकवादी संस्थायें कार्यरत हैं। ये संस्थायें क्रूर एवं जघन्यतम हिंसात्मक कार्यों के द्वारा देश की आन्तरिक स्थिति को खोखला बनाने का प्रयास करती हैं। अपने निहित स्वार्थों के कारण देश के आन्तरिक संगठन भी देश की अराजकता या अव्यवस्था की स्थिति उत्पन्न करके सरकार का तख्ता पलटने के लिए आतंकवादी कार्यवाहियों का सहारा लेते हैं। इसमें किसी बड़े राष्ट्र या अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के द्वारा प्रेरित कुछ संगठित व्यक्ति ऐसे कार्य करके आतंक फैलाते हैं, जो क्रूर एवं उत्पन्न होते हैं। राजनीतिक आतंकवाद तो बहुत विनाशकारी होता है और इसका एकमात्र उद्देश्य सत्तारूढ़ संस्कार के कार्यों में बाधा उत्पन्न करना तथा आन्तरिक अव्यवस्था फैलाना होता है।

## आतंकवाद का उद्‌भव और विकास

आतंकवाद कोई निश्चित क्रम में विकसित होने वाला 'वाद' नहीं है। इसकी उत्पत्ति मनुष्य की अपराध भावना के फलस्वरूप होती है। शक्ति एवं हिंसा इसके प्रमुख तत्त्व हैं, परन्तु यदि शक्ति को ही आतंकवाद का आधार मान लिया जाए तो भी क्रूर एवं निरीह व्यक्तियों की हत्याओं तथा लूटमार का समर्थन नहीं किया जा सकता।

साम्यवादी विचारकों ने आतंकवाद में हिंसात्मक साधनों का प्रयोग करने का समर्थन किया है, क्योंकि ये अपने ध्येय की प्राप्ति के लिए हिंसात्मक साधनों पर निर्भर रहते हैं। समाजवाद भी सर्वहारा वर्ग की अधिनायकवादी के अन्तर्गत उग्र से उग्र उपायों द्वारा पूँजीवादी व्यवस्था व उसके समर्थकों को समूल नष्ट करने का समर्थन करता है।

सुप्रसिद्ध राजनीतिक बाकुनिन एवं प्रिंस क्रोपोटकिन, जो क्रान्तिकारी अराजकतावादी विचारक थे, ने क्रान्ति के नेतृत्व के लिये गुप्त समितियों के संगठन पर बल दिया और अपने ध्येय की सफलता के लिये आतंक का समर्थन किया। श्रमिक संघवादी विचारक भी प्रत्यक्ष संघर्ष के मार्ग का समर्थन करते हैं क्योंकि वे वैधानिक कार्य-प्रणाली में विश्वास नहीं करते हैं, श्रम संघवादी विचारकों एवं समर्थकों का उद्देश्य पूँजीपतियों को आर्थिक हानि पहुँचाना है न कि आतंक फैलाना। इस आर्थिक हानि के लिये हिंसात्मक उपायों का उपयोग किया जा सकता है तथा बाजारों एवं व्यवसायों को लूटा भी जा सकता है।

उक्त विचारों के बावजूद भी आतंकवाद के विकास के सम्बन्ध में **श्रीराम गोपाल ने लिखा है कि,** "भारत में आतंकवाद का इतिहास स्पष्ट रूप से सिद्ध करता है कि उसे हिन्दू धर्म के मूलभूत ग्रन्थों एवं आचार संहिता से प्राथमिकता प्रेरणा मिली थी। इसलिए जब से सार्वजनिक रूप से गणपति उत्सव मनाया जाने लगा तभी से इस राष्ट्र में आतंकवादियों की गतिविधियाँ शुरू हुईं। इसी प्रकार जब ब्रिटिश शासकों ने पशु बल द्वारा स्वतन्त्रता सम्बन्धी माँगों को दबाने और अपने साम्राज्य को सुदृढ़ बनाये रखने के लिए अधिक अन्यायपूर्ण और दमनकारी नीतियाँ अपनायीं तो भारत के भावुक युवक भी '**शठे शाठयम् समाचरेत्**' के सिद्धान्त पर चलने लगे।" इस प्रकार कहा जा सकता है कि भारत में आतंकवादी विचार प्राचीन काल से ही विद्यमान थे।



## आतंकवाद के कारण

आतंकवाद के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं-

(1) **शोषण और अन्याय की प्रवृत्ति-** विश्व भर में आतंकवाद के पनपने का एक कारण शोषण और अन्याय का विस्तार है। शोषण की प्रवृत्ति लम्बे समय से चली आ रही है। साम्राज्यवादी राष्ट्रों के द्वारा अविकसित और निर्धन देशों का शोषण किया गया। स्वतन्त्र भारत में आज भी शोषण है। इसी प्रकार की परिस्थितियों में आतंकवादी जनता को यह विश्वास दिलाने का प्रयास करते हैं कि वे आतंकवादी नहीं हैं बल्कि शोषण और अन्याय के विरोधी हैं।

(2) **युवा वर्ग में असन्तोष-** बेरोजगारी, गरीबी, बीमारी, अशिक्षा, भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद आदि अनेक कारणों से युवकों में असन्तोष है। आज का युवक अधिक महत्त्वाकांक्षी है परन्तु अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए उनके पास साधन नहीं हैं। इसलिए वह तस्करी, नशीले पदार्थों का व्यापार और आतंकवादसे जुड़ जाता है।

(3) **भ्रष्टाचार-** विश्व भर के देशों में भ्रष्टाचार का बोलबाला है। नवयुवक वर्ग राजनीतिज्ञों, उच्च नौकरशाहों, व्यापारियों और उद्योगपतियों के आचरण को देखकर अपना धैर्य खो देता है। उच्च स्तर के पदाधिकारी रिश्वत और भ्रष्टाचारी तथा जालसाजी में लिप्त नजर आते हैं। ये सभी कारण आतंकवाद को बढ़ाने का प्रयास करते हैं।

(4) **अवैध शस्त्र व्यापार-** वर्तमान अवैध शस्त्र व्यापार इतना अधिक बढ़ गया है कि आधुनिकतम और भयानक शास्त्रों को अवैध रूप से प्राप्त करना कोई कठिन कार्य नहीं रह गया है।

(5) **आतंकवादियों को विदेशों से सहायता-** संसार में ऐसे अनेक देश हैं जो आज भी आतंकवादियों को प्रशिक्षण और आर्थिक सहायता उपलब्ध कराते हैं। दूसरे देशों को आतंकवाद रोकने में सहायता नहीं देते बल्कि दूसरे देशों में अस्थिरता फैलाने के लिए आतंकवादियों की आर्थिक और राजनीतिक सहायता करते हैं। पाकिस्तान भारत में इसी प्रकार आतंक फैलाना चाहता है जिसके लिए I.S.I., लश्कर-ए-तय्यबा, जैश-ए-मोहम्मद आदि संगठन क्रियाशील हैं।

(6) **दलीय राजनीति-** राजनीतिक दल भी आतंकवाद बढ़ाने का कार्य करते हैं। वे वोटों के लालच में कुछ भी गलत से गलत काम करने को तैयार हो जाते हैं। दल चुनाव जीतने के लिए आतंकवादी संगठनों का सहारा भी लेते हैं। कभी-कभी तो दल हिंसक, आतंकवादी और गुण्डा टाइप लोगों को अपने दल से चुनाव भी लड़ाते हैं।

(7) **न्याय व्यवस्था में देरी-** न्याय व्यवस्था भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, आतंकवाद, जालसाजी जैसे मुकदमों में अनेक वर्ष लगा देती हैं जिससे आतंकवादी निर्भीक होकर अपना कार्य करते रहते हैं।

(8) **अन्य कारण-** बहुत अन्य कारण भी आतंकवाद के विकास के लिए उत्तरदायी हैं। इनमें-

(i) *गुप्तचर सेवाओं और प्रशासन की विफलता,*
(ii) *नैतिक शिक्षा का अभाव,*

(iii) *नैतिक मूल्यों में गिरावट, दूषित प्रचार और स्वार्थपरता की नीति आदि प्रमुख कारण है।*

**प्रश्न 7 भारत में आतंकवाद के मूहों और चुनौतियों का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर- भारत में आतंकवादी गतिविधियां**

आतंकवाद की दृष्टि से आज के भारत में स्थिति जितनी कष्टप्रद और चिन्ताजनक है, वैसी स्थिति इसके पहले कभी भी नहीं थी। भारत में आतंकवाद की शुरूआत तो स्वतन्त्रता के तुरन्त बाद ही हो गई। आतंकवाद का उदय उत्तर-पूर्वी भारत (नागालैण्ड, मिजोरम, मणिपुर) में हुआ। सर्वप्रथम, आतंकवादी संगठन सम्भवतया अंगामी जापू फिजो की 'नागा नेशनल कौंसिल' था। इस संगठन के माध्यम से नागा विद्रोहियों ने नागालैण्ड की भारत से पृथकता और स्वाधीनता के लिए गुरिल्ला युद्ध शुरू कर दिया। शीघ्र ही विशेश्वरसिंह की 'पीपुल्स लिबरेशन आर्मी' (पी.एल.ए.) और लालडेंगा की 'मिजो नेशनल फ्रण्ट' (एम.एन.एफ.) की गतिविधियों के कारण आतंकवाद मणिपुर और मिजोरम में भी फैल गया।

लगभग 20 वर्षों तक की आतंकवादी गतिविधियों से कोई खतरा पैदा नहीं हुआ, लेकिन सातवें दशक में 'शहरी आतंकवाद' तब उजागर हुआ, जबकि 'पी.एल.ए.' ने महत्वपूर्ण ठिकानों और हस्तियों पर हमले किए। बाद में यह रास्ता 'मिजो नेशनल फ्रण्ट' ने भी अपनाया और राजधानी ऐजल पर कई बार हमले किए गए। इन आतंकवादियों द्वारा प्रमुख रूप से 'गुरिल्ला लड़ाई' की पद्धति को अपनाया जा रहा था। इन आतंकवादियों को पड़ोसी देश (चीन और बर्मा) से शस्त्र सामग्री, गुरिल्ला युद्ध का सैनिक प्रशिक्षण और कठिनाई के समय शरण की सुविधा प्राप्त होती रही है और इसी कारण भारत सरकार अपने समस्त प्रयत्नों के बावजूद इन आतंकवादियों पर आंशिक नियंत्रण ही स्थापित कर सकी। भारत सरकार द्वारा इन क्षेत्रों की जनता की कठिनाइयों को समझने और 'समझौता वार्ता' के प्रयत्न भी किए गए। 'कठोरता और सद्भावना' के इस दोहरे दृष्टिकोण के परिणामस्वरूप स्थिति पर काफी कुछ सीमा तक नियन्त्रण स्थापित किया जा सका। 1985 के मध्य में लालडेंगा सहित 'मिजोरम राष्ट्रीय मोर्चे' के लगभग 600 कट्टर विरोधियों ने हथियारों सहित आत्म-समर्पण कर दिया और 'राजीव-लालडेंगा समझौते' के साथ ही मिजोरम में आतंकवाद की स्थिति लगभग समाप्त हो गई है।

**पंजाब में आतंकवाद-** भारत में आतंकवादी कार्यवाही का अधिक चिन्ताजनक और अधिक बदतर रूप 'सिख आतंकवाद' के रूप में देखा गया। यह स्थिति 1983 से चली आ रही है। भिण्डरावाले के संरक्षण में सिखों के उग्रवादी संगठनों- 'ऑल इंडिया सिख स्टुडेन्ट्स फेडरेशन' (AISSF) और 'दशम रेजीमेण्ट' तथा 'बब्बर खालसा' के सदस्यों ने देश में आतंकवाद की लहर छेड़ दी। वे लोग मोटर साइकिल पर सवार होकर हत्यायें करने, बम विस्फोट करने और एक विशेष सम्प्रदाय के निर्दोष लोगों की सामूहिक हत्याएं करने की ओर संलग्न हुए। हत्याओं के इस क्रम में निरंकारी बाबा, लाला जगत नारायण, रमेशचन्द्र, पुलिस डी.आई.जी. अटवाल, हरबंस सिंह मनचन्दा, प्रो. तिवारी और भूतपूर्व जत्थेदार ज्ञानी प्रतापसिंह और 1989 में अकाली सांसद रजिन्दर कौर सहित अनेक व्यक्तियों की हत्या की गई। इसके अतिरिक्त सिख आतंकवादियों ने सैकड़ों लोगों की जान ले ली। 1981 में दो सिख नौजवान इण्डियन एयरलाइन्स



के एक विमान का अपहरण कर उसे लाहौर ले गए। 1984 में जब सिख आंतकवादियों की गतिविधियां अपने शीर्ष पर पहुंच गईं, तो सरकार ने 'ऑपरेशन ब्लू स्टार' संगठित कर आतंकवाद के केन्द्र 'स्वर्णमंदिर' में सेना का प्रवेश करवाया। इस कार्यवाही में बड़ी संख्या में सिख आतंकवादियों को गिरफ्तार किया गया और सेना ने पंजाब के ग्रामीण इलाकों में 'आंतकवादियों की रीढ़' तोड़ दी है, परन्तु यह बात उस समय गलत साबित हुई जब 30 अक्टूबर, 1984 को सिख आतंकवाद से जुड़े हुए श्रीमती गांधी के ही दो अंगरक्षकों ने श्रीमती गांधी की हत्या कर दी। श्रीमती गांधी का नाम 'ऑपरेशन ब्लू स्टार' के बाद सिख आतंकवादी ग्रुपों की हत्या सूची में शामिल था।

सैनिक कार्यवाही भी 'सिख आतंकवाद' को कुछ समय के लिए ही रोक पाई और मई 1985 के दूसरे सप्ताह में 'ट्रांजिस्टर बम' के रूप में आतंकवाद का सर्वाधिक घृणित रूप सामने आया। दिल्ली और उत्तर भारत के अन्य कुछ क्षेत्र बम विस्फोटों से हिल उठे और इन बम विस्फोटों में लगभग 100 व्यक्ति मारे गए। इसी काल में कुछ राजनीतिक हत्याएं भी की गईं।

देश के नवीन राजनीतिक नेतृत्व द्वारा सोचा गया कि केवल कठोरता का व्यवहार आतंकवाद को समाप्त नहीं कर सकता और 'कठोरता तथा सद्भावना' के आधार पर मूल समस्या को हल किया जाना चाहिए। इस नीति के आधार पर 24 जुलाई, 1985 को प्रधानमंत्री राजीव गांधी और लोंगोवाल के बीच 'पंजाब समझौता' सम्पन्न हुआ, लेकिन इस समझौते के बाद भी आतंकवादी क्रम जारी रहा और आतंकवादी प्रवृत्ति ने ही 20 अगस्त, 1985 को गुरुद्वारे में ही संत लोंगोवाल की हत्या कर दी। आतंकवादियों द्वारा पंजाब के मुख्यमन्त्री बेअंत सिंह की हत्या (31 अगस्त, 1995) ने एक बार फिर समूचे राष्ट्र को झकझोर दिया है। फरवरी 1992 में चुनावों के बाद बेअंत सिंह पंजाब में शांति बहाल करने में लगे हुए थे। उन्होंने पंचायतों और स्थानीय संस्थाओं के चुनाव करवाये, राजनीतिक प्रक्रिया बहाल हुई और वर्षों से ठप्प व्यापार-उद्योग चालू हुए। उन्होंने लोगों को आश्वासन दिया कि आतंकवादियों के अलगाववादी खेल को वे सफल नहीं होने देंगे, लेकिन लगता है आज पंजाब पुनः आतंकवादी मार्ग की ओर धकेला जा रहा है।

**जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद-** जम्मू-कश्मीर राज्य में भी 1987 से ही आतंकवाद की स्थिति बनी हुई है। इस क्षेत्र में प्रमुख रूप से तीन संगठन आतंकवाद में संलग्न हैं : जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रण्ट (JKLF), कश्मीर लिबरेशन आर्मी (KLA) हिजबुल मुजाहिद्दीन और जमाते तुबला। कुछ आतंवादी संगठन और उनके सदस्य अपना उद्देश्य जम्मू-कश्मीर राज्य के लिए स्वतन्त्र सम्प्रभु राज्य की स्थिति प्राप्त करना बतलाते हैं और कुछ का अघोषित उद्देश्य जम्मू-कश्मीर राज्य का पाकिस्तान में विलय है। इन आतंकवादियों द्वारा लंदन में भारत के राजनयिक आर.एम. म्हात्रे का अपहरण और उनकी हत्या की गई। इस क्षेत्र में भी आतंकवादी अपहरण, लूटमार, बम-बिस्फोट और हत्या, आदि कार्यों को अपनाते हुए आतंक स्थापित करने में संलग्न हैं और ये आतंकवादी भी पाकिस्तान से भरपूर सहायता और प्रोत्साहन प्राप्त कर रहे हैं। 1989 में भारत सरकार के गृहमन्त्री मुफ्ती मोहम्मद सईद की पुत्री के अपहरण के बाद तो इन्होंने उच्च पदस्थ व्यक्तियों के अपहरण और हत्या का मार्ग बहुत तीव्रता के साथ अपना लिया है। आजकल विदेशी

पर्यटकों का अपहरण कर आतंकवादी गुट सरकार से सौदेबाजी भी करने लगे हैं। एक चिन्ताजनक तथ्य यह है कि 1990 के मध्य तक आतंकवाद कश्मीर क्षेत्र तक सीमित था, इसके बाद आतंकवाद जम्मू क्षेत्र में पैर पसारने लगा है। भारत सरकार स्थिति को नियन्त्रित करने के लिए प्रयत्नशील है और यह भी तथ्य है कि सामान्य जनता आतंकवाद से तंग आ चुकी है। शासन स्थिति को नियन्त्रित करने के लिए प्रयत्नशील है, लेकिन अब तक उसे अपने इस लक्ष्य में विशेष सफलता प्राप्त नहीं हुई है।

**असम, उत्तरी-पूर्वी राज्यों, गोरखालैण्ड और झारखण्ड, आदि क्षेत्रों में आतंकवाद-** असम में 1947 से ही पाकिस्तान के पूर्वी क्षेत्र (पूर्वी बंगाल) से व्यक्तियों का आना जारी था, जो कभी कम और कभी अधिक 1970 तक जारी रहा। 1971 में स्वाधीन बंगलादेश के लिए आन्दोलन और बाद में स्वाधीन बंगलादेश की स्थापना से असम में आने वाले अवैध घुसपैठियों की संख्या लाखों में हो गई। विदेशियों की अवैध और बहुत बड़ी संख्या में घुसपैठ से असमवादियों ने अपने सामाजिक-आर्थिक जीवन और अपनी जातीय तथा सांस्कृतिक पहचान के लिए संकट महसूस किया। अतः 1979 से ही अखिल असम छात्र संघ और अखिल असम गण संग्राम परिषद् ने विदेशियों को असम से वापस भेजने की मांग को लेकर आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया। इस आन्दोलन को जनता का भारी समर्थन प्राप्त हुआ। अधिकांशतया तो यह आन्दोलन शान्तिपूर्ण ही रहा, लेकिन कुछ आतंकवादी घटनाएं और एक बड़ी आतंकवादी घटना भी हुई। ऐसी एक बड़ी घटना थी, फरवरी 1983 में नेल्ली का नरसंहार। अन्त में 15 अगस्त, 1985 को 'असम समझौता' सम्पन्न हुआ और असम की स्थिति में लगभग चार वर्ष के लिए तो निश्चित रूप से सुधार हुआ।

**'उल्फा' (ULFA) और असम में आतंकवाद-** 1989 के अन्तिम महीनों से ही असम में एक नया आतंकवादी संगठन 'उल्फा' खड़ा हो गया। इस संगठन ने अपना लक्ष्य घोषित किया है 'असम के सम्प्रभु राज्य की स्थापना' अर्थात् 'भारतीय संघ से अलग सम्प्रभु असम राज्य की स्थापना।' उल्फा ने हिंसक आन्दोलन, जबरन वसूली, अपहरण और हत्या के तौर-तरीके अपना लिए। 1991 के प्रारम्भ से ही उल्फा की आतंकवादी गतिविधियों में बहुत अधिक वृद्धि हो गई। भारत सरकार ने उल्फा की आतंकवादी गतिविधियों से प्रभावित क्षेत्र को 'अशान्त क्षेत्र' (Disturbed Area) घोषित किया और उल्फा के विरुद्ध 'ऑपरेशन बजरंग' के नाम से सैनिक कार्यवाही की, लेकिन शान्ति स्थापित करने के कार्य में आंशिक सफलता ही प्राप्त की जा सकी। ऑपरेशन बजरंग के बाद उल्फा आतंकवादियों के विरुद्ध सितम्बर 1991 में ही एक अन्य सैनिक अभियान 'ऑपरेशन राइनो' संचालित किया गया। एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि सेना अपने इस अभियान में 'उल्फा आतंकवाद' के विरुद्ध जन सहयोग प्राप्त करने में सफल रही है। 'ऑपरेशन राइनो' एक वर्ष की अवधि में अच्छी सफलता प्राप्त कर पाया है। असम में हितेश्वर सैकिया के नेतृत्व में 1991 में जिस लोकप्रिय सरकार का गठन हुआ, उसने असम में आतंकवादी गतिविधियों को नियन्त्रित करने में आंशिक सफलता अवश्य ही प्राप्त की है। काफी बड़ी संख्या में आतंकवादियों ने शस्त्र सहित मुख्यमंत्री सैकिया और असम के राजनीतिक पदाधिकारियों व



प्रशासनिक अधिकारियों के सम्मुख आत्मसमर्पण किया है और यह निश्चित रूप से स्वागत योग्य स्थिति है।

**नक्सलवादी आतंकवाद-** नक्सलवादी आतंकवाद का आशय है, माओत्से तुंग के क्रान्तिकारी (हिंसक) वामपन्थी दर्शन से प्रेरित आतंकवाद, जो अपना लक्ष्य बतलाता है : सामाजिक-आर्थिक न्याय पर आधारित व्यवस्था की स्थापना। सर्वप्रथम 1967-71 के वर्षों में बंगाल, बिहार और पं. बंगाल, आदि राज्यों में नक्सलवाद के रूप में आतंकवाद सामने आया। इसका सबसे अधिक जोर प. बंगाल में था और विभिन्न क्षेत्रों में इसके प्रमुख नेता थे : प. बंगाल में चारु मजूमदार और कनु सान्याल, आन्ध्र में बी. सत्यनारायण और टी. नागीरेड्डी, केरल में कुनीकल नारायणन और के.पी.आर. गोपालन, आदि। नक्सलवादियों ने लोकतान्त्रिक राजनीति का पूर्ण विरोध करते हुए जनक्रान्ति पर बल दिया और इसके लिए सबसे प्रमुख तरीका अपनाया गया- भूमिहीन मजदूरों को संगठित कर 'गुरिल्ला युद्ध पद्धति के आधार पर भूमिपतियों के विरुद्ध खूनी संघर्ष।'

नक्सलवादी आतंकवाद के विरुद्ध शासन द्वारा बल-प्रयोग किया गया। इसके साथ-साथ सर्वोदयी नेता जयप्रकाश नारायण और अन्य कुछ व्यक्तियों ने नक्सलवादी हिंसा से ग्रस्त क्षेत्रों में स्वयं जाकर सामान्य जनता को इस बात के लिए प्रेरित किया कि न केवल वे नक्सलवाद से दूर रहें, वरन् उनके द्वारा नक्सलवाद और सशस्त्र क्रान्ति का विरोध किया जाए। जयप्रकाश नारायण ने भारी साहस का परिचय देते हुए नक्सलवाद हिंसा के कुछ प्रमुख नायकों से भी सम्पर्क स्थापित किया और उनमें से कुछ को वे हिंसा से दूर करने में सफल रहे। शासन द्वारा बल-प्रयोग और जयप्रकाश जैसे व्यक्तियों के सद्भावना प्रयत्नों से 1972-73 तक नक्सलवादी आतंकवाद का यह दौर एक-बारगी तो बहुत शिथिल पड़ गया, लेकिन इस सदी के नवें दशक और अन्तिम दशक में नक्सलवाद ने पुनः सिर उठाया है। वर्तमान समय में आन्ध्र, बिहार, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में कम-अधिक अंशों में नक्सलवादी हिंसा की स्थिति है, विशेष रूप से आन्ध्र प्रदेश का तेलंगाना क्षेत्र नक्सलवादी हिंसा से बहुत अधिक ग्रस्त है। नक्सलवादी संगठन 'पीपुल्स वार ग्रुप' (Peoples War Group) आन्ध्र में विशेष रूप से सक्रिय है। ये आतंकवादी भूमिपतियों की भूमि पर जबरन कब्जा, भूमिपतियों और शासन से जुड़े व्यक्तियों का अपहरण और हत्या, आदि तौर-तरीकों को अपना रहे हैं। यह आतंकवाद भूमिपतियों द्वारा किए गए अन्याय के प्रति आक्रोश है और इसने भारी अन्याय की प्रतिक्रिया के रूप में जन्म लिया है।

**तमिलनाडु में आतंकवाद-** आजकल तमिलनाडु के तटवर्ती क्षेत्र में कई जगह 'तमिल टाइगर्स' का राज है। 1991 में चन्द्रशेखर सरकार ने लिट्टे की गतिविधियों में राज्य सरकार की सांठ-गांठ पर करुणानिधि शासन को बर्खास्त किया था। लिट्टे भी बम-बंदूक की संस्कृति में विश्वास करता है। यदि समय रहते लिट्टे की गतिविधियों पर रोक नहीं लगी तो स्थिति बिगड़ सकती है।

## भारत में आतंकवाद की रोकथाम हेतु किए गए उपाय

उत्तरी-पूर्वी भारत में तो 35 वर्षों से आतंकवाद की स्थिति चली आ रही थी, पिछले लगभग 10 वर्षों से पंजाब और दिल्ली, आदि में उग्रवादी सिखों के आतंकवाद का जो रूप सामने आया, विशेषतया मई 1985 में दिल्ली और उत्तरी भारत के अन्य नगरों में जो बम विस्फोट

हुए, उसने सरकार को कानून निर्माण और प्रशासनिक क्षेत्र में आतंकवाद के विरुद्ध कठोर कदम उठाने के लिए बाध्य किया।

**आतंकवाद और विघटनकारी गतिविधि (निरोधक) कानून (मई 1985)**- आतंकवाद गतिविधियों से निपटने के लिए वर्तमान कानूनों में संशोधन कर उन्हें अधिक सख्त बनाया गया है और सरकार को आतंकवाद से लड़ने के लिए व्यापक अधिकार दिए गए हैं।

पहला संशोधन भारतीय दण्ड संहिता की धारा 124 (क) में किया गया है जिसमें सरकार के विरुद्ध किए गए कार्य को राजद्रोह माना गया है। संशोधन के आधार पर सरकार शब्द के आगे संसद, न्यायालय और विधान मण्डल शब्द जोड़ दिए जाएंगे और इन संस्थानों के प्रति नफरत पालने की कोशिश भी राजद्रोह मानी जाएगी। राजद्रोह के लिए सजा बढ़ाकर उम्र कैद कर दी गई है।

दूसरा संशोधन शस्त्र कानून में किया गया है। अशान्त क्षेत्रों में जिस किसी के पास बिना लाइसेंस या अधिकार के शस्त्र पाए जायेंगे, उन्हें तीन साल की सजा दी जाएगी, पहले यह सजा सिर्फ 6 महीने थी।

अशान्त क्षेत्रों में निवारक नजरबन्दी कानूनों के दायरे को और बढ़ा दिया गया है। अब ऐसी व्यवस्था की गई है कि पुलिस के राजपत्रित अधिकारियों को अधिक प्रभावशाली ढंग से कार्य करने के लिए कुछ और अधिकार भी दिए जा सकते हैं।

इन सबके अतिरिक्त उपर्युक्त कानून में ऐसी व्यवस्था की गई है कि अब अगर किसी आतंकवादी कार्यवाही के फलस्वरूप किसी की जान जाती है तो अपराधी को मृत्युदण्ड की सजा दी जा सकेगी। बहस के दौरान प्रतिपक्षी नेताओं ने अपनी उस पुरानी आशंका को दोहराया कि सरकार द्वारा कानून का प्रयोग राजनीतिक उद्देश्यों से कर सकती है। आशंका निराधार नहीं है और इस सम्बन्ध में सतर्कता बरते जाने की आवश्यकता है।

**आतंकवाद विरोधी विशेष पुलिस दल और अन्य सैन्य दल की व्यवस्था**- आतंकवाद के विरुद्ध कार्यवाही के लिए कारगर आतंकवाद विरोधी संगठन जरूरी है। आतंकवाद के बढ़ते खतरे से निपटने के लिए अनेक देशों ने विशेष इकाइयों का गठन किया है। प. जर्मनी ने G.S.G.-9, ब्रिटेन ने S.A.S. और अमरीका ने ग्रीन बेरेटस तथा रैंजर्स का गठन किया है। इजराइल के पास भी आतंकवाद से निपटने के लिए विशेषीकृत 'कमाण्डो बल' है। ये आतंकवाद विरोधी कमाण्डो कितने समक्ष हैं, इसका पता तब चला जबकि इजरायली कमाण्डो ने एंटेबी हवाई अड्डे पर धावा बोलकर अपने बन्धकों को मुक्त करा लिया।

भारत में आतंकवाद से निपटने के लिए कोई कारगर संगठन नहीं है। आतंकवादी गतिविधियों से निपटने के लिए गत वर्ष 'केन्द्रीय सचिव मण्डल' का जो अलग से एक 'सेल' (Cell) बनाया गया था, वह भी बहुत कारगर सिद्ध नहीं हुआ है। यह सेल 'रा' (RAW) के एक अभूतपूर्व प्रधान के तहत कार्यरत है।

हमारे अर्द्ध-सैनिक बल जैसे केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (R.P.F.), सीमा सुरक्षा बल (B.S.F.), असम रायफल्स, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (I.T.B.P.) और केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (C.I.A.F.) भी आतंकवाद की रोकथाम में बुरी तरह नाकाम रहे हैं। मुख्यतया केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल और असम रायफल्स आतंकवाद विरोधी कार्यवाहियों में संलग्न हैं और यह तथ्य है कि हमारे इन अर्ध-सैनिक बल के पास विशेषीकृत तकनीकी और अत्याधुनिक हथियार नहीं है। अर्द्ध-सैनिक बलों की मौजूदा शक्ति बहुत अपर्याप्त है, फलस्वरूप अनेक बार



सेना को बुलाना पड़ता है। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस की कार्यकुशलता पर बुरा असर डालने वाला एक तथ्य यह है कि अर्द्ध-सैन्य बल को नागरिक (Civil) प्रशासन के जबरदस्त दबावों के तहत काम करना पड़ता है।

सरकार अब आतंकवाद से संघर्ष के लिए विशेष तौर पर बनाए गए राष्ट्रीय सुरक्षा गार्डों को बढ़ाने पर जोर दे रही है। 5,000 कमाण्डो की क्षमता वाले इस आतंकवाद विरोधी विशेष बल के कमाण्डो पहले ही विभिन्न सैन्य इकाइयों में प्रशिक्षण ले रहे हैं। 'स्पेशल फ्रण्टियर फोर्स' की तीन कम्पनियां, जिनके कमाण्डो ने आपरेशन ब्लू स्टार में भाग लिया था, राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड में मिला दी गई हैं। अतः राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड के आतंकवाद के विरुद्ध अधिक सक्षम होने की आशा की जा सकती है।

## आतंकवाद की समाप्ति या आतंकवाद को नियन्त्रित करने के उपाय

भारतीय लोकतन्त्र और स्वयं भारत राष्ट्र के लिए आतंकवाद एक गम्भीरतम चुनौती है। आतंकवाद सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक, विविध आयामों वाली एक गम्भीर समस्या है, अतः इसे नियन्त्रित करने के लिए इन सभी स्तरों पर प्रयत्न किए जाने की आवश्यकता है। आतंकवाद की समाप्ति और यदि समाप्ति सम्भव न हो तो इसे नियन्त्रित करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर बहुत कुछ किया जाना है। इस सम्बन्ध में प्रमुख सुझाव इस प्रकार हैं:

(1) **राष्ट्रीय समस्याओं पर आम-सहमति तैयार करना**- आतंकवाद केवल कानून और प्रशासनिक व्यवस्था का प्रश्न नहीं, वरन् इसका एक प्रमुख पहलू राजनीतिक है। अतः आतंकवाद से निपटने के लिए राजनीतिक स्तर पर प्रयास किए जाने चाहिए। 'असम समस्या' हो या 'पंजाब समस्या' अथवा 'जम्मू-कश्मीर का प्रश्न' आवश्यकता इस बात की है कि 'दलीय हित-अहित' और 'चुनावी हित-अहित' को ध्यान में न रखते हुए समस्या के प्रारम्भिक स्तर पर ही पूरी इच्छा और सामर्थ्य के साथ उसका समाधान ढूंढा जाए। समस्याओं को टालने से वे हल नहीं हो जातीं, वरन् गम्भीर रूप ले लेती हैं, राष्ट्रीय समस्याओं को दलीय राजनीति से ऊपर रखते हुए उनके सम्बन्ध में 'आम सहमति' को अपनाए जाने की आवश्यकता है।

(2) **कानूनी और न्याय व्यवस्था में महत्वपूर्ण सुधार**- हमें कानूनी और न्याय व्यवस्था में क्रान्तिकारी सुधार करने होंगे। आज से 100 वर्ष पूर्व ब्रिटेन को आदर्श मानकर अपनाई गई कानूनी और न्याय व्यवस्था इतनी लम्बी, जटिल और खर्चीली है कि साधन सम्पन्न अपराधी के लिए 'कानून और न्याय के शिकंजे से मुक्त रहना' एक सरल कार्य हो गया है। विडम्बना यह है कि हम 21 वीं सदी में जाने की बात करते हुए 19 वीं सदी की इस 'उबाऊ व्यवस्था' का भार ढो रहे हैं। आतंकवाद को नियन्त्रित करने के लिए 'अपराधी के लिए लगभग तत्काल दण्ड' की व्यवस्था को अपनाते हुए साधारण जनता के मन-मस्तिष्क में कानून और न्याय व्यवस्था के प्रति विश्वास और 'अपराधी तत्वों में अनिवार्य रूप से भय' उत्पन्न करना होगा।

(3) **पुलिस और सुरक्षा बलों का आधुनिकीकरण**- पुलिस और सुरक्षा बलों का आधुनिकीकरण किया जाना चाहिए। आज स्थिति यह है कि 'केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल' के जवान जहां पुरानी रायफलों से युक्त होते हैं वहां आतंकवादियों के पास अत्याधुनिक हथियार होते हैं। पुलिस और सुरक्षा बलों की सेवा शर्तों में भारी सुधार भी जरूरी है। यदि हम उनके

लिए मकान की व्यवस्था भी नहीं कर सकते, तो कठिन परिस्थितियों में उनसे कर्त्तव्य-पालन की आशा कैसे कर सकते हैं? इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि आतंकवाद को दबाने के नाम पर 'पुलिस राज' की स्थिति न स्थापित हो जाए। 'पुलिस राज' की स्थिति से आतंकवाद को बढ़ावा ही मिलता है। वस्तुतः समस्त प्रशासनिक व्यवस्था में सुधार किए जाने की आवश्यकता है। आज स्थिति यह है कि माफिया, तस्कर और सभी प्रकार के अपराधी तत्वों ने आतंकवाद का बाना धारण कर लिया है। प्रशासनिक व्यवस्था को कुशल बनाकर माफिया, तस्कर और अपराधी तत्वों को आतंकवादी तत्वों से अलग करना होगा।

(4) **आतंकवाद के विरुद्ध शासन और जनता के बीच व्यापक सहयोग-** आतंकवाद को नियन्त्रित करने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि आतंकवाद के विरुद्ध सरकार और जनता के बीच व्यापक सहयोग स्थापित किया जाए। जन सहयोग के बिना किसी भी सरकार के लिए आतंकवाद को नियन्त्रित कर पाना सम्भव नहीं हो सकता, अतः इस दिशा में सरकार और जनता को मिलाकर काम करना होगा। हमें लोगों को आतंकवाद के भयंकर परिणाम समझाने होंगे, उनमें जन जागृति पैदा करनी होगी और उनमें आतंकवाद से संघर्ष के लिए इच्छा और शक्ति पैदा करनी होगी। इस प्रसंग में एक सुझाव 'अखिल भारतीय शान्ति सेना' के गठन का दिया जा रहा है, इसे सही रूप में अपनाए जाने की जरूरत है।

(5) **राजनीतिक स्तर पर कार्य-** इस प्रसंग में एक महत्वपूर्ण सुझाव यह है कि आतंकवाद का जवाब आतंकवाद से देने पर आतंकवाद समाप्त नहीं हो जाता, वरन् कई बार उसमें कई गुना वृद्धि हो जाती है। पंजाब में आतंकवाद या सिख आतंकवाद के प्रसंग में विशेष रूप से इस बात को समझने की आवश्यकता है। इस देश के बहुसंख्यक वर्ग द्वारा इस सत्य को समझ लिया जाना चाहिए कि सिख आतंकवाद केवल गिने-चुने सिखों की गतिविधियों का परिणाम है और आम सिख इस आतंकवादी स्थिति से उतने ही दुःखी हैं जितना बहुसंख्यक वर्ग हो सकता है। अतः सिख आतंकवाद को नियन्त्रित करने का एक ही मार्ग है, 'प्रत्येक कीमत पर हिन्दू-सिख भाईचारे को बनाए रखना।' बहुसंख्यक वर्ग और अल्पसंख्यक वर्ग, दोनों को ही व्यापक दृष्टिकोण अपनाना होगा और इस प्रसंग में बहुसंख्यक वर्ग पर विशेष दायित्व है।

(6) **भूमि सुधार कानूनों को लागू करना और आर्थिक-सामाजिक न्याय की प्राप्ति-** भारत में आतंकवाद के एक विशेष रूप-नक्सलवादी आतंकवाद का सबसे प्रमुख कारण यह है कि हमने अब तक आर्थिक-सामाजिक न्याय के केवल नारे लगाए हैं, इस सम्बन्ध में कोई ठोस कार्य नहीं किया गया या नहीं किया जा सका। विभिन्न राज्यों के विधानमण्डलों ने गत लगभग 40 वर्षों में जो भूमि-सुधार कानून पारित किए, यदि उन कानूनों में कोई कमियां हैं, तो सबसे पहले उन्हें दूर किया जाना चाहिए। सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि ये कानून केवल कागजों पर नहीं रहें, वरन् उन्हें सही भावना के साथ और सम्पूर्ण रूप से लागू किया जाए। नक्सलवादी आतंकवाद को नियन्त्रित करने के लिए यह नितान्त आवश्यक है।

इसके अतिरिक्त आतंकवाद पनपने का एक बहुत बड़ा कारण बेरोजगारी और विशेषतया शिक्षित वर्ग में बेरोजगारी है। आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा को रोजगार के साथ जोड़ा जाए और प्रतिवर्ष करोड़ों व्यक्तियों के लिए रोजगार जुटाए जायें। आर्थिक असमानता को समाप्त



तो नहीं किया जा सकता, लेकिन उसे नियन्त्रित करना होगा और आर्थिक-सामाजिक न्याय की दिशा में चरण बढ़ाने होंगे।

(7) **संवैधानिक प्रावधानों के दुरुपयोग पर प्रभावी रोक-** आज पंजाब तथा जम्मू-कश्मीर राज्य में जो स्थिति है उसका एक बड़ा कारण यह है कि कुछ परिस्थितियों में स्वयं केन्द्रीय सरकार ने संवैधानिक प्रावधानों, विशेषतया राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू करने की व्यवस्था का दलगत हितों की दृष्टि से प्रयोग किया। सरकारिया आयोग ने अपनी रिपोर्ट (नवम्बर 1987) में अनुच्छेद 356 के आधार पर राष्ट्रपति शासन लागू करने की व्यवस्था का दुरुपयोग रोकने की आवश्यकता बल दिया है और इस सम्बन्ध में कुछ सुझाए दिए हैं : प्रथम, राज्य में राष्ट्रपति शासन अन्तिम विकल्प के रूप में ही लागू किया होना चाहिए, जबकि राज्य का कामकाज संविधान में दी गई व्यवस्था के अनुसार चलाना असम्भव हो जाए। राष्ट्रपति शासन लागू करने से पहले केन्द्र सरकार द्वारा संबंधित राज्य को इस बारे में चेतावनी देकर स्पष्टीकरण मांगा जाना चाहिए और निर्णय लेते समय इस स्पष्टीकरण पर विचार करना चाहिए। द्वितीय, राष्ट्रपति शासन लागू करने के पीछे जो कारण हैं, उन्हें स्पष्ट रूप से बतलाया जाना चाहिए। राज्यपाल द्वारा इस प्रसंग में राष्ट्रपति को भेजी गई रिपोर्ट भी संसद में रखी जानी चाहिए। तथ्य यह है कि यदि अनुच्छेद 356 के दुरुपयोग को रोकने की प्रभावी व्यवस्था नहीं की गई, तो आतंकवादी और अलगाववादी तत्व बहुत अधिक शक्ति प्राप्त करते रहेंगे।

(8) **शासन की प्रतिष्ठा को पुनर्स्थापित करना-** पिछले लगभग 25 वर्षों में शासन, चाहे वह केन्द्रीय शासन हो या राज्य शासन, की प्रतिष्ठा का बहुत अधिक क्षय हुआ है। अतः शासन की प्रतिष्ठा को पुनर्स्थापित करना होगा और इस सम्बन्ध में कुछ सुझाव हैं : प्रथम, भारतीय संविधान के निर्माताओं ने भारत में 'सहयोगी संघवाद' की कल्पना की थी और आज इस 'सहयोगी संघवाद' को अपनाना नितान्त आवश्यक हो गया है। केन्द्र और राज्य स्तर पर अलग-अलग राजनीतिक दलों की सरकारें होना नितान्त स्वाभाविक हैं, लेकिन इस स्थिति के कारण 'संघ-राज्य संबंधों के सुचारु संचालन' में कोई बाधा नहीं आनी चाहिए। आवश्यकता इस बात की है कि केन्द्र सरकार और राज्य एक-दूसरे की कठिनाइयों को समझें और राष्ट्रीय समस्याओं को हल करने की दिशा में एक-दूसरे के साथ अधिकतम सीमा तक सहयोग करें। द्वितीय, आज स्थिति यह है कि आतंकवादी तत्व केन्द्र सरकार पर भी दबाव डालने की कोशिश करते हैं और इसमें कई बार वे सफल भी हो जाते हैं।

(9) **भारतीय मामलों में पाकिस्तान का हस्तक्षेप समाप्त करने हेतु प्रयत्न-** भारत में आतंकवाद का एक बहुत प्रमुख कारण पड़ोसी राज्य पाकिस्तान द्वारा भारत के आतंकवादियों को दिया जाने वाला भारी प्रोत्साहन है। हमें भारतीय मामलों में पाकिस्तान की इस दखलंदाजी को समाप्त करने के लिए सभी सम्भव प्रयत्न करने होंगे। सर्वप्रथम, तो पाकिस्तान के साथ लगने वाली समस्त भारतीय सीमा को 'सील' कर दिया जाना चाहिए। इस कठिन और व्यय साध्य कार्य को करना ही होगा। द्वितीय, हमें अपने इस पड़ोसी देश को समझाना होगा कि भारतीय मामलों में दखलंदाजी उसके लिए भयानक परिणामों को जन्म देगी। मैत्री के स्वर में कही गई बात को यदि पड़ोसी देश उचित महत्व नहीं देता, तो उसे चेतावनी देनी होगी तथा नितान्त

आवश्यक हो जाने पर उसे 'शक्ति की भाषा' में समझाना होगा। इस प्रसंग में हमें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद को प्रोत्साहित करने वाले देश के विरुद्ध जनमत जागृत करना होगा।

यह तथ्य है कि भारत के साथ टकराव पाकिस्तान के हित में नहीं है, अतः यदि भारत ने इस प्रसंग में दृढ़ता का परिचय दिया, तो पाकिस्तान इस सम्बन्ध में स्वयं को संयमित और नियन्त्रित करने के लिए बाध्य होगा।

**प्रश्न 8 कारगिल युद्ध 1999 के घटनाक्रम का विवरण देते हुए इसके कारणों एवं परिणाम का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर-** कारगिल युद्ध, जिसे ऑपरेशन विजय के नाम से भी जाना जाता है, भारत और पाकिस्तान के बीच मई और जुलाई 1999 के बीच कश्मीर के कारगिल जिले में हुए सशस्त्र संघर्ष का नाम है। पाकिस्तान की सेना और कश्मीरी उग्रवादियों ने भारत और पाकिस्तान के बीच की नियन्त्रण रेखा पार करके भारत की जमीन पर कब्जा करने की कोशिश की थी। पाकिस्तान ने दावा किया कि लड़ने वाले सभी कश्मीरी उग्रवादी हैं, लेकिन युद्ध में बरामद हुए दस्तावेजों और पाकिस्तानी नेताओं के बयानों से सिद्ध हुआ कि पाक की सेना प्रत्यक्ष रूप से इस युद्ध में शामिल थी। लगभग 30,000 भारतीय सैनिक और करीब 5000 घुसपैठिए इस युद्ध में शामिल थे। यह युद्ध ऊंचाई वाले इलाके पर हुआ और दोनों देशों की सेनाओं को लड़ने में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। परमाणु बम बनाने के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच हुआ यह पहला सशस्त्र संघर्ष था। भारत ने कारगिल युद्ध जीता।

**घटनाक्रम-** 3 मई, 1999 को एक चरवाहे ने भारतीय सेना को कारगिल में पाकिस्तान की सेना के घुसपैठ कर कब्जा जमा लेने की सूचना दी। 5 मई को भारतीय सेना की पेट्रोलिंग टीम जानकारी लेने कारगिल पहुँची तो पाकिस्तानी सेना ने उन्हें पकड़ लिया और उनमें से 5 की हत्या कर दी। 9 मई को पाकिस्तानियों की गोलाबारी से भारतीय सेना का कारगिल में मौजूद गोलाबारूद का स्टोर नष्ट हो गया। 10 मई 99 को पहली बार लद्दाख का प्रवेश द्वार यानी द्रास, काकसार और मुश्कोह सेक्टर में पाकिस्तानी सैनिकों को देखा गया। 26 मई को भारतीय वायुसेना को कार्यवाही के लिए आदेश दिया गया। 27 मई को कार्यवाही में भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान के विरुद्ध मिग 27 और मिग 29 का भी इस्तेमाल किया और 26 जुलाई 99 को कारगिल युद्ध अधिकारिक तौर पर समाप्त हो गया। भारतीय सेना ने पाकिस्तानी घुसपैठियों के पूर्ण निष्कासन की घोषणा की।

**परिणाम-** पाकिस्तान में इस युद्ध के कारण राजनैतिक और आर्थिक अस्थिरता बढ़ गई और नवाज शरीफ की सरकार को हटाकर परवेज मुशर्रफ राष्ट्रपति बन गए। दूसरी ओर भारत में इस युद्ध के दौरान देशप्रेम का उबाल देखने को मिला और भारत की अर्थव्यवस्था को काफी मजबूती मिली। भारतीय सरकार ने रक्षा बजट और बढ़ा दिया। इस युद्ध से प्रेरणा लेकर कई फिल्में बनीं जिनमें LOC कारगिल, लक्ष्य और धूप मुख्य हैं।

**कारण-** पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमन्त्री नवाज शरीफ और सेना प्रमुख जहाँगीर करामात के बीच 1998 के करीब, मतभेद बढ़ गये। करामात की सेवानिवृत्ति के पश्चात् किसे सेना प्रमुख बनाया जाये इस बात पर भी बहस चल रही थी। नवाज शरीफ ने एक आमसभा में अपने



ऊपर की गई टीका-टिप्पणी से क्रोधित होकर करामात से सेना प्रमुख पद से इस्तीफा ले लिया। जनरल शरीफ ने परवेज मुशर्रफ को सेना प्रमुख के पद पर नियुक्त किया।

**भारतीय सेना को नुकसान-** 26 जुलाई 1999 को भारत ने कारगिल युद्ध में विजय हासिल की थी। इस दिन को हर वर्ष विजय दिवस के रूप में मनाया जाता है। लगभग 2 महीने तक चला कारगिल युद्ध भारतीय सेना के साहस और जांबाजी का ऐसा उदाहरण है जिस पर हर भारतीय देशवासी को गर्व है। करीब 18 हजार फीट ऊंचाई पर कारगिल में लड़ी गई इस जंग में देश ने लगभग 727 से ज्यादा वीर योद्धाओं को खोया था वहीं 1300 से अधिक घायल हुए थे। युद्ध में 2700 पाकिस्तानी सैनिक मारे गए और 750 सैनिक जंग छोड़ कर भाग गए।

**लड़ाकू अस्त्रों का प्रयोग-** भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान के खिलाफ मिग 27 और मिग 29 का भी इस्तेमाल किया। इसके बाद जहाँ भी पाकिस्तान ने कब्जा किया था वहाँ बम गिराये गए। इसके अलावा मिग 29 की सहायता से पाकिस्तान के कई ठिकानों पर आर 77 मिसाइलों से हमला किया गया।

इस युद्ध में बड़ी संख्या में रॉकेट और बमों का इस्तेमाल किया गया। इस दौरान करीब दो लाख पचास हजार गोले दागे गए। वहीं 5,000 बम फायर करने के लिए 300 से ज्यादा मोर्टार, तोपों और रॉकेटों का इस्तेमाल किया गया।

**प्रश्न 9 आधुनिक भारत में राष्ट्रीय विकास में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति एवं उपलब्धियों पर प्रकाश डालिए।**

**उत्तर-** यदि हम राष्ट्रीय विकास में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति और उपलब्धियों की बात करें तो ये उपलब्धियाँ स्वतन्त्रता के बाद के काल में प्रमुखतः रूप से दृष्टिगोचर होती हैं। स्वतन्त्रता के बाद प्रथम प्रधानमन्त्री ने भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के लिए सुधारों की शुरुआत की। तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए विद्वानों और उद्यमियों की 22 सदस्यीय समिति द्वारा गठित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (I.I.T.) का उद्घाटन 18 अगस्त, 1951 को पश्चिम बंगाल के खड़गपुर में तत्कालीन केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री मौलाना अबुल कलाम आजाद द्वारा किया गया था। जल्द ही बॉम्बे, मद्रास, कानपुर और दिल्ली में और अधिक I.I.T. खोले गए। साथ ही 1950 के दशक के अन्त तक और 1960 के दशक की शुरुआत में क्षेत्रीय R.E.C. (अब राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (N.I.T.)) के साथ स्थापित हुए। सोवियत संघ के साथ घनिष्ठ सम्बन्धों ने भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान संगठन को तेजी से भारतीय अन्तरिक्ष कार्यक्रम विकसित करने और आगे बढ़ाने में सक्षम बनाया। 18 मई, 1974 को पोखरन में भारत द्वारा पहले परमाणु परीक्षण विस्फोट के बाद भी भारत में परमाणु ऊर्जा कायम रही।

एशिया में अनुसन्धान और विकास पर कुल व्यय का लगभग 10% भारत द्वारा किया गया। हालांकि पूर्व भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिक मन्त्री कपिल सिब्बल के अनुसार भारत विज्ञान के क्षेत्र में पिछड़ा हुआ है और विकसित देशों की तुलना में प्रौद्योगिकी में संयुक्त राज्य अमेरिका में 4651 की तुलना में भारत प्रति 10 लाख जनसंख्या पर केवल 140 शोधकर्त्ता ही हैं। इसी प्रकार भारत ने 2002-2003 में विज्ञान और प्रौद्योगिकी में 3.7 बिलियन अमेरिकी

डॉलर का निवेश किया जबकि चीन ने लगभग 4 गुना अधिक निवेश किया और U.S.A. ने भारत की तुलना में 75 गुना अधिक निवेश किया।

भारत ने 2000 और 2015 के बीच अपने वैज्ञानिक शोधपत्रों के उत्पादन में चार गुना वृद्धि की है और प्रतिवर्ष शोध पत्रों की कुल संख्या के मामले में रूस और फ्रांस को पीछे छोड़ दिया। यह दर चीन और ब्राजील से भी अधिक हो गई है। 2021 में वैश्विक (ग्लोबल) इनोवेशन इंडेक्स में भारत 46वें और 2022 में 40वें स्थान पर था।

**इतिहास- (1946-1967 के काल में)** : भारत का लक्ष्य "भारत की अर्थव्यवस्था को एक आधुनिक राज्य में परिवर्तित करना और उसे परमाणु युग में स्थापित करना था। "यह समझा गया कि भारत औद्योगिक क्रान्ति में आगे नहीं था इसलिए भारत में उच्च शिक्षा और विज्ञान और प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने का प्रयास किया गया।"

योजना आयोग (1950) ने निवेश के स्तर तय किये, प्राथमिकताएं निर्धारित कीं। कृषि और उद्योग के बीच धन का विभाजन किया। व्यावसायिक और तकनीकी कौशल पर अधिक जोर दिया गया। 1958 में रक्षा अनुसन्धान एवं विकास आयोग का गठन हुआ था। रेडियो प्रशासन की शुरुआत 1927 में हुई थी लेकिन 1930 में यह राज्य का उत्तरदायित्व बन गया। टेलीविजन प्रोग्रामिंग की सीमित अवधि 1959 में शुरू हुई और 1965 में पूर्ण प्रसारण शुरू हुए। भारत सरकार ने सोवियत संघ में E.M. कम्प्यूटर खरीदे, जिनका उपयोग बड़ी कम्पनियों और अनुसन्धान प्रयोगशालाओं में किया जाने लगा।

1967-1987 काल में भारत में परमाणु ऊर्जा की जड़ें कई पश्चिमी देशों से परमाणु रिएक्टर प्रौद्योगिकी के प्रारम्भिक अधिग्रहण में निहित हैं, विशेष रूप से तारापुर ऊर्जा स्टेशन और कनाडा के CANDU रिएक्टरों के लिए अमेरिकी समर्थन प्राप्त हुआ। जबकि इस कालखण्ड में भारतीय अन्तरिक्ष कार्यक्रम को केवल सोवियत संघ से तकनीकी सहायता मिली, जिससे थुम्बा में भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान स्टेशन स्थापित हुआ।

इस काल में 2000 करोड़ रुपये की लागत से भिलाई, बोकारो, दुर्गापुर, राउरकेला और बर्नपुर में 5 एकीकृत इस्पात संयन्त्र स्थापित हुए।

1987 में जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुए विकास से भारतीय कृषि को लाभ हुआ। भारतीय निजी क्षेत्र और सरकार दोनों ने जैव प्रौद्योगिकी के तहत 1986 में एक अलग विभाग बनाया।

1991 में भारतीय अर्थव्यवस्था में आर्थिक सुधार हुए जिससे वैश्वीकरण और आर्थिक एकीकरण हुआ। 1995 और 2002 के बीच सालाना 60% से अधिक की आर्थिक प्राप्ति दर्ज की गई।

15 जून 2002 को भारत और यूरोपीय संघ विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग पर सहमत हुए। कैलास का भारत की स्वदेशी तकनीकी तरक्की में बड़ा हाथ है। इस में [illegible] जैव प्रौद्योगिकी एप्लीकेशन, समाग्री विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक्स, इलेक्ट्रॉनिक्स, इलेक्ट्रॉनिक्स, इलेक्ट्रॉनिक्स



विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक्स, कम्प्यूटर विज्ञान और अन्य विविध [illegible] विकास बड़े पैमाने पर हुए।

अन्तरिक्ष के क्षेत्र में मंगल यह कक्षा मिशन, चन्द्रयान कार्यक्रम, [illegible], टेलिस्कोप स्थापना जैसे कई विकास कार्य हुए। हाल ही में चन्द्रयान-3 का प्रक्षेपण किया गया जो चन्द्रमा पर उतरा।

आशय यह है कि आधुनिक युग में भारत विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अनेक उपलब्धियों से भरपूर है।

**प्रश्न 10 आधुनिक भारत में सूचना प्रौद्योगिकी (I.T.) के क्षेत्र में आई क्रान्ति पर प्रकाश लिखिए।**

**उत्तर-** सूचना प्रौद्योगिकी (इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी) क्रान्ति ने भारत में आमूलचूल परिवर्तन ला दिया है। यह परिवर्तन अनेक क्षेत्रों में दिखाई देता है।

**शैक्षिक स्थानों में I.T.-** भारत सरकार ने एक बयान जारी कर कहा है कि सूचना प्रौद्योगिकी (I.T.) भारत का कल है। इसलिए शिक्षण संस्थानों को बच्चों को पढ़ाने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करना होगा ताकि उन्हें इस क्षेत्र में प्रशिक्षित किया जा सके। नवीनतम हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर का उपयोग किया जाए और नवीनतम कम्प्यूटर भाषाओं और पैकेजों को छात्रों को सिखाया जाए। इसलिए सरकार ने तथा अनेक स्कूलों ने अपने यहाँ IT कक्ष निर्माण कर उसे सुसज्जित कर कम्प्यूटर अनुदेशकों के लिए नियुक्तियाँ करनी शुरू कर दी हैं। यदि छात्रों को प्रारम्भ से ही 1-2 घण्टे की I.T. की शिक्षा दी जाए तो वे आगे चलकर इस क्षेत्र में उदित होने वाली अनेक नौकरियों में जीत पा सकते हैं और स्वयं यदि कुछ अध्ययन करना चाहें या अधिक प्रशिक्षित होना चाहें तो आधार मजबूत होने के कारण सफल हो सकते हैं। केवल कम्प्यूटर साइंस के विद्यार्थी को ही I.T. के बारे में पढ़ाया जाना पर्याप्त नहीं है बल्कि अन्य सभी विषयों के छात्रों को भी I.T. के बारे में पढ़ाना होगा। शिक्षा के क्षेत्र में I.T. का उपयोग प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

**प्रशासनों में I.T.-** प्रशासन प्रबन्धन I.T. के अनुप्रयोग के साथ हो रहा है। संपत्ति के रजिस्ट्रेशन से संबंध मुकदमा करने, सीमाओं का निर्धारण और ऐसे सारी दस्तावेजों आदि का रिकॉर्ड रखने के, कराड खेतों का परिमाप करने, रास्ताओं जैसे बना संपत्ति की हर प्रकार की जाँच करने में I.T. का प्रयोग होने लगा है। संपत्ति के पूरे रिकॉर्ड को रखने तथा आवश्यकतानुसार उनका कम्प्यूटर उपलब्ध है।

**बैंकिंग क्षेत्र में I.T.-** I.T. क्रान्ति के कारण भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में जबरदस्त और जबरदस्त बदलाव हुआ है। सभी बैंकों ने अपनी बैंक की शाखाओं को कम्प्यूटरीकृत करने की योजना में सहयोग दिया है। इससे बैंक के ग्राहकों को ही नहीं बल्कि बैंक के कर्मचारियों को भी काफी लाभ हुआ है। बैंकों में I.T. के अनुप्रयोग के कारण कुशलता और कर्मचारियों का बैंक सारी आवश्यक सेवा दी गई है और सभी के लाभ के लिए बैंक के कार्यों में पारदर्शिता आई है।

**व्यवसाय में I.T.-** I.T. के अनुप्रयोग ने व्यापारिक व्यवहार और संचालन में बड़ा परिवर्तन ला दिया है। कम्प्यूटरीकृत व्यवहार, सभी क्षेत्र में तुरन्त ले जाने की सुविधा, सभी

दुरुपयोग करने पर आसानी से पता लगाया जा सकता है। रिजर्वेशन करने से यात्रियों की कठिनाइयाँ आसान हो गई हैं। लगभग सभी स्टेशन तथा रेलों को I.T. से जोड़े जाने से रेलों के संचालन, किसी भी स्टेशन से कहीं का भी आरक्षण अब बहुत सरल हो गया है। ट्रेन दुर्घटनाओं में भी कमी आई है।

**मेडीकल शॉप्स में I.T.-** प्रतिस्पर्धा में वृद्धि के कारण I.T. को दवाओं की दुकानों में भी लागू किया गया है। जब भी कोई दवा का स्टॉक दुकान में आता है तो दवा से सम्बन्धित सभी जानकारी जैसे उसका नाम, मात्रा, निर्माण तिथि, समाप्ति तिथि, कीमत आदि मूलभूत जानकारियाँ कम्प्यूटर सिस्टम में दर्ज की जा सकती हैं। जब भी बिक्री होगी, तो ग्राहकों की कम्प्यूटरीकृत बिलिंग होगी। कम्प्यूटर उन्हें दवा की एक्सपायरी की भी सूचना देगा।

**अनुसन्धान में I.T.-** विपणन अनुसन्धान एजेंसियाँ उत्पाद विकास पर अनुसन्धान सर्वेक्षण से लेकर विवरण और ग्राहक प्रतिक्रिया के माप तक कई अनुसन्धान गतिविधियों का डाटा तैयार करने और उनका विश्लेषण करने में तथा आगामी उत्पाद को अधिक कारगर बनाने में लगी हुई हैं। M.R. एजेन्सियाँ डाटा विश्लेषण और व्याख्या के लिए परिष्कृत सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर पैकेज का उपयोग करने लगी हैं।

**शेयर बाजार में I.T.-** यह माना जाता है कि वे दिन चले गए जब स्टॉक ब्रोकर अपनी कीमत बताने के लिए स्टॉक एक्सचेंज के ट्रेडिंग हाल में चिल्लाते थे। आजकल कम्प्यूटर टर्मिनल और इन्टरनेट कनेक्शन की मदद से हर जगह शेयर की खरीद-फरोख्त होने लगी है। एक ग्राहक कम्प्यूटर के माध्यम से होने वाले लेनदेन को देख सकता है। ऑनलाइन शेयर ट्रेडिंग की उपलब्धता के कारण शेयरों की मात्रा और टर्न ओवर में लगातार सुधार हुआ है।

**विज्ञापन एजेंसी में I.T.-** रचनात्मकता और आधुनिकता वह नारा है जो विज्ञान एजेंसियों में माँगा जाता है। रचनात्मकता में चीजों को अलग तरीके से करना शामिल है। I.T. की मदद से यह किया जा सकता है, विज्ञापन एजेंसियाँ विज्ञापन बनाने के लिए बहुत सारे सॉफ्टवेयर का उपयोग करती हैं। I.T. टूल्स का उपयोग करके एनिमेशन और ग्राफिक्स बनाए जा सकते हैं।

**विभिन्न सेवा क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी-** यह देखा गया है कि मौजूदा समय में फिल्म शो का रिजर्वेशन ऑनलाइन टिकिट बुकिंग के जरिए होता है। सिनेमाघर कतारों और अनावश्यक भीड़ से बचने के लिए ऑनलाइन टिकिट बुकिंग की प्रक्रिया का पालन करते थे ताकि इन्टरनेट के माध्यम से कोई भी अपने सुविधाजनक स्थान पर टिकिट बुक कर सके। कतार कम करने के लिए पेट्रोल पम्पों का भी कम्प्यूटरीकरण हो रहा है। आजकल पुस्तकालय भी कम्प्यूटरीकृत हो गए हैं। I.T. उपकरणों का अनुप्रयोग पुस्तकालयों और पाठकों के लिए विभिन्न लाभ प्रदान करता है। पुस्तकालयों में उपलब्ध और प्रचलन में उपस्थित पुस्तकें आसानी से मिल जाती हैं।

I.T. विभिन्न प्रकार की ऑनलाइन द्वारा खरीदी में भी मदद करता है। घर बैठे उत्पादन यहाँ तक कि फल-सब्जी दूध आदि दैनिक उपभोग की वस्तुएं ऑनलाइन मँगाई जा सकती हैं।

उच्च शिक्षा में स्वाध्याय में भी I.T. मददगार है। वेब लर्निंग ने शिक्षा के क्षेत्र में नई क्रान्ति ला दी है। क्लास टीचिंग में भी I.T. का प्रयोग हो रहा है। दूरस्थ शिक्षा अब पूर्णतः I.T. पर निर्भर है। I.T. का उपयोग ई लर्निंग में होने लगा है। इस प्रकार सूचना क्रान्ति जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शीघ्र लाभ प्राप्त करने का सरल माध्यम बन गई है।



## महत्त्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्न

### इकाई-एक

**प्रश्न 15 अगस्त 1947 तक इनको छोड़कर सभी रियासतें भारत में सम्मिलित होने के विलय पत्र पर हस्ताक्षर कर चुकी थीं-**
(अ) भोपाल और जम्मू कश्मीर
(ब) कश्मीर, हैदराबाद और जूनागढ़
(स) उपरोक्त अ और ब दोनों (द) उपरोक्त में से कोई भी नहीं **उत्तर- (ब)**

**प्रश्न भारत के संविधान के अन्तिम मूल मसौदे पर कितने सदस्यों ने हस्ताक्षर किये थे-**
(अ) 235 (ब) 308 (स) 296 (द) 400 **उत्तर- (ब)**

**प्रश्न संविधान सभा के मार्ग में यह कठिनाई नहीं थी-**
(अ) मुस्लिम लीग का असहयोग (ब) देशी रियासतों का असहयोग
(स) अत्यन्त उदार संविधान की आकांक्षा
(द) ग्रेट ब्रिटेन का संविधान सभा पर दबाव **उत्तर- (द)**

**प्रश्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर थे-**
(अ) संविधान सभा के अध्यक्ष
(ब) संविधान प्रारूप समिति के अध्यक्ष
(स) न 'अ' और न 'ब' (द) अ और ब दोनों **उत्तर- (ब)**

**प्रश्न इनमें से कौनसी भारतीय संविधान की विशेषता नहीं है-**
(अ) प्रभुत्व सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य
(ब) मूल अधिकारों का संरक्षण
(स) धर्म निरपेक्ष संविधान (द) उक्त कोई नहीं **उत्तर- (स)**

**प्रश्न भारतीय संविधान में अब तक कितने संशोधन हुए हैं-**
(अ) 86 (ब) 80 (स) 90 (द) 91 **उत्तर- (द)**

**प्रश्न भारतीय संविधान में संशोधन की तीन प्रक्रियाओं में से कौनसी प्रक्रिया नहीं आती-**
(अ) अध्यादेश द्वारा संशोधन
(ब) संसद के बहुमत की स्वीकृति तथा राष्ट्रपति के हस्ताक्षर से संशोधन
(स) संसद के दोनों सदनों में बहुमत तथा उपस्थित सदस्यों के दो तिहाई मतों का समर्थन तथा राष्ट्रपति की स्वीकृति
(द) संसद में दो तिहाई बहुमत तथा कम से कम आधे राज्यों की विधान सभाओं में स्वीकृति से संशोधन
**उत्तर- (अ)**

**प्रश्न 6 से 14 वर्ष तक की आयु के बालक बालिकाओं के लिए निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा देने का संविधान संशोधन कौनसे क्रम का संशोधन है?**
(अ) चौबीसवाँ संशोधन 1971 (ब) छियालीसवाँ संशोधन, 2002
(स) चौथा संशोधन, 1955 (द) सातवाँ संशोधन, 1956 **उत्तर- (ब)**

**प्रश्न किस संविधान संशोधन द्वारा छत्तीसगढ़, उत्तरांचल एवं झारखण्ड तीन नए राज्यों का सृजन हुआ-**
(अ) 84वाँ संशोधन 2000 (ब) छठा संशोधन, 1956
(स) पिच्चासीवाँ संशोधन, 2002 (द) तेइसवाँ संशोधन 1970 **उत्तर- (अ)**

**प्रश्न भारतीय संविधान की प्रस्तावना में यह वाक्यांश सम्मिलित नहीं है-**
(अ) हम, भारत के लोग
(ब) सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतन्त्रात्मक गणराज्य
(स) राष्ट्र की एकता सुनिश्चित करने के लिए
(द) 26 नवम्बर, 1950 **उत्तर- (द)**

## इकाई-दो

**प्रश्न राज्य पुनर्गठन आयोग किस सन् में गठित हुआ-**
(अ) 1950 (ब) 1952 (स) 1953 (द) 1956 **उत्तर- (स)**

**प्रश्न राज्य पुनर्गठन आयोग ने अपनी रिपोर्ट सरकार को कब सौंपी ?**
(अ) 30 सितम्बर, 1955 (ब) 1 सितम्बर, 1954
(स) 1 जनवरी, 1954 (द) 30 सितम्बर, 1954 **उत्तर- (अ)**

**प्रश्न इसके उपरान्त राज्य पुनर्गठन अधिनियम संसद से कब पारित किया गया ?**
(अ) 1956 (ब) 1957 (स) 1958 (द) 1955 **उत्तर- (अ)**

**प्रश्न राज्य पुनर्गठन अधिनियम में कितने राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों का निर्माण किया गया ?**
(अ) 14 राज्य तथा 6 केन्द्र शासित प्रदेश
(ब) 10 राज्य तथा 5 केन्द्र शासित प्रदेश
(स) 15 राज्य और 6 केन्द्र शासित प्रदेश
(द) 14 राज्य और 5 केन्द्र शासित प्रदेश **उत्तर- (अ)**

**प्रश्न राज्य पुनर्गठन आयोग के अध्यक्ष थे-**
(अ) न्यायाधीश फजल अली (ब) के.एम. पणिक्कर
(स) हृदयनाथ कुंजरू (द) फखरुद्दीन अली अहमद **उत्तर- (अ)**

**प्रश्न सन् 1956 में राज्यों के पुनर्गठन का आधार था-**
(अ) क्षेत्रीय लोगों के बीच हिंसा व तनाव
(ब) भाषायी विभिन्नता के कारण हिंसा व तनाव
(स) अ और ब दोनों (द) न अ और न ब **उत्तर- (ब)**

**प्रश्न सही कथन चुनिए-**
(अ) भाषागत समानता विभिन्न व्यक्तियों को एक दूसरे की ओर आकर्षित करती है।
(ब) भाषागत विभिन्नता के कारण लोग एक-दूसरे से पृथकता या अलगाव महसूस करते हैं।
(स) 1956 के राज्य पुनर्गठन का आधार इसलिए भाषायी और क्षेत्रीय तनाव था.
(द) क्षेत्रीय व भाषायी तनाव एकता और अखण्डता के मार्ग में अवरोधक नहीं है **उत्तर- (द)**

**प्रश्न आन्ध्र प्रदेश राज्य से पृथक कर तेलंगाना नया राज्य बनाया गया-**



(अ) 20 जून, 2014 (ब) 2 जून, 2014
(स) 1 सितम्बर, 2015 (द) 20 सितम्बर, 2015 **उत्तर- (ब)**

**प्रश्न सन् 1956 में कश्मीर की सीमा का पुनर्गठन हुआ था-**
(अ) सीमा में कोई बदलाव नहीं किया गया
(ब) सीमा में लद्दाख को जोड़ा गया
(स) लद्दाख को अलग राज्य का दर्जा देकर जम्मू कश्मीर से पृथक किया गया
(द) विभाजन पुनर्गठन को बाद में करने का निश्चय लिया गया **उत्तर- (अ)**

**प्रश्न भारत में संसदीय लोकतन्त्र सम्बन्धी गलत कथन चुनिए-**
(अ) निचला सदन लोकसभा कहलाता है
(ब) 31वें संविधान संशोधन द्वारा लोकसभा की सदस्य संख्या 548 हो गई है।
(स) उच्च सदन को राज्य सभा कहते हैं
(द) इसमें ज्यादा से ज्यादा 250 सदस्य हो सकते हैं **उत्तर- (ब)**

## इकाई-तीन

**प्रश्न गोवा कब स्वतन्त्र हुआ ?**
(अ) 15 अगस्त, 1947 (ब) 19 दिसम्बर, 1961
(स) 1 नवम्बर, 1961 (द) 26 जनवरी, 1950 **उत्तर- (ब)**

**प्रश्न स्वतन्त्रता के पूर्व गोवा, दीव व दमन में शासन था-**
(अ) ईस्ट इण्डिया कम्पनी का (ब) पुर्तगालियों का
(स) ब्रिटिश देश के अंग्रेजों का (द) इनमें से किसी का नहीं **उत्तर- (ब)**

**प्रश्न भारत-पाकिस्तान का 1965 का युद्ध चला-**
(अ) अप्रैल, 1965 से सितम्बर 1965
(ब) 1 मार्च 1965 से 30 सितम्बर 1965
(स) 1965 से 1968 तक (द) उक्त में से कोई नहीं **उत्तर- (अ)**

**प्रश्न 1971 का भारत-पाकिस्तान युद्ध चला-**
(अ) 3 दिसम्बर 1971 से 16 दिसम्बर 1971 तक
(ब) जनवरी 1971 से 31 दिसम्बर 1971
(स) 1 मार्च 1971 से 20 अप्रैल 1971
(द) उपर्युक्त में से कोई नहीं **उत्तर- (अ)**

**प्रश्न 1971 के भारत-पाक युद्ध के संदर्भ में गलत कथन चुनिए-**
(अ) पाकिस्तान को बड़ी हार का सामना करना पड़ा
(ब) युद्ध के दौरान भारतीय एवं पाकिस्तानी सेनाओं को एक ही साथ पूर्वी तथा पश्चिमी दोनों फ्रंटों पर सामना करना पड़ा
(स) एक अनुमान के अनुसार इस युद्ध में लगभग 30,000 से 3 लाख बंगलादेशी नागरिक हताहत हुए
(द) इस संघर्ष के कारण 80 हजार से 3 लाख तक बांगलावासी भारत में शरणार्थी के रूप में घुस गए। **उत्तर- (द)**

**प्रश्न भारत पर चीन के आक्रमण का यह कारण नहीं था-**

(अ) चीन की विस्तारवादी नीति
(ब) चीन का शक्ति प्रदर्शन
(स) चीन और भारत दोनों की विचारधाराओं में भिन्नता-चीन साम्यवादी देश था जबकि भारत प्रजातान्त्रिक देश
(द) भारत की सैन्य शक्ति का चीन से अधिक होना
उत्तर- (द)

प्रश्न **1962 भारत-चीन युद्ध में भारत की पराजय के प्रमुख कारणों में यह सम्मिलित नहीं है-**
(अ) भारत की सैनिक शक्ति के प्रति उदासीनता
(ब) भारत का सेना के आधुनिकीकरण पर ध्यान न देना
(स) भारतीय सैनिकों की युद्ध के प्रति अनिच्छा
(द) लद्दाख और नेफा में भारतीय सड़कों तथा हवाई अड्डों का अन्तर्राष्ट्रीय सीमा के पास न होना
उत्तर- (स)

प्रश्न **भारत चीन युद्ध का यह परिणाम नहीं था-**
(अ) भारत की विदेश नीति की असफलता
(ब) भारत का देश की प्रतिरक्षा के प्रति पूर्ण सजग न होना
(स) भारत के आर्थिक विकास में रुकावट
(द) रूस और चीन में मतभेद न होना तथा चीन का समर्थन करना
उत्तर- (द)

प्रश्न **भारत-पाक युद्ध अगस्त 1965 में पाकिस्तान ने अपने सैनिकों के घुसपैठियों के रूप में भेजकर यह उम्मीद की थी कि कश्मीर की जनता भारत के खिलाफ विद्रोह कर देगी। इस असफल युद्ध का कोड नाम पाकिस्तान ने रखा था-**
(अ) ऑपरेशन कश्मीर (ब) ऑपरेशन जिब्राल्टर
(स) अभियान जम्मू कश्मीर (द) कोई नाम नहीं
उत्तर- (ब)

## इकाई-चार

प्रश्न **हर अर्थव्यवस्था में उत्पादन के अन्तर्गत इन वस्तुओं को सम्मिलित किया जाता है-**
(अ) सभी उत्पाद (ब) सभी सेवाएं
(स) सभी उत्पाद व सेवाएं
(द) निश्चित अवधि में अंतिम रूप से तैयार उत्पाद व सेवाओं का मूल्य (डॉलर में)
उत्तर- (द)

प्रश्न **भारतीय अर्थव्यवस्था के अल्पविकसित होने के प्रमुख तर्क यह नहीं हैं-**
(अ) ऊंची जन्म व मृत्यु दर (ब) औसत आयु अधिक होना
(स) पुरानी उत्पादन विधियाँ (द) जनसंख्या का बड़ा आकार
उत्तर- (ब)

प्रश्न **भारत में भू सुधार उपायों में यह उपाय सम्मिलित नहीं है-**
(अ) काश्तकारी सुधार (ब) कृषि जोतों पर सीमा निर्धारण
(स) सहकारी कृषि (द) कृषि जोतों की चकबन्दी न होना
उत्तर- (द)

प्रश्न **भूदान आन्दोलन के नेता थे-**
(अ) महात्मा गॉधी (ब) जय प्रकाश नारायण
(स) राममनोहर लोहिया (द) विनोबा भावे
उत्तर- (द)



प्रश्न **हरित क्रान्ति से तात्पर्य यह नहीं है-**
(अ) कृषि फसलों के उत्पादन में तेजी
(ब) नई कृषि नीति का उपयोग
(स) उर्वरकों का उपयोग
(द) नवीन कृषि तकनीकी का अभाव
उत्तर- (द)

प्रश्न **योजना आयोग द्वारा कितनी पंचवर्षीय योजनाएं तैयार की गई थीं?**
(अ) 11 (ब) 12 (स) 15 (द) 18
उत्तर- (ब)

प्रश्न **पंचवर्षीय योजनाओं की उपलब्धियों में यह सम्मिलित नहीं है-**
(अ) साक्षरता की दर का विकास (ब) जीडीपी और प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि
(स) औद्योगिक विकास में प्रगति
(द) विज्ञान व प्रौद्योगिकी में अल्प विकास
उत्तर- (द)

प्रश्न **भारत सरकार की सार्वजनिक क्षेत्र की वर्तमान उद्योग नीति में यह विशेषता नहीं है-**
(अ) सार्वजनिक क्षेत्र के कुछ विशिष्ट उद्योगों में ही निवेश
(ब) आरक्षित क्षेत्रों में निवेश (स) निजी क्षेत्र का विकास
(द) सार्वजनिक क्षेत्र के कृषकों की सुरक्षा
उत्तर- (स)

प्रश्न **भारत में आपातकाल था-**
(अ) 15 जून, 1975 से 20 मार्च 1977 तक
(ब) 25 जून 1975 से 21 मार्च 1977 तक
(स) 19 जून 1975 से 20 मार्च 1977 तक
(द) उपरोक्त किसी काल में नहीं
उत्तर- (ब)

प्रश्न **जयप्रकाश नारायण ने किस दिनांक को प्रधान मन्त्री इन्दिरा गाँधी के त्यागपत्र देने तक देश भर में रोज प्रदर्शन करते रहने का आह्वान किया-**
(अ) 19 जून, 1975 (ब) 15 जून, 1975
(स) 25 जून, 1975
(द) उपरोक्त किसी भी दिनांक में नहीं
उत्तर- (स)

## इकाई-पाँच

प्रश्न **किसी देश की विदेश नीति को प्रभावित करने वाले तत्त्वों में यह तत्त्व सम्मिलित नहीं हैं-**
(अ) राष्ट्रीय हित या स्वार्थ (ब) जनता की रुचि
(स) देश के संसाधन और उनका उपयोग
(द) अन्य देश से मित्रता या शत्रुता
उत्तर- (द)

प्रश्न **भारत की विदेश नीति के इन राष्ट्रीय हितों में यह सर्वप्रमुख है-**
(अ) प्रवासी भारतीयों के हितों की सुरक्षा
(ब) भारतीय सीमा की सुरक्षा
(स) खाद्यान्न की कमी की स्थिति में उसकी आपूर्ति (आयात)
(द) अन्य देशों पर निर्भरता
उत्तर- (ब)

प्रश्न **पंचशील में यह सिद्धान्त शामिल नहीं है-**
(अ) एक-दूसरे देश की प्रादेशिक अखण्डता और प्रभुसत्ता का सम्मान

(ब) एक-दूसरे पर आक्रमण न करना
(स) एक-दूसरे के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप कर सलाह देना
(द) शान्तिपूर्व सहअस्तित्व की नीति में विश्वास करना
उत्तर- (स)

प्रश्न **भारत द्वारा गुट निरपेक्षता की नीति अपनाने का कौनसा कारण नहीं है ?**
(अ) विश्वशान्ति की इच्छा
(ब) इस नीति का राष्ट्रीय हित के प्रतिकूल होना
(स) भारत की औद्योगिक आवश्यकताएं
(द) विश्व के दोनों बड़े गुटों से भारत के सैद्धान्तिक मतभेद
उत्तर- (ब)

प्रश्न **SAARC का हिन्दी तथा अंग्रेजी फुल फॉर्म क्या है ?**
(अ) साउथ एशिया एसोसिएशन फॉर रीजनरल कोऑपरेशन या दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन
(ब) साउथ एशियन एसोसिएशन फॉर रीजनरल कोऑपरेशन या दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन
(स) दोनों सही हैं (द) 'ब' सही है
उत्तर- (द)

प्रश्न **आतंकवाद अपराध, हिंसा और क्रूरता का सम्मिश्रण है जो निस्संदेह भय उत्पन्न करने का कार्य करता है-आतंकवाद की यह परिभाषा किसकी है ?**
(अ) राबर्ट बी. ओकाले (ब) आर.ओ. ब्राउन
(स) विल्किन्सन (द) श्रीराम गोपाल
उत्तर- (ब)

प्रश्न **नक्सलवादी आतंकवाद का सर्वप्रमुख कारण बताइए-**
(अ) शोषण व अन्याय की प्रवृत्ति (ब) अवैध शस्त्र व्यापार
(स) आतंकवादियों को विदेशी सहायता
(द) भ्रष्टाचार
उत्तर- (स)

प्रश्न **कारगिल युद्ध जिसे ऑपरेशन विजय के नाम से भी जाना जाता है कब हुआ था ?**
(अ) जनवरी 1999 से मार्च 1999 के बीच
(ब) मई 1999 से जुलाई 1999 के बीच
(स) जुलाई 1999 से सितम्बर 1999 के बीच
(द) अक्टूबर 1999 से जनवरी 2000 के बीच
उत्तर- (ब)

प्रश्न **पश्चिम बंगाल के खड़गपुर में भारतीय औद्योगिक संस्थान (I.I.T.) कब उद्घाटित हुआ ?**
(अ) 26 जनवरी, 1950 (ब) 18 अगस्त, 1951
(स) 15 अगस्त, 1951 (द) 20 जनवरी, 1951
उत्तर- (ब

प्रश्न **भारत में सूचना प्रौद्योगिकी (I.T.) के प्रमुख क्षेत्र में कौनसा सम्मिलित नहीं है ?**
(अ) सरकारी स्कूलों में (ब) अस्पतालों में
(स) बैंकिंग क्षेत्र में (द) रेल्वे में
उत्तर- (अ